# हिन्दी समास-रचना का अध्ययन

[आगरा विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० की उपाधि हेतु स्वीकृत शोध-प्रबन्ध]

लेखक

डा० रमेशचन्द जैन

**विनोद पुस्तक मन्दिर**

हॉस्पिटल रोड, आगरा

प्रकाशक :

**विनोद पुस्तक मन्दिर**

हॉस्पिटल रोड, आगरा



प्रथमावृत्ति : १९६४

मूल्य : १०.००

मुद्रक :

हिन्दी प्रिन्टिङ्ग प्रेस

डॉ० रांगेय राघव मार्ग

आगरा

समर्पण

हिन्दी व्याकरण के गुरु

स्वर्गीय पं० कामताप्रसाद गुरु को

# अपनी बात

राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित राष्ट्रभाषा हिन्दी, यदि किसी क्षेत्र में सबसे अधिक दयनीय स्थिति की पात्रा है तो वह उसका व्याकरण विषय है। अभी तक हिन्दी के प्रकृत स्वरूप का पारदर्शी, निश्चित और प्रामाणिक व्याकरण हमारे सामने नहीं है। जो व्याकरण प्रचलित हैं वे संस्कृत या अंगरेजी भाषा के व्याकरणों को अपना आदर्श बनाकर चले है। हिन्दी-भाषा की रचना-प्रकृति से वे मेल नहीं खाते। यही कारण है कि हिन्दी भाषा का सम्यक् स्वरूप प्रकट करने के स्थान पर उसकी भ्रांत स्थिति को ही ये व्याकरण हमारे सामने रखते हैं। व्याकरण के क्षेत्र में हिन्दी भाषा की यह स्थिति सचमुच बड़ी अशोभनीय है, और हिन्दी-भाषा के हित में इसका निराकरण अत्यन्त आवश्यक है। यह तभी सम्भव है जब कि शोध-कार्य के रूप में वर्णनात्मक प्रणाली के आधार पर हिन्दी-भाषा की प्रकृति, स्वरूप, गठन, रचना का पहिले वैज्ञानिक विश्लेषण किया जाय और तदुपरान्त उस वैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर हिन्दी का प्रामाणिक व्याकरण बनाया जाय।

अपने विद्यापीठ से स्नातकोत्तरीय शोध उपाधि एम० लिट् की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् मेरी उत्कट अभिलाषा इसी दिशा में शोध-कार्य करने की थी। विद्यापीठ के संचालक पूज्य गुरुदेव डा० विश्वनाथ प्रसाद जी की कृपा के पुण्य प्रसाद से यह सुअवसर भी मुझे प्राप्त हुआ। विद्यापीठ में अनुसंधान-सहायक पद पर मेरी नियुक्ति हुई, और मैं अपने शोध-कार्य में संलग्न हुआ। वर्णनात्मक प्रणाली के आधार पर हिन्दी व्याकरण के महत्वपूर्ण अङ्ग, हिन्दी समास-रचना पर शोध-कार्य करने का परामर्श भी मुझे संचालक महोदय ने प्रदान किया। शोध-विषय सचमुच मेरे मन का था, और शीघ्र ही इस विषय को लेकर मैंने अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया। पूज्य गुरुदेव डा० विश्वनाथ प्रसाद जी जैसे भारत के लब्ध-प्रतिष्ठित भाषा-शास्त्री के कुशल निर्देशन का सहारा तो मेरे पास था ही, और आज उन्हीं के आशीर्वाद का सुफल है कि हिन्दी समास-रचना का यह अध्ययन शोध-प्रबन्ध के रूप में प्रस्तुत है।

इस शोध-कार्य में मुझे पूज्य गुरुदेव डा० सत्येन्द्रजी से बड़ी सहायता प्राप्त हुई है। समय-समय पर शोध-कार्य के सम्बन्ध में उन्होंने मुझे जो अमूल्य सुझाव प्रदान किये हैं, उसके लिये मैं उनका बड़ा आभारी हूं। विद्यापीठ के प्राध्यापक और प्रमुख भाषा शास्त्री डा० अशोक रामचन्द्र केलकर के अनुग्रह को तो किसी भी प्रकार नहीं भुलाया जा सकता। शोध-कार्य का मार्ग प्रशस्त करने में उनका सबसे बड़ा हाथ रहा है। शोध-विषयक समस्यायों को लेकर जब कभी मैं उनके समक्ष उपस्थित हुआ, बड़ी सहृदयता के साथ अपना अमूल्य समय निकालकर उन्होंने मेरी सहायता की। इसके अतिरिक्त मैं उन सभी विद्वानों का हृदय से आभारी हूँ जिनके साहित्य ने मेरे शोध-कार्य का मार्ग-प्रदर्शन किया है।

अन्त में, मैं अपने उन सभी स्नेही बन्धुओं, गुरुजनों और विद्वानों का पुनः हृदय से आभार प्रकट करता हूँ जिनके कारण प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में मुझे मेरे अनुसन्धान कार्य मे उत्साह और बल मिला है। मेरे इस शोध-कार्य से हिन्दी भाषा और उसके व्याकरण का तनिक भी हित संवर्द्धन हुआ तो मैं अपने परिश्रम को सफल समझूंगा।

रमेशचन्द्र जैन

जुलाई ७, १९६४

# विषय-सूची

## अध्याय १



## अध्याय २



## अध्याय ३



## अध्याय ४

## अध्याय ५



## अध्याय ६



## अध्याय ७

## अध्याय १

# विषय-प्रवेश

१—१ समास

१—२ समास-रचना की उपयोगिता

१—३ हिन्दी समास-रचना के अध्ययन की आवश्यकता

१—४ कार्य-प्रणाली

१—५ साधन

१—६ सीमाएँ

## १—१ समास

भाषावैज्ञानिकों, वैयाकरणों, शब्दकोशकारों द्वारा समास के स्वरूप को निर्धारित करते हुए जो परिभाषाएं[1] प्रस्तुत की गई हैं वे सब इसी तथ्य का

---

१. पाणिनि "समर्थः पदविधिः" (अष्टाध्यायी ॥२।१।१)

(१) (पातंजलि महाभाष्य "समर्थ पदयोरयं विधिशब्देन सर्व विभक्तयन्तः समासः। समर्थस्य विधिः समर्थ विधिः, समर्थयोर्विधिः समर्थ विधिः, समर्थानां विधिः समर्थविधिः, समर्थाद्विधिः समर्थ विधिः, समर्थ विधिः, समर्थविधिः। पदस्य विधिः पदविधिः, पदयोर्विधिः पदविधिः, पदानां विधिः पदविधिः, पदाद्विधिः पदविधिः, पदे विधिः पदविधिः। समर्थ विधिश्च समर्थ विधिश्च समर्थ विधिश्च समर्थ विधिश्च समर्थ विधिश्च समर्थ विधयः ॥ पदविधिश्च पदविधिश्च पदविधिश्च पदविधिश्च पद विधिश्च पद विधयः। समर्थविधियश्च पदविधियश्च, समर्थ पद विधिः। पूर्व समास उत्तर पद लोपी या इच्छिको च विभक्तिः। सामर्थ्य द्विविधम्। एकार्थी भावः, व्यवेक्षा च ॥"

महाभाष्य के इस कथन के अनुसार जिसमें भिन्न पदों का एक पद, अनेक स्वरों का एक स्वर, अनेक विभक्तियों की एक विभक्ति हो जाती है उसको एकार्थी भाव और एक पद का अनेक पदों के साथ सम्बन्ध होने को विवेच्छा कहते हैं। यही बात प्रत्यय विधान में और परांग वद्धभाव में भी जाननी चाहिये। समास का प्रयोजन यह है कि अनेक पदों का एक पद, अनेक विभक्तियों की एक विभक्ति और अनेक स्वरों का एक स्वर होना।)

(२) समस्यते अनेकम पदमिति समासः

(अनेक पदों को एक पद में मिला देना ही समास है।)

—सिद्धान्त कौमुदी (बालमनोरमा टीका)

निर्देश करती हैं कि समास द्वारा वाक्य में शब्दों का योग एक शब्द का रूप लेता है।

---

(3) "Compound words have two (or more) free forms among their immediate constituents...The forms which we class as compound words exhibit some feature which in their language, characterizes single word in contradiction to phrases."—Bloom field: *Language*, 1955, George Allen and Unwin Ltd, London, p. 227.

(4) "If at least one of the immediate constituents of a word is a bound form the word is a complex, if both of the immediate constituents are free forms the word is compound."—Block & Trager : *Out line of Linguistic Analysis*—Linguistic Society of America, 1942, p. 66.

(५) "दो या अधिक शब्दों का परस्पर सम्बन्ध बताने वाले शब्दों अथवा प्रत्ययों का लोप होने पर, उन दो या अधिक शब्दों से जो स्वतन्त्र एक शब्द बनता है, उस शब्द को सामासिक शब्द कहते हैं, और उन दो या अधिक शब्दों का जो संयोग होता है वह समास कहलाता है।"
—कामता प्रसाद गुरु : हिन्दी व्याकरण—नागरी प्रचारिणी सभा काशी, पृ० ४८१

(६) "दो या अधिक शब्द मिलकर जब एक हो जाते है, तब समस्त पद कहते हैं। इस मेल का नाम समास है।"
—पं० अम्बिका प्रसाद वाजपेई : हिन्दी कौमुदी, पृ० १८३

(७) "अनेक शब्द मिलकर एक पद जब बन जाते हैं तो वह समास कहलाता है।"—किशोरीदास वाजपेई : हिन्दी शब्दानुशासन—नागरी प्रचारिणी सभा काशी, पृ० ३०६

(८) "जब एक से अधिक शब्द मिलकर वृहत् शब्द की सृष्टि करते हैं तब उसे समास कहते हैं।"—डा० उदय नारायण तिवारी : हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास, पृ० ४७१

(९) "दो या अधिक पदों को एक पद करने पर समास होता है।"
—नगेन्द्र नाथ वसु (संपादक) : हिन्दी विश्वकोश, त्रियोविंश भाग, पृ० ६११

(१०) "शब्दों का कुछ विशिष्ट नियमों के अनुसार आपस में मिलकर एक होना।"—श्यामसुन्दरदास तथा अन्य (संपादक) : हिन्दी शब्द-सागर—काशी नागरी प्रचारिणी सभा, १९२२, पृ० ३४६०

(11) "A compound may perhaps be provisionally defined as a combination of two or more words so as to function

फलतः समास के लिए यह आवश्यक है कि उसकी रचना में दो या दो से अधिक शब्दों का योग हो। शब्द से अभिप्राय जैसा कि प्रमुख भाषाशास्त्री ब्लूमफील्ड[1] तथा बेनार्ड ब्लाक और जार्ज एल० ट्रेगर[2] एवं प्रसिद्ध वैयाकरण कामताप्रसाद गुरु[3] का मत है, किसी भाषा के उस स्वतन्त्र रूपांश (Free form) से है जो मिलकर वाक्य की रचना करते हैं। वक्ता के भाषण में जिनका व्यवहार निश्चित अर्थ लिए स्वतन्त्र रूप से होता है। हिन्दी भाषा में राम, रोटी, घर, खाई, स्वतन्त्र रूपांश शब्द हैं, क्योंकि वे परस्पर मिलकर वाक्य का निर्माण करते हैं, और स्वतन्त्र रूप से सार्थक ध्वनि का रूप लिए हिन्दी वाक्य-रचना के अङ्ग हैं।

इस दृष्टि से बद्ध रूपांशों (Bound forms) को शब्द नहीं माना जा सकता। क्योंकि ये रूपांश वाक्य में अपना स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं रखते, और वक्ता के भाषण में इनका व्यवहार स्वतन्त्र रूप से नहीं होता। ये बद्ध रूपांश किसी शब्द के साथ जुड़कर ही वाक्य-रचना में व्यवहृत होते हैं। उदाहरण के लिए अँग्रेजी भाषा के Teacher में 'er', Acting में 'ing', हिन्दी भाषा के सुन्दरता में 'ता', निर्भय में 'निर', निडर में 'नि' नातेदार में 'दार' आदि रूपांश हैं जो क्रमशः Teach, Act, सुन्दर, भय, डर, नाते, आदि रूपांशों से अलग होकर किसी अर्थ

---

as a one word as a unit."—Otto Jesperson : *A Modern English Grammer*, Pt. VI, George Allen & Unwin Ltd. London. p. 134.

(12) "A word which is composed of two or more words the combination of which constituents a single word with a meaning often distinct from the meaning of the individual components."—Mari A. Pei & Frankco-raynor (Editor) : *Dictionary of Linguistics*, p. 44.

1. "A Linguistic form which is never spoken alone is a bound form, all others are free forms......A free form which is not a phrase is a word. A word, then is a free form which does not consist entirely of (two or more) lesser free forms, in brief a word is a minimum free form."—Bloomfield : *Language*, p. 195.

2. "Any fraction that can be spoken alone with meaning in normal speech is a free form, a fraction that never appears by itself with meaning is a bound form. A free form which can not be divided entirely into smaller free form is a miuimum free form or word."—Block & Trager : *Out line of Linguistic Analysis*, p. 68.

३. एक या अधिक अक्षरों से बनी स्वतन्त्र सार्थक ध्वनि को शब्द कहते हैं। कामताप्रसाद गुरु : हिन्दी व्याकरण, सं० २०१४ वि०,पृ० सं० ५३।

का बोध नहीं कराते। इन रूपांशों के साथ जुड़कर ही अर्थवान होते हैं। ऐसे रूपांशों को हम स्वतन्त्र रूपांश न कहकर बद्ध रूपांश या शब्दांश कह सकते हैं।[1]

किसी भाषा के निर्माण में इन शब्दांशों का महत्व यौगिक शब्द-रचना तक ही सीमित है। वाक्य-रचना में इन शब्दाशों का योग नहीं होता। वाक्य का निर्माण स्वतन्त्र रूपांश या शब्द ही करते हैं। शब्द और शब्दांश में यही अन्तर है कि शब्दांशों का योग किसी शब्द में ही होता है, और इससे केवल यौगिक शब्दों की रचना होती है। परन्तु शब्द वे हैं, जिनके योग से वाक्य-रचना होती है।

समास की रचना स्वतन्त्र रूपांशों या शब्दों के योग से होती है। बद्ध रूपांशों या शब्दाशों के योग से बने यौगिक शब्द समास नहीं कहलाएँगे। दूसरे शब्दों में समास-रचना में जिन रूपांशों का योग होता है, वे स्वतन्त्र होते हैं, बद्ध नहीं। हिन्दी भाषा में 'बिजलीघर' समास है, क्योंकि इसकी रचना दो स्वतन्त्र रूपांश 'बिजली' तथा 'घर' से हुई है। 'साप्ताहिक' शब्द समास नहीं है, क्योंकि इस यौगिक शब्द की रचना 'सप्ताह' स्वतन्त्र रूपांश, तथा 'इक' बद्ध रूपांश द्वारा हुई है।

जैसा कि पहिले स्पष्ट किया जा चुका है, भाषा में स्वतन्त्र रूपांशों का उपयोग वाक्य-निर्माण के लिए होता है, परन्तु जब ये स्वतन्त्र शब्द मिलकर वाक्यांश के स्थान पर एक शब्द का निर्माण करते हैं, तब वे समास का रूप ग्रहण करते हैं। इस प्रकार समास में शब्दों का योग एक शब्द का रूप लेता है। दो स्वतन्त्र शब्दों के योग से बना होने पर भी समास वाक्य-रचना में एक शब्द की ही भाँति कार्य करता है। शब्द का जो स्वरूप और लक्षण होता है, उसके अनुरूप ही उसका स्वरूप होता है।

शब्द का लक्षण निर्धारित करते हुए प्रसिद्ध भाषाशास्त्री के० एल० पाइक[2] का मत है कि शब्द किसी भाषा के व्याकरण के ऐसे अङ्ग हैं जिन्हें

---

१. किसी भाषा में कुछ ध्वनियाँ ऐसी होती हैं जो स्वयंसार्थक नहीं होतीं, पर जब वे शब्दों के साथ जोड़ी जाती हैं तब सार्थक होती हैं। ऐसी परतन्त्र ध्वनियों को शब्दांश कहते हैं। —कामताप्रसाद गुरु : हिन्दी व्याकरण, पृ० ५४।

2. "Word the smallest unit arrived at for some particular language as the most convienent type of gramtical entity to seperate by spaces, in general, one of those units of a particular language which actually or potentially may be pronounced by itself."—K. L. Pike : *Phonemics.*, p. 254.

वाक्य की पृथक इकाइयों के रूप में विभाजित किया जा सके, या ऐसी व्याकरण की इकाई जिसका स्वतन्त्र रूप से उच्चारण हो सके।

चार्ल्स एफ० हाकेट का भी यही मत है।[1] उनके अनुसार शब्द वे ही माने जा सकते हैं, जिनका उच्चारण एक इकाई के रूप में हो। एक शब्द के उच्चारण के पश्चात् दूसरे शब्द के उच्चारण के बीच में विराम हो; अर्थात् साधारण वक्ता के उच्चारण मे वाक्य की जिन इकाइयों के बीच विराम सम्भव है, वे शब्द हैं। उदाहरण के लिए हिन्दी भाषा का एक वाक्य है :—

'राम रोटी खाता है।'

इस वाक्य में राम, रोटी, खाता, है—ये चार शब्द माने जायेंगे। क्योंकि वक्ता इस वाक्य को बोलते हुए जब 'राम' शब्द की ध्वनियों का उच्चारण करता है, तब उसका यह उच्चारण एक इकाई के रूप में होता है। 'रा' और 'म' ध्वनियों को वह एक साथ बोलता है। 'रा' और 'म' के बीच में किसी प्रकार का विराम नहीं देता। परन्तु 'राम' के पश्चात् वह 'रोटी' शब्द की ध्वनियों का उच्चारण करने में कुछ विराम लेता है। इससे स्पष्ट है कि 'राम' और 'रोटी' वाक्य की दो पृथक् इकाइयाँ हैं। 'राम' और 'रोटी' की 'रा' तथा 'म' और 'रो' तथा 'टी' ध्वनि-समूहों के बीच कोई विभाजन रेखा नहीं खींची जा सकती, परन्तु 'राम' और 'रोटी' के बीच विभाजन है। इसीलिए 'राम' और 'रोटी' वाक्य की दो पृथक् विभाजित इकाइयों के रूप में शब्द हैं। यही बात 'खाता' और 'है' के सम्बन्ध में है।

समास का उच्चारण भी साधारण वक्ता द्वारा एक शब्द की भाँति होता है। यद्यपि समास की रचना में दो पृथक् स्वतन्त्र शब्दों का योग होता है, परन्तु जब ये पृथक् शब्द मिलकर समास का रूप धारण कर लेते हैं, तब इन शब्दों के उच्चारण के बीच किसी प्रकार का विराम सम्भव नहीं। 'राम' शब्द में जिस प्रकार 'रा' और 'म' ध्वनियों का उच्चारण एक साथ होता है, उसी प्रकार समास के दोनों शब्दों का उच्चारण एक साथ होता है। यदि समासगत शब्दों का उच्चारण एक साथ न होकर अलग-अलग होगा तो वे समास न होकर वाक्यांश का रूप ले लेंगे। यदि 'जन्म-रोगी' इन दो शब्दों को बोलने में बीच में विराम दिया जायगा तो ये दो शब्द वाक्यांश माने जायेंगे।

---

1. "Word means single combination with single pronounciation. A word is thus any sagment of a sentence bounded by successive points at which pausing is possible."—Charles F. Hockett : *A Course in Modern Linguistics*, p. 166.

यदि इन दो शब्दों का उच्चारण विना किसी विराम के एक साथ किया जायगा तो ये समास माने जायेंगे।

शब्द की रचना जिस ध्वनि-समूह से होती है—उसमें आघात (Stress) एक ही ध्वनि पर प्रमुख होता है, शेष ध्वनियों पर आघात गौण होता है। 'राम' शब्द में 'रा' ध्वनि पर आघात प्रमुख है तथा 'म' ध्वनि पर गौण। दोनों ध्वनियों पर आघात समान नहीं हो सकता। यदि दोनों ध्वनियों पर आघात समान होगा तो वे ध्वनियाँ दो पृथक् शब्दों का निर्माण करेंगी। 'राम' 'रोटी' के उच्चारण में 'राम' ध्वनि-समूह की 'रा' ध्वनि पर आघात प्रमुख है, उसी प्रकार 'रोटी' ध्वनि-समूह की 'रो' ध्वनि पर आघात प्रमुख है। इसीलिए 'राम रोटी' ध्वनि-समूह में 'राम' और 'रोटी' दो पृथक् शब्द हैं।

समास में भी शब्द की भाँति एक ही आघात प्रमुख होता है। दूसरे शब्द पर वक्ता द्वारा दिया गया आघात गौण होगा। यदि समास के दोनों शब्दों पर आघात प्रमुख हो तो ऐसी स्थिति में वह समास न होकर वाक्यांश माना जायगा। 'काली मिर्च' वाक्यांश है, क्योंकि इसमें 'काली' और 'मिर्च' दोनों शब्दों पर आघात प्रमुख है। 'काली मिर्च' समास है, क्योंकि इसमें 'काली' शब्द पर आघात प्रमुख है और 'मिर्च' शब्द पर आघात गौण है।

किसी शब्द की रचना जिस ध्वनि-समूह से होती है, उस क्रम को न तो वदला जा सकता है, और न उस ध्वनि-समूह के बीच अन्य किसी ध्वनि को लाया जा सकता है। 'राम' शब्द के ध्वनि-समूह को 'मरा' का रूप नहीं दिया जा सकता और न 'रा' तथा 'म' के बीच अन्य किसी ध्वनि को रखा ही जा सकता है। यही स्थिति समास की भी है। समासगत शब्दों के क्रम को नहीं वदला जा सकता, और न समासगत शब्दों के बीच अन्य किसी शब्द को रखा ही जा सकता है। 'इकन्नी' समास को 'आना इक' का रूप नहीं दिया जा सकता और न 'इक-अच्छा-आना' ही कहा जा सकता है। इसी प्रकार हिन्दी भाषा में 'सफेद घर' और 'श्वेत-पत्र' रचना की दृष्टि से एक है, पर कार्यात्मक दृष्टि से 'सफेद घर' वाक्यांश है और 'श्वेत-पत्र' समास है। क्योंकि 'सफेद घर' में 'सफेद' और 'घर' के बीच अन्य शब्दों का व्यवहार हो सकता है। जैसे—सफेद और टूटा घर, सफेद और बुरा घर। 'घर सफेद है' के रूप में सफेद घर के शब्दों का क्रम भी वदला जा सकता है। परन्तु 'श्वेत-पत्र' समास में यह सम्भव नहीं। श्वेत-पत्र को श्वेत बुरा पत्र, श्वेत हरा पत्र, या पत्र श्वेत है, का रूप नहीं दिया जा सकता। एक शब्द की ध्वनियों की भाँति उसके शब्दों का रूप भी स्थिर है।

ध्वन्यात्मक दृष्टि से शब्द की भाँति समास जहाँ वाक्य-रचना की एक इकाई है, रूपात्मक दृष्टि से भी 'समास' शब्द की भाँति वाक्य-रचना की इकाई है। दो स्वतंत्र शब्दों के योग से बना होने पर भी समास वाक्य-रचना में व्याकरण की एक इकाई का रूप ग्रहण करता है। उदाहरणार्थ किसी भाषा में संज्ञा और विशेषण शब्दों से बना समास या तो संज्ञा का रूप लेगा अथवा विशेषण या अन्य किसी रूपात्मक इकाई का। संज्ञा और विशेषण के रूप में उसकी रूपात्मक सत्ता पृथक्-पृथक् नहीं हो सकती। यदि उसकी सत्ता पृथक्-पृथक् रहती है तो ऐसे शब्द समास की रचना नहीं, वाक्यांश की रचना करेंगे। उदाहरण के लिए हिन्दी भाषा का 'इकन्नी' शब्द है, जो इक (विशेषण) और आना (संज्ञा)—इन दो शब्दों के योग से बना है, तथा हिन्दी भाषा में संज्ञा रूप में प्रयुक्त होता है। अन्य संज्ञा शब्दों के समान ही इसकी स्थिति लिंग, वचन, कारक के रूप में हिन्दी भाषा की वाक्य-रचना में होती है। इसी प्रकार :—

१—मैंने कथा श्रवण की।

२—वहाँ कथा-श्रवण हो रहा है।

पहिले वाक्य में 'कथा श्रवण' समास नहीं है, क्योंकि 'कथा' संज्ञा है और 'श्रवण की' क्रिया। दोनों शब्द मिलकर न तो संज्ञा का रूप लेते हैं, और न क्रिया का; और न किसी अन्य अव्यय, सर्वनाम, विशेषण आदि व्याकरण की इकाइयों का। वाक्य में क्रिया और संज्ञा के रूप में अलग-अलग शब्दों का काम करते हैं और अपनी पृथक् स्थिति रखते हैं।

दूसरे वाक्य का 'कथा-श्रवण' समास है, क्योंकि यहाँ 'कथा' और 'श्रवण' दोनों शब्द मिलकर एक शब्द संज्ञा का रूप लेते हैं। संज्ञा की भाँति इस शब्द का वाक्य में व्यवहार किया जाता है।

समास, शब्द की भाँति व्याकरण की एक इकाई के रूप में वाक्य-रचना के अन्तर्गत कार्य करता है, उसकी एक कसौटी यह भी है कि जिस प्रकार किसी शब्द में शब्दांश जोड़कर नवीन यौगिक शब्दों की रचना कर ली जाती है, उसी प्रकार समास में भी शब्दांशों के योग से नवीन यौगिक शब्दों की रचना होती है। उदाहरण के लिए 'उत्साह' संज्ञा शब्द में 'ई' शब्दांश जोड़कर 'उत्साही' विशेषण बनाया जा सकता है। उसी प्रकार 'उत्साहप्रिय' समास शब्द में 'ता' शब्दांश जोड़कर 'उत्साह-प्रियता' संज्ञा शब्द बनाया जा सकता है।

रूप की भाँति ही समास अर्थात्मक दृष्टि से भी वाक्य की एक इकाई मात्र होते हैं। जिस प्रकार एक शब्द वाक्य के एक अर्थखंड का द्योतक होता है, उसी प्रकार समास के दोनों शब्द मिलकर एक अर्थ को प्रकट करते है। दो

शब्दों के रूप में दो स्वतंत्र अर्थों का बोध नहीं कराते हैं। उदाहरण के लिए हिन्दी भाषा का 'घोड़ागाड़ी' शब्द है। यदि वाक्य में 'घोड़ा' 'गाड़ी' शब्दों से अभिप्राय 'घोड़ा' और 'गाड़ी' दो भिन्न वस्तुओं से है तो ये शब्द मिलकर वाक्यांश का रूप लेंगे। परन्तु 'घोड़ागाड़ी' से अभिप्राय केवल उस गाड़ी से है जो घोड़ों द्वारा खींची जाती है, तो ये शब्द वाक्यांश के स्थान पर समास हैं, क्योंकि समास रूप में समास शब्द 'घोड़ा' और 'गाड़ी'—इन दो भिन्न अर्थों को नहीं, अपितु 'घोड़ों द्वारा खींची जाने वाली गाड़ी' इस एक अर्थ को प्रकट करते हैं।

ऊपर के विवेचन से स्पष्ट है कि समास रचना में उन दो शब्दों का योग होता है जो वाक्य के स्वतंत्र अंग होते हैं। परन्तु समास रचना में वाक्य के प्रत्येक शब्द का योग प्रत्येक शब्द के साथ नहीं हो सकता। केवल सन्निकट रचनांगों ( Immediate Constituents ) के बीच ही समास रचना हो सकती है। दूसरे शब्दों में सन्निकट रचनांगों के शब्द ही परस्पर मिलकर समास रचना के लिये समर्थ हो सकते है। अथवा जो शब्द परस्पर मिलकर संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, अव्यय, क्रिया आदि पद बनने में समर्थ हैं, वे ही समास का रूप ले सकते हैं। सन्निकट रचनांगों से अभिप्राय उन शब्दों से है जो किसी सम्बन्ध-विशेष के कारण परस्पर जुड़े रहते है। सन्निकट रचनांगों का यह सम्बन्ध निम्न स्थितियों में देखा जा सकता है :—

(१) वाक्य के जो रूपांग अर्थ की दृष्टि से समानता लिए हुए रहते हैं; जैसे—हिन्दी वाक्य 'उसके पास धन-दौलत है' में 'धन' और 'दौलत' शब्द समानार्थी हैं। इसीलिए दोनों शब्द परस्पर सन्निकट रचनांग माने जायेंगे।

(२) वाक्य के जो रूपांश एक सी रूपात्मक सत्ता लिए हुए हों। उदाहरण के लिए हिन्दी वाक्य 'बैलगाड़ी चल रही है' में 'बैलगाड़ी' के दोनों शब्द क्रिया के कर्त्ता रूप में एक सी व्याकरण की सत्ता लिए हुए हैं। इसीलिए दोनों शब्द परस्पर सन्निकट रचनांग माने जायेंगे।

(३) वाक्य में कुछ रूपांश प्रधान होते है, कुछ अप्रधान। जो अप्रधान रूपांश होते हैं वे प्रधान के साथ संलग्न होकर वाक्य के अन्य रूपांशों से अपना सम्बन्ध स्थापित करते हैं। परस्पर संलग्न ऐसे प्रधान और अप्रधान रूपांश सन्निकट रचनांग माने जाएँगे। उदाहरण के लिए हिन्दी वाक्य 'मेरे घर कथा का वाचन हो रहा है' में कथा का सम्बन्ध केवल वाचन से है। वाक्य के अन्य किसी शब्द से उसका सम्बन्ध नहीं है। वह एक प्रकार से वाचन का आश्रित शब्द है। इसलिए 'कथा' और 'वाचन' परस्पर सन्निकट रचनांग होंगे।

(४) विशेष्य के साथ जुड़े विशेषण शब्द भी परस्पर सन्निकट रचनांग की स्थिति लिए हुए होंगे। जैसे हिन्दी वाक्य 'वह विशाल भवन में घुसा' में 'विशाल' शब्द भवन का विशेषण है। ये दोनों ही शब्द परस्पर सन्निकट रचनांग हैं।

समास रचना इन सन्निकट रचनांगों द्वारा ही होती है, परन्तु यह आवश्यक नहीं कि सन्निकट रचनांगों द्वारा प्रत्येक अवस्था में समास रचना हो। सन्निकट रचनांगों द्वारा समास रचना हो भी सकती है और नहीं भी। किन सन्निकट रचनांगों द्वारा किसी भाषा में समास रचना हो सकती है, यह उस भाषा की समास रचना की पद्धति पर निर्भर है।

वास्तव में प्रत्येक भाषा में समास रचना की प्रक्रिया भिन्न-भिन्न होती है। हिन्दी में समास रचना की जो प्रक्रिया है, यह आवश्यक नहीं कि समास रचना की वैसी ही प्रक्रिया अंग्रेजी भाषा में हो। हिन्दी और संस्कृत भाषा में ही समास रचना की प्रक्रिया भिन्न है। संस्कृत भाषा में मधुरफल, हरितपत्र समास है, परन्तु हिन्दी भाषा में ये समास न होकर वाक्यांश हैं। यहाँ तक कि एक ही भाषा में शब्दों का योग किसी स्थिति में समास है और किसी स्थिति में समास नहीं है। उदाहरण के लिए :—

१—वह घर घुसा।<br>
२—वह घरघुसा है।

यहाँ पहले वाक्य में 'घर घुसा' वाक्यांश है। परन्तु दूसरे वाक्य में 'घर-घुसा' समास है। पहले वाक्य में 'घर' और 'घुसा' संज्ञा तथा क्रिया के रूप में दो अलग-अलग शब्द हैं, परन्तु दूसरे वाक्य में घर (संज्ञा) घुसा (विशेषणार्थक-क्रिया) दोनों शब्द विशेषण शब्द के रूप में समास बन जाते हैं।

प्रत्येक भाषा में समास रचना की प्रक्रिया भिन्न होती है, इसका कारण यही है कि संसार की प्रत्येक भाषा वाक्य-रचना की दृष्टि से अपनी स्वतंत्र व्यवस्था लिए रहती है। वाक्य-रचना में शब्दों का जो परस्पर योग होता है, वह उस भाषा के निश्चित व्याकरण के आधारों पर होता है। हिन्दी भाषा में पहले कर्त्ता आता है, फिर कर्म, फिर क्रिया। जैसे—'मैं घर जाता हूँ।' अँग्रेजी भाषा में पहले कर्त्ता आता है, फिर क्रिया और उसके बाद फिर कर्म। जैसे—He goes to home. इसी प्रकार हिन्दी भाषा में सम्बन्ध सूचक शब्दों का योग शब्द के बाद में होता है; जैसे—राम ने, राम से। यह नहीं कहा जा सकता 'नेराम', 'सेराम'। जबकि अंग्रेजी भाषा में इन सम्बन्ध-सूचक शब्दों का योग शब्द से पूर्व होता है। वहाँ कहा जायगा—To Ram, in room. हिन्दी की भाँति

Ram to, room in नहीं कहा जायगा। हिन्दी में विशेषण भी सदैव विशेष्य के पहिले आयगा। जैसे—सफेद घर, मधुर फल।

किसी भाषा की समास रचना भी उस भाषा की इसी व्यवस्था को स्वीकार करती हुई चलती है। यदि उस भाषा में विशेषण विशेष्य से पहिले आता है, तो समास रचना में भी पहिला शब्द विशेषण होगा, दूसरा शब्द विशेष्य। वाक्यांशों की भाँति ही समास शब्दों की रचना होगी, जैसे हिन्दी भाषा में :—

१—मैं चवन्नी लिए जा रहा हूँ।

२—मैं चार आना लिए जा रहा हूँ।

पहले वाक्य में 'चवन्नी' समास है, परन्तु दूसरे वाक्य में 'चार आना' समास नहीं है। यद्यपि दोनों की रचना एक ही समान है। 'चवन्नी' समास में भी पहला शब्द 'चार' विशेषण, दूसरा शब्द 'आना' विशेष्य है। दूसरे वाक्य के 'चार आना' वाक्यांश में भी पहला शब्द 'चार' विशेषण और दूसरा शब्द 'आना' विशेष्य है। इस प्रकार समास और वाक्यांश की रचना एक समान है।

रचनात्मक दृष्टि से वाक्यांश की भाँति होने पर भी समास का कार्य एक शब्द की भाँति होता है। समास में दो शब्द मिलकर वाक्यांश की रचना नहीं करते बल्कि शब्दांशों से बने यौगिक शब्दों की भाँति शब्द-रचना करते हैं। वाक्यांशों से वाक्य-रचना होती है, समास रचना द्वारा शब्द-रचना होती है। इस प्रकार रचनात्मक दृष्टि से समास जहाँ 'वाक्य-रचना' के अंग हैं, वहाँ कार्यात्मक दृष्टि से 'शब्द-रचना' के अंग है। दूसरे शब्दों में समास का स्वरूप रचनात्मक दृष्टि से वाक्यांश की भाँति है, और कार्यात्मक दृष्टि से शब्द की भाँति।

अन्त में समास के सम्बन्ध में निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि समास किसी भाषा की यौगिक शब्द-रचना के अंग हैं। शब्द-रचना का यह योग सन्निकट रचनांगों के दो या दो से अधिक स्वतन्त्र रूपांशों द्वारा होता है, जो वाक्यांश के स्थान पर एक शब्द का रूप लेता है। समास रचना की प्रक्रिया अर्थात् समास के वे लक्षण जो समास को एक शब्द के रूप में वाक्यांशों से भिन्नता प्रदान करते हैं, प्रत्येक भाषा में अलग-अलग होते हैं।

## १—२ समास-रचना की उपयोगिता

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मनुष्य की यह प्रवृत्ति रही है कि वह कम से कम श्रम द्वारा अधिक से अधिक सुख-सुविधा प्राप्त करना चाहता है। रेल, मोटर, वायुयान, आदि वैज्ञानिक आविष्कार उसकी इसी प्रवृत्ति के परिणाम हैं। भाषा

के क्षेत्र में समास भी मनुष्यकृत ऐसा ही आविष्कार है। जिस प्रकार रेल, वायुयान, मोटर में बैठकर बहुत दूर की यात्रा अल्प समय में ही पूर्ण की जा सकती है, उसी प्रकार भाषा के क्षेत्र में समासों द्वारा थोड़े में बहुत कहा जा सकता है। 'राजा का पुत्र' कहने की अपेक्षा 'राजपुत्र', 'स्कूल जाने वाला बालक' कहने की अपेक्षा 'School boy', 'पानी में चलाई जाने वाली चक्की' के स्थान पर 'पनचक्की' कहना कहीं अधिक सुविधाजनक और उपयुक्त है। वास्तव में संक्षिप्ति ही समास रचना का प्रधान गुण है।

भाषा को अधिक सुविधाजनक बनाने के लिए भाषा के क्षेत्र में समासों की स्थिति और उनका व्यवहार लेन-देन में व्यवहृत सिक्कों के समान है। जिस प्रकार अठन्नी, चवन्नी, रुपये आदि सिक्कों का व्यवहार लेन-देन की सुविधा के के लिए किया जाता है, अन्यथा एक एक पैसे की खरीज के रूप में व्यापारिक लेन-देन बड़ा कठिन और असुविधाजनक बन जाए, उसी प्रकार समासों का प्रयोग भी भाषा को अधिक सुविधाजनक बनाने के लिए होता है। वस्तुतः समास रचना भाषा की सहज स्वाभाविक प्रवृत्ति है। इसीलिए संसार की सभी प्रमुख भाषाओं में समास रचना पाई जाती है। भारोपीय परिवार की तो यह प्रमुख विशेषता रही है।

समास रचना की सबसे बड़ी उपयोगिता शब्द-निर्माण के क्षेत्र में है। कोई भाषा-क्षेत्र जब सभ्यता और संस्कृति के प्रगति पथ पर आगे बढ़ता है तब अनेक ऐसे नवीन विचारों और वस्तुओं से उसका परिचय होता है जिनको व्यक्त करने वाले शब्द उसकी भाषा में नहीं होते। भाषा के इस अभाव को पूरा करने के लिए यह आवश्यक है कि या तो पूर्णतः नए शब्द ही गढ़े जायें, अथवा अन्य भाषा से शब्द उधार लिए जायँ, या फिर उस भाषा-क्षेत्र में पूर्व प्रचलित शब्दों की सहायता से ही समासों के रूप में नए शब्दों की रचना की जाए। अन्य भाषा से शब्दों का उधार लेना सदैव सम्भव नहीं है। पूर्णतः नए शब्दों की रचना के स्थान पर, भाषा के क्षेत्र में पूर्व प्रचलित शब्दों की सहायता से ही समासों के रूप में नए शब्दों की रचना करना कहीं अधिक उचित, सुविधाजनक, और सहज है। क्योंकि समास रूप में जिन शब्दों के योग से नया शब्द बनता है वे उस भाषा-क्षेत्र के लिए पूर्व परिचित होते हैं। अतः उनके व्यवहार में किसी प्रकार की कठिनाई या अपरिचित भाव का अनुभव नहीं होता। भाषा में बड़ी सरलता और सुगमता से ऐसे शब्द चल पड़ते हैं। क्योंकि समास शब्द के समासगत शब्दों का अर्थ उसे पहिले से ही ज्ञात होता है।

समासों का रूप वस्तुतः उन भोज्य पदार्थों की भाँति है, जो अन्य अनेक भोज्य पदार्थों के मिश्रण से बनाए जाते हैं। जैसे दूध और चावल के मिश्रण से

एक नया भोज्य पदार्थ 'खीर' बनाया जाता है। दूध और चावल पहिले से ही हमारे पास विद्यमान हैं। इन दो पदार्थों की सहायता से हमने तीसरा भोज्य पदार्थ खीर तैयार कर लिया। इसी प्रकार हमारी हिन्दी भाषा में 'वायु' और 'यान' दो शब्द मौजूद हैं। इन दो शब्दों की सहायता से हमने वायु में उड़ने वाली वस्तु के लिए 'वायुयान' शब्द का निर्माण कर लिया। समास के रूप में ऐसे अनेक नए शब्द हमारी भाषा की अभिवृद्धि करते हैं। फलतः जिस भाषा में समास रचना की प्रक्रिया जितनी सरल और गतिशील होती है, वह भाषा शब्द-भण्डार के क्षेत्र में उतनी ही अधिक समृद्धिशाली होती है। समासों के द्वारा शब्दों के अभाव को सहज ही पूरा कर सकती है।

## १—३ हिन्दी समास-रचना के अध्ययन की आवश्यकता

राष्ट्र मन्दिर में राज्यभाषा के आसन पर आज हिन्दी की चिरकल्याणी प्रतिमा प्रतिष्ठित है। भारत जैसे विशाल और महान् संघीय शासन की राज-भाषा के रूप में अनेक नए उत्तरदायित्वों का बोझ उसके कंधों पर है। स्वतंत्र भारत की नवीन आशाओं, आकांक्षाओं, और भावनाओं को उसे वहन करना है। यही नहीं, अब तो वह समूचे संसार की समृद्ध भाषाओं की खुली प्रतिद्वन्द्विता में आ गई है। इस प्रतिद्वन्दिता में उसके पैर दृढ़ता से टिक सकें, ऐसा हमें प्रयत्न करना है। इस प्रयत्न में हमारा सर्वप्रथम कर्त्तव्य हिन्दी भाषा की न्यूनताओं और दुर्बलताओं को दूर करना होना चाहिए, जिससे कि वह सर्वाङ्ग रूप से पुष्ट और सतेज बने, और उसका वाङ्मय हर दृष्टि से पूर्ण हो। सभी प्रकार के ज्ञान-विज्ञान की अभिव्यक्ति की क्षमता उसे प्राप्त हो।

हिन्दी नए ज्ञान-विज्ञान के साहित्य की अभिव्यक्ति में पूर्ण क्षमता प्राप्त करे, इसके लिए आवश्यक है कि हिन्दी भाषा शब्द-समूह की दृष्टि से ही अधिकाधिक समृद्ध और उन्नत हो। उसका व्याकरण वैज्ञानिक आधार पर भाषा के स्वरूप का पारदर्शी हो। इस दृष्टि से हिन्दी समास-रचना के अध्ययन का उद्देश्य स्वतः ही स्पष्ट हो जाता है। समास हिन्दी भाषा के शब्द-समूह के महत्वपूर्ण अंग है। शब्दकोशों में हिन्दी का जो विशाल शब्द-भण्डार है उसका अधिकांश भाग समस्त पदों का रूप लिए हुए है। हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली प्रधानतः सामासिक पद-रचना के आधार पर ही निर्मित हुई है। अंग्रेजी, अरबी, फारसी, संस्कृत आदि हिन्दीतर भाषाओं के समासों के रूप में शब्दों का विशाल शब्द-समूह हमने ग्रहण किया है। भाषा के क्षेत्र में हिन्दी समासों के अनेक नए रूप दृष्टिगत हो रहे हैं। समास रचना की अनेक नवीन प्रवृत्तियाँ सामने आ रही हैं। अतः आवश्यकता इस बात की है कि हिन्दी समास-रचना की

इन विविध प्रवृत्तियों और विविध रूपों का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाय, जिससे कि समास शब्दों के द्वारा नवीन शब्द-रचना के क्षेत्र में हम अपनी हिन्दी भाषा के आन्तरिक साधनों की शक्ति से परिचित हो सकें।

हिन्दी के व्याकरणों में समासों को लेकर जो अध्ययन और विवेचन अब तक किया गया है, वह अनेक दृष्टियों से त्रुटिपूर्ण और अपूर्ण है। हिन्दी के सभी व्याकरण संस्कृत-व्याकरण को अपना आधार बनाकर चले हैं। संस्कृत में जिस प्रकार अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, द्वन्द्व, बहुव्रीहि के रूप में समासों के भेद-उपभेद किये गए हैं, उसी प्रकार हिन्दी समासों का वर्गीकरण किया गया है। समासों के इन भेद-उपभेदों के लिए जो उदाहरण दिए गये हैं वे या तो हिन्दी में गृहीत संस्कृत के ही समास शब्द हैं अथवा संस्कृत उदाहरणों के अनुरूप हिन्दी के शब्द हैं। हिन्दी वैयाकरणों द्वारा यह प्रयत्न नहीं किया गया कि पहले हिन्दी भाषा क्षेत्र में व्यवहृत समासों का अध्ययन, विवेचन और विश्लेषण किया जाय, और तदुपरांत उस अध्ययन, विवेचन और विश्लेषण के आधार पर हिन्दी समासों के विविध भेद-उपभेदों का निर्धारण किया जाय। हिन्दी समास-रचना के सामान्य नियमों की प्रतिष्ठापना की जाय। हमें यह भूलना नहीं चाहिए कि किसी भाषा में साधारण वक्ता द्वारा समासों का निर्माण पहले होता है, और बाद में उसके सामान्य नियमों की प्रतिष्ठापना होती है। किसी भी भाषा की समास रचना में ऐसा कभी नहीं होता कि पहिले कुछ नियम बना लिए जाएँ और फिर उन नियमों के आधार पर समास रचना की जाए। जिस प्रकार किसी भाषा के वर्णनात्मक स्वरूप के आधार पर उसका व्याकरण तैयार किया जाता है, उसी प्रकार किसी भाषा में समास रचना के स्वरूप के आधार पर ही उसके नियम बनाए जा सकते हैं। फलतः किसी भाषा में बोलने वालों द्वारा समासों का निर्माण पहिले होता है और उस रचना के नियम बाद में बनाए जाते हैं। साधारण वक्ता जब अपनी भाषा बोलते हुए समास शब्दों का व्यवहार करता है तब कभी वह यह ध्यान में नहीं लाता कि वह समास शब्दों की रचना कर रहा है। अनजाने में ही वह समास शब्दों की रचना करता है। उसे समास रचना के किसी प्रकार के नियमों का भी ज्ञान नहीं रहता। यह तो उस भाषा के वैयाकरण का कार्य है कि साधारण वक्ता द्वारा बोली जाने वाली उस भाषा की समास रचना के स्वरूप पर प्रकाश डाले। उस सम्बन्ध में सामान्य नियमों की प्रतिष्ठापना करे। समासों को विविध भेद-उपभेदों में वर्गीकृत करे।

यह दुःख की बात है कि हिन्दी समास-रचना के सम्बन्ध में हिन्दी वैयाकरणों का कार्य ठीक इसके विपरीत रहा है। संस्कृत व्याकरण के अव्ययीभाव,

तत्पुरुष, द्वंद्व और बहुव्रीहि आदि समासों के भेद-उपभेदों के सांचों में हिन्दी के सभी समासों को बलात् ढालने का प्रयत्न किया गया है। उनका यह कार्य इसी प्रकार का है कि पहले जूते तैयार किए जाएँ, और फिर उन जूतों में पैरों को बलात् फँसाने की हास्यास्पद चेष्टा की जाए। चाहे वे पैर उन जूतों में आएँ अथवा नहीं। बुद्धिमानी की बात तो यह है कि पैरों के उचित नाप के अनुसार जूते तैयार किए जाएँ। इसी प्रकार हिन्दी भाषा-क्षेत्र में पाए जाने वाले विविध प्रकार के समासों के आधार पर ही हिन्दी समासों के भेद-उपभेद किए जाने चाहिए।

संस्कृत व्याकरण का अंधानुकरण करने वाले हिन्दी वैयाकरणों को यह भी नहीं भूलना चाहिए कि हिन्दी समास-रचना का स्वरूप संस्कृत समास-रचना के पूर्णतः अनुरूप नहीं है। हिन्दी में अनेक ऐसे समास हैं जिनकी रचना संस्कृत व्याकरण के नियमों के आधार पर नहीं होती। हिन्दी समास-रचना का आधार संस्कृत समास-रचना के आधार से भिन्न है। संस्कृत समासों के लिए संधि का होना आवश्यक है, परन्तु हिन्दी समासों के लिए यह आवश्यक नहीं। संस्कृत भाषा में मधुरफल, हरितपत्र, नीलकमल, आदि विशेषण-विशेष्य वाले समास हो सकते हैं, पर हिन्दी में ये समास नहीं हैं। दत्तधन, भ्रष्टपथ, दत्तचित्त आदि संस्कृत के बहुव्रीहि समासों की प्रवृत्ति भी हिन्दी में नहीं मिलती। आजन्म, आमरण, पंकज, विमल, निर्जन, यथास्थान, यथाविधि, यथासाध्य, सम्मुख, संस्कृत में समास हैं, पर हिन्दी के लिए प्रत्यय; उपसर्ग से बने यौगिक शब्द हैं। संस्कृत भाषा का रूप जहाँ संयोगात्मक है, वहाँ हिन्दी भाषा का रूप वियोगात्मक है। संस्कृत में जहाँ विभक्तियों आदि के लोप से लम्बे-लम्बे समास मिलते हैं, हिन्दी में उस प्रकार के लम्बे समास नहीं मिलते। अतः हिन्दी वैयाकरणों द्वारा, समास रचना का अध्ययन करते हुए पूर्णतः संस्कृत व्याकरण की लीक पर चलना उचित नहीं। आवश्यकता इस बात की है कि हिन्दी समास-रचना की प्रवृत्तियों का स्वतन्त्र रूप से अध्ययन किया जाए।

संस्कृत व्याकरण को ही अपना आधार बनाने का एक दुष्परिणाम समास-रचना के क्षेत्र में हिन्दी व्याकरण के लिये यह भी हुआ कि जो कुछ संस्कृत वैयाकरणों द्वारा समासों के सम्बन्ध में कह दिया गया, उसे आँख मीचकर ज्यों का त्यों हिन्दी में भी स्वीकार कर लिया गया। उससे आगे बढ़ने की चेष्टा नहीं की गई। हिन्दी के समास किस प्रकार के शब्दों के योग से बनते हैं; संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, अव्यय, क्रिया आदि पदों की स्थिति हिन्दी समास-रचना में कौन-सा रूप लिए रहती है; किन परिस्थितियों में ये पद समास का रूप ग्रहण करते हैं; ध्वनि-प्रक्रिया की दृष्टि से उनका क्या स्वरूप होता है; अर्थ-प्रक्रिया के

क्षेत्र में हिन्दी समास-रचना की क्या प्रवृत्तियाँ हैं, तथा शब्द-रचना की दृष्टि से नवीन शब्दों के निर्माण में वे कितने सामर्थ्यवान होते हैं आदि हिन्दी समास रचना के महत्वपूर्ण तत्वों पर प्रकाश डालने की चेष्टा हिन्दी वैयाकरणों द्वारा नहीं की गई।

हिन्दी के विविध व्याकरणों में समासों को लेकर जो उदाहरण दिए गए हैं, उनमें भी एकरूपता नहीं है। किशोरीदास वाजपेई ने 'तिमंजिला' को बहुव्रीहि[१] माना है। कामताप्रसाद गुरु ने भी 'सतखंडा' को 'बहुव्रीहि'[२] माना है। परन्तु डा० उदयनारायण तिवारी ने 'दुतल्ला' को कर्मधारय[3] माना है। दुतल्ला, सतखंडा, तिमंजला जब कि रचना की दृष्टि से पूर्णतः एक ही प्रकार के समास हैं। 'तिमंजिला' और 'सतखंडा' को जिस वर्ग में रखा जाना चाहिए, 'दुतल्ला' समास भी उसी वर्ग का होना चाहिए। इसी प्रकार किशोरीदास वाजपेई 'आज्ञानुसार' को अव्ययीभाव[४] समास मानते हैं, परन्तु शिवपूजन सहाय इसे तत्पुरुष समास ही मानना उचित समझते हैं।[५] डा० उदयनारायण तिवारी ने 'खट्टा-मिट्ठा' को द्वंद्व समास भी माना है और कर्मधारय भी।[६] कामताप्रसाद गुरु के हिन्दी व्याकरण में 'मिठबोला' बहुव्रीहि[७] है, परन्तु अम्बिकाप्रसाद वाजपेई के अनुसार यह कर्मधारय होना चाहिए। क्योंकि उनकी परिभाषा के अनुसार कर्मधारय में पहिला पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य या दोनों ही पद

---

१. किशोरीदास वाजपेई : हिन्दी शब्दानुशासन—काशी नागरी प्रचारिणी सभा, सं० १०१४ वि०, पृ० ३१७।

२. कामताप्रसाद गुरु : हिन्दी व्याकरण—काशी नागरी प्रचारिणी सभा, सं० २०१४ वि०, पृ० ४०४।

३. डा० उदयनारायण तिवारी : हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास—भारती भंडार, प्रयाग, सं० २०१२ वि०, पृ० ४७५।

४. किशोरीदास वाजपेई : हिन्दी शब्दानुशासन—काशी नागरी प्रचारिणी सभा, सं० २०१४ वि०, पृ० ३१७।

५. शिवपूजन सहाय : व्याकरण दर्पण—पृ० २०६।

६. डा० उदयनाराण तिवारी : हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास—भारती भण्डार, प्रयाग, सं २०१२ वि०, पृ० ४७२, ४७५।

७. कामताप्रसाद गुरु : हिन्दी व्याकरण—काशी नागरी प्रचारिणी सभा, सं २०१४ वि०, पृ० ४०४।

विशेषण होते हैं।[1] 'तिकोना' शब्द अम्बिकाप्रसाद वाजपेई ने द्विगु समास बतलाया है[2] परन्तु किशोरीदास वाजपेई के 'हिन्दी शब्दानुशासन' के अनुसार बहुव्रीहि होना चाहिए क्योंकि उन्होंने क्रमशः 'सतखंडा' और 'तिमंजला' को बहुव्रीहि माना है।

डा० उदयनारायण तिवारी ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास' में हिन्दी समासों का विवेचन करते हुए 'कच्चा केला' और 'हरा बांस' को कर्मधारय समास माना है।[3] पर ये स्पष्टतः समास नहीं, वाक्यांश हैं। यदि 'हरा बांस', 'कच्चा केला' को समास माना जायगा तो लाल कपड़ा, फटी कमीज, टूटी कलम भी समास होंगे। समास तो वे हैं, जिनमें दो शब्द मिलकर एक शब्द की सृष्टि करते हैं। परन्तु 'हरा बांस, कच्चा केला' में स्पष्टतः दो शब्द हैं। दोनों शब्द मिलकर एक शब्द की रचना नहीं करते। 'कच्चा' विशेषण शब्द है, और 'केला' संज्ञा शब्द। दोनों शब्द मिलकर न तो विशेषण बनते हैं, और न संज्ञा अथवा अव्यय, क्रिया, सर्वनाम, आदि अन्य शब्द। वाक्य में दोनों शब्दों की सत्ता स्वतन्त्र रहती है। अतः 'हरा बांस', 'कच्चा केला' आदि वाक्यांशों को किसी भी दशा में समास नहीं माना जा सकता।

इसी प्रकार आचार्य रामलोचन शरणसिंह ने 'व्याकरण चन्द्रोदय' में 'काम आना' शब्दों को समास माना है।[4] ये शब्द किस दृष्टि से समास हैं, कुछ समझ में नहीं आता। 'काम आना' तो उसी प्रकार का वाक्यांश है, जैसे—मारा जाना, चले जाना, पी जाना।

अव्ययीभाव समास की परिभाषा देते हुए कामताप्रसाद गुरु ने लिखा है :—"जिस समास में पहिला शब्द प्रधान होता है और जो समूचा शब्द क्रियाविशेषण अव्यय होता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं।"[5] इसके लिए उन्होंने मन-ही-मन, हाथों-हाथ, एकाएक, बीचोंबीच, पहले-पहल, धीरे-धीरे के उदाहरण दिए हैं। इन समासों में पहिला पद किस दृष्टि से प्रधान है। रूप, अर्थ

---

१. अम्बिकाप्रसाद वाजपेई : **हिन्दी कौमुदी**—इण्डियन नेशनल पब्लिशर्स लि०, १५९ महुआ बाजार स्ट्रीट, कलकत्ता, पृ० १०५।
२. वही : पृ० १०५।
३. डा० उदयनारायण तिवारी : **हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास**—भारती भण्डार, प्रयाग, सं० २०१२ वि०, पृ० ४७४।
४. आचार्य रामलोचनशरणसिंह : **'व्याकरण चन्द्रोदय'**—पुस्तक-भण्डार, पटना, १९५९, पृ० १८३।
५. कामताप्रसाद गुरु : **हिन्दी व्याकरण**, पृ० ३९१।

दोनों ही दृष्टियों से दोनों शब्द प्रधान हैं। व्याकरण की दृष्टि से जो सत्ता 'मन-ही-मन' में पहिले मन की है, 'धीरे-धीरे' में पहिले धीरे की है, वही क्रमशः बाद के 'मन' की और 'धीरे' शब्दों की है। फलतः गुरु जी द्वारा दी गई अव्ययीभाव की परिभाषा के अनुसार ये समास अव्ययीभाव समास नहीं मानने चाहिए।

निडर, निधड़क, अलग, अनरीति, आजन्म आदि शब्दों को हिन्दी समासों के उदाहरणस्वरूप कामता प्रसाद गुरु ने अपने हिन्दी व्याकरण में रखा है। अपने 'सरल शब्दानुशासन' में किशोरीदास वाजपेई ने भी अनदेखी, सपत्नीक, सकुटम्ब, सकोप, अकोप आदि शब्दों को समास माना है।[1] डा० हरदेव वाहरी ने भी कामता प्रसाद गुरु के 'हिन्दी व्याकरण' के आधार पर निधड़क, अनपढ़ को अव्ययीभाव समास माना है।[2] यही नहीं अप्रिय, आमरण को भी उन्होंने समास माना है।[3] गवर्नमेंट आफ इण्डिया के 'ए वेसिक ग्रामर आफ् माडर्न हिन्दी'[4] तथा केलाग के 'हिन्दी व्याकरण'[5] में भी यही बात देखने को मिलती है। परन्तु ये शब्द निश्चित रूप से समास नहीं हैं, अपितु प्रत्यय के योग से वने यौगिक शब्द हैं। जैसा कि पहिले स्पष्ट किया जा चुका है कि समास के दोनों शब्द स्वतन्त्र होते हैं, जिनका कि समास से भिन्न भी वाक्य में स्वतन्त्रता से व्यवहार होता है। अतः निडर, निधड़क, अनजान, अनवोला आदि शब्दों को समास के उदाहरण स्वरूप रखना उचित नहीं। दुख की वात तो यह है कि आज के विद्यालयों में हिन्दी व्याकरण के प्रारम्भिक विद्यार्थियों को जो व्याकरण पढ़ाये जाते हैं वे सव भी कामताप्रसाद गुरु के 'हिन्दी व्याकरण' को आधार मानकर चले हैं, इसी प्रकार के उदाहरण हिन्दी व्याकरण के विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करते हैं।

अपने 'सरल शब्दानुशासन'[6] में किशोरीदास वाजपेई ने लिखा है कि सर्वनाम समास में कभी बँधता ही नहीं। उनकी दृष्टि में केवल संज्ञा, विशेषण, अव्यय

---

१. किशोरीदास वाजपेई : सरल शब्दानुशासन—नागरी प्रचारिणी सभा, काशी सं० २०१५ वि, पृ० १५६।
२. डा० हरदेव वाहरी : *Hindi Semanitics*—भारत प्रेस पब्लिकेशन्स इलाहाबाद, सं० १९५९ वि०, पृ० ८०।
३. वही „ „ पृ० ८१
४. ए बेसिक ग्रामर आफ माडर्न हिन्दी—गवर्नमेंट आफ इण्डिया, १९५८, पृ० १४९।
५. हिन्दी व्याकरण—केलाग, पृ० २६२।
६. किशोरीदास वाजपेई : सरल शब्दानुशासन—काशी नागरी प्रचारिणी सभा, सं० २०१५ वि, पृ० १५४।

का ही योग समास में होता है। पर बात यथार्थ में यह नहीं है। सर्वनाम और क्रिया का योग भी समास में होता है। जैसा कि शोधप्रबन्ध में आगे इस सम्बन्ध में प्रकाश डाला गया है।

धीरे-धीरे, आस-पास, गटागट, कौड़ी-कौड़ी, रोम-रोम, जन-जन आदि शब्दों को समास माना जाना चाहिए अथवा नहीं, हिन्दी के वैयाकरण इस बात में भी एक मत नहीं है। पं० कामताप्रसाद गुरु इन्हें सामासिक शब्द मानते हैं। उन्होंने स्पष्ट लिखा है कि यदि इन पुनरुक्त शब्दों का प्रयोग संज्ञा अथवा विशेषण के समान हो तो अव्ययीभाव मानना चाहिए। यद्यपि गुरुजी ने ऐसे समासों को पुनरुक्त शब्दों का रूप देकर समास प्रकरण से भिन्न एक अलग अध्याय में इनका विवेचन किया है। इसका कारण सम्भवतः यह है कि उनकी दृष्टि में ऐसे यौगिक शब्दों में से कुछ शब्द समास हैं और कुछ शब्द समास नहीं हैं। बोलचाल में इनका प्रचार सामासिक शब्दों के ही लगभग है, पर इनकी व्युत्पत्ति में सामासिक शब्दों से बहुत कुछ भिन्नता भी है, ऐसा उनका मत है।[1] पर यह भिन्नता कौन-सी है, जिसके आधार पर 'समास' शब्द और 'पुनरुक्त' शब्दों को अलग किया जा सके, इसका निर्देश गुरुजी ने अपने व्याकरण में नहीं किया।

डा० हरदेव बाहरी ने भी पुनरुक्त शब्दों को समास माना है। जैसा कि उन्होंने अपने ग्रन्थ 'हिन्दी सेमेनिटिक्स' में लिखा है।[2] Repetitions or echoes are also compounds. भारत सरकार की 'बेसिक ग्रामर आफ माडर्न हिन्दी' में भी पुनरुक्त शब्दों को समास का रूप दिया गया है।[3] परन्तु किशोरी दास वाजपेई ने ऐसे शब्दों को समास नहीं माना है। काला-स्याह, जर्द-पीला, उनकी दृष्टि में समास नहीं हैं।[4] विद्यार्थियों को पढ़ाये जाने वाले व्याकरणों में भी समासों के रूप में इन पुनरुक्त शब्दों के उदाहरण देखने को नहीं मिलते। क्योंकि इन व्याकरण पुस्तकों के लेखक स्वयं इस सम्बन्ध में निश्चित नहीं होते कि इन्हें समास माना जाए अथवा नहीं।

---

१. कामताप्रसाद गुरु : हिन्दी व्याकरण—काशी नागरी प्रचारिणी सभा, सं०२०१५ वि० पृ० ४१३।

२. डा० हरदेव बाहरी : हिन्दी सेमेनिटिक्स—भारती प्रेस पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद, १९५९, पृ० ७८।

३. ए 'बेसिक ग्रामर आफ माडर्न हिन्दी—मिनिस्ट्री आफ एजूकेशन, १९५८ पृ० १४७।

४. किशोरीदास वाजपेई : हिन्दी शब्दानुशासन—काशी नागरी प्रचारिणी सभा, सं० २०१४ वि०, पृ० ३१५।

पं० कामताप्रसाद गुरु ने हिन्दी समासों के मुख्य चार भेद माने हैं। जिन दो शब्दों में समास होता है, उनकी प्रधानता अथवा अप्रधानता के विभाग-तत्त्व पर ये भेद उन्होंने किए है। उनकी दृष्टि में जिस समास में पहिला शब्द प्रायः प्रधान होता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। जिस समास में दूसरा शब्द प्रधान रहता है, उसे तत्पुरुष कहते है। जिसमें दोनों पद प्रधान होते हैं वह द्वन्द्व कहलाता है, और जिसमें कोई भी शब्द प्रधान नहीं होता उसे बहुव्रीहि कहते हैं।[1]

इस प्रकार प्रधानता अथवा अप्रधानता के आधार पर गुरुजी ने हिन्दी समासों के भेद तो किए हैं, परन्तु किस आधार पर समास का पहिला शब्द प्रधान है और दूसरा शब्द अप्रधान, इस बात का विवेचन गुरुजी ने अपने व्याकरण में नहीं किया।

संस्कृत व्याकरण में चूँकि 'नञ्, प्रादि, अलुक्' समासों के भेद किए गए हैं, उसी आधार पर कामताप्रसाद गुरु ने भी हिन्दी समासों में 'नञ्, अलुक्, और प्रादि' समासों के भेद किए हैं। इसके लिये उन्होंने अनबन, अनमेल, अलग, अनहोनी, (नञ् तत्पुरुष); अतिवृष्टि, प्रतिध्वनि, अतिक्रम, प्रतिबिंब, प्रगति, दुर्गण (प्रादि समास); चूहेमार, उटपटाँग (अलुक् समास) के उदाहरण माने हैं।[2] पर ये निश्चित रूप से हिन्दी में समास नहीं हैं। गुरुजी ने तत्पुरुष समास का एक भेद 'उपपद' समास भी किया है। उनके अनुसार जब तत्पुरुष समास का दूसरा पद ऐसा कृदंत होताहै, जिसका स्वतन्त्र उपयोग नहीं हो सकता तब उस समास को 'उपपद' समास कहते हैं। संस्कृत के ग्रन्थकार, तटस्थ, जलद, उरग, कृतघ्न, नृप के आधार पर उन्होंने हिन्दी के तिलचट्टा, कनकटा, मुँड़चीरा, बटमार, चिड़ीमार, घरघुसा, घुड़चढ़ा के उदाहरण रखे हैं।[3] परन्तु तिलचट्टा, कनकटा, मुँडचीरा, बटमार, चिड़ीमार, घरघुसा, घुड़चढ़ा में जो स्थिति चिट्टा, कटा, चीरा, मार, घुसा, चढ़ा— शब्दों की है वह ग्रन्थकार में 'कार', तटस्थ में 'स्थ', जलद में 'द', और उरग में 'ग' तथा नृप में 'प' की नहीं है। ये शब्द निश्चित रूप से शब्दांश हैं, जिनका स्वतन्त्र उपयोग वाक्य-रचना में नहीं हो सकता।

---

१. कामता प्रसाद गुरु : हिन्दी व्याकरण—काशी ना० प्र० सभा, सं० २०१५ वि०, पृ० ३६१।
२. वही, पृ० ३६६-३६७।
३. वही, पृ० ३६६-३६७।

जब कि घुसा, कटा, चीरा, स्वतन्त्र शब्द हैं जिनका चीरना, घुसना, चढ़ना, आदि रूप में वाक्य रचना में स्वतन्त्र रुप से उपयोग होता है। समास रूप में इन शब्दों में उसी प्रकार का विकार हो जाता है, जैसे इकन्नी में एक का 'इक' और आना का 'अन्नी', चौराहा में चार का 'चौ' तथा राह का 'राहा'।

समानाधिकरण तत्पुरुष अर्थात् कर्मधारय समास की परिभाषा देते हुए गुरुजी का कथन है कि "जिस तत्पुरुष समास के विग्रह में दोनों पदों के साथ एक ही (कर्त्ताकारक) की विभक्ति आती है, उसे समानाधिकरण तत्पुरुष अथवा कर्मधारय कहते हैं।[1] इस परिभाषा के अनुसार लाल-पीला, भला-बुरा, ऊँच-नीच, समासों को कर्मधारय माना गया है। यदि भला-बुरा, छोटा-बड़ा, कर्मधारय हैं तो रात-दिन, भाई-बहिन, माता-पिता, आदि शब्द कर्मधारय समास क्यों नहीं हो सकते ? इन शब्दों की रचना भी भला-बुरा, लाल-पीला के समान हुई है। इन शब्दों के साथ भी एक ही कर्त्ताकारक की विभक्ति लगती है। यही नहीं भला-बुरा, छोटा-बड़ा तो विशेषण रूप होने से विशेष्य के अनुसार ही लिंग, वचन की दृष्टि से वाक्य-रचना में व्यवहृत होते हैं। इन समासों मे कर्त्ताकारक की विभक्ति का योग विशेष्य के पश्चात् होता है :—

१—भले-बुरे लोगों ने यह कार्य किया।
२—खट्टे-मीठे आमों ने यह दशा की।

समासों के सम्बन्ध में हिन्दी व्याकरणों में निहित इन भ्रान्तियों के कारण हिन्दी व्याकरण के विद्यार्थी को बड़ी कठिनाई होती है। समास और उसके भेद-उपभेदों का निश्चित स्वरूप उसके सामने नहीं आने पाता। किस शब्द को समास माना जाना चाहिए तथा किस शब्द को समास नहीं, यह जानना उनके लिए कठिन समस्या बन जाती है।

समास ही नहीं, हिन्दी व्याकरण के लिंग, वचन, क्रिया, प्रत्यय, संधि, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रियाविशेषण, अव्यय आदि जो अन्य अङ्ग हैं, उनके सम्बन्ध में भी यही बात है। अभी तक हिन्दी का व्याकरण निश्चित स्वरूप नहीं ले सका है। हम हिन्दी भाषियों के लिए इससे अधिक दुःख की बात और क्या हो सकती है। हिन्दी जगत में आज सबसे बड़ी आवश्यकता इसी बात की है कि हिन्दी व्याकरण सम्बन्धी इन सभी भ्रान्तियों और अशुद्धियों का निराकरण

---

१. कामताप्रसाद गुरु : हिन्दी व्याकरण—काशी नागरी प्रचारिणी सभा, सं० २०१५ वि०, पृ० ३९७।

किया जाय तथा हिन्दी भाषा के वैज्ञानिक विवेचन और अध्ययन के आधार पर उसका एक पूर्ण व्याकरण प्रस्तुत किया जाए जो न तो संस्कृत व्याकरण को अपना आधार बना कर चला हो और न अंग्रेजी व्याकरण को, अपितु हिन्दी भाषा के प्रकृतस्वरूप के आधार पर ही जिसका निर्माण हुआ हो।

हर्ष का विषय है कि आगरा विश्वविद्यालय के कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी हिन्दी तथा भाषा-विज्ञान विद्यापीठ में इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य हो रहा है। विद्यापीठ के संचालक तथा देश के लब्ध प्रतिष्ठित भाषा विज्ञान-शास्त्री डा० विश्वनाथ प्रसाद, एम० ए०, पी० एच-डी० (लन्दन) के निर्देशन में हिन्दी व्याकरण की नाम कोटियाँ, संधि, प्रत्यय, लिंग, पुनरुक्ति शब्द, वाक्य-विचार, हिन्दी-ध्वनिप्रक्रिया आदि महत्वपूर्ण विषयों पर शोधकार्य चल रहा है। हिन्दी व्याकरण के क्षेत्र में इस प्रकार का यह पहिला प्रयत्न है। अब तक हिन्दी के कवियों, ग्रन्थों, हिन्दी-साहित्य के इतिहास, हिन्दी की बोलियों और उनके व्याकरण पर तो शोध-कार्य हो चुका है, पर हिन्दी भाषा का व्याकरण इस दृष्टि से पूर्णतः अछूता बना हुआ है। जब कि हिन्दी व्याकरण के लिए शोध-कार्य की सबसे अधिक आवश्यकता है, जिससे कि राष्ट्र-भाषा हिन्दी का सर्वाङ्ग रूप से पूर्ण और सुनिश्चित व्याकरण हिन्दी भाषा-भाषियों के सामने आ सके। आशा है शीघ्र ही डा० विश्वनाथ प्रसाद जी के कुशल निर्देशन में विद्यापीठ के अन्तर्गत इस अभाव की पूर्ति हो सकेगी।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध हिन्दी व्याकरण के एक अङ्ग 'समास-रचना' के अध्ययन को लेकर चला है। शोध-कार्य के रूप में इस प्रकार के अध्ययन की क्या आवश्यकता है, इस सम्बन्ध में इतना ही कह देना पर्याप्त है कि बिना समासों के अध्ययन के हिन्दी का व्याकरण अधूरा ही रहेगा। हिन्दी समासों के सम्बन्ध में अब तक जो कुछ भी हमारे सामने है वह संस्कृत व्याकरण का पिष्ट-पेषण मात्र है। उसमें कोई नवीनता और मौलिकता नहीं है। प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध हिन्दी समास-रचना का नवीन और मौलिक अध्ययन है। हिन्दी समास-रचना को लेकर इस प्रकार का यह पहिला प्रयास है जिसमें कि हिन्दी भाषा के वर्णनात्मक अध्ययन द्वारा हिन्दी समास-रचान का पूर्ण और वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। सभी दृष्टियों से हिन्दी समास-रचना का अध्ययन करते हुए समास रचना के निश्चित स्वरूप को प्रकाश में लाने की चेष्टा की गई है। जैसा कि पहिले स्पष्ट किया जा चुका है, समास किसी भी भाषा के शब्द-समूह के महत्वपूर्ण अङ्ग होते हैं। किसी भी भाषा की नवीन शब्द-रचना के महत्वपूर्ण आन्तरिक साधन हैं, और आज जब कि हमारी

हिन्दी भाषा राज्य-भाषा और राष्ट्र-भाषा के रूप में अपने नए उत्तर-दायित्वों को वहन करने में प्रयत्नशील है, नए ज्ञान-विज्ञान की अभिव्यक्ति के लिये पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण उसमें हो रहा है, अनेक नए प्रकार के शब्द उसके शब्द-समूह की वृद्धि कर रहे हैं, इस अवस्था में आज हिन्दी समास-रचना के अध्ययन की कितनी आवश्यकता है, इस विषय में अधिक कुछ कहने की आवश्यकता नहीं।

## १—४ कार्य-प्रणाली

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में हिन्दी समास-रचना का अध्ययन आगमन-प्रणाली को लेकर किया गया है। इस प्रणाली के आधार पर मैंने पहिले हिन्दी की लिखित एवं बोलचाल की भाषा में पाए जाने वाले लगभग दो हजार समासों का संग्रह किया है। ध्वनि, रूप, अर्थ और शब्द-रचना की दृष्टि से इन समासों को विभिन्न प्रकारों (Types) में वर्गीकृत किया है। इसके उपरांत ध्वनि-प्रक्रिया, रूप-प्रक्रिया और अर्थ-प्रक्रिया के क्षेत्र में हिन्दी समासों के इन विविध प्रकारों का वैज्ञानिक विश्लेषण किया है। इस वैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर ध्वनि, रूप, अर्थ और शब्द-रचना के क्षेत्र में समास रचना सम्बन्धी विविध प्रवृत्तियों का उदघाटन किया है। समास रचना की प्रक्रिया को लेकर निष्कर्ष निकाले हैं। तदुपरान्त ध्वनि, रूप, अर्थ और शब्द-रचना के क्षेत्र में इन समासों के विविध भेद-उपभेदों की प्रतिष्ठापना की है।

इस प्रकार ध्वनि, रूप, अर्थ और शब्द-रचना की दृष्टि से हिन्दी समासों के विविध प्रकारों (Types) का वैज्ञानिक विवेचन करते हुए उनके ध्वन्यात्मक, रूपात्मक, अर्थात्मक और शब्द-रचनात्मक आधार पर हिन्दी समासों के विविध भेद-उपभेदों की स्थापना की गई है, तथा हिन्दी समास-रचना के सामान्य नियमों का प्रतिपादन किया गया है। हिन्दी समासों के इन भेद-उपभेदों की प्रतिष्ठापना मे मैंने संस्कृत व्याकरण से गृहीत हिन्दी समासों के परम्परागत आदर्श को अपने सामने नहीं रखा। तत्पुरुष, कर्मधारय, द्वंद्व, द्विगु, अव्ययीभाव, बहुव्रीहि आदि के रूप में संस्कृत व्याकरण के भेद-उपभेदों को हिन्दी समास-रचना के भेद-उपभेद नहीं बनाया। हिन्दी वैयाकरणों की यह जो प्रवृत्ति रही है कि हिन्दी समास-रचना के विषय पर लिखते हुए संस्कृत व्याकरण के भेद-उपभेदों के आधार पर हिन्दी-भाषा से कुछ उदाहरण लेकर रख दिए जाएँ, इस पद्धति का मैंने पूर्णतः वहिष्कार किया है। मेरी कार्य-प्रणाली ठीक इसके विपरीत रही है। मैंने पहिले हिन्दी भाषा में पाये जाने वाले समासों के विविध

रूपों का विश्लेषण किया है, और उसके बाद हिन्दी समासों के भेद-उपभेदों की प्रतिष्ठापना की है।

वस्तुतः समासों का अध्ययन करते हुए अध्ययन से पूर्व हिन्दी समास-रचना सम्बन्धी मैंने अपने कोई मानदण्ड स्थिर नहीं किए। पहिले मैंने हिन्दी भाषा में पाए जाने वाले समासों का अध्ययन किया है और उसके उपरान्त हिन्दी समास-रचना सम्बन्धी मानदण्ड स्थिर किए हैं।

हिन्दी समास-रचना के अध्ययन की इस कार्य-प्रणाली में मैंने न तो संस्कृत व्याकरण-प्रणाली को अपना आधार बनाया है और न अंग्रेजी व्याकरण को। संस्कृत व्याकरण में समासों पर केवल अर्थ की प्रधानता की दृष्टि से विचार किया गया है। इसी आधार पर उसके भेद-उपभेद किए गए हैं। रूप-रचना की दृष्टि से समासों पर विचार नहीं किया गया। अर्थात् 'राजगृह' समास संज्ञा और संज्ञापदों के योग से संज्ञापद बनता है, 'यथाशक्ति' समास अव्यय और संज्ञापदों के योग से अव्यय-पद बनता है, 'शुभागमन' विशेषण पद और संज्ञा पद के योग से संज्ञापद बनता है। इस प्रकार के अध्ययन का प्रयास संस्कृत व्याकरण में नहीं किया गया। मैंने प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में रूप-रचना के आधार पर समासों के इस प्रकार के अध्ययन की चेष्टा की है। हिन्दी समास-रचना में विभिन्न पदों के जितने भी योग हो सकते हैं उन सबका मैंने निर्देश किया है तथा उन स्थितियों का भी निर्देश किया है, जिनमें कि समास-रचना की प्रक्रिया द्वारा विभिन्न पदों का परस्पर योग नहीं होता।

हिन्दी में किस पद को संज्ञा माना जाय, किस पद को विशेषण या अव्यय, इसका निर्णय करना कठिन है। प्रयोग के आधार पर एक ही पद संज्ञा, विशेषण, अव्यय का रूप ग्रहण कर लेता है। ऐसी स्थिति में हिन्दी के शब्दकोशों में शब्दों का जो संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण का रूप है—उसी को मैंने ग्रहण किया है। उसी के आधार पर मैंने संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण पदों के संयोग का अध्ययन समास रूप में किया है।

हिन्दी समास-रचना के इस अध्ययन में मेरा विशेष ध्यान हिन्दी के अपने शब्दों से बने समासों की ओर अधिक रहा है। इसके साथ ही एक अलग अध्याय में मैंने हिन्दी में गृहीत हिन्दीतर भाषाओं के—विशेषतः अङ्ग्रेजी, उर्दू और संस्कृत भाषाओं के समासों और उनकी विशिष्ट प्रवृत्तियों का भी अध्ययन किया है।

## १—५ साधन

अपने इस शोध-प्रबन्ध में मैंने जिन विविध समासो का संग्रह किया है वे हिन्दी की लिखित एवं बोलचाल की भाषा से ग्रहण किए गए हैं। हिन्दी के लिखित साहित्य में मैंने हिन्दी की पत्र-पत्रिकाओं, विशेषकर दैनिक समाचार-पत्र, तथा वर्त्तमान सामाजिक जीवन से सम्बन्धित उपन्यास, नाटक, कहानी, आदि के साहित्य को मुख्य आधार बनाया है, क्योंकि इस प्रकार के साहित्य में ही किसी भाषा का व्यावहारिक स्वरूप देखने को मिल सकता है। हिन्दी के पद्य-साहित्य से मैंने समास-संग्रह की चेष्टा नहीं की। गद्य-साहित्य से ही समास संग्रह की प्रवृत्ति अधिक रही है। इसका कारण यही था कि पद्य में भाषा का प्रकृत रूप उतना नहीं मिलता जितना गद्य की भाषा में। पद्य की भाषा कलात्मक होती है। व्याकरण की मर्यादा उसमें उतनी नहीं रहती जितनी गद्य मे। तुक या लय के आग्रह से पद्य में शब्दों का क्रम और वाक्य-रचना की व्यवस्था भी विशुद्ध नहीं होती। समास भी पद्य की भाषा में प्रकृत रूप लिए नही होते। अतः पद्य-साहित्य में व्यवहृत समासों को अपने अध्ययन का आधार बनाना मैंने उचित नहीं समझा।

हिन्दी शब्दकोशों से भी मैंने हिन्दी समासों का संग्रह किया है। इसके लिए मैने मुख्य रूप से सहायता ज्ञान-मंडल लि० बनारस से प्रकाशित 'बृहत् हिन्दी-कोश', और काशी ना० प्र० सभा से प्रकाशित 'संक्षिप्त हिन्दी शब्द-सागर' से ली है। परन्तु मैं पूर्ण रूप से शब्दकोशों पर ही निर्भर नहीं रहा हूँ। क्योंकि इन शब्दकोशों में प्रमुखता संस्कृत भाषा के ही समासों की है, जिनका व्यवहार परिनिष्ठित हिन्दी में होता है। घरघुसा, कानोसुना, आँखोंदेखा, बैठना-बूठना, आदि हिन्दी भाषा के अपने शब्दों से बने अनेक ऐसे समास हैं जो इन शब्दकोशों में नहीं मिलते। हिन्दीतर भाषाओं के समास भी इन शब्दकोशों में कम मिलते हैं।

समासों के संग्रह के लिए मैंने भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय से प्रकाशित रसायन-शास्त्र, भौतिक-विज्ञान, प्राणी-विज्ञान, अर्थ-शास्त्र, राजनीति-शास्त्र, वाणिज्य-शास्त्र आदि ज्ञान-विज्ञान की शाखाओं पर प्रकाशित पारिभाषिक शब्दावली की भी सहायता ली है।

हिन्दी व्याकरण के अध्ययन के लिए मैंने कामताप्रसाद गुरु के 'हिन्दी व्याकरण' को अपना आधार बनाया है। क्योंकि मेरी दृष्टि मे अब तक हिन्दी व्याकरण में प्रकाशित गुरुजी का व्याकरण ही श्रेष्ठ है। हिन्दी के अन्य वैयाकरण और

उनके द्वारा लिखित व्याकरण गुरुजी के ही व्याकरण को अपना आदर्श मानकर चले हैं। इसके अतिरिक्त हिन्दी सामासों के अध्ययन के लिए मैंने एथिरंगटन महोदय के 'भाषा भास्कर', राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द का 'हिन्दी व्याकरण', कैलाग का 'हिन्दी व्याकरण', पं० अम्बिकाप्रसाद वाजपेई की 'हिन्दी कौमुदी', किशोरीदास वाजपेई का 'हिन्दी शब्दानुशासन', भारत सरकार के 'बेसिक हिन्दी ग्रामर' तथा हिन्दी के विद्यार्थियों को पढ़ाए जाने वाले विविध छोटे-मोटे व्याकरणों से भी सहायता ली है।

## १—६ सीमाएँ

अपने शोध-प्रबन्ध के कार्य-क्षेत्र को मैंने पूर्णतः वर्णनात्मक कार्य-प्रणाली तक ही सीमित रखा है। अध्ययन को ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक प्रणाली का रूप नहीं दिया; अर्थात् हिन्दी समास-रचना में जो विविध प्रवृत्तियाँ मिलती हैं, उनकी तुलना अन्य भाषाओं में पाई जाने वाली समास-रचना की प्रवृत्तियों से नहीं की गई। हिन्दी भाषा में जो समास-रचना का स्वरूप है, बस उसी का वर्णनात्मक अध्ययन मेरे शोध-प्रबन्ध का विषय रहा है। इसीलिए हिन्दी की समास-रचना पर ऐतिहासिक दृष्टि से भी मैंने विचार नहीं किया; अर्थात् हिन्दी में जो आज समास मिलते हैं उनका प्राकृत, पाली, अपभ्रंश आदि हिन्दी की पूर्वज भाषाओं में क्या रूप था, हिन्दी समासों के इस ऐतिहासिक विकास-क्रम को मैंने अपने अध्ययन का विषय नहीं बनाया।

समास रचना के अध्ययन का आधार भी मैंने खड़ी-बोली हिन्दी भाषा को ही बनाया है। ब्रज, अवधी, भोजपुरी, राजस्थानी आदि उसकी उपभाषाओं को अध्ययन का विषय नहीं बनाया गया। फलतः समासों का संग्रह मैंने इन भाषाओं से नहीं किया। इन उपभाषाओं के जो समास खड़ी-बोली हिन्दी में व्यवहृत होते हैं, उनको अवश्य अध्ययन के क्षेत्र में सम्मिलित किया है।

हिन्दीतर भाषाओं के—विशेषकर उर्दू, अंग्रेजी आदि के उन शब्दों को भी मैंने अपने अध्ययन का विषय बनाया है जो समास रूप में हिन्दी भाषा में प्रयोग में आते हैं, और जो आज दूसरी भाषाओं के शब्द होते हुए भी हिन्दी भाषा की संपत्ति बन गए हैं।

उन तद्भव हिन्दी शब्द-रूपों को भी मैंने समास नहीं माना जो अपने मूल रूप में समास रहे होंगे, पर कालान्तर में ध्वनि विकास के कारण रूढ़ शब्द बन गए हैं तथा जिनके अलग-अलग पदों का पता लगाना कठिन है। जैसे—फुलेल, जिसका मूल रूप 'फूल+तेल' रहा होगा, 'नकटा' जिसका मूल रूप 'नाक+

कटा' रहा होगा, दहेड़ी जिसका मूल रूप 'दही+हाड़ी' रहा होगा, अगोंछा जिसका मूल रूप 'अंग+पोंछा' रहा होगा। वगूला जिसका मूल रूप 'वायु+गोला' रहा होगा, ससुराल जिसका मूल रूप 'श्वसुरालय' रहा होगा। आज की भाषा में इन शब्दों को समास नहीं कहा जा सकता। ऐतिहासिक दृष्टि से ही इन पर विचार करना उचित हो सकता है, पर वर्णनात्मक अध्ययन के क्षेत्र में इस प्रकार के समासों पर विचार करना अनावश्यक ही है। इसीलिए मैंने अपने अध्ययन में इस प्रकार के शब्दों को छोड़ दिया है।

हिन्दी व्याकरणों में ग्यारह, वारह, आदि संख्या-मूलक शब्दों को भी समास मानकर चला गया है, क्योंकि इनकी रचना एक+दस, द्वा+दश, आदि दो संख्यावाची शब्दों के योग से हुई है। पर इन संख्यावाची शब्दों को भी मैंने समास नहीं माना। तत्सम रूप में संस्कृत के लिए ये समास हो सकते हैं, पर हिन्दी के लिए तद्भव रूप में ये शब्द समास नहीं, अपितु रूढ़ शब्द हैं।

जिन समासों की रचना स्पष्ट रूप से दो स्वतन्त्र शब्दों के योग से हुई है, केवल उन्हीं को मैंने अपने अध्ययन का विषय वनाया है। उपसर्ग, प्रत्यय या अन्य शब्दांशों के योग से वने यौगिक शब्दों को मैंने समास नहीं माना, और इसलिए अपने अध्ययन-क्षेत्र में मैंने उनको स्थान नहीं दिया। दूधवाला, गाड़ीवान, निडर, निधड़क, अनजान, अनवन, चोवदार, रिश्तेदार, जैसे शब्द इसीलिए अध्ययन क्षेत्र के विषय नहीं बने। क्योंकि इन शब्दों में वाला, वान, नि, अन, दार, आदि जिन शब्दों का योग हुआ है, वे मेरी दृष्टि से स्वतन्त्र शब्द न होकर प्रत्यय और उपसर्ग के रूप में शब्दांश है जो स्वतन्त्र रूप से वाक्य में किसी निश्चित अर्थ का वोध नहीं कराते। किसी शब्द के साथ जुड़कर ही उस शब्द को विशिष्ट अर्थ प्रदान करते है। इस प्रकार समास की जो परिभाषा है कि "स्वतन्त्र शब्दों के मेल से वना एक शब्द"—इसी परिभाषा को मैं निश्चित मानकर चला हूँ। इस परिभाषा के अन्तर्गत जो भी शब्द आते हैं, उन्हें मैंने समास माना है और जो इस परिभाषा के अन्तर्गत नहीं आते, उन्हें मैंने समास नहीं माना। इस दृष्टि में मैंने घर-घर, धीरे-धीरे, लाल-लाल, मेज-वेज, आस-पास, भागना-भूगना, वैठना-वूठना, खुल्लम-खुल्ला, मन-ही-मन, बीचोंवीच, आदि पुनरुक्तिवाची, अनुकरणवाची शब्दों को भी समास माना है, क्योंकि इन समासों की रचना भी स्पष्टतः दो स्वतन्त्र शब्दों द्वारा हुई है। समास रूप में ये शब्द भी अन्य समासों की भाँति एक विशिष्ट अर्थ के वोधक होकर निश्चित व्याकरण की इकाई का रूप ग्रहण करते हैं।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय, उपसर्ग; विभक्ति, प्रत्यय, परसर्ग, कृदन्त, तद्धित, समानाधिकरण, व्यधिकरण, स्वर, व्यंजन, लोप, आगम, आघात, अर्थोपकर्ष, अर्थविस्तार, अर्थसंकोच आदि रूप, ध्वनि और अर्थ से सम्बन्धित जिस शब्दावली का व्यवहार किया गया है, उसके सामान्य अर्थ में प्रचलित रूप को ही ग्रहण किया गया है। इसीलिए शोध प्रबन्ध में इन शब्दों की सैद्धान्तिक व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं समझी गई। पद और शब्द को मैंने एक ही अर्थ में ग्रहण किया है, क्योंकि शब्दों का प्रयोग जब वाक्य में होता है तब वे पद ही बन जाते हैं।

अध्याय २

# ध्वनि-प्रक्रिया के क्षेत्र में हिन्दी समास-रचना की प्रवृत्तियों का अध्ययन

२—१ ध्वन्यात्मक दृष्टि से हिन्दी समास-रचना के विविध प्रकार और उनका विश्लेषण।

२—२ निष्कर्ष।

२—३ वर्गीकरण।

: २ :

# २—४ ध्वन्यात्मक दृष्टि से हिन्दी समास-रचना के विविध प्रकार और उनका विश्लेषण

## १—२ (१) प्रकार

हिन्दी-साहित्य, सीमा-विवाद, रक्षा-संगठन, पथ-प्रदर्शन, महिला-यात्री, शोध-संस्थान, जीवन-रक्षा, मयूर-सिंहासन, प्रवेशद्वार, गजदंत, जीवन-दीप, कमल-नयन, अश्रुमुख, प्रस्तर-युग, प्रेममग्न, प्रायश्चित-दग्ध, बंधन-मुक्त, क्षमा-प्रार्थी, कार्यपटु, कला-प्रवीण, वीणा-वादक, गोरक्षक, ध्यान-पूर्वक, दृष्टिकोण, दृष्टिबोध, चरित्र-निर्माण, विद्युतगृह, मार्ग-व्यय, जल-कल-विभाग, निशि-दिन, पाप-पुण्य, चिर-परिचित, रोम-रोम, जन-जन, धर्म-अधर्म, सरस्वती-उपासना, प्रभु-आदेश, सभा-आलय, ध्वनि-अविकारी, हाथीदांत, मकानमालिक, देश-निकाला, बिजलीघर, कालीमिर्च, रोकड़-बही, कामचोर, दोपहर, राजामंडी, चिट्ठी-पत्री, नमक-मिर्च, नाच-गाना, माँ-बाप, भाई-बहिन, कांग्रेस-अध्यक्ष, रोशनी-घर, अग्निबोट, स्कूल-छात्र, घी-बाजार, सिनेमा-जगत, पुलिस-घर, पोस्ट-आफिस, शेयर-बाजार, पुलिस-स्टेशन, गैरमुनासिब, गुमराह, खुशकिस्मत, कांग्रेस-पार्टी, जर-जोरू-जमीन, शान-शौकत, चोली-दामन, राम-आश्रम, घर-आंगन, राम-आसरे ।

### विश्लेषण

(१) इन समासों की रचना में जिन शब्दों का परस्पर योग हुआ है उनमें ध्वनियों के उत्कर्ष, आघात, सुर, मात्रा आदि ध्वनि-प्रक्रिया के रागात्मक तत्वों को छोड़कर किसी प्रकार का ध्वनि-विकार देखने को नहीं मिलता। वाक्य में

स्वतन्त्र रूप से शब्दों का जैसा प्रयोग होता है, समास रूप में भी शब्द वैसा ही रूप लिए हुए हैं। समास रूप होने से शब्दों में कोई ध्वन्यात्मक परिवर्तन नहीं होता। ध्वन्यात्मक दृष्टि से ऐसे समासों को **अविकारी समास** कहा जा सकता है।

(२) इन अविकारी समासों की रचना हिन्दी में गृहीत संस्कृत के समास शब्दों (उदाहरण—हिन्दी-साहित्य, सीमा-विवाद, रक्षा-संगठन, पथ-प्रदर्शन, महिला-यात्री, शोध-संस्थान, दृष्टिकोण, दृष्टिबोध, जीवन-रक्षा, प्रेम-मग्न, कमल-नयन, अश्रुमुख, बंधन-मुक्त, कलाप्रवीण, प्रभु-आदेश, सरस्वती-उपासना, ध्वनि-अविकारी, राम-आश्रम, सभा-आलय, धर्म-अधर्म, चिर-परिचित); हिन्दी के तद्भव शब्दों (उदाहरण—हाथी-दाँत, रात-दिन, घर-बाहर, बिजली-घर, माँ-बाप, घर-आंगन, राम-सहारे, चिट्ठी-पत्री, देश-निकाला, कालीमिर्च, रोकड़बही, कामचोर, दोपहर, राजामंडी, नमक-मिर्च); हिन्दी और हिन्दीतर भाषाओं के योग से बने शब्दों (उदाहरण—कांग्रेस-अध्यक्ष, रोशनी-घर, अग्नि-बोट, स्कूल-छात्र, घी-बाजार, पुलिस-घर, सिनेमा-जगत); तथा हिन्दीतर भाषाओं के शब्दों के परस्पर योग से हुई है। (उदाहरण—पोस्ट-आफिस, शेयर-बाजार, पुलिस-स्टेशन, गैरमुनासिब, कांग्रेसपार्टी, खुशकिस्मत, जर-जोरू-जमीन, बदनसीब, शान-शौकत, चोली-दामन)।

ध्वन्यात्मक दृष्टि से हिन्दी के इन अविकारी समासों से स्पष्ट है कि हिन्दी-समास-रचना के लिए यह आवश्यक नहीं कि समास रूप में शब्दों का परस्पर योग अनिवार्य रूप से ध्वनि-विकार लिए हुए हो।

हिन्दी में गृहीत संस्कृत के तत्सम शब्दों के समासगत योग में, जिनमें संस्कृत संधि के नियम लागू नहीं होते, ध्वनि-विकार नहीं होता। क्योंकि यदि संस्कृत के तत्सम शब्दों में कोई ध्वनि-विकार होगा तब वे तत्सम न होकर तद्भव बन जायेंगे।

संस्कृत के तत्सम शब्दों के योग से बने अनेक ऐसे समास हिन्दी में दृष्टिगत होते हैं, जिनमें संस्कृत संधि के नियम लागू होने चाहिएं, पर वे बिना संधि के ही हिन्दी भाषा में बोले और लिखे जाते हैं। संधि द्वारा उनमें किसी प्रकार का ध्वनि-विकार नहीं होता। उदाहरण के लिए :—सरस्वती-उपासना, प्रभु-आदेश, राम-आश्रम, धर्म-अधर्म।

इस प्रकार हिन्दी में जहाँ संस्कृत के तत्सम शब्दों (जिनमें संस्कृत संधि के नियम लागू नहीं होते) ध्वनि-विकार नहीं होता, वहाँ हिन्दी और हिन्दीतर भाषाओं के योग से बने समासों में भी ध्वनि-विकार नहीं होता। उदाहरण के

लिए :–'कांग्रेस' (अंगरेजी) और 'अध्यक्ष' ( हिन्दी तत्सम शब्द ) शब्दों से बने 'कांग्रेस-अध्यक्ष' समास का रूप संस्कृत संधि-नियम के अनुसार 'कांग्रेसाध्यक्ष' होना चाहिए, परन्तु हिन्दी में कांग्रेस-अध्यक्ष ही बोला जाता है, 'कांग्रेसाध्यक्ष' नहीं।

'जिलाधीश' शब्द अवश्य इस नियम का अपवाद है। 'जिला' फारसी शब्द और 'अधीश' हिन्दी तत्सम। समासगत रूप में 'जिलाधीश' ने विकारी रूप ले लिया है। फिर भी 'जिलाधीश' के आधार पर—मकानाधीश, तहसीलाधीश जैसे रूप हिन्दी भाषा-क्षेत्र में नहीं चलते।

तदभव शब्दों से बने हिन्दी के अनेक समासों में भी ध्वनि-विकार नहीं होता। उदाहरण के लिए हाथी-दाँत, घर-बाहर, बिजली-घर, माँ-बाप, देश-निकाला, घरजमाई, रोकड़बही, खड़ीबोली, कालीमिर्च। इससे स्पष्ट है कि संस्कृत समासों की भाँति हिन्दी के समासों में संधि रूप में ध्वनि-विकार होना आवश्यक नहीं।

## २—१ (२) प्रकार

हथकड़ी, कठपुतली, पन-चक्की, पन-बिजली, घुड़साल, रजपूत, अधपका, अधसेर, मोतीचूर, मुंडचीरा, भड़भूजा, छुटभय्या, पिछलग्गू, कनकटा, वंसलोचन, गंठबन्धन, हथलेवा, भिखमङ्गा, दुध-मुहा, टुट-पूंजिया, चिड़ी-मार, मुंह-तोड़, खटबुना, खटमुतना, पिछवाड़ा, घुड़दौड़, घुड़साल, कपड़छन, पतझड़, पनडुब्बी, मुंहमाँगा, मिठबोला, बहुरुपिया, जेबकट, गिरहकट, कलमुंहा, दिलजला, घरफूंका, घरघुसा, मनचला, बिनकहा, बिनब्याहा।

इकन्नी, चवन्नी, चौराहा, चौपाया, दुधारा, तिबारा, चौबारा, इकतारा, तिपाई, दुपहरी, सतरङ्गा, सतनजा, तिमंजिला, दुतल्ला, दुपट्टा।

नरेश, जगदीश, सज्जन, मिष्ठान्न, विद्यालय, ज्ञानोदय, सूर्योदय, जिलाधीश, वाग्यंत्र, महर्षि, देवर्षि, मनोव्यथा, मनोविज्ञान, शिरोरेखा।

उड़न-खटोला, उड़न-तश्तरी, उड़नविज्ञान, तापहारी, लट्ठधारी, संकटहरण, संकटमोचन।

धक्कम-धक्का, लट्ठम-लट्ठा, जूतम-जूता, जूतमपैजार, घूसमघूसा, खुल्लम-खुल्ला।

मारामारी, भागाभूगी, छीनाझपटी, लठालठी, कहासुनी, तनातनी, गर्मा-गर्मी, नर्मा-नर्मी।

गटागट, चटाचट, सटासट, फटाफट, फकाफक, झकाझक, एकाएक।

ठीकठाक, टीमटाम, घूमघाम, टालमट्टल, मारामार, भाग-दौड़, खेलकूद, सूझबूझ, बीचोंबीच, कहन-सुनन, देख-रेख, देखभाल, ताकझांक, दौड़-धूप, भूलचूक।

कानोंकान, रातोंरात, बीचोंबीच, हाथोंहाथ, मन-ही-मन, आप-ही-आप, वात-ही-वात, सब-के-सब ।

भागना-भूगना, जानना-जूनना, टालना-टूलना, बैठना-बूठना, होना-हवाना, धोना-धवाना, मान-मनोवल, बूझ-बुझावल ।

मनबहलाव, दिलबहलाव, खाखूकर, जाजूकर, आऊकर, नहानूकर ।

गलत-सलत, उलटा-सुलटा, अन्टशन्ट, लल्लो-चप्पो, धोल-थप्पड़ मेजवेज, विस्कुट-फ़िस्कुट, फूफी-ऊपी, कुर्सी-फुर्सी ।

## विश्लेषण

इन समासों के समासगत शब्दों में ध्वन्यात्मक दृष्टि से विकार देखने को मिलता है। वाक्य में स्वतन्त्र रूप से शब्दों का जैसा प्रयोग होता है, समास के अन्तर्गत शब्दों का वैसा रूप नहीं है। ध्वन्यात्मक दृष्टि से उनके स्वरूप में परिवर्तन हो गया है। वाक्यांश रूप में प्रयुक्त एक आना, पानी की चक्की, हाथ की कड़िया, घोड़ों की शाला, भीख को माँगने वाला, भाड़ को भूजने वाला, जूता और जूता, मन और मन, आदि शब्दों का समासगत रूप क्रमशः इकन्नी, पन-चक्की, हथकड़ियाँ, घुड़साल, भिखमंगा, भड़भूजा, जूतमजूता, और मन-ही-मन होगया है। एक, पानी, हाथ, घोड़ा, भीख, भाड़, जूता, मन शाला, आदि शब्द सामासिक रचना में इक, पन, हथ, घुड़, भिख, भड़, मनही और शाल बन गए हैं। ध्वन्यात्मक परिवर्तन लिए हिन्दी के ऐसे समासों को ध्वन्यात्मक दृष्टि से विकारी कहा जा सकता है।

यह ध्वनिविकार केवल हिन्दी के तद्भव शब्दों में देखने को मिलता है। संस्कृत के तत्सम शब्दों के उन्हीं समासों में ध्वनिविकार है, जिनमें संस्कृत-संधि के नियम लागू हुए हैं। उदाहरण के लिए नरेश, जगदीश, मिष्ठान्न, वाग्यंत्र, ज्ञानोदय, पूर्वोदय, सूर्योदय, मानापमान, सज्जन। हिन्दी समासों में ध्वनिविकार तद्भव शब्दों में ही होता है, परन्तु जैसा कि पहले स्पष्ट किया जा चुका है, तद्भव शब्दों से बने समासों में ध्वनि विकार होता भी है और नहीं भी। उदाहरण के लिए घरजमाई, बिजलीघर, घोड़ागाड़ी, नाचगाना, भाई-बहिन, माता-पिता, नमक-मिर्च, हाथीदांत, घरसिला, पेटभर, हरा-भरा, हम लोग, ऐसे समास हैं, जिनमें दोनों शब्द तद्भव है, परन्तु इनमे ध्वनि-विकार

नहीं है। इसके विपरीत, कठपुतली, बंसलोचन, रजपूत, दुपहरी, पनबिजली, इकतारा, आदि तद्भव शब्दों से बने समासों में ध्वनि-विकार है।

हिन्दी के इन ध्वनि विकारी समासों के हमें अनेक रूप देखने को मिलते हैं। हथकड़ी, कठपुतली, बंसलोचन, रजपूत, अन्धकूप, अधकच्चा दुपहर, इकतारा, गठबन्धन, छुटभय्या, आदि ऐसे समास हैं, जिनके प्रथम शब्द (हाथ=हथ, काठ=कठ, बाँस=बंस, राज=रज, अन्धा=अन्ध, आध=अघ, दो=दु, एक=इक) ध्वनि विकारी रूप लिए हुए हैं। हिन्दी के ऐसे समासों को **प्रथम शब्द ध्वनि विकारी** कहा जा सकता है।

मोतीचूर, चिड़ीमार, जेबकट, गलतसलत, घरबार, होनाहवाना, धोनाधाना, घरफुंका, दिलजला आदि ऐसे समास हैं जिनके दूसरे शब्द (चूरा=चूर, मारना=मार, काटना=काट, गलत=सलत, द्वार=बार, होना=हवाना, धोना=धाना, फुकना=फुका, जलना=जला) ध्वनि विकारी रूप लिए हुए हैं। हिन्दी के ऐसे समासों को **द्वितीय शब्द ध्वनि विकारी** समास कहा जा सकता है।

इकन्नी, चवन्नी, छीना-झपटी, भिखमंगा, भड़भूजा, अमचूर, कठ-फोड़वा, मुंडचीरा, टुट-पूंजिया, खटमिठा, मिठबोला आदि ऐसे समास हैं जिनके दोनों शब्दों (एक=इक, आना=अन्नी, छीनना=छीना, झपटना=झपटी, भीख=भिख, माँगना=मंगा, भाड़=भड़, फोड़ना=फोड़वा, मूंड=मुंड, चीरना=चीरा, टूटी=टुट, पूजी=पूंजिया, खट्टा=खट, मिट्ठा=मिठा, मीठा=मिठ, बोलना=बोला) में सभी शब्दों में ध्वनि विकार है। ऐसे समासों को **सर्व शब्द ध्वनि विकारी** समास कहा जा सकता है।

तिमंजिला, इकतारा, चौपाया, चौराहा, इकन्नी, चवन्नी, इकत्तीस, पंसेरी, आदि समासों में पहिला शब्द संख्यावाची विशेषण है, और ये शब्द ध्वनि-विकार रूप लिए हुए हैं। तिमंजिला में तीन का 'ति,' चौपाया में चार का 'चौ', चौराहा में चार का 'चौ', इकन्नी में एक का 'इक', चवन्नी में चार का 'चव', इकत्तीस में एक का 'इक', पंसेरी में पाँच का 'पन' होगया है। इसका अभिप्राय है कि संख्यावाची विशेषण के योग से बने समासगत शब्दों में समासों के संख्यावाची विशेषणों में ध्वनिविकार हो जाता है। ध्वनिविकार के रूप में—

एक का 'इक' (एक आना=इकन्नी, एक तारा=इकतारा)
दो का 'दु' (दो-पहर=दुपहर, दो-सूती=दुसुती, दो-गुना=दुगना)
तीन का 'ति' (तीन-मंजिल=तिमंजिला, तीनरङ्गा=तिरङ्गा)

चार का 'चौ' (यदि समास का अन्तिम शब्द पुल्लिग हो), चारपाया=चौपाया, चार-राहा=चौराहा।

चार का 'चव' (यदि समास का अन्तिम शब्द स्त्रीलिंग हो), चार आना=चवन्नी।

पाँच का 'पन' या 'पंच' (पाँच सेर=पनसेरी, पाँच-महल=पंचमहल)

सात का 'सत' (सात-खण्ड=सतखण्ड, सातसेर=सतसेर)

आठ का 'अठ' (आठ-खण्ड=अठखंड, आठपाव=अठपाव)

जिन संख्यावाची विशेषणों में समास रूप में कोई ध्वनिविकार नहीं होता जैसे—छः, नौ, दस, उनके योग से बने शब्द वाक्यांश होंगे, समास नहीं। जैसे—दस आदमी, छः घोड़े, नौ मकान। केवल उन्हीं संख्यावाची विशेषणों में ध्वनि-विकार होता है, जिनमें दीर्घ ध्वनियाँ होती हैं। समास रूप में दीर्घ ध्वनियाँ ह्रस्व हो जाती हैं।

जैसा कि पहिले कहा जा चुका है, संख्यावाची विशेषणों के योग से बने समासों में दो का 'दु' हो जाता है, परन्तु कभी-कभी दो का 'दो' ही रूप देखने को आता है; जैसे—दो गाना, दोपहर, दो-नला। इसी प्रकार चारपाई में चार का 'चौ' या 'चव' नहीं होता।

संख्यावाची विशेषणों की भाँति परिमाणवाची विशेषणों के योग से बने समासों में भी परिमाणवाची विशेषण ध्वनिविकारी रूप ले लेते हैं। उदाहरण के लिए :—आधसेर=अधसेर, आधापाव=अधपाव, बड़ा भाग्यवाला=बड़-भागी, लम्बा-कर्ण=लम्बकर्ण, छोटा-भय्या=छुटभय्या, आदि समास हैं। इनमें परिमाणवाची विशेषणों की दीर्घ ध्वनियाँ ह्रस्व हो गई हैं। आ का 'अ', ड़ा का 'ड', म्बा का 'म्ब', छो का 'छु', टा का 'ट' हो गया है। परिमाणवाची विशेषण की अंतिम स्वर ध्वनि का लोप हो गया है।

गुणवाची विशेषणों में भी ध्वन्यात्मक विकार का यह रूप देखने को मिलता है। विशेषण शब्दों की दीर्घ ध्वनियाँ समास रूप में ह्रस्व हो जाती हैं, तथा अन्तिम ध्वनि का लोप हो जाता है। 'ह अ ह' का ध्वन्यात्मक आधार समासगत रूप में 'ह अ' हो गया है। उदाहरण के लिए :—कलमुँहा, मिठबोला, नलमानुस। यह ध्वनि-विकार तभी होता है जब प्रथम शब्द विशेषण और दूसरा शब्द विशेष्य हो। अर्थात् प्रथम शब्द दूसरे शब्द की विशेषता प्रकट करे। भला-बुरा, अच्छा-खासा, काला-पीला में काला, बुरा, भला, अच्छा, काला में कोई ध्वनि विकार नहीं होता, क्योंकि भला, बुरा का विशेषण नहीं, अच्छा शब्द खासा का विशेषण नहीं है, काला शब्द, पीला की विशेषता को प्रकट

नहीं करता । इसी प्रकार काला बाजार में काला शब्द में कोई ध्वनिविकार नहीं है, क्योंकि काला शब्द बाजार की विशेषता को प्रकट नहीं करता (बाजार का रंग काला, सफेद, आदि नहीं होता ) ।

जिन विशेषणों की रचना संस्कृत के तत्सम शब्दों से होती है जैसे— मृतसमान, श्वेतपत्र, श्यामपट, तथा हिन्दीतर भाषाओं के योग से बने समासों से जैसे— गैरमुनासिब, गैरहाजिर, गुमराह, बदनसीब, सब-इंसपेक्टर, हैडमास्टर, उनके विशेषण शब्दों में ध्वनिविकार नही होता ।

जिन विशेषण शब्दो की रचना केवल व्यंजन ध्वनियों से होती है, उनमें भी ध्वनिविकार नहीं होता; जैसे—मृतसमान ।

यदि समासों की रचना में दोनों पद विशेषण हों और समस्त पद भी विशेषण हो, तो समासगत विशेषण शब्दों में ध्वनिविकार देखने को नहीं मिलता । जैसे (अच्छा-खासा, भला-बुरा, तीन-तेरह, एक-दो, चार-पांच, काना-कोथरा, लूला-लंगड़ा, काला-पीला, हरा-भरा) यहाँ भी पहिला शब्द दूसरे की विशेषता नहीं बतलाता । फिर भी संख्यावाची विशेषणों में कहीं-कहीं यह ध्वनि-विकार देखने को मिलता है; जैसे—एक और तीस=इक्तीस । कभी-कभी गुण-वाची विशेषणों के योग में भी ध्वनिविकार पाया जाता है; जैसे—खट्टा-मिट्टा का खटमिट्टा (खट्टा=खट, प्रथम शब्द की अन्तिम 'आ' दीर्घ ध्वनि का लोप) ।

इस प्रकार यदि समास में पहिला शब्द विशेषण, दूसरा शब्द विशेष्य है । पहिले शब्द की रचना तद्‌भव रूप में हुई है । वह संस्कृत का तत्सम शब्द या हिन्दीतर भाषा का शब्द नहीं है । वह द्वयाक्षरी है, और उसकी प्रथम या द्वितीय या दोनों ही ध्वनियाँ दीर्घ हैं तो ऐसे विशेषण शब्द में ध्वनिविकार होना अनिवार्य है । उसका ध्वन्यात्मक स्वरूप 'ह ह्' का रूप ले लेगा । दीर्घ स्वर ध्वनियों का लोप हो जायगा । जिन शब्दों में यह ध्वनिविकार नहीं होता, उन शब्दों के योग से बने समास, वाक्यांश कहलायेंगे । जैसे—भला आदमी, काला घोड़ा, सफेद घर, बूढ़ी औरत, डूबा घर ।

हथकड़ी, बंसलोचन, रजपूत, कठपुतली, गठबंधन, गठजोड़ा, हथलेवा, घुड़साल, पनचक्की, पनबिजली, कठमुल्ला, छुटभय्या, भड़भूजा, कठफोड़वा, कनकटा, भिखमंगा, दुधमुँहा, मुड़चिरा, आदि समास ऐसे हैं जिनके प्रथम पद को वाक्यांश की भाँति वाक्य में व्यवहृत किया जाय तो इनका रूप क्रमशः होगा—हाथ की कड़ी, बाँस का लोचन, राजा का पूत, काठ की पुतली, गाँठ का बंधन, गाँठ का जोड़ा, हाथ का लेवा, घोड़ों की शाला, पानी की चक्की, पानी की बिजली, काठ का मुल्ला, भाड़ का भूजा, काठ का फोड़वा, कान का कटा,

भीख का मंगना, दूध का मुंह, मूंड का चिरा। परन्तु समास के अन्तर्गत इनका रूप क्रमशः हो गया है—हाथ=हथ, बांस=वंस, राजा=रज; काठ=कठ, गांठ=गठ, हाथ=हथ, घोड़ों=घुड़, पानी=पन, काठ=कठ, भाड़=भड़, काठ=कठ, कान=कन, नाक=नक, भीख=भिख, दूध=दुध, मूंड=मुंड। इस प्रकार इन समासों के प्रथम पद की दीर्घ ध्वनियाँ, ह्रस्व ध्वनियों में वदल गई हैं। उदाहरण—आ का अ (हाथ=हथ, काठ=कठ, भाड़=भड़) ऊ का उ (दूध=दुध, मूंड=मुंड) और औ का उ (घोड़ा=घुड़)। ध्वन्यात्मक दृष्टि से इन शब्दों का वाक्यांशान्तर्गत जो 'ह् अ ह्' या 'ह् अ ह् अ' का रूप है, वह समासान्तर्गत 'ह् ह्' या 'ह् अ ह्' के रूप में वदल गया है। इससे स्पष्ट है कि समास के प्रथम पद की रचना यदि द्वयाक्षरी रूप में हुई है तो उसकी दीर्घ ध्वनियाँ ह्रस्व हो जाती हैं। यदि शब्द का प्रथम अक्षर दीर्घ स्वर का रूप लिए हुए हो तो वह भी ह्रस्व हो जाता है। जैसे—आम-चूर का सामासिक रूप 'अमचूर' होगा। 'आ' दीर्घ स्वर ह्रस्व स्वर का रूप ले लेगा। ध्वन्यात्मक विकार की यह स्थिति तभी होती है जब पहिला शब्द दूसरे का भेदक हो।

जिन समासों के प्रथम शब्द का ध्वन्यात्मक रूप स्वतः ही 'ह् ह्' होता है, अर्थात् प्रथम शब्द के अक्षर दीर्घ स्वरों का योग लिए हुए नहीं रहते तव उनमें ध्वनिविकार नहीं होता, क्योंकि वहाँ दीर्घ ध्वनियों के लोप का प्रश्न ही नहीं उठता; जैसे—रथयात्रा, घर-रक्षक, सनरस्सी।

यह आवश्यक नहीं कि अनिवार्य रूप से समासगत शब्दों की दीर्घ ध्वनियों का लोप हो। इसके अपवाद भी देखने को मिलते हैं। घोड़ागाड़ी में 'घोड़ा' का 'घुड़' नहीं होता। कामचोर में 'काम' का 'कम' नहीं होता। हाथी-दांत का 'हथदंत' नहीं होता। 'रजपूत' के स्थान पर 'राजपूत' भी वोला जाता है।

जिन समासों में प्रथम पद भेदक और दूसरा पद भेद्य हो। दोनों पद संज्ञा और समस्त पद संज्ञा हो तव समास के अन्तर्गत द्वितीय शब्द की अन्तिम दीर्घ ध्वनि का लोप हो जाता है; अर्थात् ध्वन्यात्मक दृष्टि से यदि उसका रूप वाक्यांशान्तर्गत 'ह् अ ह् अ' हो तो वह समासान्तर्गत 'ह् अ ह्' वन जाता है। जैसे—मोतीचूर, अमचूर। यहाँ 'चूरा' (ह् अ ह् अ) का 'चूर' (ह् अ ह्) वन गया है। इसके विपरीत चौराहा, चौपाया, दुधमुंहा, कलमुंहा में समास के द्वितीय शब्द का अन्तिम ह्रस्व अक्षर दीर्घ हो गया है—(राह=राहा, पाय=पाया, मुंह=मुंहा)। ध्वन्यात्मक दृष्टि से इन समासों के द्वितीय शब्द का वाक्यांशान्तर्गत स्वरूप 'ह् अ ह्' समास के अन्तर्गत 'ह् अ ह् अ' वन गया है। यहाँ ध्वनि

लोप के स्थान पर दीर्घ ध्वनि का आगम हो गया है। द्वितीय शब्द के अन्तिम अक्षर में दीर्घ ध्वनि के आगम द्वारा दीर्घ ध्वनि की यह स्थिति तभी उत्पन्न होती है जब पहिला पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य हो, और समस्त पद या तो संज्ञा हो अथवा विशेषण।

जूतमजूता, लट्ठमलट्ठा, खुल्लमखुल्ला, जूतमपैजार, धक्कमधक्का, घिस्सम-घिस्सा आदि समासों का विग्रह करने पर यह स्पष्ट है कि इनकी रचना 'जूता और जूता, घूसा और घूसा, जूता और पैजार, धक्का और धक्का' शब्दों से हुई है। इस प्रकार पहिले शब्द की पुनरावृत्ति ही दूसरे शब्द में हुई है। दोनों पद संज्ञा हैं और समस्त पद भी संज्ञा है। रूपात्मक, अर्थात्मक और ध्वन्यात्मक—सभी दृष्टियों से दोनों पद एक सा रूप लिए हुए हैं। समास रूप में प्रथम शब्द की अन्तिम दीर्घ ध्वनि का लोप ( जूता=जूत, धक्का=धक्क, घिस्सा=घिस्स ) हो जाता है और बीच में 'म' ध्वनि का आगम हो जाता है। पहिला अक्षर यदि दीर्घ नहीं होता तो दूसरा अक्षर द्वित्व का रूप लिए हुए होता है। जैसे—लट्ठ में 'ट्ठ', धक्का में 'क्का', घिस्सा में 'स्स', खुल्ला में 'ल्ल'।

समास रूप में अन्तिम शब्द का अंतिम अक्षर दीर्घ रूप लिए हुए है तथा उसका रूप आकारांत है। जूतम पैजार में 'पैजार' शब्द अवश्य अकारांत है। 'अ' ह्रस्व ध्वनि ने यहाँ 'आ' दीर्घ ध्वनि का रूप नहीं लिया है। इसका कारण यह है कि 'पैजार' शब्द अरबी का है। इसका अर्थ भी जूता है। हिन्दीतर भाषा का शब्द होने से इसमें ध्वनि विकार नहीं हुआ।

समास रूप में दोनों के बीच में 'म' ध्वनि का आगम होने से दोनों शब्द मिलकर एक होगये हैं। 'ह् अ ह् अ+ह् अ ह् अ' का रूप समासगत 'ह् अ ह् ह ह अ ह् अ' हो गया है। समासगत यह योग संश्लिष्ट है।

समास का यह रूप कभी-कभी क्रियाओं के योग से बने समासों में भी देखने को मिलता है। उदाहरण के लिये 'गुँथना' और 'गुँथना' से बना गुत्थमगुत्था।

गटागट, सटासट, चटाचट, फटाफट, एकाएक, आदि समासों का विग्रह करने पर स्पष्ट है कि इनकी रचना क्रमशः 'गट और गट, सट और सट, फट और फट, एक और एक' शब्दों से हुई है। दोनों ही शब्द अव्यय हैं या विशेषण, हैं, परन्तु समस्त पद अव्यय है। पहिले शब्द की ही पुनरावृत्ति दूसरे शब्द में हुई है। इस प्रकार ध्वन्यात्मक, रूपात्मक और अर्थात्मक—सभी दृष्टियों से दोनों पदों का स्वरूप पूर्णतः एक-सा है। समास रूप में दोनों शब्दों के बीच में 'आ'

दीर्घ ध्वनि का आगम हो गया है। 'गट' और 'गट' में जो 'ह ह+ह ह' का ध्वन्यात्मक आधार है वह समासगत 'गटागट' रूप में 'ह ह अ ह ह' हो गया है, और इनका योग संश्लिष्ट है।

हाथों-हाथ, कानों-कान, रातों-रात, वातों-वात, वीचों-वीच दिनोंदिन आदि समासों का विग्रह करने पर स्पष्ट है कि इनकी रचना हाथ और हाथ, कान और कान, रात और रात, वात और वात, वीच और वीच शब्दों से हुई है। दोनों ही शब्द संज्ञा हैं और समस्त पद अव्यय है। पहिले शब्द की पुनरावृत्ति ही दूसरे शब्द में हुई हैं। फलतः दोनों ही शब्द रूपात्मक, अर्थात्मक, और ध्वन्यात्मक दृष्टि से पूर्णतः एक-सा स्वरूप लिए हुए हैं। समासगत रूप में दोनों शब्दों के मध्य में 'ओं' दीर्घ ध्वनि का आगम हो गया है। फलतः निरसामासिक रूप में इन शब्दों का 'ह अ ह+ह अ ह' का ध्वन्यात्मक स्वरूप समासगत 'ह अ ह अ ह अ ह' हो गया है। दोनों शब्द मिलकर एक हो गए हैं और योग संश्लिष्ट हो गया है; अर्थात् समासगत इन शब्दों का उच्चारण एकरसता लिए हुए है।

मन-ही-मन, दिन-ही-दिन, सब-के-सब, घर-के-घर, बात-ही-बात, आप ही-आप, आदि समासों का विग्रह करने पर स्पष्ट है कि इनकी रचना संज्ञा या विशेषण शब्दों से हुई है। रचना की दृष्टि से पहिले ही शब्द की पुनरावृत्ति दूसरे शब्द में है। फलतः दोनों शब्दो का स्वरूप रूपात्मक, अर्थात्मक और ध्वन्यात्मक दृष्टि से एक ही है। समास होने पर दोनों शब्दों के बीच 'में, ही' अथवा 'के' ध्वनि का आगम हो गया है। निरसामासिक रूप में इन शब्दों का ह ह+ह ह (मन+मन) या ह अ ह+ह अ ह (वात+वात) का ध्वन्यात्मक स्वरूप 'ह ह ह अ ह ह' (मन-ही-मन) या 'ह अ ह ह अ ह अ ह' (वात ही वात) हो गया है। ध्वन्यागम से दोनों शब्द मिलकर एक हो गए हैं।

टीमटाम, घूम-धाम, ठीक-ठाक, टीप-टाप, इन समासों का विग्रह करने पर स्पष्ट है कि इन समासों की रचना टीम और टीम, घूम और घूम, ठीक और ठीक, टीप और टीप शब्दों से हुई है। पहिले ही शब्द की पुनरावृत्ति दूसरे शब्द के रूप में हुई है। फलतः दोनों का स्वरूप ध्वन्यात्मक, रूपात्मक और अर्थात्मक दृष्टि से एक है। निरसामासिक रूप में इनका जो ह अ ह+ह अ ह (टीम+टीम, घूम+घूम, ठीक+ठीक, टीप+टीप) का ध्वन्यात्मक स्वरूप है समासगत रूप में 'ह अ ह ह अ ह' हो गया है। दूसरे शब्द की प्रथम अक्षर की दीर्घ स्वर ध्वनि 'ई' दीर्घ स्वर ध्वनि 'आ' में वदल गई है। (टीम=टाम, ठीक=ठाक, टीप=टाप) दोनों शब्द मिलकर एक होगए है, और योग संश्लिष्ट है।

बिनकहा, बिनसुना, बिनब्याहा, आदि समासों का विग्रह करने पर स्पष्ट है कि इन समासों की रचना 'बिना' अव्यय शब्द और कहना, सुनना, ब्याहना आदि क्रियाओं के योग से हुई है। समासगत रूप प्रथम शब्द 'बिना' की अंतिम दीर्घ ध्वनि 'आ' का लोप हो गया है। 'ह् अ ह् अ' का ध्वन्यात्मक स्वरूप समासगत रूप में 'ह् अ ह्' हो गया है। दूसरा शब्द निरसामासिक रूप में जो 'ह ह ह् अ' (कहना, सुनना) या 'ह ह् अ ह् अ' (ब्याहना) का ध्वन्यात्मक स्वरूप लिए है वह समासगत रूप में 'ह ह् अ' (कहा, सुना) या 'ह् ह् अ' (ब्याहा) के रूप में परिवर्तित हो गया है। दूसरे शब्द के अन्तिम वर्ण 'ना' का लोप हो गया है और अन्त में दीर्घ 'आ' ध्वनि के योग से समास ह् अ आकारांत बन गया है। समासगत रूप में इस समास का ध्वन्यात्मक स्वरूप है 'ह अ ह ह ह् अ'। शब्दों का योग संश्लिष्ट न होकर विश्लिष्ट है।

'भागना-भूगना, बैठना-बूठना, जानना-जूनना, टालना-टूलना, आदि समासों का विग्रह करने पर यह स्पष्ट है कि इन समासों की रचना भागना+भागना, बैठना+बैठना, जानना+जानना, टालना+टालना, आदि क्रियाओं के योग से हुई है। पहिले ही शब्द की पुनरावृत्ति दूसरे शब्द में हुई है। निरसामासिक रूप में दोनों शब्दों का ध्वन्यात्मक, अर्थात्मक और रूपात्मक स्वरूप एक-सा है। समासगत रूप में दूसरे शब्द में ध्वन्यात्मक विकार हो गया है। दूसरे शब्द के प्रथम वर्ण की दीर्घ 'आ' या 'उ' ध्वनि दीर्घ 'ऊ' ध्वनि में बदल गई है (भा=भू, बै=बू, जा=जू, टा=टू)।

टालना-टूलना का रूप कहीं-कहीं टालमटूल भी मिलता है। इस स्थिति में दोनों शब्दों का योग संश्लिष्ट हो जाता है। झूलमझूला, खुल्लम-खुल्ला, में जहाँ अन्तिम शब्द का अंतिम वर्ण दीर्घ ध्वनि का योग लिए आकारान्त होता है वहाँ टालम-टूल में दूसरे शब्द के अन्तिम वर्ण में दीर्घ 'आ' ध्वनि का योग नहीं होता। दूसरा शब्द अकारान्त रूप लिए हुए है। खुल्लम-खुल्ला में 'खुल्ला' का ध्वन्यात्मक स्वरूप जहाँ 'ह अ ह ह अ' है वहाँ टूल में 'ह अ ह' का ध्वन्यात्मक स्वरूप है।

गर्मागर्मी, नरमानर्मी आदि समासों की रचना गरम+गरम, नरम+नरम शब्दों से हुइ है। पहिले शब्द की पुनरावृत्ति दूसरे शब्द में है। अतः निरसामासिक रूप में दोनों शब्दों का रूपात्मक, अर्थात्मक, ध्वन्यात्मक स्वरूप एक ही है। समासगत रूप में दोनों ही शब्द ध्वन्यात्मक विकार लिए हुए हैं। निरसामासिक रूप में इन शब्दों का जो 'ह ह ह+ह ह ह' ध्वन्यात्मक स्वरूप है वह समासगत रूप में 'ह ह ह अ ह ह ह अ' हो गया है। समास के

प्रथम शब्द के अन्तिम वर्ण में दीर्घ 'आ' ध्वनि का योग हो गया है (गरम=गरमा, नरम=नरमा) तथा दूसरे शब्द के अन्तिम वर्ण में दीर्घ 'ई' ध्वनि का योग हो गया है। (गरम=गरमी, नरम=नरमी) मुक्कामुक्की, लठालठी, धक्काधुक्की आदि समासों की रचना भी इसी भाँति हुई है। इन समासों में शब्दों का योग संश्लिष्ट है।

देखरेख, भागदौड़, सूझबूझ, भूलचूक, रोकथाम, पूछताछ, खानपान, हारजीत, आदि समासों की रचना क्रमशः देखना+रेखना, भागना+दौड़ना, सूझना+बूझना, भूलना+चूकना, रोकना+थामना, पूछना+ताछना, हारना+जीतना आदि, क्रियायों के योग से हुई है। निरसामासिक रूप में इनका ध्वन्यात्मक स्वरूप 'ह अ ह ह अ+ह अ ह ह अ' है, परन्तु समासगत रूप में इनका ध्वन्यात्मक स्वरूप 'ह अ ह ह अ ह' हो गया है। समास रूप में दोनों ही शब्दों के अन्तिम अक्षर 'ना' का लोप हो गया है—(देखना=देख, भागना=भाग, दौड़ना=दौड़, सूझना=सूझ, बूझना=बूझ)। शब्दों का योग विश्लिष्ट है।

कहासुनी, छीनाझपटी, तनातनी, काँटाफांसी, टालाटूली, भागाभागी आदि समासों का विग्रह करने पर यह स्पष्ट है कि इन समासों की रचना कहना+सुनना, छीनना+झपटना, तनना+तनना, काँटना+फाँसना, टालना+टालना, भागना+भागना आदि क्रियायों के योग से हुई है। समस्त पद संज्ञा, स्त्रीलिंग एकवचन का रूप लिए हुए है। समस्त पद में या तो पहिले ही शब्द की पुनरावृत्ति दूसरे शब्द में हुई है; जैसे—(तनना+तनना) अथवा दूसरा शब्द पहिले शब्द का पर्याय रूप है, अर्थात् दूसरे शब्द का वही अर्थ है जो पहिले शब्द का है। ध्वन्यात्मक दृष्टि से इन समासों के पहिले शब्द और द्वितीय शब्द के अन्तिम अक्षर 'ना' का लोप हो गया है। पहिले शब्द के अंत में 'आ' दीर्घ ध्वनि और दूसरे शब्द के अन्त में 'ई' दीर्घ ध्वनि का योग हो गया है। इस प्रकार समास का पहिला शब्द आकारांत और दूसरा शब्द ईकारांत बन गया है। दोनों शब्दों के प्रथम अक्षर में कोई ध्वन्यात्मक विकार नहीं होता। यदि पहिला अक्षर दीर्घ है तो वह दीर्घ ही रहेगा। जैसे—'काँटा-फांसी' में 'का' और 'फा'। जो ह्रस्व है वह ह्रस्व ही रहेगा। जैसे—कहा में 'क' और सुनी में 'सु'।

भागाभागी, मारामारी, जानाजानी, काटाकूटी, आदि समासों की रचना भागना+भागना, मारना+मारना, जानना+जानना, आदि शब्दों से हुई है। दोनों ही शब्द क्रिया हैं, और समस्त पद संज्ञा स्त्रीलिंग एक वचन के रूप में है। पहिले ही शब्द की पुनरावृत्ति दूसरे शब्द के रूप में हुई है। इस प्रकार ध्वन्यात्मक, अर्थात्मक और रूपात्मक दृष्टि से दोनों शब्दों का स्वरूप एक-सा है। समासगत

रूप में दोनों ही शब्दों में ध्वन्यात्मक विकार हो गया है। निरसामासिक रूप में इनका ध्वन्यात्मक स्वरूप 'ह् अ ह् ह् अ + ह् अ ह् ह् अ' का है, परन्तु समासगत रूप में यह 'ह् अ ह् अ ह् अ ह् अ' होगया है। समास के दोनों शब्दों के अंतिम वर्ण 'ना' का लोप हो गया है, तथा प्रथम शब्द के अंत में 'आ' दीर्घ ध्वनि के योग से उसका रूप आकारांत हो गया है। दूसरे शब्द के प्रथम अक्षर की दीर्घ 'आ' स्वर ध्वनि भी दीर्घ 'ऊ' स्वर ध्वनि में परिवर्तित हो गई है—(मा = मू, मा = मू, जा = जू)।

कहनसुनन, जलन-कुढ़न, समास की रचना भी देख-रेख, भाग-दौड़, की भाँति है। परन्तु देखरेख, भाग-दौड़, आदि समासों में जहाँ देखना, रेखना, भागना, दौड़ना, आदि में अंतिम वर्ण 'ना' का लोप हो जाता है, वहाँ कहन-सुनन में केवल अंतिम दीर्घ 'आ' स्वर ध्वनि का लोप होता है। दोनों शब्द अकारान्त हैं। इसका कारण यह है कि जहाँ भागना-दौड़ना, खेलना, कूदना में शब्दों का प्रथम वर्ण दीर्घ है वहाँ कहना, सुनना में 'क', 'सु' ध्वनि ह्रस्व है। इसीलिए कहना-सुनना क्रियाओं के योग से बने समास का रूप भागना, दौड़ना की भाँति 'कह,' 'सुन' का रूप नहीं लेता।

'खाना-पीना' का समासगत रूप भी 'खान-पान' होता है। इसमें भी कहन-सुनन की भाँति समासगत शब्दों के अंतिम वर्ण की दीर्घ 'आ' ध्वनि का ही लोप होता है (खाना = खान, पीना = पान)। यद्यपि भागना-दौड़ना की भाँति इन शब्दों के अंतिम वर्ण दीर्घ स्वर ध्वनियों के योग से बने हैं, परन्तु जहाँ भागना, दौड़ना त्रियाक्षरी शब्द हैं वहाँ खाना, पीना द्वयाक्षरी हैं। दूसरे शब्द के प्रथम वर्ण का ईकारान्त रूप भी आकारांत बन गया है।

आना, जाना, क्रियाओं के योग से बने समास का रूप खाना-पीना के खान-पान की भाँति आन-जान नहीं होता। इसका कारण यह है कि आन-जान का अर्थ आना-जाना से भिन्न है। 'आना' और 'जाना' क्रियाएँ हैं, जब कि 'आन' का अर्थ मर्यादा और 'जान' का अर्थ प्राण से है।

पूछना-पाछना, कूटना-काटना, चूसना-चासना, आदि समासों के विग्रह से यह स्पष्ट है कि इन समासों की रचना पूछना + पूछना, कूटना + कूटना, चूसन + चूसना क्रियाओं के योग से हुई है। समस्त पद संज्ञा पुल्लिग एकवचन हैं। फलतः दोनों शब्दों का स्वरूप ध्वन्यात्मक, रूपात्मक और अर्थात्मक दृष्टि से एकसा है। समास-गत रूप में दूसरा शब्द ध्वन्यात्मक विकार लिए हुए है। दूसरे शब्द के प्रथम वर्ण की दीर्घ स्वर ध्वनि 'ऊ' दीर्घ स्वर ध्वनि 'आ' में बदल गई है। 'पू' का 'पा' 'कू' का 'का' होगया है। इसका कारण यह है कि इन समासों की रचना जिन

शब्दों से हुई है, उनके प्रथम वर्ण दीर्घ स्वर ध्वनि 'ऊ' का योग लिए हुए हैं। जहाँ शब्दों का प्रथम वर्णदीर्घ 'आ' या 'ए' दीर्घ स्वर ध्वनि का योग लिए है वहाँ दूसरे शब्द का प्रथम वर्ण 'ऊकारान्त' होगया है, जैसे—भागना-भूगना, बैठना-बूठना, काटना-कूटना, चाटना चूटना।

उड़न-खटोला, उड़न-विज्ञान, उड़न-तश्तरी, आदि समासों की रचना में प्रथम शब्द 'उड़ना' क्रिया और दूसरा शब्द संज्ञा है। समस्त पद भी संज्ञा है। समासगत रूप में प्रथम शब्द में ध्वन्यात्मक विकार होगया है। 'उड़ना' शब्द की अंतिम दीर्घ स्वर ध्वनि 'आ' का लोप होगया है। निरसामासिक रूप में शब्दों का ध्वयन्यात्मक स्वरूप है 'अ ह ह अ' वह समासगत रूप में 'अ ह ह' होगया है। शब्दो का योग विश्लिष्ट है।

लट्ठधारण, संकटहरण, नशाउतारन, कामरोकन, आदि समासों की रचना में प्रथम शब्द संज्ञा, दूसरा शब्द क्रियापद और समस्त पद संज्ञा पुल्लिग एकवचन है। समासगत रूप में क्रियापदों के अंतिम वर्ण में 'आ' दीर्घ स्वर ध्वनि का लोप हो गया है—(धारणा = धारण, हरना = हरन, उतारना = उतारन, रोकना = रोकन)। समासगत शब्दों का योग विश्लिष्ट है। दांतकाटी, तापहारी, लट्ठधारी, जीवधारी, मृत्युकारी, लाभकारी, आदि समासों में प्रथम शब्द संज्ञा है, दूसरा शब्द क्रियापद है और समस्त पद विशेषण है। क्रियापद ध्वन्यात्मक विकार लेकर विशेषण रूप बन गए हैं। समासगत रूप में काटना, धरना, धारना, करना का क्रमशः हारी, धारी, कारी रूप होगया है। निरसामासिक शब्द रचना का ध्वन्यात्मक स्वरूप है 'ह अ ह ह अ' या 'ह ह ह अ', वह समासगत रूप में 'ह अ ह अ' होगया है। क्रियापदों के अंतिम वर्ण 'ना' का लोप हो गया है तथा अंत में दीर्घ स्वर ध्वनि 'ई' का योग और प्रथम वर्ण में 'आ' दीर्घ स्वर ध्वनि का योग है। जो ध्वनियाँ स्वतः ही दीर्घ है, उनका रूप दीर्घ बना रहा है, परन्तु ह्रस्व ध्वनियों में 'आ' दीर्घ स्वर ध्वनि का योग होगया है—(काटना = काटी, करना = कारी) यहाँ करना में 'क' का 'का' रूप बन गया है। समासों का योग विश्लिष्ट है।

गिरहकटी, जेबकटी, मुखमरी आदि समासों की रचना संज्ञा और क्रियापदों के योग से हुई है। समस्त पद संज्ञा स्त्रीलिंग एकवचन रूप में है। समासगत रूप में क्रियापदों में ध्वन्यात्मक विकार हो गया है और उन्होंने संज्ञा रूप ले लिया है। निरसामासिक रूप में इन क्रियापदों का ध्वन्यात्मक स्वरूप 'ह अ ह ह अ' है जो समास रूप में 'ह ह अ' के रूप में परिवर्तित होगया है। क्रियापदों के अंतिम वर्ण 'ना' का लोप होगया है तथा 'ना' वर्ण के स्थान पर 'ई' दीर्घ

स्वर ध्वनि का आगम हो गया है—(टना = टी, रना = री)। प्रथम वर्ण यदि दीर्घ स्वर ध्वनि का योग लिए हुए है तो दीर्घ स्वर ध्वनि का लोप हो गया है। आकारांत के स्थान पर ये ध्वनियाँ अकारांत बन गई हैं—(का=क, मा = म)। समासों का योग विश्लिष्ट है।

दिलजला, घरफुँका, घरघुसा, मनचला, सिरकटा, भुखमरा आदि समासों की रचना संज्ञा और क्रियापदों के योग से हुई है। समस्त पद विशेषण का रूप लिए हुए है। समासगत रूप में क्रियापदों में ध्वन्यात्मक विकार हो गया है, और वे विशेषणार्थी बन गए हैं। निरसामासिक रूप में क्रियापदों का जो ध्वन्यात्मक स्वरूप 'ह ह ह अ' है वह समासगत रूप में 'ह ह अ' होगया है। क्रियापदों के अंतिम वर्ण 'ना' का लोप होगया है, तथा अन्त में दीर्घ 'आ' स्वर ध्वनि का लोप होगया है— (टना=टा, कना = का, रना = रा)। इन समासों की रचना में प्रथम शब्द का रूप सदैव 'ह ह' या 'ह अ ह' होगा। प्रथम शब्द की रचना यदि दीर्घ ध्वनि के योग से हुई है तो वह भी ह्रस्व बन जायगी—(भुखमरी में 'भूख' का 'भुख' होगया है)। जो शब्द स्वतः ही ह्रस्व ध्वनियों के योग से बने हैं, उनमें कोई ध्वनिविकार नहीं होता। समासों का योग विश्लिष्ट है। इन समासों के दूसरे शब्दों की प्रथम ध्वनि दीर्घ है तो वह भी ह्रस्व बन जायगी—('ऊ' का 'उ', फूंकना फुंका, 'आ' का 'अ', काटना = कटा)।

भिखमंगा, मिठबोला, भडभूजा, चिड़ीमारा, मुँहमांगा, मुँहझौसा, सिरफिरा, फणकटा, मनमाना, आदि समासों की रचना संज्ञा और क्रियापदों के योग से हुई है। समस्त पद प्रयोग के अनुसार कहीं संज्ञा और कहीं विशेषण का रूप लिए हुए हैं। समासगत रूप में क्रियापदों के अन्तिम 'ना' वर्ण का लोप होगया है और उसके स्थान पर 'आ' दीर्घ स्वर ध्वनि का आगम हो गया है—(माँगना= मांगा, बोलना = बोला, भूंजना = भूंजा, मारना = मारा, मानना = माना)। इस प्रकार निरसामासिक रूप का ध्वन्यात्मक स्वरूप जो 'ह अ ह ह अ' है वह समास रूप में 'ह अ ह अ' होगया है। समासों का सम्बन्ध भेद्य-भेदक की स्थिति लिए हुए है। इसलिए प्रथम अक्षर की दीर्घ ध्वनि ह्रस्व बन गई है। भीख का भिख, मीठा का मिठ, भाड़ का भड, होगया है। जो शब्द स्वतः ही ह्रस्व ध्वनियों का योग लिए हुए है, उनमें ध्वनि विकार नहीं है। मिठबोला समास में प्रथम शब्द की दोनों दीर्घ ध्वनियों का लोप होगया है—(मीठा = मिठ) परन्तु धोतीफाडा, बादलफोड़ा, समासों के प्रथम शब्द की दीर्घ ध्वनियों के स्थान पर ह्रस्व ध्वनियों का प्रयोग नहीं होता। 'मिठबोला' की भाँति 'धुतफाड़ाया' 'बदलफोड़ा' नहीं होता। इन सभी समासों का योग विश्लिष्ट योग लिए हुए है।

दिलफूंक, घरफूंक, गिरहकट, जेबकट, चिड़ीमार, मुंहतोड़, कलमतराश, शिलाजीत, कामरोक, आदि समासों की रचना संज्ञा और क्रियापदों के योग से हुई है। समस्त पद प्रयोग के अनुसार कहीं विशेषण और कहीं संज्ञा का रूप लिए हुए हैं। समासगत रूप में क्रियापदों में ध्वन्यात्मक विकार अंतिम वर्ण 'ना' के लोप से हुआ है—(फूंकना=फूंक, काटना=कट, मारना=मार, तोड़ना=तोड़, तराशना=तराश, जीतना=जीत)। इस प्रकार निरसामासिक रूप का जो 'ह अ ह ह अ' का ध्वन्यात्मक स्वरूप है वह समासगत रूप में 'ह अ ह' होगया है। समासगत रूप में प्रथम शब्द की प्रथम ध्वनि भी ह्रस्व रूप लिए हुए है। पतझड़, कपड़छन में भी प्रथम शब्द की अंतिम 'आ' दीर्घ स्वर ध्वनि का लोप होगया है—(ता=त, डा=ड)। इन सभी समासों का योग विश्लिष्ट है।

नरेश, जगदीश वाग्यंत्र, सज्जन, मिष्ठान्न, विद्यालय, आदि समासों की रचना तत्सम शब्दों से हुई है तथा संस्कृत के संधि नियमों के अनुसार इनमें ध्वनि-विकार हुआ है। संधि रूप में ध्वनि-विकार लिए इन सभी समासों का योग संश्लिष्ट है।

सेत-मेत, मेजवेज, बिस्कुट-फिस्कुट, कुर्सी-उर्सी, उल्टा-सुलटा, गलत-सलत, झूंठमूठ, अगड़म-बगड़म, लस्टम-पस्टम, आदि समासों में पहिले ही शब्दों की पुनरावृत्ति हुई है। दूसरे शब्द का प्रथम अक्षर ध्वन्यात्मक दृष्टि से बदल गया है। ध्वन्यात्मक विकार का रूप एक-सा नहीं है (कहीं 'से' ध्वनि ने 'मे' का, कहीं 'बि' गे 'फि' का, 'कु' ने 'उ' का, 'उ' ने 'सु' का, 'अ' ने 'ब' का, 'ल' ने 'प' का रूप ले लिया है)। यह ध्वन्यात्मक विकार वास्तव में बोलने वाले पर निर्भर है। 'कुर्सी-उर्सी' के स्थान पर 'कुर्सी-फुर्सी' भी बोला जाता है। फिर भी दूसरे शब्द का प्रथम अक्षर पवर्ग के व्यंजन 'प फ ब भ' का रूप ही अधिक लेता है।

अगल-बगल, आस-पास, अड़ोस-पड़ोस, इर्द-गिर्द, उलटा-सुलटा, आन-बान, आना-जाना, आदि समासों का प्रथम शब्द किसी स्वर ध्वनि से शुरू होता है (अगल में 'अ', आस में 'आ', अड़ोस में 'अ', इर्द में 'इ', उलटा में 'उ, आन में 'आ', आना-जाना में 'आ') तथा दूसरा शब्द किसी व्यंजन से (बगल में 'ब', पास में 'पा', पड़ोस में 'प', गिर्द में 'गि', सुलटा में 'सु', बान में 'बा', जाना में 'जा') प्रारम्भ होता है। इसका अभिप्राय यह है कि समास के अन्तर्गत वे शब्द पहिले आते हैं जिनका प्रारम्भ ध्वन्यात्मक दृष्टि से स्वर से हो। परन्तु इसके लिए यह आवश्यक है कि रूपात्मक और अर्थात्मक दृष्टि से दोनों पद प्रधान होने चाहिए। उनमें भेद्य-भेदक या विशेषण-विशेष्य की स्थिति नहीं होनी चाहिए।

## २—२ निष्कर्ष

२—२ (१) हिन्दी समासों में ध्वनि विकार निम्न रूपों में देखने को मिलता है।

ध्वनि-लोप—यह ध्वनि-लोप स्वर, व्यंजन, अक्षर में होता है।

### (१) स्वर-लोप

| वाक्यांश | समास |
|---|---|
| घोड़ों की शाला | घुड़साल (शाला = साल, 'ला' की 'आ' ध्वनि का लोप) |
| संकट हरना | संकटहरन (हरना = हरन, 'ना' की 'आ' ध्वनि का लोप) |
| कहना सुनना | कहन-सुनन (कहना = कहन, सुनना = सुनन, 'ना' की 'आ' ध्वनि का लोप) |
| काला मुँह | कल मुँहा (काला = कल, 'ला' की 'आ' ध्वनि का लोप) |
| खट्टा मीठा, | खट-मिट्ठा (खट्टा = खट, 'टा' की 'आ' ध्वनि का लोप) |
| पानी की बिजली | पनबिजली (पानी = पन, 'नी' की 'ई' ध्वनि का लोप) |
| टूटी पूँजी | टुटपूँजिया (टूटी = टुट, 'टी' की 'ई' ध्वनि का लोप) |

### (२) व्यंजन-लोप

| वाक्यांश | समास |
|---|---|
| नाक कटना | नककटा (कटना = कटा, 'न' व्यंजन का लोप) |
| दिल जलना | दिलजला (जलना = जला, 'न' व्यंजन का लोप) |
| तीन मंजिला | तिमंजिला (तीन = ति, 'ना' व्यंजन का लोप) |
| चार राहा | चौराहा (चार = चौ, 'र' व्यंजन का लोप) |

### (३) अक्षर-लोप

| वाक्यांश | समास |
|---|---|
| देखना भालना | देखभाल (देखना = देख, भालना = भाल, अंतिम 'ना' अक्षर का लोप) |
| टालना टालना | टालमटूल (टालना = टाल, अन्तिम 'ना' अक्षर का लोप) |
| भागना दौड़ना | भागदौड़ (भागना = भाग, दौड़ना = दौड़, अन्तिम 'ना' अक्षर का लोप) |

| | |
|---|---|
| खाकर पीकर | खा-पीकर (खाकर=खा, 'कर' अक्षर का लोप) |
| नातेदार रिश्तेदार | नाते-रिश्तेदार (नातेदार=नाते, 'दार' अक्षर का लोप) |

ध्वनि आगम—यह ध्वनि आगम निम्न रूपों में देखा जा सकता है—

## (१) स्वरागम

| वाक्यांश | समास |
|---|---|
| गट गट | गटागट (गट और गट के बीच 'आ' ध्वनि का आगम) |
| सात नाज | सतनजा (नाज=नजा, 'ज' ध्वनि में 'आ' ध्वनि का आगम) |
| दूध मुँह | दुधमुँहा (मुँह=मुँहा, 'ह' ध्वनि में 'आ' ध्वनि आगम) |
| हाथ हाथ | हाथोंहाथ (हाथ=हाथों, 'थ' ध्वनि में ओ ध्वनि का आगम) |
| लठ लठ | लठालठी (लठ=लठी, 'ठ' ध्वनि में 'ई' ध्वनि का आगम) |

## (२) व्यंजनागम

| वाक्यांश | समास |
|---|---|
| जूता जूता | जूतमजूता (जूता=जूतम, 'म' व्यंजन का आगम) |
| घिस घिस | घिस्समघिस्सा (घिस=घिस्सम, 'स' तथा 'म व्यंजन का आगम) |

## (३) अक्षरागम

| वाक्यांश | समास |
|---|---|
| सब सब | सब के सब ('के' अक्षर का आगम) |
| मन मन | मन ही मन ('ही' अक्षर का आगम) |
| दिन दिन | दिन ब दिन ('ब' अक्षर का आगम) |

## दीर्घ ध्वनियों का ह्रस्वीकरण

| वाक्यांश | समास |
|---|---|
| हाथ कड़ी | हथकड़ी (हाथ=हथ, 'आ' ध्वनि का 'अ' में ह्रस्वीकरण) |

| | |
|---|---|
| आध पका | अधपका (आध=अध 'आ' ध्वनि का 'अ' में ह्रस्वीकरण) |
| तीन मंजिल | तिमंजिला (तीन=ति, 'ई' ध्वनि का 'इ' में ह्रस्वीकरण) |
| मूंड चीर | मुंड चीरा (मूंड=मुंड, 'ऊ' ध्वनि का 'उ' में ह्रस्वीकरण) |
| दूध मुँह | दुध मुँहा (दूध=दुध, 'ऊ' ध्वनि का 'उ' में ह्रस्वीकरण) |
| छोटा भय्या | छुट भय्या (छोटा=छुट, 'ओ ध्वनि का 'उ' में ह्रस्वीकरण) |
| दो पट्टा | दुपट्टा (दो=दु, 'ओ' ध्वनि का 'उ' में ह्रस्वीकरण) |

## ह्रस्व ध्वनियों का दीर्घीकरण

| वाक्यांश | समास |
|---|---|
| चार राह | चौराहा (राह=राहा, 'अ' ध्वनि का 'आ' में दीर्घीकरण) |
| गिरि ईश | गिरीश (गिरि=गिरी, 'इ' ध्वनि का 'ई' ध्वनि में दीर्घीकरण) |
| भानु उदय | भानूदय (भानु=भानू, 'उ' ध्वनि का 'ऊ' ध्वनि में दीर्घीकरण) |
| महो औज | महौज (महो=महो, 'ओ' ध्वनि का 'ओ' ध्वनि में दीर्घीकरण) |

## अघोष ध्वनियों का घोषीकरण

| वाक्यांश | समास |
|---|---|
| डाक घर | डाग्घर (डाक=डाग, 'क' अघोष ध्वनि का 'ग' घोष ध्वनि में रूपान्तर) |
| जगत ईश | जगदीश (जगत=जगद्, 'क' अघोष ध्वनि का 'ग' घोष ध्वनि में रूपान्तर) |
| वाक शूर | वाग्शूर (वाक=वाग, 'क' अघोष ध्वनि का 'ग' घोष ध्वनि में रूपान्तर) |

## द्वित्वीकरण

| वाक्यांश | समास |
|---|---|
| दो तला | दुतल्ला (तला=तल्ला, 'ल' व्यंजन का द्वित्वीकरण) |
| एक आना | इकन्नी (आना=अन्नी, 'न' व्यंजन का द्वित्वीकरण) |
| लठ लठ | लट्ठमलट्ठा (लठ=लट्ठा, 'ठ' व्यंजन का द्वित्वीकरण) |

## ध्वनि रूपान्तर

| वाक्यांश | समास |
|---|---|
| भागना भागना | भागना-भूगना (भागना = भूगना, 'आ' ध्वनि का 'ऊ' में रूपान्तर) |
| पूछना पूछना | पूछना-पाछना (पूछना = पाछना, 'ऊ' ध्वनि का 'आ' में रूपान्तर) |
| वैठना वैठना | वैठना-वाठना (वैठना=वाठना, 'ऐ' ध्वनि का 'आ' में रूपान्तर) |
| ओढ़ना ओढ़ना | ओढ़ना-आढ़ना (ओढ़ना = आढ़ना, 'औ' ध्वनि का 'आ' ध्वनि में रूपान्तर) |

२—२ (२) ध्वन्यात्मक दृष्टि से हिन्दी समासों के ध्वनि-विकारी और ध्वनि-अविकारी—दोनों ही रूप देखने को मिलते हैं। ध्वनि-अविकारी समासों से अभिप्राय यही है कि वाक्यांश रूप में समासों का जो रूप है, समास-रचना में भी समासगत शब्द वहीं रूप लिए हों। सुर, मात्रा, आघात, उत्कर्ष, अपकर्ष, आरोह, अवरोह आदि ध्वनि-प्रक्रिया के रागात्मक तत्वों को छोड़कर जिनमें अन्य किसी प्रकार का ध्वनि-विकार न हो।

२—२ (३) हिन्दी के जो समास संस्कृत के तत्सम शब्दों के योग से बनते हैं तथा जिनमें संस्कृत संधि के नियम लागू नहीं होते, उन समासों में ध्वनि-विकार नहीं होता।

२—२ (४) संस्कृत की भांति हिन्दी के समासों में संधि का होना आवश्यक नहीं। हिन्दी के अनेक समासगत पदों में संधि नहीं होती। उदाहरण के लिए घर-आंगन, धर्म-अधर्म, राम-आसरे, प्रभु-आदेश, सरस्वती-उपासना, स्वास्थ्य-अधिकारी।

२—२ (५) जिन समासों की रचना अंग्रेजी, फारसी, अरबी, आदि हिन्दीतर भाषाओं के योग से होती है, उनमें भी प्रायः ध्वनि-विकार नहीं होता।

२—२ (६) हिन्दी के सभी ध्वनि-अविकारी समासों का योग विश्लिष्ट होता है। आघात दोनों शब्दों पर अलग-अलग होता है। समास के पहिले शब्द पर आघात प्रमुख, और दूसरे पर गौण होता है।

२—२ (७) ध्वनि-विकार हिन्दी के तद्भव शब्दों से बने समासों में ही होता है। परन्तु यह आवश्यक नहीं कि हिन्दी के तद्भव शब्दों से बने

समासों में अनिवार्य रूप से ध्वनि-विकार हो। तद्भव शब्दों में ध्वनि-विकार होता है और नहीं भी।

२—२ (८) ध्वन्यात्मक विकार समासगत पदों के कभी प्रथम शब्द में, कभी द्वितीय शब्द में, और कभी दोनों शब्दों में होता है।

२—२ (९) जिन समासों की रचना केवल व्यंजन ध्वनियों से होती है, अथवा जिन शब्दों का रूप समास में ह ह (व्यंजन+व्यंजन) का रूप लिए हुए रहता है उनमें ध्वनि-विकार नहीं होता।

२—२ (१०) जिन समासों का पहिला शब्द संख्यावाची, परिमाणवाची या गुणवाची विशेषण होता है, दूसरा शब्द विशेष्य होता है। विशेषण शब्द संस्कृत का तत्सम शब्द या हिन्दीतर भाषा का शब्द नहीं होता, रचना द्वयाक्षरी रूप में होती है तथा अक्षर दीर्घ ध्वनियों का योग लिए रहते हैं तो ऐसे विशेषण शब्दों में ध्वन्यात्मक विकार होता है। दीर्घ स्वर ध्वनियाँ ह्रस्व ध्वनियों में परवर्तित हो जाती हैं। यदि समासों की रचना में दोनों पद विशेषण हों और समस्त पद भी विशेषण हों तथा वे विशेषण-विशेष्य की स्थिति में न होकर द्वन्द्व की स्थिति में हों तो समासगत विशेषण शब्दों में ध्वनिविकार नही होता।

२—२ (११) यदि समास की रचना रूपात्मक दृष्टि से भेदक-भेद्य की स्थिति लिए हुए रहती है तो समासगत प्रथम शब्द की दीर्घ ध्वनियाँ ह्रस्वरूप ले लेती हैं। ध्वन्यात्मक विकार की यह स्थिति द्वयाक्षरी शब्दों में ही होती है। परन्तु यह ध्वन्यात्मक विकार अनिवार्य रूप से नहीं होता। इसके अपवाद भी हैं।

२—२ (१२) जिन समासों में प्रथम पद भेदक और दूसरा भेद्य हो। दोनों पद संज्ञा और समस्त पद संज्ञा हो तो समास के अन्तर्गत द्वितीय शब्द की अन्तिम दीर्घ ध्वनि का लोप हो जाता है।

२—२ (१३) यदि समास की रचना में पहिला शब्द विशेषण हो, दूसरा शब्द विशेष्य हो और समस्त पद या तो संज्ञा हो अथवा विशेषण, तो समास के प्रथम शब्द में ध्वन्यात्मक विकार के रूप में जहाँ दीर्घ ध्वनियों का ह्रस्व रूप हो जाता है वहीं दूसरे शब्द के अन्तिम अक्षर में दीर्घ 'आ' स्वर ध्वनि का आगम हो जाता है। अकारांत व्यंजन आकारान्त हो जाता है।

२—२ (१४) यदि समास की रचना में दोनों शब्द रूपात्मक, अर्थात्मक और ध्वन्यात्मक दृष्टि से एक-सा रूप लिए हुए रहते हैं, उनमें भेदक-भेद्य या विशेषण-विशेष्य की स्थिति नहीं होती तो समास के अन्तर्गत वे शब्द पहिले आते हैं जिनका प्रारम्भ ध्वन्यात्मक दृष्टि से स्वर रूप में हो।

२—२ (१५) जिन समासों में पहिले ही शब्द की पुनरावृत्ति दूसरे शब्द में होती है या दोनों शब्दों का रूप ध्वन्यात्मक, अर्थात्मक, रूपात्मक दृष्टि से एक-सा होता है तब समासगत रूप में प्रायः दोनों शब्दों के मध्य में 'म, न, ही, के', आदि नई ध्वनियों का आगम हो जाता है। कभी पहिले पद में ध्वन्यात्मक विकार होता है, कभी दूसरे पद में, कभी दोनों पदों में।

२—२ (१६) जिन समासों का निर्माण क्रियाओं के योग से होता है तथा क्रियायें संज्ञा अथवा विशेषण का रूप ग्रहण करती हैं तब उनमें ध्वन्यात्मक विकार अनिवार्य रूप से होता है। अन्तिम 'ना' वर्ण का प्रायः लोप हो जाता है।

२—२ (१७) जिन समासों का निर्माण संज्ञा, विशेषण, अव्यय के योग से होता है, और यदि ये संस्कृत के तत्सम शब्द अथवा हिन्दीतर भाषा के शब्द नहीं हैं, बल्कि हिन्दी के तद्भव शब्द हैं तो समासगत रूप में प्रायः उनकी दीर्घ ध्वनियाँ ह्रस्व हो जाती हैं।

२—२ (१८) हिन्दी समासों में ह्रस्व ध्वनियों का लोप नहीं होता, दीर्घध्वनियों का लोप होता है अथवा दीर्घ ध्वनियों का ह्रस्वीकरण हो जाता है।

२—२ (१९) जिन समासों में संधि होती है, उन समासों के शब्दों का योग संश्लिष्ट होता है।

२—२ (२०) जिन समासों का योग संश्लिष्ट होता है, उनमें आघात समास के शब्दों पर अलग-अलग न होकर किसी एक अक्षर पर एक ही बार होता है। समासों का उच्चारण एकरसता लिए रहता है।

२—२ (२१) जिन समासों का योग विश्लिष्ट होता है, उनमें आघात पहिले शब्द पर प्रमुख, दूसरे पर गौण होता है।

२—२ (२२) हिन्दी के समासगत शब्दों में ध्वन्यात्मक विकार होने का कोई निश्चित आधार नहीं है। यह सब प्रयोग पर निर्भर है।

## २—३ वर्गीकरण

ध्वन्यात्मक दृष्टि से हिन्दी समासों का निम्न प्रकार से वर्गीकरण किया जा सकता है :—

२—३ (१) **अविकारी समास**—जब समासगत शब्दों के योग में सुर, मात्रा, आघात आदि को छोड़कर किसी प्रकार का ध्वनिविकार नहीं होता तब वे ध्वनि-अविकारी समासों का रूप ग्रहण करते हैं। उदाहरण :—विद्युतगृह, बिजलीघर, घरजमाई, राजामंडी, हाथ-पांव, रातदिन, दृष्टिकोण, जीवन-दीप, बगुला-भगत, तीन-तेरह, हिन्दी-साहित्य ।

२—३ (२) **विकारी समास**—समास का रूप लेने में जब शब्दों के स्वरूप में ध्वन्यात्मक दृष्टि से कोई परिवर्तन हो तब उसे विकारी समास कहेंगे। ध्वनिविकारी समासों के निम्न भेद किए जा सकते हैं :—(१) प्रथम पद विकारी समास, (२) द्वितीय पद विकारी समास, और (३) सर्वपद विकारी समास।

२—३ (२) १—**प्रथम पद विकारी समास**—समास के प्रथम शब्द में ध्वनि-विकार हो, उसे प्रथम पद विकारी समास कहेंगे। उदाहरण :—हथकड़ी, कठपुतली, वंसलोचन, रजूपत, अधकच्चा, छुटभइया, पनचक्की ।

२—३ (२) २—**द्वितीय पद विकारी समास**—जिस समास के दूसरे पद में ध्वनिविकार हो, उसे द्वितीय पद विकारी समास कहेंगे। उदाहरण :—मोतीचूर, चिड़ीमार, जेबकट, घरफूंका, दिलजला, घरबार, होना-हवाना, धोना-धाना, मनबहलाव ।

२—३ (२) ३—**सर्वपद विकारी समास**—जिस समास के सभी पदों में ध्वनि-विकार हो उसे सर्वपद विकारी समास कहेंगे। उदाहरण :—कनकटा, मुंडचीरा, दुधमुँहा, दुवारा, टुटपूंजिया, खटमिट्ठा, इकन्नी, चवन्नी, छीना-झपटी, भिखमंगा, भड़भूजा, कठफोड़वा।

२—३ (३) **संश्लिष्ट समास**—समास के शब्द जब परस्पर एक-दूसरे से मिल जाते हैं। संश्लिष्ट समासों में आघात समासगत पदों पर अलग-अलग न होकर समस्त पद पर एक समान होता है, तथा समस्त पद का उच्चारण एकरसता लिए हुए रहता है। उदाहरण :—

इकन्नी, चवन्नी, चौपाया, जूतमजूता, गटागट, जगदीश, हैदराबाद, धर्माधर्म, गर्मागर्मी ।

२—३ (४) विश्लिष्ट समास—समास के शब्द जब परस्पर न मिलकर अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखते हैं । विश्लिष्ट समासों में आघात प्रथम शब्द पर प्रमुख तथा दूसरे शब्द पर गौण होता है । उदाहरण :— पथ-प्रदर्शक, भाई-बहिन, रात-दिन, हथकड़ी, जीवन-निर्माण, खुशमिजाज, कांग्रेस-अध्यक्ष ।

अध्याय ३

# रूप-प्रक्रिया के क्षेत्र में हिन्दी समास-रचना की प्रवृत्तियों का अध्ययन

३—१ रूपात्मक दृष्टि से हिन्दी समास-रचना के विविध प्रकार और उनका विश्लेषण।

३—२ निष्कर्ष।

३—३ वर्गीकरण।

: ३ :

## ३—१ रूपात्मक दृष्टि से हिन्दी समास-रचना के विविध रूप और उनका विश्लेषण

रूपात्मक दृष्टि से हिन्दी-भाषा में समासों के निम्न प्रकार पाए जाते हैं :-

### ३—१ (१) प्रकार—

हथकड़ी, कठपुतली, पनचक्की, गठबंधन, घोड़ागाड़ी, देश-निष्कासन, मोतीचूर, अमचूर, रेलगाड़ी, मोटरगाड़ी, हिन्दी-साहित्य, घर-जमाई, राजमंत्री, डाक-घर, बिजली-घर, आतम-तेज, देश-सेवा, राष्ट्र-सेवा, सीमा-विवाद, रक्षा-संगठन, जीवन-निर्माण, पथ-प्रदर्शन, मार्ग-व्यय, राह-खर्च, दियसलाई, कांग्रेस-अध्यक्ष, जिलाधीश, विद्यालय, चरित्र-निर्माण, वीणा-वादन, संकट-हरण, हाथी-दाँत, गजदन्त, हस्ताक्षर, मकानमालिक, नरेश, जगदीश, रसोईघर, विद्युत-गृह, सौन्दर्य-शास्त्र, अग्निबोट, कनखजूरा, दस्तखत, प्रवेशद्वार, हिन्दी-शिक्षा, नारी-विद्या, मातृ-वाणी, जीवन-रक्षा, शोध-संस्थान, सभानेत्री, ग्राम-सेवक, दूध-विक्रेता, मार्ग-व्यय, घी-बाजार, शेयर-बाजार, क्रोधाग्नि, उत्साह-प्रदर्शन, संसद-भवन, उर्दू-शैली, अंग्रेजी-पत्रिका, भारत-मैत्री, चन्द्र-किरण, स्वप्न-दर्शन, निर्माण-शाला, प्रभु-आदेश, राम-आसरे, सरस्वती-उपासना, स्वास्थ्य-अधिकारी, बंसलोचन, नयन-सुख, मयूर-सिंहासन, जीवनदीप, आशादीप, विजय-वैजयन्ती, कीर्ति-पताका, जीवन-संगीत, आशा-लता, ग्राम-सेवकों, दूध-विक्रेताओं।

#### विश्लेषण

रचना की दृष्टि से इन समासों के दोनों शब्द संज्ञापद हैं, तथा कार्यात्मक दृष्टि से इनका रूप संज्ञावाची है; अर्थात् सभी समास संज्ञापदों के योग से बने संज्ञापद है। अमचूर, मोतीचूर, बंसलोचन, घरजमाई, राजमंत्री, जीवन-

निर्माण, पथ-प्रदर्शन, राजकुमार, कांग्रेस-अध्यक्ष, जिलाधीश, हाथीदाँत, गज-दंत, जगदीश, नरेश, मकानमालिक, मयूर-सिंहासन, कनखजूरा, प्रवेशद्वार, आदि समासों में दोनों शब्द संज्ञा पुल्लिग हैं और समस्त पद भी संज्ञा पुल्लिग है। रेलगाड़ी, मोटरगाड़ी, हिन्दी-शिक्षा, नारी-विद्या, मातृवाणी, सभानेत्री में दोनों पद संज्ञा स्त्रीलिंग हैं, और समस्त पद भी संज्ञा स्त्रीलिंग है।

हिन्दी-साहित्य, शोध-संस्थान, कांग्रेस-अध्यक्ष, राहखर्च, बिजली-खर्च डाकघर में प्रथम पद संज्ञा स्त्रीलिंग, दूसरा पद संज्ञा पुल्लिग, और समस्त पद संज्ञा पुल्लिग है।

हथकड़ी, कठपुतली, पनचक्की, घोड़ागाड़ी, राजामंडी, देशसेवा, में पहला पद संज्ञा पुल्लिग और दूसरा पद संज्ञा स्त्रीलिंग, और समस्त पद भी संज्ञा स्त्रीलिंग है।

ग्राम-सेवकों, दूध विक्रेताओं में पहिला पद संज्ञा एकवचन, दूसरा शब्द संज्ञा बहुवचन और समस्त पद संज्ञा बहुवचन है।

हथकड़ी, कठपुतली, राजमंत्री, पनचक्की, मकान-मालिक, घर-जमाई, देश-सेवा, जीवन-निर्माण, हाथी-दाँत, में दोनों शब्द संज्ञा एकवचन और समस्त पद भी संज्ञा एकवचन है।

अमचूर, मोतीचूर, वंसलोचन, घुड़साल, रेलगाड़ी, घरजमाई, मोटरगाड़ी, राजमंत्री, संसदभवन, बिजलीघर, दियसलाई, जिलाधीश, राहखर्च, रसोईघर, अग्निबोट, कनखजूरा, दस्तखत, हस्ताक्षर, नारीविद्या, शोधसंस्थान, सभानेत्री, ग्रामसेवक, दूधविक्रेता, घी-बाजार, शेयरबाजार, आदि समासों में दोनों शब्द जातिवाचक संज्ञाएँ हैं और समस्त पद भी जातिवाचक संज्ञाए है। गठबंधन, आत्मतेज, देशसेवा, राष्ट्रसेवा, सीमाविवाद, पथप्रदर्शन, मातृवाणी, जीवनरक्षा ग्रामसंगठन, में प्रथम पद जातिवाचक संज्ञा, दूसरा पद भाववाचक संज्ञा और समस्त पद भी भाववाचक संज्ञा है। अंग्रेजी-पत्रिका, चन्द्रकिरण, चीनसेना, कबीर-शब्दावली में पहिला पद व्यक्तिवाचक संज्ञा, दूसरा पद जातिवाचक संज्ञा और समस्त पद भी जातिवाचक संज्ञा है। उत्साह-प्रदर्शन, स्वप्नदर्शन, सेवाभाव, रक्षासंगठन, आदि समासों में दोनों पद भाववाचक संज्ञा और समस्त पद भी भाववाचक संज्ञा है। क्रोधाग्नि,निर्माणमंदिर, आशादीप, प्रवेशद्वार, में पहिला पद भाववाचक संज्ञा और दूसरा पद जातिवाचक संज्ञा है, समस्त पद प्रयोग के अनुसार भाववाचक या जातिवाचक संज्ञा है।

संज्ञा और संज्ञा के योग से बने डाकघर, रसोई-घर, सीमाविवाद, कांग्रेस-मंत्री, जीवननिर्माण, राष्ट्र-सेवा, राजपुत्र, हथकड़ी, कठपुतली, पन-बिजली,

शेयर-बाजार, दूध विक्रेता, चीनसेना, ग्रामसंगठन, शोधपीठ, अग्निबोट, राहखर्च, आदि समास भेदक-भेद्य की स्थिति लिए हुए हैं। इनमें पहिला शब्द भेदक है और दूसरा शब्द भेद्य। डाकघर में 'घर' से अभिप्राय उसी घर से है जहाँ डाक का कार्य होता है। रसोईघर में 'घर' से अभिप्राय केवल उसी स्थान से है जहाँ रसोई बनती है। प्रत्येक घर को रसोईघर नहीं कहा जा सकता। सीमा-विवाद में भी 'विवाद' का रूप सीमा तक सीमित है। अन्य विवादों को सीमा-विवाद नहीं कहा जा सकता। यही स्थिति अन्य समासों के सम्बन्ध में भी है; अर्थात् पहिला शब्द दूसरे शब्द के लिए भेद उत्पन्न करने वाला है।

भेदक-भेद्य की स्थिति लिए इन समासों के शब्दों का क्रम निश्चित होता है, उन्हें बदला नहीं जा सकता। घोड़ागाड़ी का 'गाड़ीघोड़ा' नहीं हो सकता। प्रवेशद्वार का द्वारप्रवेश नहीं हो सकता। हिन्दी-शिक्षा का शिक्षा-हिन्दी नहीं किया जा सकता।

भेदक-भेद्य की स्थिति लिए इन समासों के लिंग का निर्धारण दूसरे पद के अनुसार होता है। यदि पहला पद स्त्रीलिंग है, दूसरा पद पुल्लिंग है तो समस्त पद पुल्लिंग होगा। जैसे हिन्दी-साहित्य में 'हिन्दी' स्त्रीलिंग है, 'साहित्य' पुल्लिंग है, और समस्त पद 'हिन्दी-साहित्य' द्वितीय पद के अनुसार पुल्लिंग है। शोध-संस्थान में 'शोध' शब्द संज्ञा स्त्रीलिंग है, 'संस्थान' शब्द पुल्लिंग है और समस्त पद 'शोध-संस्थान' दूसरे पद के अनुसार संज्ञा पुल्लिंग है।

क्रिया के लिंग का निर्धारण भी दूसरे पद के अनुसार होता है। उदाहरण के लिए देशसेवा में 'देश' पुल्लिंग है, 'सेवा' स्त्रीलिंग है, और समस्त पद स्त्रीलिंग है। फलतः क्रिया का रूप भी दूसरे पद के अनुसार स्त्रीलिंग ही होगा। 'देश-सेवा हो रही' में 'हो रही' है क्रिया स्त्रीलिंग रूप में है। आशादीप में 'आशा' स्त्रीलिंग है, 'दीप' पुल्लिंग है और समस्त पद भी पुल्लिंग है। क्रिया का रूप भी द्वितीय पद के अनुसार पुल्लिंग है। 'आशा दीप बुझ गया' में 'गया' क्रिया पुल्लिंग है।

सम्बन्ध-सूचक प्रत्यय का लिंग भी द्वितीय पद के अनुसार होता है। जैसे हिन्दी-साहित्य में द्वितीय पद पुल्लिंग है, इसलिए 'हिन्दी' और 'साहित्य' का सम्बन्ध जोड़ने वाले सम्बन्ध-सूचक शब्द 'का' का रूप भी 'हिन्दी का साहित्य' में 'का' रूप में पुल्लिंग होगा। 'ग्रामरक्षा' में 'ग्राम' शब्द पुल्लिंग है और 'रक्षा' शब्द स्त्रीलिंग है। समस्त पद भी स्त्रीलिंग है। फलतः यहाँ सम्बन्व-सूचक शब्द 'का' का रूप भी 'ग्राम की रक्षा' के रूप में 'की' स्त्रीलिंग होगा।

इन भेदक-भेद्य की स्थिति वाले समासों का विग्रह किया जाय तो वाक्यांश रूप में सम्बन्ध-सूचक विभक्तियों का[1] योग करना पड़ेगा।

उदाहरण के लिये :—

| समास | वाक्यांश |
|---|---|
| कठपुतली | काठ की पुतली |
| पनचक्की | पानी की चक्की |
| हथकड़ी | हाथ की कड़ी |
| घोड़ागाड़ी | घोड़ा की गाड़ी |
| गठवंधन | गांठ का वंधन |
| मोतीचूर | मोती का चूरा |
| रेलगाड़ी | रेल की गाड़ी |
| हिन्दी-साहित्य | हिन्दी का साहित्य |
| घरजमाई | घर का जमाई |
| डाकघर | डाक का घर |
| विद्यालय | विद्या का आलय |
| देश-निष्कासन | देश से निष्कासन |
| वलि-पशु | वलि के लिये पशु |

समासगत रूप में इन सम्वन्ध-सूचक विभक्तियों का लोप हो जाता है। अतः ऐसे समासों की रचना का प्रधान लक्षण सम्वन्ध-सूचक विभक्तियों का लोप होना है। सम्वन्ध-सूचक विभक्तियों में सम्वन्धकारक की 'का' विभक्ति का लोप ही अधिक होता है। क्योंकि भेदक-भेद्य स्थिति वाले यह समास परस्पर सम्वन्ध-कारक से ही जुड़े रहते हैं। 'ने' कर्त्ताकारक की विभक्ति का योग इन समासों में कभी नहीं होता। । सम्वन्ध कारक को छोड़कर अन्य कारक विभवितयों का योग भी नहीं के वरावर है। सम्वन्ध कारक की विभक्ति भी 'का' सम्वन्ध प्रत्यय के रूप में ही इन समासों की रचना में व्यवहृत होती है।

इन समासों में पहिला भेदक शब्द सदैव तिर्यक रूप (Oblique Form) में ही होता है। कारक रूप में वह क्रिया के साथ अपना सम्वन्ध स्थापित नहीं करता। क्रिया का कारक दूसरा ही पद होता है। पहिला शब्द दूसरे शब्द का आश्रित होकर ही परोक्ष रूप में क्रिया से अपना सम्वन्ध जोड़ता है।

---

१. सम्वन्ध-सूचक विभक्तियों को यहां व्यापक अर्थ में लिया गया है। सम्वन्ध-सूचक विभक्तियों से अभिप्राय यहां ने, को, से, में, पर, के लिये, का, आदि कारक विभक्तियां तथा क, र, न आदि सम्वन्ध प्रत्ययों से है।

कारक रूप में क्रिया का आधार दूसरा पद होने से ये समास व्यधिकरण का रूप लिए हुए हैं। वास्तव में इन समासों में दूसरे शब्द भेद्य की रूपात्मक सत्ता प्रमुख होती है, पहिले शब्द भेदक की रूपात्मक सत्ता गौण। समास रचना की साझेदारी में भेदक निष्क्रिय साझेदार है, भेद्य सक्रिय।

भेदक-भेद्य की स्थिति लिए इन समासों में पहिला पद सदैव एकवचन रूप में होगा। यदि पहिला पद बहुवचन रूप में होगा तो ऐसे बहुवचन वाले शब्द के योग से समास रचना नहीं होगी। उदाहरण के लिए 'राजपुत्र' समास में 'राज' शब्द एकवचन रूप में ही आयेगा। 'राजा' को बहुवचन रूप देकर 'राजाओं' पुत्र नहीं कहा जा सकता। फिर इसका रूप 'राजाओं के पुत्र' के रूप में वाक्यांश की भाँति होगा। समस्त पद को बहुवचन का रूप देने के लिए बहु-वचन प्रत्यय का योग अन्तिम पद में ही किया जायगा। जैसे 'ग्राम-सेवक' एक-वचन समास को बहुवचन का रूप देने के लिए 'ग्राम-सेवकों' के रूप में द्वितीय पद 'सेवक' में बहुवचन का 'ओं' प्रत्यय जोड़ा जायगा। इस स्थिति में द्वितीय पद ही बहुवचन का रूप लेगा, प्रथम पद नहीं। प्रथम पद का रूप एक वचन ही होगा। 'ग्राम-सेवकों' में 'सेवक' बहुत से हैं, ग्राम नहीं। 'राजपुत्रों' में पुत्र बहु-वचन में है, राजा नहीं। 'राजपुत्रों' से अभिप्राय एक ही राजघराने के अनेक पुत्रों से है।

क्रिया के वचन का निर्धारण भी द्वितीय पद के अनुसार होता है। 'राष्ट्र-नेता पधार रहे हैं' में क्रिया का बहुवचन रूप 'नेता' के कारण है क्योंकि 'नेता पधार रहे हैं' में भी यह बात है। राष्ट्र अच्छे हैं, ऐसा नहीं कहा जायगा। राष्ट्र अच्छा है, कहा जायगा।

सम्बन्ध-सूचक शब्दों के वचन का रूप भी द्वितीय पद के अनुसार होता है। जैसे 'ग्राम-सेवक' में द्वितीय पद एकवचन है तो सम्बन्ध-सूचक शब्द 'का' का रूप ( ग्राम का सेवक ) एकवचन होगा। परन्तु 'ग्राम-सेवकों' में 'का' का बहु-वचन रूप 'के' ( ग्राम के सेवकों ) हो जायगा।

वाक्य में इन समासों का सम्बन्ध अन्य पदों के साथ द्वितीय पद के अनुसार होगा। उदाहरण के लिए 'साहित्य' शब्द के पुल्लिंग होने के कारण 'हिन्दी-साहित्य' समास के लिए 'मेरा हिन्दी-साहित्य' कहा जायगा। प्रथम शब्द 'हिन्दी' स्त्रीलिंग के अनुरूप मेरी 'हिन्दी साहित्य' नहीं होगा। 'घुड़साल' समास के लिए राम की घुड़साल कहा जायगा, राम का घुड़साल नहीं। इसका कारण यही है कि घुड़साल में पहिला 'घोड़ा' शब्द पुल्लिंग है और दूसरा शब्द 'शाला' स्त्रीलिंग

है। फलतः इस समास का सम्बन्ध दूसरे शब्द के अनुरूप वाक्य के अन्य शब्दों के साथ स्त्रीलिंग रूप में होगा।

भेदक-भेद्य की स्थिति वाले इन समासों में क्रिया का कर्त्ता दूसरा पद होता है, पहिला पद नहीं है। 'घर जमाई आरहा है' में आने का कार्य जमाई करता है, घर नहीं। 'मकान मालिक जा रहा है' में जाने का कार्य मालिक करता है, मकान नहीं। इस प्रकार ऐसे समासों में क्रिया का आधार दोनों पद न होकर दूसरा पद ही होता है।

ऊपर के विश्लेपण से स्पष्ट है कि इस प्रकार के समासों में दूसरे शब्द की रूपात्मक सत्ता प्रमुख होती है, पहिले शब्द की गौण। समस्त पद का व्याकरणिक रूप द्वितीय पद के अनुरूप होगा। यदि पहिला पद जातिवाचक संज्ञा है, दूसरा पद भाववाचक संज्ञा है तो समस्त पद भी भाववाचक संज्ञा होगा। यदि पहला पद भाववाचक संज्ञा है और दूसरा पद जातिवाचक संज्ञा है तो समस्त पद भी जातिवाचक संज्ञा होगा। पहिला पद यदि स्त्रीलिंग है, दूसरा पद पुल्लिग है तो समस्त पद पुल्लिग रूप में होगा। पहिला पद यदि पुल्लिग है, दूसरा पद यदि स्त्रीलिंग है तो समस्त पद स्त्रीलिंग होगा। यदि दोनों ही पद जातिवाचक संज्ञा हों और समस्त पद जातिवाचक संज्ञा हो, अथवा दोनों पद भाववाचक संज्ञा हों और समस्त पद भाववाचक संज्ञा हो, अथवा दोनों पद स्त्रीलिंग हों और समस्त पद भी स्त्रीलिंग हो, अथवा दोनों पद पुल्लिग हों और समस्त पद भी पुल्लिग हो—तब भी क्रिया का कर्त्ता प्रत्येक स्थिति में द्वितीय शब्द ही होगा।

इन समासों में समस्त पद का रूपात्मक स्वरूप द्वितीय पद के अनुरूप होने के कारण समास-रचना, पद-रचना की दृष्टि से द्वितीय पद-प्रधान होगी। फलतः पद-रचना की दृष्टि से इन समासों का रूप होगा :—

पद[1] १+पद २=पद २

### ३—१ (२) प्रकार

बालअभिनेता, महिलायात्री, नरचील, मादाचील, आर्यलोग, जैनबन्धु, बाबूसाहब।

---

१. यहाँ पद को शब्द का रूप भी दिया जा सकता है। मैंने पद और शब्द को एक ही रूप में ग्रहण किया है क्योंकि शब्द संज्ञा, विशेषण, अव्यय आदि रूप में पद ही बनते हैं, इसलिये समास-रचना में पद और शब्द में कोई अन्तर मैंने नहीं समझा।

## विश्लेषण

इन समासों की रचना भी संज्ञा पदों से हुई है, और समस्त पद भी संज्ञा है। परन्तु जहाँ राष्ट्रसेवा, ग्रामसेवक, नारीसमुदाय, हिन्दी-शिक्षा आदि समास भेदक-भेद्य की स्थिति लिए हुए हैं वहाँ महिलायात्री, बालअभिनेता, नरचील, मादाचील, आर्यलोग, भेदक-भेद्य का रूप लिए हुए नहीं हैं। राष्ट्र की सेवा, ग्राम का सेवक, नारियों का समुदाय की भाँति इन समासों का रूप महिला की यात्री, नर की चील, मादा की चील, आर्यों के लोग नहीं हो सकते। ऐसे समासों का विग्रह करने पर वाक्यांश रूप में किसी प्रकार के सम्बन्ध-सूचक शब्दों का व्यवहार नहीं करना पड़ता। देशभक्ति, जीवननिर्माण, में जैसे देश की भक्ति, जीवन का निर्माण रूप होता है, महिला यात्री, नरचील, बालअभिनेता, में इस प्रकार के सम्बन्ध-सूचक चिन्हों का योग नहीं होता। इन समासों में वास्तव में पहिला पद संज्ञा होते हुए भी विशेषण का रूप लिए हुए रहता है, और दूसरा पद उसका विशेष्य होता है। जिस प्रकार विशेषण-विशेष्य ( भला आदमी, काला घोड़ा ) के बीच किसी सम्बन्ध-सूचक चिन्ह का लोप या योग नहीं होता उसी प्रकार संज्ञापदों के योग से बने इन समासों में भी सम्बन्ध-सूचक शब्दों का लोप नहीं होता।

भेदक-भेद्य की स्थिति के स्थान पर विशेषण-विशेष्य का रूप लेने के कारण ये समास व्यधिकरण का रूप न लेकर समानाधिकरण का रूप लिए हुए हैं। देशभक्ति, ग्रामसेवक, रक्षासंगठन में जहाँ क्रिया का आधार केवल दूसरा पद है, वहाँ बालअभिनेता, महिलायात्री, नरचील, में दोनों ही पद हैं। 'देशभक्ति हो रही है' में होने का भाव केवल भक्ति से जुड़ा हुआ है। ग्राम सेवक आता है, में ग्राम अपने ही स्थान पर रहता है, परन्तु 'महिलायात्री आरही है' में आने का कार्य यात्री के साथ-साथ महिला भी करती है। 'नरचील उड़ रहा है, मादा-चील उड़ रही है' में उड़ने का भाव भी नर और चील, तथा मादा और चील दोनों से ही जुड़ा हुआ है।

वैसे इन समासों से दोनों ही पद एक-दूसरे के विशेषण-विशेष्य हैं। अभि-नेता कौन बालक, बालक कौन अभिनेता। महिला कौन यात्री, यात्री कौन महिला। चील कौन नर, नर कौन चील। परन्तु राजमंत्री, देशभक्ति, ग्राम-सेवक आदि समासों के लिये यह बात नहीं कही जा सकती। महिला यात्री, नरचील की भाँति यह नहीं कहा जा सकता कि भक्ति किसकी देश की, देश किसका भक्ति का। मंत्री किसका राजा का, राजा किसका मंत्री का। सेवक

किसका ग्राम का, ग्राम किसका सेवक का। 'सेवक' ग्राम का हो सकता है, परन्तु 'ग्राम' सेवक का नहीं हो सकता।

इन समासों में समस्त पद का लिंग, वचन प्रथम पद के अनुरूप होता है। महिलायात्री में प्रथम पद 'महिला' स्त्रीलिंग है, इसलिए समस्त पद स्त्रीलिंग है। नर चील में प्रथम पद 'नर' पुल्लिंग है, द्वितीय पद 'चील' स्त्रीलिंग है, इसलिए समस्त पद भी पुल्लिग है।

भेदक-भेद्य स्थिति वाले समासों में जहां पहिला पद बहुवचन रूप में नहीं होता, सदैव एक वचन की स्थिति लिए हुए रहता है, वहां यदि महिलायात्री, नरचील, मादाचील समस्त पद बहुवचन रूप में प्रयुक्त हुए हैं तो ऐसे समासों के दोनों पद बहुवचन का रूप लिए हुए हैं। 'महिलायात्री आरही' है में 'यात्री' ही बहुवचन रूप में नहीं है बल्कि 'महिला' भी बहुवचन रूप में है। इसी प्रकार 'नरचील उड़ रहे हैं' में 'नर' और 'चील'—दोनों ही बहुवचन रूप में हैं।

भेदक-भेद्य स्थिति वाले समासों की भांति इन समासों में शब्दों का क्रम निश्चित है, उन्हें बदला नहीं जा सकता। महिलायात्री का 'यात्री महिला' नरचील का 'चीलनर', और बालअभिनेता का 'अभिनेता बाल' नहीं किया जा सकता।

इन समासों में समस्त पद के लिंग, वचन का निर्धारण प्रथम शब्द के अनुसार होने के कारण, रूप रचना की दृष्टि से ये समास प्रथम शब्द-प्रधान कहे जायेंगे। फलतः इन समासों का रूप होगा :—

शब्द १ + शब्द २ = शब्द १

### ३–१ (३) प्रकार[1]

कमलनयन, कौडीकरम, पुरुषरत्न, आरामपसंद गोबरगणेश, बगुलाभगत, पाषाणहृदय, पत्थरदिल, राजीवलोचन, चन्द्रमुख, अश्रुमुख।

### विश्लेषण

रूपात्मक दृष्टि से इन समासों की रचना संज्ञापदों से हुई है और समस्त-पद विशेषण पद का रूप ग्रहण करते हैं। फलतः रूप-रचना की दृष्टि से इन

---

१. इनमें से कमलनयन, पाषाणहृदय, राजीवलोचन, चन्द्रमुख, अश्रमुख, हिन्दी के समास न होकर संस्कृत के समास हैं। बोलचाल की हिन्दी में इनका व्यवहार कम ही होता है। परन्तु साहित्यिक हिन्दी में इनका व्यवहार होने से इन समासों पर यहां विचार किया गया है।

समासों का रूप अन्य पद-प्रधान है। क्योंकि व्याकरिणिक दृष्टि से इन समासों के दोनों संज्ञा पद अन्य पद विशेषण का रूप ग्रहण करते हैं। फलतः रूप-रचना की दृष्टि से इन समासों का रूप होगा—शब्द १+शब्द २=शब्द ३।

३—१ (१) प्रकार के समासों में जहाँ समस्त पद के लिंग व वचन का निर्धारण समास के पहिले पद या दूसरे पद के अनुसार होता है, वहाँ इन समासों के लिंग, वचन का निर्धारण समासगत पदों द्वारा न होकर अन्य पद विशेष्य के अनुसार होता है। उदाहरण के लिए 'वह बड़ी पत्थर दिल है', वाक्य में प्रयुक्त 'पत्थर दिल' समास के दोनों ही पद संज्ञा पुल्लिग हैं, परन्तु यहाँ विशेष्य के अनुसार 'पत्थर दिल' समास विशेषण रूप में स्त्रीलिंग है। 'आराम पसंद' में प्रथम पद पुल्लिग है, द्वितीय पद स्त्रीलिंग है, परन्तु समस्त पद के रूप में अन्य पद विशेष्य के अनुरूप कहीं पुल्लिग का रूप लेता है, कहीं स्त्रीलिंग का। उदाहरण के लिए :—

वह बड़ा आराम पसन्द है। (पुल्लिग)
वह बड़ी आराम पसंद है। (स्त्रीलिंग)

चन्द्रमुख, कमलनयन, पाषाणहृदय, जहाँ पुल्लिग रूप में हैं, विशेष्य के अनुसार ही उनका स्त्रीलिंग रूप 'चन्द्रमुखी, कमलनयनी, पाषाणहृदया' हो जाता है।

लिंग की भाँति ही इन समासों के वचन का निर्धारण भी अन्य पद विशेष्य के अनुसार होता है :—

वह पत्थरदिल है। (एक वचन)
वे पत्थरदिल हैं। ( बहुवचन )
वह कमलनयन है। ( एकवचन )
वे कमलनयन हैं। ( बहुवचन )
वह आरामपसन्द है। (एकवचन)
वे आरामपसन्द हैं। ( बहुवचन )

यहाँ 'वह' विशेष्य एक वचन में है तो विशेषण रूप में भी समास एकवचन रूप में है। यदि विशेष्य 'वे' बहुवचन है तो विशेषण रूप में ये समास भी बहुवचन का रूप लिए हुए हैं, यद्यपि इन समासों के दोनों पद संज्ञा एकवचन के हैं।

विशेषण रूप होने के कारण इन समासों में लिंग, वचन को लेकर कोई विकार नहीं होता। 'गोबरगणेश' का 'गोबरगणेशो' नहीं हो सकता। 'कमलनयन' का 'कमलनयनों' नहीं हो सकता। यदि इन समासों को इस प्रकार बहुवचन का

रूप दिया जायगा तो ये समास विशेषण रूप न होकर संज्ञा रूप हो जायेंगे। 'गोबरगणेशों' का क्या हाल है?' वाक्य में 'गोबरगणेश' विशेषण नहीं संज्ञा हैं।

संस्कृत के तत्सम शब्दों से बने समासों में अवश्य द्वितीय शब्द में लिंग को लेकर विकार हो जाता है। स्त्रीलिंग रूप में अन्तिम पद का रूप आकारांत या ईकारांत हो जाता है।

वह चन्द्रमुख है। (पुल्लिंग)
वह चन्द्रमुखी है। (स्त्रीलिंग)
वह पाषाणहृदय है। (पुल्लिंग)
वह पाषाणहृदया है। (स्त्रीलिंग)
वह कमलनयन है। (पुल्लिंग)
वह कमलनयनी है। (स्त्रीलिंग)

२—१ (१) प्रकार के समासों में जहाँ क्रिया का कर्त्ता समास का दूसरा शब्द होता है, वहाँ इन समासों की क्रिया का कर्त्ता समासगत दोनों पदों में से एक भी पद न होकर अन्य पद विशेष्य होता है। 'कमलनयन आ रहा है' में 'आने का कार्य' न तो नयन ही करता है और न कमल ही, अपितु वह व्यक्ति करता है, जिसके नेत्र कमल के समान हैं। 'पत्थरदिल जा रहा है' में 'जाने का कार्य' न तो पत्थर ही करता है, और न दिल ही, बल्कि वह व्यक्ति करता है, जिसका दिल पत्थर के समान है।

विशेषण रूप होने के कारण जब ये समास वाक्य के अन्य पद (जो संज्ञा रूप में विशेष्य होता है) से अपना सम्बन्ध स्थापित करते हैं, तब इनके साथ किसी प्रकार के विभक्ति-सूचक सम्बन्ध प्रत्ययों का योग नहीं होता। यह नहीं कहा जायगा 'वह कमलनयन का आदमी है', 'वह गोबरगणेश का मकान है।' इस प्रकार की स्थिति में 'गोबरगणेश' और 'कमलनयन' समास विशेषण पद न होकर संज्ञापद बन जायेंगे, और इन समासों का रूप ३—१ (१) प्रकार के समासों की भाँति हो जायगा। विशेषणवाची होने से इन समासों का वाक्य में व्यवहार अन्य पद विशेष्य के साथ विशेषण-विशेष्य की स्थिति लिए हुए होगा।

जिस प्रकार 'काला घोड़ा, लाल कपड़ा' में 'काला' और 'लाल' क्रमशः 'घोड़ा' और 'कपड़ा' की विशेषता प्रकट करते हैं; अर्थात् घोड़ा कैसा? काला। कपड़ा कैसा? लाल। उसी प्रकार इन समासों में भी रचना की दृष्टि से पहिला पद संज्ञा होते हुए भी दूसरे पद के लिए विशेषण का कार्य करता है। जैसे—नयन कैसे? कमल के समान, काम कैसा? कौड़ी के समान, हृदय कैसा? पाषाण के समान।

इस प्रकार पहिला शब्द विशेषण रूप होकर दूसरे शब्द विशेष्य के गुण धर्म की विशेषता को प्रकट करता है। फिर भी 'काला घोड़ा, लाल कपड़ा' में 'काला' और 'लाल' जहां स्वतः ही विशेषण है, वहां इन समासों में पहिला शब्द विशेषण न होकर विशेषण की भाँति प्रयुक्त हुआ है। यदि ये शब्द संज्ञा के स्थान पर स्वतः ही विशेषण होते तो 'लाल कपड़ा' और 'काला घोड़ा' की भाँति ये समास न होकर वाक्यांश का रूप ग्रहण कर लेते।

इन समासों में प्रथम शब्द यद्यपि विशेषण रूप में प्रयुक्त हुआ है, फिर भी समास पद विशेषण-विशेष्य की स्थिति लिए हुए नहीं है। प्रथम पद के संज्ञा रूप होने के कारण समास पद ३—१ (१) प्रकार के समासों की भाँति भेदक-भेद्य की स्थिति लिए हुए है। इन समासों में प्रथम शब्द भेदक और दूसरा शब्द भेद्य है। भेदक-भेद्य की स्थिति होने के कारण इन समासों के विग्रह में का, की, में, आदि विभक्ति सूचक शब्दों का योग करना पड़ता है। जैसे—

गोबरगणेश=गोबर का गणेश
कौड़ीकरम =कोड़ी का करम
कमलनयन =कमल के नैन
पाषाणहृदय=पाषाण का हृदय
पुरुषरत्न =पुरुषों में रत्न

### ३—१ (४) प्रकार[1]

मन-मोहक, दृष्टिगोचर, धूल-धूसरित, कला-प्रिय, प्रायश्चित-दग्ध, रससिक्त, कामचोर, कला-रक्त, फलदायक, आश्चर्यचकित, संदेह-जनक, सौन्दर्यपूर्ण, मानवता-प्रिय, सन्देह-मूलक, संदेक-परक, वेतन-भोगी, हृदय-विदारक, जन्म-रोगी रोग-ग्रस्त, मर्मभेदी, क्षमा-प्रार्थी, भ्रातृ-तुल्य, भयभीत, प्रेम-मग्न, बन्धन-मुक्त, मुक्ति-दाता, कार्य-मुक्त, शरणागत, ईश्वर-दत्त, पदच्युत, गगन-चुम्बी, जल-पिपासु, आशातीत, प्राणदायिनी, भार-वाहक, स्वप्न-दर्शी, अकाल-पीड़ित, कंटकाकीर्ण, कष्ट-साध्य, जन्मजात, जल-प्लावित, दुख-संतप्त, प्रभावपूर्ण, मनगढंत, वेदना-मुक्त, शोकाकुल, वचनवद्ध, पथ-भ्रष्ट, जन्मान्ध, आनन्द-मग्न, कला-प्रवीण, कला-कुशल, कर्म-पटु, जीविका-विहीन।

---

१. ये समास वस्तुतः संस्कृत भाषा के समास हैं, व्यावहारिक हिन्दी में इनका प्रयोग कम देखने को मिलता है, परन्तु साहित्यिक हिन्दी में इनका प्रयोग अधिकता से होने के कारण इन समासों की रचना को यहाँ अध्ययन का विषय बनाया गया है।

## विश्लेषण

इन समासों में पहिला पद संज्ञा, दूसरा पद विशेषण और समस्त पद विशेषण है। फलतः रूप-रचना की दृष्टि से इन समासों का रूप (शब्द १+शब्द २=शब्द २) द्वितीय शब्द-प्रधान हैं, क्योंकि समस्त पद का व्याकरणिक रूप द्वितीय विशेषण पद के अनुसार है।

इन समासों के विशेषण रूप होने के कारण इनके लिंग, वचन का निर्धारण संज्ञापद विशेष्य के अनुसार होता है। जैसे—

यह घटना बड़ी हृदयविदारक है। (स्त्रीलिंग)
यह दृश्य बड़ा हृदयविदारक है। (पुल्लिग)
वह बड़ा मनमोहक है। (एक वचन)
वे बड़े मनमोहक हैं। (बहुवचन)

क्रिया का कर्त्ता भी इन समासों में अन्य पद विशेष्य होता है। 'क्षमाप्रार्थी जा रहा है' में 'जाने का कार्य' वह व्यक्ति करता है जो क्षमा का प्रार्थी है। 'यह संदेहजनक कार्य है', वाक्य में 'है' क्रिया का सम्बन्ध 'कार्य' से है।

क्रिया के लिंग, वचन, का निर्धारण भी इन समासों में अन्य पद विशेष्य के अनुसार होता है। यदि अन्य पद विशेष्य पुल्लिग है तो क्रिया भी पुल्लिग होगी, यदि अन्य पद विशेष्य स्त्रीलिंग है तो क्रिया भी स्त्रीलिंग होगी। यदि अन्य पद विशेष्य एकवचन में है तो क्रिया भी एकवचन में होगी। यदि अन्य पद विशेष्य बहुवचन में है तो क्रिया भी बहुवचन में होगी :—

कलाप्रिय महिला आरही है। (स्त्रीलिंग)
कलाप्रिय पुरुष आ रहा है। (पुल्लिग)
कलाप्रिय लोग आ रहे हैं। (बहुवचन)
कलाप्रिय समाज आया है। (एकवचन)

विशेषण रूप होने के कारण जब ये समास वाक्य के अन्य पद (जो संज्ञा रूप में विशेष्य होता है) से अपना सम्बन्ध स्थापित करते हैं, तब इनके साथ किसी प्रकार के विभक्ति-सूचक सम्बन्ध प्रत्ययों का योग नहीं होता। यह नहीं कहा जासकता 'प्रायश्चित-दग्ध का' 'रससिक्त का', 'संदेहजनक का'। इस प्रकार की स्थिति में ये समास विशेषण रूप न होकर संज्ञा रूप बन जायेंगे, और इन समासों का रूप ३—१ (१) प्रकार के समासों की भाँति हो जायगा। फलतः विशेषणवाची होने से इन समासों का वाक्य में व्यवहार अन्य पद विशेष्य के साथ विशेषण-विशेष्य की स्थिति लिए हुए होगा।

३—१ (१) प्रकार के समासों की भाँति ही ये समास भेदक-भेद्य की स्थिति लिए हुए हैं; अर्थात् इन समासों में पहिला पद भेदक है, और दूसरा पद भेद्य है। भेदक-भेद्य की स्थिति में होने के कारण, इन समासों की रचना में सम्बन्ध-सूचक विभक्तियों का लोप होता है। जैसे—

मन-मोहक =मन का मोहक
धूल-धूसरित=धूल से धूसरित
दृष्टि-गोचर=दृष्टि से गोचर
कला-प्रिय =कला का प्रिय
प्रायश्चित-दग्ध=प्रायश्चित से दग्ध
रससिक्त =रस से सिक्त
संदेह-जनक =संदेह का जनक
स्वप्न दर्शी =स्वप्न का दर्शी
हृदय-विदारक =हृदय का विदारक

इन समासों में दूसरा पद जो विशेषण है, वे प्रायः संज्ञा+तद्धित प्रत्यय के योग से बने विशेषण हैं। जैसे :—

पिपासु=पिपासा (संज्ञा+'उ' तद्धित प्रत्यय)
पीड़ित=पीड़ा (संज्ञा+'ईत' तद्धित प्रत्यय)
भेदी =भेद (संज्ञा+'ई' तद्धित प्रत्यय)
धूसरित=धूसर (संज्ञा+'इत' तद्धित प्रत्यय)

इन समासों में मोहक, गोचर, प्रिय, दत्त, रोगी, भेदी, पूर्ण, मुक्त, भ्रष्ट, अंध, दग्ध, सिक्त, आदि ऐसे विशेषण हैं जिनका वाक्य में स्वतंत्र रूप से इसी रूप में प्रयोग होता है, परन्तु चुम्बी, गढत, जात, दायनी आदि विशेषण ऐसे हैं जिनका प्रयोग स्वतन्त्र रूप से न होकर किसी संज्ञा के साथ जुड़कर ही होता है।

### ३—१ (५) प्रकार[1]

आज्ञानुसार, नियमानुसार, इच्छानुसार, कथनानुसार, वचनानुसार, निश्चय-पूर्वक, आग्रह-पूर्वक, परिणाम-स्वरूप, फल-स्वरूप, जीवन-पर्यन्त, मृत्यु-पर्यन्त, भोजनोपरांत।

---

१. ये समास भी संस्कृत भाषा के हैं परन्तु साहित्यिक हिन्दी में इनका प्रयोग होने के कारण यहाँ इन पर विचार किया गया है।

### विश्लेषण

इन सभी समासों में पहिला पद संज्ञा है, दूसरा पद अव्यय, और समस्त-पद भी अव्यय है। अतः रूप-रचना की दृष्टि से इसका रूप (शब्द १ + शब्द २ = शब्द २) द्वितीय शब्द-प्रधान है।

अव्यय रूप होने से इन समासों में लिंग, वचन को लेकर किसी प्रकार का विकार नहीं होता।

ये समास भेदक-भेद्य की स्थिति लिए हुए हैं। इनमें पहिला शब्द 'भेदक' है और दूसरा शब्द 'भेद्य' है। भेदक-भेद्य की स्थिति में होने के कारण इन समासों की रचना में सम्बन्ध-सूचक विभक्ति का लोप हुआ है :—

| वाक्यांश | समास |
|---|---|
| आज्ञा के अनुसार | आज्ञानुसार |
| परिणाम के स्वरूप | परिणाम-स्वरूप |
| निश्चय के पूर्वक | निश्चय-पूर्वक |
| जीवन के पर्यन्त | जीवन-पर्यन्त |

इन समासों में भेद्य के अव्यय होने से 'के' विभक्ति का रूप प्रत्येक अवस्था में पुल्लिग, एक वचन है।

इन समासों में पहिला शब्द संज्ञापद होने से उसी के लिंग, वचन के अनुसार वाक्य के अन्य शब्दों की सम्बन्ध-सूचक विभक्तियाँ जुड़ती हैं। जैसे—

मेरी 'आज्ञानुसार' यह कार्य हो रहा है।

(यहाँ आज्ञानुसार में 'आज्ञा' संज्ञापद के स्त्रीलिंग होने से 'मेरा' सर्वनाम में 'ई' स्त्रीलिंग 'के' सम्बन्ध-प्रत्यय का योग हुआ है।)

आपने 'आग्रहपूर्वक' कहा।

(यहाँ आग्रहपूर्वक में 'आग्रह' संज्ञापद के पुल्लिग होने से 'आप' सर्वनाम में 'ने' पुल्लिग सम्बन्ध प्रत्यय का योग हुआ है।)

### ३—१ (६) प्रकार

पतझड़, कपड़छन, शिलाजीत, चिड़ीमार, गिरहकट, जेबकट, जगहँसाई, जेबकटी, जगहँसी, भिखमंगा, दिलफेंक, घर-फूँक, मनमाना, दिलजला, मुँहमाँगा, नाककटा, घर-सिला, घर-बैठा, भुखमरा, कनकटा, कनफटा, सिरफिरा, तापहारी, रोगकारी, काम-चलाऊ, जग-हँसाऊ, घर-बिगाड़ू, काम-ढकेलू, पत्र-ढकेलू, संकट-रोकन, काम-रोकन, खटबुनना, नकछिदा, जेबकतरनी, घोयाकसनी, रस-

निचोड़नी, मुँहबोला, मुँडचिरा, खट-बुनना, दिल-बहलाव, मन-बहलाव, दिल-जलाना, मन-बहलाना, कलमतोड़, चिलमफोड़, पलंगतोड़, आँखमिचौनी, हथलेवा, जानलेवा, मित्र-मिलाप, पाठ-लिखाई, वस्त्र-धुलाई, खेत-जुताई, पैसा-उड़ाऊ, पैसा-खाऊ, पिछ-लग्गू, गंगा-नहान, जल-निकास, पानी-छिड़काव, सैन्य-पड़ाव, घर-जमाव, मनमुटाव, घर-बुलावा, वर-पहिरावा, नाव-चढ़ाई, द्वार-रुकाई, रंग-मिलावट, गृह-सजावट, शान-दिखावा, मन-लुभावना, दिल-सुहाना, मनगढन्त, पुस्तक-रंटत, हाथ-लिखावट, हाथ-लिखाई, जेब-काटू, नशा-उतारू, नशा-उतारन, घर-घुसा, पानी-भरैया, पुस्तक-पढ़ैया, फसल-कटैया, रात्रि-बसेरा, घर-भगोड़ा, जग-हंसोड़ा, फल-दाता, स्याही-घोलक, कलम-तोड़क, पुस्तक-जाँचक, वर-पहरावनी, बन्दर-घुड़की, गीदड़-भभकी, सैन्य-चालन, गृह-चालक।

## विश्लेषण

रचना की दृष्टि से इन समासों में पहला शब्द संज्ञा है, दूसरा शब्द क्रिया है, और समस्त पद प्रयोग के अनुसार कहीं संज्ञा और कहीं विशेषण है। जो समस्त पद संज्ञा है, उनमें क्रियाएँ संज्ञा के अर्थ में प्रयुक्त हुई हैं। जो समस्त-पद विशेषण हैं उनमें क्रियाएँ विशेषण रूप में प्रयुक्त हुई हैं। संज्ञा और विशेषण के रूप में क्रियाओं ने कृदंत रूप ले लिया है।

कृन्दत रूप में क्रियायों का नांत रूप प्रायः विलीन हो गया है और उन्होने अ[1], आ[2], इ[3], उ[4], आइ[5], आउ[6], अंत[7], आप[8], आव[9], आवना[10], आवा[11], एवा[12], अईया[13], ऐरा[14], ओड़ा[15], नी[16], क[17], न[18], ता[19], वट[20], आदि विविध कृदन्त प्रत्ययों के योग से अकारांत, आकारांत, ईकारांत,

---

१. पतझड़ (झड़ना = झड़), कपड़छन (छनना = छन), शिलाजीत (जीतना = जीत), चिड़ीमार (मारना = मार), गिरहकट (काटना = कट), जेबकट (काटना = कट), दिलफेंक (फेंकना = फेंक), घरफूँक (फूँकना = फूँक)।

२. मनमाना (मानना = माना), दिलजला (जलना = जला), मुँहमांगा (माँगना = माँगा), कटकना (कटना = कटा), घरघुसा (घुसना = घुसा), घरसिला (सिलना = सिला), भुखमरा (मरना = मरा), कनकटा (कटना = कटा), कनफटा (फटना = फटा), सिरफिरा (फिरना = फिरा)।

३. जेबकटी (कटना = कटी), जगहंसी (हंसना = हँसी), तापहारी (हरना = हरी), रोगकारी (करना = कारी), घुड़चढ़ी (चढ़ना = चढ़ी), बन्दर-घुड़की (घुड़कना = घुड़की), गीदड़-भभकी (भभकना = भभकी)।

ऊकारांत, ओकारांत, एकारांत, पकारांत, वकारांत, ककारांत, नकारांत, टकारांत, सकारांत, रूप से लिया है।

कृदंत क्रियाएँ संज्ञा रूप में कभी-कभी 'नांत' रूप भी लिये रहते हैं :—

वहाँ दिल-बहलना हो रहा है।

किसी का दिल-जलाना अच्छा नहीं।

४. जेबकाटू ( काटना = काटू ), नशा उतारू (उतारना = उतारू), पिछलगू (लगना = लग्गू), पत्र-ढकेलू (ढकेलना = ढकेलू)।

५. जग-हँसाई ( हँसना = हँसाई ), नाव-चढ़ाई (चढ़ाना = चढ़ाई), द्वार-रुकाई रोकना = रुकाई ), वस्त्र = धुलाई ( धुलाना = धुलाई ), खेत-जुताई ( जोतना = जुताई )।

६. पैसा-उड़ाऊ ( उड़ना = उड़ाऊ ), पैसाखाऊ (खाना = खाऊ), जग-हँसाई ( हँसना = हँसाऊ )।

७. मनगढंत (गढ़ना = गढ़ंत), पुस्तक-रटंत (रटना = रटंत)।

८. मित्र-मिलाप (मिलना = मिलाप)।

९. घरजमाव ( जमना = जमाव ), सैन्य-पड़ाव ( पड़ना = पड़ाव ), पानी-छिड़काव ( छिड़कना = छिड़काव )।

१०. मन-सुहावला (सुहाना = सुहावना)।

११. वर-पहिरावा ( पहिराना = पहिरावा ), घरबुलावा (बुलाना = बुलावा)।

१२. हथलेवा ( लेना = लेवा ), जानलेवा (लेना = लेवा )।

१३. पानी-भरैया ( भरना = भरैया ), पुस्तक पढ़ैया (पढ़ना = पढ़ैया), फसल-कटैया ( काटना = कटैया )।

१४. रात्रिबसेरा ( बसना = बसेरा ), घरलुटेरा ( लूटना = लुटेरा )।

१५. घरभगोड़ा ( भागना = भगोड़ा ), जगहँसोड़ा ( हँसना = हसोड़ा )।

१६. वरपहिरावली (पहिराना = पहिरावनी), घीयाकसनी ( कसना = कसनी ), रसनिचोड़नी ( निचोड़ना = निचोड़नी ), आँखमिचोनी ( मींचना = मीचनी )।

१७. कलम-तोड़क ( तोड़ना = तोड़क ), पुस्तक-जांचक ( जांचना = जांचक ), स्याही-घोलक ( घोलना = घोलक ), पलंग-तोड़क ( तोड़ना = तोड़क )।

१८. सैन्य-संचालन ( चलाना = चालन ), संकटहरन ( हरना = हरन), संकट-मोचन ( मोचना = मोचन ), कामरोकन (रोकना = रोकन), देशनिकालन (निकालना = निकालन )।

१९. फलदाता ( देना = दाता )।

२०. रंगमिलावट (मिलाना = मिलावट), घर-सजावट (सजाना = सजावट)।

जो समास संज्ञावाची हैं, उनकी रूपात्मक स्थिति ३-१ (१) प्रकार की भाँति है।

जो समास विशेषणवाची है, उनकी रूपात्मक स्थिति ३-१ (४) प्रकार की भाँति है।

## ३-१ (७) प्रकार

उड़न-खटोला, उड़न-दस्ता, उड़न-तश्तरी, चलन-क्रिया, ढलावघर, सिंचाई-मंत्री, ढलाई-कारीगर, घोटन-सामग्री, घबराहट-भरी, रटन्त-विद्या, तुलाई-काँटा सजावट-पूर्ण।

## विश्लेषण

इन समासों की रचना क्रिया और संज्ञापदों के योग से हुई है, समस्त पद संज्ञा है। 'घबराहट-भरी' समास अवश्य विशेषण पद है। इसकी रचना क्रिया और विशेषण पद के योग से हुई है।

क्रियापद इन समासों में संज्ञार्थक हैं। संज्ञा के अर्थ में उनका प्रयोग हुआ है। अन[1], आई[2], आव[3], वट[4], अंत[5], क[6] प्रत्यय के योग से उन्होंने कृदंत संज्ञाओं का रूप ले लिया है, क्रियाओं से बने ये कृदंत संज्ञापद अकारान्त या ईकारान्त, स्त्रीलिंग, एकवचन का रूप लिए हुए हैं।

सभी समास भेदक-भेद्य की स्थिति मे संज्ञापद होने के कारण ३-१ (१) प्रकार के समासों के समान रूपात्मक स्थिति लिए हुए हैं। 'घबराहट-भरी' समास की स्थिति ३-१ (४) प्रकार के विशेषणवाची समासों की भाँति है।

## ३—१ (८) प्रकार

इकन्नी, चवन्नी, चौराहा, तिपाई, चौपाई, चौबारा, दुपट्टा, चारपाई, श्वेत-पत्र, पंसेरी, लखपति, मिष्ठान्न, चौमासा, दुसूती, दुधारा, दोपहर, मंझधार, पंचानन, अधसेरा, गोलमाल, सबलोग, कालीमिर्च, खड़ीबोली, भलमानुष, काला-बाजार, कालापानी, श्यामपट।

---

१. उड़न, चलन, घोटन।
२. ढलाई, तुलाई, सिंचाई।
३. ढलाव।
४. घबराहट, सजावट।
५. रटन्त।
६. बैठक।

## विश्लेषण

इन समासों में पहला पद विशेषण, दूसरा पद संज्ञा और समस्त पद संज्ञा हैं। फलतः रूप-रचना की दृष्टि से इन समासों में द्वितीय पद की प्रधानता है :—

शब्द १ + शब्द २ = शब्द २

पहला पद विशेषण होने से ये समास विशेषण-विशेष्य की स्थिति लिए हुए हैं। पहला पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य है। फलतः इन समासों का विग्रह करने पर किसी प्रकार के सम्बन्ध-सूचक शब्दों की अन्विति नहीं करनी पड़ती। विशेषण-विशेष्य की स्थिति में होने के कारण ये समास समानाधिकरण का रूप लिए हुए हैं।

विशेषण-विशेष्य के रूप में होने पर भी इन समासों का व्याकरणिक रूप संज्ञा और संज्ञापदों के योग से बने भेदक-भेद्य वाले ३—१ (१) समासों की ही भाँति है। जिस प्रकार ३—१ (१) प्रकार के समासों में समस्त पद के लिंग, वचन का निर्धारण द्वितीय पद के लिंग, वचन के अनुसार होता है, तथा क्रिया के लिंग, वचन का निर्धारण भी द्वितीय पद के अनुसार होता है, उसी प्रकार इन समासों में भी समस्त पद के लिंग, वचन का निर्धारण द्वितीय पद के अनुसार होता है और क्रिया के लिंग वचन का निर्धारण भी द्वितीय पद के अनुसार होता है। यदि द्वितीय पद पुल्लिंग है तो समस्त पद भी पुल्लिंग होगा। यदि द्वितीय पद स्त्रीलिंग है तो समस्त पद भी स्त्रीलिंग होगा। यदि द्वितीय पद एकवचन में है तो समस्त पद भी एकवचन में होगा। यदि द्वितीय पद बहुवचन में है तो समस्त पद भी बहुवचन रूप होगा। इसी प्रकार द्वितीय पद यदि पुल्लिंग है तो क्रिया भी पुल्लिंग रूप होगी। समस्त पद यदि स्त्रीलिंग है तो क्रिया भी स्त्रीलिंग होगी। यही बात वचन के सम्बन्ध में कही जा सकती है :—

१—काला-बाजार हो रहा है (पुल्लिंग एकवचन)
२—चौराहे अच्छे हैं (पुल्लिंग बहुवचन)
३—इकन्नियाँ अच्छी नहीं है (स्त्रीलिंग बहुवचन)

३—१ (१) प्रकार के समासों और इन समासों में अन्तर इतना ही है कि उनकी रचना में सम्बन्ध-सूचक विभक्तियों का लोप रहता है और वे व्यधिकरण का रूप लिए रहते हैं। इन समासों की रचना में सम्बन्ध-सूचक विभक्तियों का लोप नहीं रहता और ये समास समानाधिकरण का रूप लिए रहते हैं।

वाक्यांश रूप में इन समासों का द्वितीय पद यदि पुल्लिंग और आकारान्त रूप लिए हुए है तथा पहिला पद संख्यावाची विशेषण है तो वह समास रूप में प्रायः ईकारान्त और स्त्रीलिंग होगया है।[1]

| वाक्यांश | समास |
|---|---|
| एक आना | इकन्नी (आना = अन्नी, पुल्लिंग से स्त्रीलिंग) |
| चार आना | चवन्नी (आना = अन्नी, पुल्लिंग से स्त्रीलिंग) |

जिन समासों का पहिला पद संख्यावाची विशेषण और द्वितीय पद वाक्यांश रूप में अकारान्त है—चाहे वे स्त्रीलिंग के रूप में हों अथवा पुल्लिंग रूप में, समास रूप में वे आकारान्त और पुल्लिंग बन गए हैं।[2]

| वाक्यांश | समास |
|---|---|
| चार राह | चौराहा (राह = राहा, स्त्रीलिंग से पुल्लिग) |
| चार मास | चौमासा (मास = मासा) |
| दो सूत | दुसूता[3] (सूत = सूता) |
| दो धार | दुधारा (धार = धारा) |
| दो पट | दुपट्टा (पट = पट्टा) |

वाक्यांश रूप में 'चार आना, दो आना, चार राह, चार मास' जहाँ बहुवचन रूप में हैं, वहाँ समासरूप में एकवचन हैं।

| वाक्यांश | समास |
|---|---|
| चार मास बीत गये (बहुवचन) | चौमासा बीत गया (एकवचन) |
| दो आना खो गये (बहुवचन) | दुअन्नी खोगई (एकवचन) |

वस्तुतः भेदक-भेद्य वाले समासों में यदि समस्त पद संज्ञावाची है तो प्रथम पद सदैव जैसे एकवचन में रहता है, उसी प्रकार संज्ञापदीय विशेषण-विशेष्य समासों में भी प्रथम शब्द सदैव एकवचन रूप में ही होगा। बहुवचन बनाने के लिए इन समासों में भी बहुवचन का प्रत्यय समास के अन्तिम पद में जोड़ना पड़ेगा।

---

१. 'चौपाया' समास पुल्लिग रूप में आकारान्त रहता है। 'तिपाई, चौपाई, चारपाई, अवश्य ईकारान्त हैं।

२. 'दोपहर' समास में 'पहर' अकारान्त ही रहता है, 'दो पहरी' रूप में ईकारान्त होकर स्त्रीलिंग हो जाता है।

३. दुसूती रूप में यह समास ईकारांत होकर स्त्रीलिंग है।

चवन्नी (एकवचन)
चवन्नियाँ (वहुवचन)
दुपहर (एकवचन)
दुपहरियाँ (वहुवचन)

३—१ (१) प्रकार के भेदक-भेद्य समासों के भेदक पद की भाँति इन समासों का भी पहिला पद सदैव लिंग, वचन और सम्वन्ध प्रत्यय के विकार से रहित है। विशेषण का रूप विशेष्य की भाँति लिंग वचन के अनुसार नहीं बदलता। वह एकरस रहता है। इसी प्रकार तद्धित प्रत्यय के योग से संज्ञा पदों द्वारा बने विशेषण पद भी पहले पद के रूप में इन समासों में नहीं होते। वास्तव में ऐसे तद्धित प्रत्यय के योग वाले विशेषण पद सम्वन्ध विभक्ति युक्त होते हैं :—

घरेलू (विशेषण पद) घर का (घर) संज्ञा+ऐलू (तद्धित प्रत्यय)
मासिक (विशेषण पद) मास का (मास) संज्ञा+इक (तद्धित प्रत्यय)
राष्ट्रीय (विशेषण पद) राष्ट्र का (राष्ट्र) संज्ञा+ईय (तद्धित प्रत्यय)
चीनी (विशेषण पद) चीन का (चीन) संज्ञा+ई (तद्धित प्रत्यय)

विशेषण-विशेष्य वाले इन समासों के लिए आवश्यक है कि पहिला पद निर्विभक्तिक हो।

इन विशेषण-विशेष्य समासों में संज्ञा के साथ जिन विशेषण पदों का योग होता है, वे संज्ञापद के लिए उद्देश्य रूप में होते हैं, विधेय रूप में नहीं।[1] अर्थात विशेषण पदों का प्रयोग संज्ञापद के वाद उसी अर्थ में नहीं हो सकता। जिन विशेषण पदों का प्रयोग संज्ञापद के विधेय रूप में संज्ञापद के वाद में हो सकता है, और अर्थ में कोई अन्तर नहीं आता, उन विशेषण पदों के योग की रचना समास नहीं कहलायगी। उदाहरण के लिए :—सफेद घर, वाँस हरा, लाल कपड़ा, को घर सफेद, हरा वाँस, कपड़ा लाल का भी रूप दिया जा सकता है, और ऐसी दोनों प्रकार को रचना से अर्थ में कोई अन्तर नहीं आता। सफेद घर है, लाल कपड़ा है, वाँस हरा है, का भी वही अर्थ है जो घर सफेद है, कपड़ा लाल है, हरा वाँस है, अर्थात् यहाँ घर सफेद, में घर (संज्ञा) सफेद (विशेषण) के साथ वंध नहीं जाता, वह अलग रहता है। सफेद घर, काला

---

१. "जब किसी की विशेषता का विधान करना हो तो विशेषण विधेय रूप से आता है। विधेय का पर प्रयोग होता है, उद्देश्य का पूर्व प्रयोग।" किशोरीदास वाजपेई : हिन्दी शब्दानुशासन, पृ० २१६।

घर भी हो सकता है, हरा घर भी हो सकता है। इसीलिए 'सफेद घर' दो पृथक शब्द हैं—'सफेद' विशेषण और 'घर' संज्ञा। दोनों मिलकर एक शब्द विशेषण या संज्ञा नहीं बनते, इसीलिए 'सफेद घर' वाक्यांश है। परन्तु 'कालापानी, इकन्नी, दुपहरी' समास हैं। क्योंकि यहाँ 'कालापानी' को पानी काला, 'इकन्नी' को आना एक, 'दुपहरी' को पहर दो नहीं कहा जा सकता, ऐसा करने पर इन शब्दों का अर्थ ही बदल जायगा। 'पानी काला' से अभिप्राय ऐसे पानी से है जो काला भी हो सकता है, लाल भी। आना एक, आना दो भी हो सकता है, तीन भी हो सकता है। पहर दो भी हो सकता है, तीन भी। परन्तु 'काला पानी' समास उसी स्थान-विशेष का सूचक है, जहाँ के पानी का रंग काला है। 'इकन्नी' एक वस्तु का बोध कराती है, दो इकन्नी के लिए उसके साथ 'दो' संख्यावाची विशेषण का योग करना पड़ता है। यही बात 'दुपहरी' के सम्बन्ध में है। यहाँ कलापानी, इकन्नी, दुपहरी समास में विशेष्य, विशेषण के साथ बँध गया है। विशेष्य और विशेषण मिलकर एक हो गये हैं। दोनों की पृथक् सत्ता नहीं रहती।

## ३—१ (९) प्रकार

सतरंगा, सतखंडा, तिमंजिला, दुतल्ला, चौमुखा, चौगुना, तिगुना, चौगुनी, सतरंगी, तिगुनी।

### विश्लेषण

इन समासों के दोनों पद विशेषण हैं और समस्त पद भी विशेषण रूप में है। पहिला पद संख्यावाची विशेषण है और दूसरा विशेषण पद संज्ञा पद में, पुल्लिंग तद्धित प्रत्यय 'आ' और स्त्रीलिंग तद्धित प्रत्यय 'ई' जोड़कर बना है। फलतः रूपात्मक दृष्टि से इन समासों की रचना विशेषण+संज्ञा+विशेषण तद्धित प्रत्यय के योग से हुई है।

इन समासों में दोनों ही पद विशेषण हैं, परन्तु दूसरा विशेषण पद पहिले संज्ञा वाची विशेषण पद का विशेष्य रूप होकर आया है। जैसे—

१—तिमंजिला = तीन मंजिलों वाला।
२—सतरंगा = सात रंगों वाला।

यहाँ 'तीन' और 'सात'—'मंजिल' और 'रंगों' के संख्या-सूचक हैं।

विशेषण और विशेष्य की स्थिति में होने के कारण इन समासों की रचना किसी प्रकार की सम्बन्धसूचक विभक्तियों के लोप से नहीं होती। फलतः ये समानाधिकरण का रूप लिए हुए हैं।

विशेषणवाची होने से ये समास अन्य पद विशेष्य के आश्रित होते हैं। वाक्य में मुक्त रूप से इनका प्रयोग नहीं होता। विशेष्य संज्ञा पद के साथ बद्ध होकर ही वाक्य में इन विशेषणवाची समासों का व्यवहार होता है। अन्य पद विशेष्य के अनुसार ही इन समासों के लिंग, वचन का निर्धारण होता है। लिंग, वचन का विकार दूसरे पद में होता है पुल्लिग में उसका रूप आकारांत, स्त्रीलिंग में ईकारांत और बहुवचन रूप में एकारांत होता है। जैसे :—

१—सतमंजिला मकान (पुल्लिग एकवचन)
२—तिमंजिली इमारत (स्त्रीलिंग एकवचन)
३—दुगुने आदमी (बहुवचन)

पहिला पद सदैव लिंग वचन के विकार और सम्बन्ध प्रत्यय से रहित होता है।

इन समासों का दूसरा विशेषण पद जिन 'आ' 'इ' तद्धित प्रत्ययों के योग से संज्ञा द्वारा बनता है वे ही प्रत्यय, सम्बन्ध-सूचक प्रत्ययों का रूप लेकर वाक्य में अन्य पद विशेष्य से सम्बन्ध स्थापित करते हैं। जैसे :—

१—सतरंगा कपड़ा =सात रंग का कपड़ा
२—सतरंगी धोती =सात रंग की धोती
३—तिमंजिली इमारत=तीन मंजिल की इमारत

३—१ (१) प्रकार के समासों में जहाँ दोनों पद संज्ञा और समस्त पद संज्ञा हैं, परन्तु द्वितीय पद की रूपात्मक सत्ता प्रमुख है, पहिला पद दूसरे पद का आश्रित है, उसी प्रकार इन समासों में भी दोनों पद विशेषण और समस्त पद भी विशेषण हैं, परन्तु विशेष्य रूप में द्वितीय पद की ही प्रधानता है। प्रथम पद दूसरे पद का आश्रित है। इसलिए रूप-रचना की दृष्टि से ये समास भी द्वितीय पद-प्रधान हैं।

पद १+पद २=पद २

### ३—१ (१०) प्रकार

बिन-ब्याहा, बिनदेखा, बिनसुना, बिनकहा, बिनबोया, पिछलग्गू।

### विश्लेषण

इन समासों में पहला पद अव्यय है, दूसरा पद क्रिया और समस्त पद विशेषण है। क्रिया पद यहाँ कृदंत विशेषण पदों के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। पुल्लिग रूप में इनका रूप आकारांत और ऊकारान्त है, स्त्रीलिंग रूप में ईकारान्त और बहुवचन रूप में एकारान्त है।

पहिला पद अव्यय यहाँ नकारात्मक रूप में है। अव्यय रूप होने पर भी पहिला पद दूसरे पद का विशेषण है। दूसरा पद पहिले पद का विशेष्य है। विशेषण-विशेष्य की स्थिति होने से इन समासों की रचना में किसी प्रकार की सम्बन्ध-सूचक विभक्तियों का लोप नहीं होता। समासों का रूप भी सामानाधिकरण की स्थिति लिए हुए है।

विशेषणवाची होने से ये समास भी अन्य पद विशेष्य के आश्रित हैं। इनकी रूपात्मक स्थिति भी सतरंगा, सतखंडा, तिमंजिला आदि ३–१ (९) प्रकार के समासों की भाँति है।

### ३—१ (११) प्रकार

आपलोग, हमलोग, तुमलोग, वेलोग।

### विश्लेषण

आपलोग, हमलोग, तुमलोग, वेलोग—समासों में पहिला पद सार्वनामिक विशेषण, दूसरा पद संज्ञा और समस्त पद संज्ञा है। पर रूप-रचना की दृष्टि से इन समासों में (शब्द १+शब्द २=शब्द २) द्वितीय पद की प्रधानता है।

इन समासों का रूप सदैव पुल्लिग बहुवचन का होता है। जैसे—

आपलोग आरहे हैं।
हमलोग जारहे हैं।
तुमलोग खाना खारहे हो।

इन समासों की रूपात्मक स्थिति इकन्नी, चवन्नी, सबलोग, श्वेतपत्र, आदि ३—१ (८) के समासों की ही भाँति है। उन समासों की भाँति ये समास भी विशेषण-विशेष्य और समानाधिकरण की स्थिति लिए हुए हैं। इन समासों की रचना में भी किसी प्रकार की सम्बन्धसूचक विभक्तियों का लोप नहीं होता।

### ३—१ (१२) प्रकार

इसलिए, इसप्रकार, इसतरह।

### विश्लेषण

इन समासों में पहिला पद सार्वनामिक विशेषण, दूसरा पद अव्यय और समस्त पद अव्यय है। रूप-रचना की दृष्टि से इनमें द्वितीय पद की प्रधानता है। सर्वनाम+अव्यय=अव्यय (शब्द १+शब्द २=शब्द २)

विग्रह करने पर इन समासों में किसी प्रकार के सम्वन्धसूचक शब्दों की अन्विति नहीं होती। फलतः ये समास विशेषण-विशेष्य की स्थिति लिए हुए हैं। विशेषण-विशेष्य होने से समासों का रूप समानाधिकरण का है।

अव्यय रूप होने से इन समासों में लिंग, वचन को लेकर किसी प्रकार का विकार नहीं होता।

## ३—१ (१३) प्रकार

भाई-वहिन, माता-पिता, धनदौलत, धनुषवाण, दालभात, सेठसाहूकार, नमकमिर्च, फूलपत्ते, चायपानी, वालवच्चे, हुक्कापानी, पापपुण्य, धर्म-अधर्म औरत-मर्द, घी-दूध, आलू-मटर, राजा-प्रजा, रागरंग, हिन्दू-मुसलमान, शानशौकत, हँसीमजाक, कीड़े-मकोड़े, कंकड़-पत्थर, चोली-दामन, घर-आंगन, तन-मन-धन, नाच-गाना, सुख-दुख, घर-द्वार, भूत-प्रेत, काम-काज, अन्न-जल, कील-काँटा, गली-कूचा, घासफूँस, दियावत्ती, सोनाचांदी, चिट्ठी-पत्री, गाय-वैल, रीति-रिवाज, सांप-विच्छू, रंगढंग, वासन-वर्तन, हाथ-पांव, साग-पात, नाक-कान, जी-जान, कूड़ा-कचड़ा, गंगा-जमुना, चीजवस्तु, घी-शक्कर, दूध-रोटी, जूतमजूता, लठालठी, मुक्का-मुक्की, धक्का-धुक्की, घर-घर, रोम-रोम, देश-देश, कौड़ी-कौड़ी, नाते-रिश्तेदार, ठीकठाक, टीम-टाम।

इक्का-दुक्का, खट्टा-मीठा, अच्छा-खासा, लाल-पीला, हरा-भरा, गोल-मटोल, एकतिहाई, सातएक, थोड़ावहुत, सुन्दर-सलौना, टेढ़ामेढ़ा, गिने-चुने, भले-वुरे, ठीकठाक, गोरी-चिट्टी, हट्टा-कट्टा, सीधा-सादा, गई-गुजरी, कालास्याह, फटे-पुराने, हृष्ट-पुष्ट, हरा-हरा, लाल-लाल, नए-नए, सव-के-सव।

जैसे-तैसे, आस-पास, हाँ-हूँ, नानू, आगा-पीछा, इधर-उधर, जव-तव, आज-कल, अगल-वगल, गटागट, चटापट, पटापट, आस-पास, पास-पास, आगे-आगे, पीछे-पीछे, साथ-साथ, ऊपर-नीचे, वीचोंवीच।

डाँटना-फटकारना, खाया-पीया, खा-पीकर, खाएगी-पीएगी, खाओ-पीओ, हँसा-वोला, देखा-सुना।

मैं-तुम, वे-हम, मेरा-तुम्हारा, अपना-उनका।

रात-दिन, निशि-दिन, साँझ-सकारे, हाथोंहाथ, कानोंकान, दिनोंदिन, मन-ही-मन, वात-ही-वात, घर-के-घर, आप-ही-आप।

गर्मागर्मी, नर्मानर्मी, तीन-पाँच, ऐसी-तैसी।

खायापीया, गायावजाया, कियाकराया, आनाजाना, पढ़ाई-लिखाई, रोनापीटना, कहनासुनना, गानावजाना, कहनसुनन, देखरेख, सूझवूझ, मारपीट,

लूटमार, दौड़धूप, भागदौड़, खानपान, हारजीत, उखाड़पछाड़, छीनाझपटी, कहासुनी, आवाजाही, उठाबैठी, तनातनी, मारामूरी, लुकाछिपी, लिखापढ़ी, मारामारी, भागाभूगी, भागना-भूगना, बैठना-बूठना, जानना-जूनना, पूछना-पाछना, काटना-कूटना।

जीता-जागता, खाता-पीता, हँसता-बोलता, सोता-जागता, गिरते-पड़ते, उठते-बैठते, सोते-जागते, देखते-देखते।

खापीकर, देखभालकर, हिलमिलकर, आऊकर, जाजूकर।

## विश्लेषण

'भाईबहिन' से लेकर 'टीमटाम' तक के समासों की रचना संज्ञा और संज्ञापदों के योग से हुई है। समस्त पद भी संज्ञा रूप लिए हुए हैं।

'इक्का-दुक्का' से लेकर 'सब के-सब' तक के समासों की रचना विशेषण और विशेषण पदों के योग से हुई है। समस्त पद विशेषण रूप लिए हुए हैं।

'जैसे-तैसे' से लेकर 'बीचों-बीच' तक के समासों की रचना अव्यय और अव्यय पदों के योग से हुई है। समस्त पद भी अव्यय का रूप लिए हुए हैं।

'डाँटना-फटकारना' से लेकर 'देखा-सुना' तक के समासों की रचना क्रिया और क्रियापदों के योग से हुई है, तथा समस्त पद भी क्रियापद हैं।

'मैं-तुमसे' लेकर 'अपना-उनका' तक के समासों की रचना सर्वनाम और सर्वनाम पदों के योग से हुई है, तथा समस्त पद भी सर्वनाम पद का रूप लिए हुए हैं।

'रात-दिन' से लेकर 'आप-ही-आप' तक के समासों की रचना संज्ञा और संज्ञापदों के योग से हुई है तथा समस्त पद अव्यय का रूप लिए हुए हैं।

'गर्मागर्मी' से लेकर 'तीन-तेरह' तक के समासों की रचना में दोनों ही पद विशेषण हैं और समस्त पद संज्ञा रूप में हैं।

'खायापीया' से लेकर 'काटना-कूटना' तक के समासों की रचना क्रिया और क्रियापदों के योग से हुई है तथा समस्त पद संज्ञा रूप में हैं।

'जीता-जागता' से लेकर 'सोता-जागता' तक के समासों की रचना में क्रियापदों का योग हुआ है और समस्त पद ने विशेषण का रूप ले लिया है।

'खापीकर' से लेकर 'जाजूकर' तक के समासों की रचना में दोनों ही पद क्रियापद हैं और समस्त पद 'अव्यय रूप' में हैं।

जिन समासों के समस्त पद का रूप समासगत पदों के अनुरूप है वे पद रचना की दृष्टि से सर्वपद-प्रधान समास है। (पद १+पद २=पद १-२)

जिन समासों के समस्त पद का रूप समासगत शब्दों से भिन्न है वे समासपद रचना की दृष्टि से अन्य पद-प्रधान हैं। (पद १ + पद २ = पद ३)

इन समासों की रचना जिन पदों के योग से हुई है, समास रचना में वे अपनी स्वतन्त्र स्थिति लिए हुए हैं। भेदक-भेद्य या विशेषण-विशेष्य समासों की भाँति इन समासों के पद एक-दूसरे के आश्रित नहीं हैं। भेदक-भेद्य या विशेषण-विशेष्य के ढङ्ग के समासों में जहाँ एक पद प्रमुख रहता है, दूसरा पद गौण, इन समासों में दोनों ही पद प्रमुख रहते है। व्याकरणिक दृष्टि से दोनों पदों की स्थिति समान रहती है। इनमें पहिला पद दूसरे का न तो भेदक होता है और न विशेषण ही।

भेदक-भेद्य या विशेषण-विशेष्य की स्थिति लिए जो समास संज्ञापद होते हैं उनमें क्रिया का कर्त्ता दूसरा पद होता है। जैसे—'ग्राम-सेवक आ रहा है' में आने का कार्य सेवक करता है, ग्राम नहीं। परन्तु इन समासों के जो संज्ञापद है, उनमें आने का कार्य दोनों पद करते हैं। जैसे—'भाई-वहिन आ रहे हैं' में आने का कार्य अकेले भाई या वहिन द्वारा ही नहीं होता, भाई और वहिन दोनों ही आने का कार्य करते हैं।

क्रिया के लिंग, वचन का निर्धारण भी भेदक-भेद्य या विशेषण-विशेष्य वाले संज्ञापदों में सदैव द्वितीय पद के अनुसार होता है। परन्तु इन समासों में क्रिया के लिंग, वचन का निर्धारण कभी प्रथम पद, कभी दूसरे पद के अनुसार होता है। जैसे—

भाई-वहिन जा रहे हैं (पुल्लिग वहुवचन)

(यहाँ प्रथम पद 'भाई' पुल्लिग है और उसी के अनुसार क्रिया भी पुल्लिग है।)

दूध-रोटी मिल रही है (स्त्रीलिंग एकवचन)

(यहाँ दूसरा पद 'रोटी' स्त्रीलिंग है और क्रिया का लिंग, वचन भी दूसरे पद के अनुसार स्त्रीलिंग और एकवचन है।)

इसी प्रकार भेदक-भेद्य या विशेषण-विशेष्य वाले संज्ञापदों में जहाँ समस्त पद के लिंग, वचन का निर्धारण द्वितीय पद के अनुसार होता है, इन समासों में कभी प्रथम पद या कभी दूसरे पद के अनुसार होता है। ऊपर के 'भाई-वहिन', 'माता-पिता', 'दूध-रोटी' के उदाहरणों से यह वात स्पष्ट है। 'भाई-वहिन' में पहिला पद पुल्लिग, एकवचन, दूसरा पद स्त्रीलिंग, एकवचन और समस्त पद पुल्लिग वहुवचन में है। 'दूध-रोटी' में पहिला पद पुल्लिग एकवचन, दूसरा पद स्त्रीलिंग एकवचन, और समस्त पद स्त्रीलिंग एकवचन में है।

इस प्रकार इन समासों में दोनों पदों के एकवचन होने पर भी समस्त पद वहुवचन का रूप ले लेता है और उसी के अनुसार क्रिया भी रूपान्तर हो जाती है। परन्तु भेदक-भेद्य तथा विशेषण-विशेष्य वाले समासों में ऐसा सम्भव नहीं है।

भेदक-भेद्य या विशेषण-विशेष्य वाले पदों में दूसरा पद ही बहुवचन रूप में हो सकता है, प्रथम पद नहीं। 'ग्राम-सेवकों ने यह किया' वाक्य के 'ग्राम-सेवकों' समास में, सेवक ही बहुत से हैं, ग्राम नहीं। ग्राम तो एक ही है। परन्तु इन समासों में दोनों ही पद बहुवचन रूप में प्रयुक्त होते हैं। 'भाई-बहिनों ने किया' में बहिनों की भाँति भाई भी बहुवचन रूप में है, यद्यपि बहुवचन का 'ओं' प्रत्यय बहिन के साथ ही लगा है।

इन समासों के जो पद आकारान्त होते हैं उनके दोनों ही पद लिंग, वचन को लेकर क्रमशः ईकारांत और एकारांत हो जाते हैं :—

भला-बुरा आदमी (पुल्लिंग एकवचन)
भले-बुरे आदमी (पुल्लिंग बहुवचन)
भली-बुरी औरत (स्त्रीलिंग एकवचन)
कीड़ा-मकोड़ा (पुल्लिंग एकवचन)
कीड़े-मकोड़े (पुल्लिंग बहुवचन)
कीड़ी-मकोड़ी (स्त्रीलिंग एकवचन)

इन समासों में जो संज्ञापद हैं उनके दोनों ही पद क्रिया के कारक रूप में एक सी स्थिति लिए रहते हैं :—

दूध-रोटी खाई जा रही है।

(यहाँ 'दूध' और 'रोटी' दोनों ही शब्द क्रिया 'खाना' के कर्म हैं।)

जो विशेषण पद हैं उनके दोनों ही पद विशेष्य की विशेषता को प्रकट करते हैं :—

वह गोल-मटोल आदमी है।

(यहाँ 'आदमी' केवल गोल ही नहीं, मटोल भी है।)

जो अव्यय पद हैं उनके दोनों ही पद क्रिया विशेषणरूप में क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं :—

रात-दिन काम हो रहा है।

(यहाँ काम केवल रात में ही नहीं, दिन में भी होता है।)

जो सर्वनाम पद हैं उसके दोनों ही पद संज्ञापद के स्थान पर सर्वनाम पदों के रूप में व्यवहृत होते हैं :—मेरा-तुम्हारा काम रुका पड़ा है।

(यहाँ 'मेरा-तुम्हारा' दोनों सर्वनाम संज्ञा के स्थान पर क्रिया के कर्त्ता रूप में है।)

जो क्रियापद हैं उनके दोनों ही पद वाक्य के कर्त्ता के कार्य होते हैं :—

राम ने खायापीया।

(यहाँ राम द्वारा 'खाने' और 'पीने' की दोनों क्रियाएँ की जाती हैं।)

इस प्रकार इन सभी समासों के दोनों पद रूपात्मक दृष्टि से प्रधान होते हैं।

इन सभी समासों की रचना में 'और' 'तथा' आदि समुच्च्यबोधक सम्बन्ध-तत्व का लोप होता है। :—

| वाक्यांश | समास |
|---|---|
| बाप और बेटे जा रहे हैं। | बाप-बेटे जा रहे हैं। |
| खाना और पीना हो रहा है। | खाना-पीना हो रहा है। |
| खेल और कूद हो रहे हैं। | खेल-कूद हो रहे हैं। |
| भागना और भागना हो रहा है। | भागा-भूगी हो रही है। |
| भला और बुरा आदमी। | भला-बुरा आदमी। |
| वह गट और गट पी गया। | वह गटा-गट पी गया। |
| मन और मन में यह बात। | मन-ही-मन में यह बात। |

ये सभी समास समानाधिकरण का रूप लिए हुए हैं।

इन समासों में संज्ञापदों की रचना संज्ञा और संज्ञा (भाई-बहिन, लठा-लठी, मुक्का-मुक्की, जूतम-जूता, नातेरिश्तेदार, माता-पिता, चाय-पानी, बाल-बच्चे), विशेषण और विशेषण (तीन-पाँच, तीन-तेरह, गर्मा-गर्मी, नर्मानर्मी), सर्वनाम और सर्वनाम (मेरा-तेरा), अव्यय और अव्यय (ऐसी-तैसी, हाँ-हूँ, ना-नू), क्रिया और क्रिया (खाया-पीया, कहना-सुनना, कहन-सुनन, छीनाझपटी, मारा-मारी, भागना-भूगना) पदों के योग से हुई है।

संज्ञापदों की रचना जिन क्रियापदों से हुई है वे यहाँ संज्ञा के अर्थ में ही प्रयुक्त हुए हैं। संज्ञा के अर्थ में उन्होंने कृदंत रूप ले लिया है।

कृदंत रूप में क्रियाओं का 'नांत' रूप प्रायः विलीन हो गया है, और उसके स्थान पर उन्होंने अकारांत रूप ले लिया है :—

हरना जीतना =हार-जीत
ताकना झाँकना =ताक-झाँक
सूझना बूझना =सूझ-बूझ

'नांत' रूप में ये संज्ञार्थक क्रियाएँ पुल्लिग एकवचन के रूप में थीं :—

उनका हारना जीतना हो रहा है।
उनका ताकना भाँकना अच्छा नहीं।
उनका सूभना बूभना काम देगा।

परन्तु नांत रूप विलीन होने पर ये संज्ञापद 'स्त्रीलिंग एकवचन' का रूप लिए हुए हैं :—

हारजीत हो रही है।
उनकी देख-रेख अच्छी है।
उनकी ताक-भाँक से हम दुखी है।
उनकी सूभ-बूभ का क्या कहना।

छीना-भपटी, कहा-सुनी, आवा-जाही, उठा-बैठी, लुका-छिपि, लिखा-पढ़ी, तना-तनी, मारा-मारी, भागा-दौड़ी, भागा-भूगी समासों में क्रियाओं का नांत रूप विलीन हो गया है। कृदंत रूप में क्रियाएँ 'आ' और 'ई' प्रत्यय के योग से क्रमशः पहिले पद में आकारांत, दूसरे पद में ईकारांत हो गई हैं। समस्त पद स्त्रीलिंग एकवचन में है।

'कहना-सुनना' क्रियापद से बना 'कहन-सुनन' समास में नांत रूप के स्थान पर केवल 'आ' प्रत्यय का लोप हुआ है। देख-रेख, सूभ-बूभ आदि अकारांत पदों की भाँति इसका रूप भी स्त्रीलिंग एकवचन में है। करा-धरा, किया-कराया आदि जो समास अन्त में आकारांत हैं, वे पुल्लिग एकवचन में हैं।

रोना-पीटना, कहना-सुनना, आना-जाना, आदि संज्ञापद समासों के दोनों क्रियापदों में नांत रूप विलीन नहीं होता। क्रियाओं का प्रकृत रूप ही समासगत रूप में रहता है। समासगत रूप में ये सदैव पुल्लिग एकवचन में रहती हैं।

लठा-लठी, मुक्का-मुक्की आदि समासों के दोनों पद स्वतन्त्र रूप से पुल्लिग हैं, परन्तु समासगत रूप में समस्त पद स्त्रीलिंग बन गया है। इसका कारण यही है कि समास का दूसरा शब्द 'लट्ठ' ईकारान्त का रूप लेकर स्त्रीलिंग बन गया है फलतः दूसरे शब्द के ईकारान्त होने पर समास शब्द भी स्त्रीलिंग हो गया है। 'जूतमजूता' समास में उत्तरवर्ती 'जूता' शब्द आकारांत है इसीलिये समस्त पद पुल्लिग एकवचन है।

जो संज्ञापद विशेषण और विशेषण तथा अव्यय और अव्यय-पदों के योग से बनते है वे भी प्रायः ईकारान्त रूप ले लेते हैं :—

गरम-गरम (विशेषण पद) गर्मागर्मी (संज्ञा पद)
नरम-नरम (विशेषण पद) नर्मानर्मी (संज्ञा पद)
ऐसा-तैसा (अव्यय पद) ऐसीतैसी (संज्ञा पद)

ईकारांत रूप में ये संज्ञापद स्त्रीलिंग एकवचन का रूप ले लेते हैं :—

वहाँ गरमा-गर्मी हो रही है।
नरमा-नरमी की वात करो।
तेरी ऐसी-तैसी हो रही है।

जो समास ईकारान्त रूप नहीं ग्रहण करते, वे भी प्रायः स्त्रीलिंग का रूप लिए हुए हैं :—

तीन-पाँच हो रही है।
हाँ-हूँ हो रही है।
ना-नू हो रही है।

वस्तुतः इन संज्ञापद समासों का अन्तिम पद यदि ईकारान्त रूप लिए रहता है तो ये समास स्त्रीलिंग एकवचन में होते हैं। आकारांत होने पर पुल्लिग एकवचन में होते हैं। एकारांत होने पर वहुवचन रूप में होते हैं।

'नातेरिश्तेदार' संज्ञा पद में पहिले शब्द 'नाते' के साथ जुड़ा हुआ 'दार' प्रत्यय का लोप हो गया है।

विशेषण पदों की रचना विशेषण और विशेषण (भला-बुरा, अच्छा-खासा, सुन्दर-सलोना) क्रिया और क्रियापदों से हुई है। (जीता-जागता, खाता-पीता, रोता-पीटता) क्रियापद यहाँ समासगत रूप में विशेषण के अर्थ में प्रयुक्त हुए हैं। कृदंत विशेषणों के रूप में इन क्रियापदों का रूप तकारान्त है। पुल्लिग एकवचन के रूप में इनका रूप आकारान्त है। स्त्रीलिंग एकवचन रूप में ईकारान्त है। वहुवचन रूप में एकारान्त है। लिंग, वचन का यह विकार दोनों ही पदों में एक-सा होता है :—

जीता-जागता उदाहरण (पुल्लिग, एकवचन)
जीती-जागती तस्वीर (स्त्रीलिंग, एकवचन)
जीते-जागते नाम (पुल्लिग, वहुवचन)

विशेषणवाची होने से ये समास भी अन्य पद विशेष्य के आश्रित रहते हैं। फलतः इन विशेषण समासों के लिंग, वचन का निर्धारण अन्य पद विशेष्य के अनुसार होता है। क्रिया का आधार भी अन्य पद ही होता है। 'जमीन हरी-

भरी हो रही है' में 'जमीन' स्त्रीलिंग होने के कारण 'हरी-भरी' स्त्रीलिंग रूप में है, तथा क्रिया का आधार भी 'जमीन' है।

अव्यय पदों की रचना अव्यय और अव्यय (आज-कल, अगल-बगल, आगा-पीछा, इधर-उधर, जब-तब, पास-पास, पीछे-पीछे, गटा-गट, बीचों-बीच), संज्ञा और संज्ञा (रात-दिन, साँझ-सकारे, मन-ही-मन, बात-ही-बात, सब-के-सब, घर-के-घर), सर्वनाम और सर्वनाम (आप-ही-आप), विशेषण और विशेषण (कुछ-के-कुछ), क्रिया और क्रिया (गिरते-पड़ते, उठते-बैठते, सोत-जागते, देखते-देखते, खा-पीकर, देखभाल कर, हिलमिलकर, जाजूकर, खाखूकर) पदों के योग से हुई है। जिन संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रियापदों का योग इन समासों में हुआ है, वे सभी यहाँ अव्यय रूप में प्रयुक्त हुए हैं। जो क्रियाएँ वाक्यांश रूप में सामान्य भूत-कालिक हैं वे समासगत रूप में अव्यय का रूप लेकर एकारांत हो गई हैं (सोते-जागते, खाते-पीते, उठते-बैठते) हिलकर मिलकर, देखकर, भालकर, आकर, आकर जाकर, जाकर आदि पूर्वकालिक क्रियाएँ अव्यय रूप में कृदंत बन गई हैं। समास रूप में पहिले पद के 'कर' (पूर्व कालिक कृदंत प्रत्यय) का लोप हो गया है।

मन-ही-मन, कुछ-के-कुछ, सब-के-सब, कभी-न-कभी आदि समासों में 'ही, के, न' आदि शब्दांशों का योग हुआ है, परन्तु यह शब्दांश समासगत रूप में रूपात्मक दृष्टि से अपनी कोई सत्ता नहीं रखते। 'न' शब्दांश निषेधार्थक है, परन्तु यहाँ यह 'न' शब्द निषेधार्थक रूप में प्रयुक्त नहीं हुआ। इसी प्रकार 'के' सम्बन्ध-सूचक विभक्ति है, परन्तु यहाँ 'सब-के-सब' में वह विभक्ति का कार्य नहीं करता। 'ही' शब्दांश अवश्य निश्चय के अर्थ में प्रयोग में आता है। 'तुम्हीं' अर्थात् केवल तुम ही। इसी प्रकार मन-ही-मन में 'ही' भी निश्चय के अर्थ का बोधक है। मन-ही-मन अर्थात् केवल मन में। यहाँ 'ही' शब्दांश दोनों शब्द मन, मन के लिए आया है। केवल पहिले शब्द 'मन' के लिये नहीं।

वास्तव में इन शब्दांशों की स्थिति उसी प्रकार है जैसे गटागट में पहिले पद के बाद 'आ' ध्वनि का आगम, जूतमजूता में 'म' ध्वनि का आगम, बीचों-बीच, हाथों-हाथ, में 'ओं' ध्वनि का आगम।

अव्यय पद होने के कारण इन समासों में लिंग, वचन की दृष्टि से कोई विकार नहीं होता।

सर्वनाम पदों की रचना केवल सर्वनाम पदों से (मैं-तुम, वे-हम, मेरा-उनका) हुई है। जो सर्वनाम क्रिया के कारक रूप में एक-सी स्थिति लिए वाक्य में व्यवहृत होते हैं, वे ही परस्पर समुच्च्यबोधक सम्बन्ध तत्त्व 'और' के लोप से समास का रूप ग्रहण कर लेते हैं। यही बात क्रियापदों की रचना के सम्बन्ध

में है। जब क्रिया का कारक एक साथ दो क्रियाओं का कर्त्ता है, तब दोनों क्रियाएँ समुच्च्यबोधक सम्बन्ध तत्व 'और' के लोप से समास का रूप ले लेती हैं।

इन सभी समासों में जो शब्द स्वर से प्रारम्भ होते हैं वे पहिले आते हैं, जो व्यंजन से प्रारम्भ होते हैं वे बाद में आते हैं :—

अड़ोस-पड़ोस
आस-पास
अगल-बगल

वर्ण क्रम से जो शब्द पहिले हैं, पहिले आते हैं, अर्थात् 'क' वर्ग से प्रारम्भ होने वाले अक्षर पहिले आयेंगे, 'च' वर्ग से प्रारम्भ होने वाले अक्षर बाद में आयेंगे :—

जैसा-तैसा
दाल-रोटी
खट्टा-मिट्टा

कम वर्ण वाले अक्षर पहिले आयेंगे, अधिक वर्ण वाले अक्षर बाद में आयेंगे :—

राम-लक्ष्मण
शिव-पार्वती
दाल-चावल
भाई-बहिन

अकारांत शब्द पहिले आयेंगे, इकारांत शब्द बाद में :—

चाचा-चाची
कहा-सुनी
छीना-झपटी
ताला-ताली
कुर्ता-धोती

स्त्रीलिंग शब्द पहिले आयेंगे, पुल्लिंग शब्द बाद में :—

राधा-कृष्ण
सीता-राम
नदी-तालाब

इन समासों में शब्दों का यह क्रम इस रूप में निश्चित नहीं है, इसके अपवाद भी हो सकते हैं। ऐसा सामान्यतः ही होता है।

## ३—१ (१४) प्रकार

कामरोको (प्रस्ताव), वृक्ष उगाओ (आन्दोलन), भारत छोड़ो (आन्दोलन), हिन्दी अपनाओ (नारा)।

### विश्लेषण

इन समासों में पहिला पद संज्ञा, दूसरा पद आज्ञार्थक क्रिया है। ये दोनों पद समस्त पद का रूप लेकर संज्ञापद के साथ जुड़े हुए हैं, और तीनों पदों ने मिलकर समास रूप में संज्ञापद का रूप ले लिया है। यदि अंतिम संज्ञापद से जुड़े हुए 'कामरोको, वृक्ष उगाओ, भारत छोड़ो, हिन्दी अपनाओ' आदि शब्दों का स्वतंत्र रूप से वाक्य में व्यवहार किया जाए तो ये वाक्यांश का रूप ले लेंगे :-

तुम वृक्ष उगाओ।
अंग्रेजों भारत छोड़ो।
सब मिलकर हिन्दी अपनाओ।
तुम यह काम रोको।

इन वक्यों में 'वृक्ष उगाओ, भारत छोड़ो, हिन्दी अपनाओ, काम रोको' आदि वाक्यांश स्पष्टतः दो स्वतंत्र शब्दों की पृथक् सत्ता लिए हुए हैं। दोनों मिलकर एक शब्द की रचना नहीं करते। 'वृक्ष' संज्ञा और 'उगाओ' क्रिया। वृक्ष, भारत, हिन्दी, काम आदि संज्ञा पद कर्मकारक रूप में क्रमशः 'उगाओ, छोड़ो, अपनाओ, रोको' आदि आज्ञार्थक क्रियाओं का साथ लिए हुए हैं।

परन्तु जब यह दोनों शब्द अपने उत्तरवर्ती संज्ञा शब्द के साथ जुड़कर आये हैं तब इन्होंने वाक्यांश के स्थान पर समास का रूप ले लिया है, दोनों शब्द मिलकर समास रूप में अन्तिम संज्ञापद के भेदक हैं—

| | | |
|---|---|---|
| कामरोको प्रस्ताव | — | कामरोको का प्रस्ताव |
| वृक्षउगाओ आन्दोलन | — | वृक्ष उगाओ का आन्दोलन |
| भारतछोड़ो आन्दोलन | — | भारत छोड़ो का आन्दोलन |
| हिन्दीअपनाओ नारा | — | हिन्दी अपनाओ का नारा |

समस्त पद के रूप में भेदक और भेद्य के परस्पर सम्बन्ध को स्पष्ट करने वाली सम्बन्ध-सूचक विभक्तियों का लोप हो गया है। क्रियापदों ने 'ओ' प्रत्यय के योग से ओकारान्त रूप में संज्ञापदों का रूप ग्रहण कर लिया है तथा अंतिमवर्ती संज्ञापद के साथ जुड़कर इन समासों ने संज्ञापद का रूप ले लिया है। इन समासों की भी रूपात्मक स्थिति ३—१ (१) प्रकार के संज्ञा और संज्ञा-पदों से बने भेदक-भेद्य वाले संज्ञावाची समासों की भाँति है।

इन समासों (वृक्ष उगाओ, कामरोको, हिन्दी अपनाओ) को वद्ध समासों का रूप दिया जा सकता है, क्योंकि वाक्य में इनका व्यवहार किसी अन्य संज्ञापद के साथ जुड़कर ही होता है। मुक्त रूप से उनका व्यवहार जैसा कि पहिले स्पष्ट किया जा चुका है, वाक्यांश रूप में ही होता है।

## ३—१ (१५) प्रकार

हिन्दी-साहित्य-समिति आगरा, काशी-नागरी-प्रचारिणी-सभा, मयूर-प्रकाशन झाँसी, कन्हैयालाल मुंशी हिन्दी तथा भाषा-विज्ञान विद्यापीठ-आगरा, गोरक्षा-समति, सूचना-सिंचाई मन्त्री, दलित-वर्ग-उद्धार समिति-कार्यालय, किसान-मजूदर-हितकारिणी-सभा।

### विश्लेषण

हिन्दी के ये समास अनेक शब्दो के योग से वने हैं। सभी शब्द संज्ञावाची हैं। समस्त पद व्यक्तिवाची संज्ञा का रूप लिए हुए है।

हिन्दी-साहित्य-समिति, गोरक्षा-समिति, सूचना-सिंचाई मन्त्री, दलितवर्ग-उद्धार-समिति-कार्यालय, किसान-मजूदर हितकारिणी-सभा में अन्तिम संज्ञापद भेद्य है। अन्य पूर्ववर्ती शब्द उसके भेदक हैं। भेदक रूप में ये शब्द समस्त-पद का रूप लिए हुए हैं। अन्तिम पद भेद्य रूप में एक शब्द का योग लिए हुए है (दो शब्द का भी योग हो सकता है) और भेदक शब्द एक या एक से अधिक शब्दों का योग लिए हुए है। विग्रह करने पर विभक्ति शब्दों का योग जहाँ होता है उससे पहिले के शब्द पूर्व पद और भेदक कहे जायेंगे, तथा विभक्ति के वाद में आने वाले शब्द को भेद्य तथा उत्तर पद कहा जायगा।

| समास | वाक्यांश |
|---|---|
| हिन्दी-साहित्य-समिति | हिन्दी-साहित्य की समिति |
| गोरक्षा-समिति | गोरक्षा की समिति |
| सूचना-सिंचाई मन्त्री | सूचना-सिंचाई का मन्त्री |
| दलितवर्ग-उद्धार समिति-कार्यालय | दलितवर्ग उद्धार समिति का कार्यालय |
| किसान-मजदूर-हितकारिणी सभा | किसान-मजदूर की हितकारिणी सभा |

यहाँ हिन्दी-साहित्य की समिति में 'समिति' उत्तर पद और भेद्य है। उसका योग एक शब्द से हुआ है। 'हिन्दी-साहित्य' पूर्व पद और भेदक है, और उसका योग दो शब्दों से हुआ है। दो शब्दों का योग लिए ये शब्द समास रूप में हैं। फलतः इन समासो की रचना समस्त पदों के योग से हुई है।

गोरक्षा-समिति में 'गोरक्षा', दलित-वर्ग-उद्धार-समिति में 'दलित वर्ग उद्धार' समास परस्पर भेदक-भेद्य की स्थिति लिए हुए हैं। ( गोरक्षा=गो की रक्षा, दलित वर्ग उद्धार=दलित वर्ग का उद्धार ) सूचना सिंचाई-शब्द ३—१ (१३) प्रकार के समासों की भाँति है।

किसान-मजदूर हितकारिणी-सभा में 'हितकारिणी-सभा' समस्त पद रूप में भेद्य है। इसकी रचना दो शब्दों के योग से हुई है—(हितकारिणी+सभा)

'कन्हैयालाल मुंशी हिन्दी तथा भाषा-विज्ञान-विद्यापीठ' आदि कुछ समास ऐसे भी हैं जिनके पूर्व पद, समस्त पद नहीं होते, अपितु वाक्यांश का रूप लिए हुए हैं। 'कन्हैयालालमुंशी हिन्दी तथा भाषा-विज्ञान' वाक्यांश ही है परन्तु 'विद्यापीठ' के साथ योग होने पर यह समस्त पद का रूप धारण कर लेता है।

इन सभी समासों में अन्तिम भेद्य शब्द की प्रधानता है। क्रिया के लिंग, वचन का निर्धारण इसी भेद्य शब्द के अनुसार होता है। वस्तुतः इन समासों की रूपात्मक स्थिति ३—१ (१) प्रकार के ससासों की भाँति है।

मयूर-प्रकाशन झाँसी, हिन्दी-साहित्य-समित आगरा में अंतिम शब्द 'झाँसी' और 'आगरा' स्थान-सूचक व्यक्तिवाची संज्ञा हैं। समास रचना में अन्तिम पद के रूप में आने पर भी हिन्दी-साहित्य-समिति की 'समिति' की भाँति ये शब्द भेद्य नहीं हैं, अपितु भेदक हैं। क्योंकि इन समासों का विग्रह करने पर विभक्ति-सूचक सम्बन्ध प्रत्ययों की अन्विति इस शब्द के पश्चात् होती है तथा अन्य शब्द समस्त पद के रूप में भेद्य हो जाते हैं। फलतः समास रूप में अन्तिम पद की प्रधानता न होकर पर्वंवर्ती समस्त पद की भेद्य रूप में प्रधानता हो जाती है—

| समास | वाक्यांश |
|---|---|
| हिन्दी-साहित्य-समिति आगरा. | आगरा की हिन्दी साहित्य समिति |
| मयूर-प्रकाशन झाँसी | झाँसी का मयूर प्रकाशन |

इस प्रकार विग्रह करने पर अन्तिम शब्द पहिले आकर भेदक होगया है। भेदक-भेद्य की स्थिति में संज्ञापदीय होने के कारण इन समासों की रूपात्मक सत्ता ३—१ (१) प्रकार के समासों की भाँति है।

### ३—१ (१६) प्रकार

अपनेराम, आपकाजी, आपबीती, अपनेआप, अपना-पराया, जन-साधारण, जयराम, जयजिनेन्द्र, जयहिन्द, एकसाथ, एकरस, पिछवाड़ा, छुई-मुई, छूआ-छूत, भरपेट, पेटभर, मुट्ठीभर, हँसमुख, रंगासियार, चलतापुर्जा, खाली-हाथ।

## विश्लेषण

ये सभी समास रूप रचना की दृष्टि से भिन्नता लिए हुए हैं, इस प्रकार की रचना वाले समासों का व्यवहार भी हिन्दी भाषा में बहुत कम मात्रा में है। इन समासों को अन्य प्रकारों की श्रेणी में भी नहीं रखा जा सकता। अन्य प्रकारों के समासों की भाँति रूप रचना की दृष्टि से ये समास हिन्दी समास रचना की प्रवृत्ति के प्रतीक भी नहीं हैं। रूपात्मक दृष्टि से इन समासों को हिन्दी के फुटकर समासों का रूप दिया जा सकता है।

'अपनेराम' समास में पहिला पद सर्वनाम, दूसरा पद संज्ञा और समस्त पद सर्वनाम हैं। फलतः रूप-रचना की दृष्टि से यह द्वितीय पद प्रधान है। प्रथम पद 'अपने' बहुवचन का एकारान्त रूप लिए हुए है, परन्तु यहाँ 'अपने' सर्वनाम एकवचन के रूप में प्रयुक्त हुआ है। इस शब्द का यह रूप प्रत्येक अवस्था में अपरिवर्तनीय है, लिंग वचन को लेकर उसमें किसी प्रकार का विकार नहीं होता :—

१—राम कहता है कि अपनेराम को कुछ नहीं मालूम।
२—सीता कहती है कि अपनेराम को कुछ नहीं मालूम।

इन समासों की रचना में किसी प्रकार की सम्बन्धसूचक विभक्तियों का लोप नहीं होता, अतः इस प्रकार के समास को भेदक–भेद्य वाला समास नहीं कह सकते। विशेषण-विशेष्य की स्थिति लिए हुए भी यह समास नहीं है। क्यों कि इसमें 'अपने' राम की विशेषता प्रकट नहीं करता। भाई-बहिन, गाय-बैल आदि समासों की भाँति भी इसके दोनों पद स्वतंत्र नहीं हैं।

इस समास की रचना-प्रकृति प्रकार ३-१ (२) के महिलायात्री, नरचील आदि समासों से कुछ साम्य रखती है। 'महिलायात्री' में जहाँ दोनों पद संज्ञा और समस्त पद संज्ञा हैं, इस समास में पहिला पद सर्वनाम और दूसरा पद संज्ञा है। महिलायात्री में 'महिला' शब्द विशेषण रूप में होकर 'यात्री' की विशेषता प्रकट करता है। इस समास में 'अपने' शब्द 'राम' की विशेषता नहीं प्रकट करता। फिर भी 'महिलायात्री' में जैसे पहिला पद 'महिला' प्रधान है 'अपनेराम' में भी पहिला शब्द 'अपने' प्रधान है। 'राम' शब्द की सत्ता निष्क्रिय है। महिलायात्री की भाँति यह समास भी समानाधिकरण का रूप लिए हुए है।

'आपकाजी' समास में पहिला पद सर्वनाम, दूसरा पद विशेषण और समस्त पद भी विशेषण है। फलतः रूप-रचना की दृष्टि से द्वितीय पद की प्रधानता

है। 'आप' वैसे यहाँ 'स्वयं' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है, और विग्रह करने पर इस समास का रूप यह भी हो सकता है :—

| समास | वाक्यांश |
| --- | --- |
| आपकाजी | स्वयं का काजी |

फलतः यह समास भेदक-भेद्य की स्थिति लिए हुए है। पहिला पद भेदक है और दूसरा पद भेद्य। भेदक-भेद्य होने से यह समास व्यधिकरण का रूप लिए हुए है। विशेषणवाची समास होने से इस समास की रूपात्मक स्थिति प्रायश्चित-दग्ध, जन्म-रोगी जैसे ३-१ (४) के प्रकार समासों की भाँति कही जा सकती है।

'आपवीती' समास में पहिला पद सर्वनाम, दूसरा पद क्रिया और समस्त पद संज्ञा है। फलतः रूप-रचना की दृष्टि से यह समास अन्य पद प्रधान है। क्रिया यहाँ कृदंत रूप में विशेषणार्थक है। 'वीती' यहाँ स्त्रीलिंग एकवचन रूप में है। समस्त पद भी स्त्रीलिंग एकवचन का रूप लिए हुए है। यहाँ भी 'आप' 'स्वयं' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। विग्रह करने पर इस समास में 'आप' के साथ 'नी' सम्बन्ध प्रत्यय का योग होता है :—

| समास | वाक्यांश |
| --- | --- |
| आपवीती | अपनी वीती |

फलतः यह समास भी भेदक-भेद्य की स्थिति लिए हुए है। संज्ञापद होने से इस समास में दूसरे पद की प्रधानता है, और इस समास की स्थिति भी ३-१ (१) प्रकार के संज्ञा और संज्ञापदों के योग से बने संज्ञापदों की भाँति है।

'अपने-आप' समास में दोनों ही पद सर्वनाम हैं, परन्तु समस्त पद अव्यय है। 'स्वयं' के अर्थ में इस समास का व्यवहार भाषा में होता है।

'अपने-राम' समास की भाँति इस समास में भी 'अपने' शब्द बहुवचन रूप में एकारांत है, परन्तु इसका यह रूप अपरिवर्तनीय है। उसका, अपनी, या अपना रूप नहीं होता।

इस समास की रचना में किसी प्रकार की सम्बन्ध-सूचक विभक्तियों का लोप नहीं होता। यह समास भेदक-भेद्य की स्थिति लिए हुए नहीं है। विशेषण-विशेष्य की स्थिति भी इस समास की नहीं है। क्योंकि इस समास में पहला 'अपने' शब्द दूसरे 'आप' शब्द का विशेषण नहीं है। प्रकार ३-१ (१३) के 'धनदौलत', 'कहासुनी', आदि समासों की भाँति भी इस समास की स्थिति नहीं है।

'अपना-पराया' में पहला पद सर्वनाम दूसरा, पद विशेषण और समस्त पद संज्ञा है। इस समास की रूप-रचना वैसे ३-१ (१३) प्रकार के समासों की ही

भाँति है। क्योंकि 'अपना-पराया' का विग्रह करने पर वाक्यांश रूप में 'और' समुच्चयबोधक अव्यय की अन्विति इस समास में होगी। अन्तर इतना ही है कि ३-१ (१३) प्रकार के समासों में दोनों पद रूपात्मक दृष्टि से एक होते हैं, इस समास में एक शब्द सर्वनाम है, दूसरा विशेषण।

'जन-साधारण' समास में पहिला पद संज्ञा है, दूसरा पद विशेषण और समस्त पद संज्ञा है। इस समास का विग्रह करने पर किसी प्रकार की सम्बन्ध-सूचक विभक्तियों की अन्विति नहीं होती। हम यह नहीं कह सकते 'जन-के साधारण', 'जन का साधारण'। फलतः समास समानाधिकरण का रूप लिए हुए है।

समानाधिकरण रूप में होता हुआ भी यह समास विशेषण-विशेष्य की स्थिति में नहीं है। 'जन' शब्द 'साधारण' की विशेषता को प्रकट नहीं करता। वास्तव में इस समास की रूपात्मक स्थिति प्रकार ३-१ (२) के 'महिलायात्री', 'बालअभिनेता' समासों की भाँति है। 'महिलायात्री' आदि समासों में जैसे दूसरा शब्द रूपात्मक दृष्टि से निष्क्रिय है, पहिला पद प्रधान है, 'जनसाधारण' में भी 'साधारण' शब्द रूपात्मक दृष्टि से निष्क्रिय है और 'जन' शब्द प्रधान है। अर्थ की दृष्टि से यद्यपि जनसाधारण समूहवाची संज्ञा का रूप लिए हुए है। (जन-साधारण से तात्पर्य साधारण जन से नहीं, अपितु जनता से है) परन्तु यहाँ प्रथम पद 'जन' पुल्लिग एकवचन है, अतः समस्त पद भी पुल्लिंग एकवचन में प्रयुक्त हुआ है। फलतः क्रिया के लिंग, वचन का निर्धारण प्रथम पद के अनुसार है।

'जयराम, जय जिनेन्द्र, जयहिन्द' समासों में दोनों पद संज्ञा हैं और समस्त पद अभिवादन सूचक शब्द होने के कारण अव्यय है। अतः रूप-रचना की दृष्टि से इनमें अन्य पद की प्रधानता है क्योंकि समस्त पद का रूपात्मक स्वरूप समासगत पदों से भिन्न है।

अव्यय रूप में इन समासों के लिंग, वचन को लेकर किसी प्रकार का विकार नहीं होता। इस समास का पहिला शब्द 'जय' स्त्रीलिंग एकवचन रूप में है और समस्त पद भी स्त्रीलिंग एकवचन रूप में है।

इन समासों का निर्माण 'राम की जय, जिनेन्द्र की जय, हिन्द की जय', वाक्यांशों द्वारा 'की' सम्बन्धसूचक शब्दों के लोप से हुई है, परन्तु वाक्यांश रूप में इनका जो अर्थ है वह समास रूप में नहीं है। समास रूप में 'नेहरू की जय' के समान 'राम की जय' से अभिप्राय नहीं है, अपितु नमस्कार की भाँति वह अभिवादन सूचक शब्द है।

'एकसाथ, एकरस' में पहिला पद विशेषण, दूसरा पद संज्ञा और समस्त पद अव्यय का रूप लिए हुए हैं। ऊपर के समासों की भाँति यह समास भी रूप-रचना की दृष्टि से अन्य पद प्रधान हैं। अव्यय रूप होने से यह समास अविकारी हैं। वाक्य में क्रिया-विशेषणों की भाँति ये कार्य करते हैं। पहिला पद विशेषण होने पर भी दूसरे पद की विशेषता को प्रकट नहीं करता। यहाँ 'साथ' एक का नहीं, रस की संख्या 'एक' नहीं, फिर भी विशेषण-विशेष्य वाले समासों की भाँति यह समास भी समानाधिकरण का रूप लिए हुए हैं। इन समासों की रचना में सम्बन्ध-सूचक विभक्तियों का लोप नहीं होता।

'पिछवाड़ा' समास में पहिला पद अव्यय, दूसरा पद संज्ञा और समस्त पद संज्ञा है। रूप-रचना की दृष्टि से द्वितीय पद की प्रधानता है। 'पीछे का वाड़ा' रूप में समास भेदक-भेद्य की स्थिति लिए हुए है और इसकी रूपात्मक स्थिति संज्ञा और संज्ञापदों के योग से बने ३-१ (१) प्रकार के समासों की भाँति है।

'छुईमुई' में दोनों ही पद क्रियापद हैं, और समस्त पद विशेषण है। समास रूप में दूसरे पद ने कृदंत विशेषण का रूप ले लिया है।

इस समास का स्वरूप ३—१ (१३) के प्रकार के समासों की भाँति प्रतीत होता है, पर वास्तव में इस समास का स्वरूप भेदक-भेद्य वाले समासों की भाँति है। छुई-मुई का विग्रह 'छुई' और 'मुई' नहीं अपितु 'छुई से मुई' (छूने से मुरझाने वाली) है। विशेषणवाची होने से इस समास का रूप भी ३—१ (४) के विशेषणवाची समासों की भाँति है।

'छुआछूत' में प्रथम पद क्रिया, दूसरा पद 'छूना' क्रिया से बनी कृदंत संज्ञा और समस्त पद संज्ञा है। पहिला पद भेदक और दूसरा पद भेद्य है, क्योंकि विग्रह करने पर इस समास का रूप होगा—'छूआ की छूत, छूने की छूत, छूने से होने वाली छूत।' समस्त पद के संज्ञावाची होने से इस समास का रूप भी कृदंत संज्ञा और संज्ञापदों के योग से बने संज्ञापदों ३—१ (७) की भाँति है।

'भरपेट' समास में पहिला पद 'भर' क्रिया, दूसरा पद संज्ञा और समस्त पद अव्यय है। 'भर' क्रिया कृदंत अव्यय के रूप में प्रयुक्त हुई है। अव्यय रूप होने से इस समास में लिंग, वचन को लेकर किसी प्रकार का विकार नहीं होता। वाक्य में क्रिया-विशेषण की स्थिति लिए यह क्रिया की विशेषता प्रकट करता है।

विग्रह करने पर इस समास का रूप होगा—'पेट भर कर'। इस प्रकार वाक्यांश रूप में 'भर' क्रियापद, 'पेट' संज्ञापद के पश्चात् पूर्वकालिक कृदंत अव्यय

के रूप में आयेगा। वाक्यांश रूप में यह समास भेदक-भेद्य की स्थिति में है। 'पेट' भेदक है और 'भर' भेद्य। किसको भरकर ? पेट को भर कर। इस रूप में इस समास की स्थिति ३—१ (५) प्रकार के आज्ञानुसार, कथनानुसार, आदि अव्यय वाची समासों की भाँति है। परन्तु समास रूप में 'भर' कृदंत अव्यय पद 'पेट' संज्ञापद से पहिले आया है। यहाँ 'पेट' (द्वितीय शब्द) भेदक है और 'भर' शब्द भेद्य है।

'पेटभर' समास में पहिला पद 'पेट' संज्ञा है, दूसरा पद 'भरना' क्रिया से बना कृदंत अव्यय है, और समस्त पद भी अव्यय है। फलतः रचना की दृष्टि से इस समास का रूप संज्ञा और क्रियापदों से बने कृदंत संज्ञाओं के योग वाले संज्ञापदों ३—१ (६) की भाँति है। विग्रह करने पर इस समास का रूप होगा 'पेट को भरकर'। समास रूप में अन्तिम पद 'भर' में 'कर' पूर्वकालिक कृदंत प्रत्यय का लोप होगया है।

'मुट्ठी-भर' समास में पहला शब्द संज्ञा है, दूसरा शब्द 'भर', 'भरना' क्रिया से बना कृदंत अव्यय और समस्त पद विशेषण है। जैसे :—

'मुट्ठी-भर' लोगों ने यह कार्य किया।

(यहाँ 'मुट्ठी भर' थोड़े से के अर्थ में लोगों की विशेपता को प्रकट करता है।)

इस समास में पहिले पद के संज्ञा, दूसरे पद के अव्यय और समस्त पद के विशेपणवाची होने पर भी इस समास की रचना ३—१ (६) के दिल-जला, सिर-फिरा, मुंड-चिरा आदि विशेपणवाची समासों की भाँति नहीं है। ये समास भेदक-भेद्य की स्थिति लिए हैं, और इनकी रचना में सम्बन्ध-सूचक विभक्तियों का लोप हुआ है। परन्तु 'मुट्ठीभर' समास की रचना में सम्बन्ध सूचक विभक्तियों का लोप नहीं होता। विग्रह करने पर 'पेटभर' समास की भाँति 'मुट्ठीभर' समास का रूप 'मुट्ठी को भरकर' नहीं होगा। वास्तव में इस समास की स्थिति कुछ-कुछ विशेपण-विशेष्य वाले विशेपणवाची ३—१ (९) समासों की भाँति हो सकती है। 'सतरङ्गा' में जिस प्रकार 'सत' रंग की संख्या बतलाता है, 'मुट्ठी-भर' में 'मुट्ठी' 'भर' का परिमाण बतलाता है। जैसे—

सतरंगा (कितने रंग का—सात रंग का)

मुट्ठीभर (कितना भरा-मुट्ठी भरा)

रंगासियार, चलतापुर्जा, खालीहाथ—समासों की रचना में पहिला शब्द विशेपण, दूसरा शब्द संज्ञा और समस्त पद विशेपण हैं। अतः रूप-रचना की दृष्टि से इनमें प्रथम पद की प्रधानता है।

पद १ + पद २ = पद २

ये समास विशेषण-विशेष्य की स्थिति लिए हुए हैं, क्योंकि इन समासों की रचना में किसी प्रकार की सम्बन्ध-सूचक विभक्तियों का लोप नहीं होता।

इन समासों में यद्यपि पहला पद विशेषण और दूसरा पद संज्ञा है, तथापि पहिला पद दूसरे पद का विशेषण नहीं है। 'रंगासियार' से अभिप्राय सियार के रंगे होने से नहीं, वल्कि उस व्यक्ति से है जो रंगे सियार की भाँति धूर्त है। 'चलतापुर्जा' से अभिप्राय पुर्जा के चलते हुए होने से नहीं वल्कि इधर-उधर हाथ-पैर फैलाने वाले चालाक व्यक्ति से है। 'खालीहाथ' से अभिप्राय हाथ खाली होने से नहीं अपितु उस निर्धन व्यक्ति से है जिसका हाथ सदैव खाली रहता है। इस प्रकार इन समासों में समस्त पद विशेषण का रूप लेकर अन्य पद का विशेष्य है।

इन समासों के विशेषण रूप में अन्य पद के विशेष्य होने के कारण इन समासों के लिंग, वचन का निर्धारण अन्य पद के अनुसार होता है। क्रिया का आधार अन्य पद होता है।

इन समासों का रूप वैसे संस्कृत के 'नतमस्तक, दीर्घकाय, हतप्रभ, दत्तचित्त' उर्दू के 'गुमराह, वदनसीव', जैसे समासों के भाँति है। परन्तु इन समासों का विग्रह करने पर शब्दों का क्रम उलट जाता है और इनकी स्थिति 'मनमोहक, जलपिपासु' आदि समासों की भाँति हो जाती है। जैसे :—

नतमस्तक=मस्तक का नत
दीर्घकाय =काया का दीर्घ
हतप्रभ =प्रभा का हत
गुमराह =राह से गुम
वदनसीव =नसीव का वद

इस प्रकार ये समास भेदक-भेद्य की स्थिति लिए हुए हैं। रंगासियार, चलतापुर्जा, खालीहाथ, भेदक-भेद्य की स्थिति लिए हुए नहीं हैं। विग्रह करने पर उसके शब्दों का क्रम बदलता नहीं। रंगासियार का 'सियार रंगा', चलतापुर्जा का 'पुर्जा चलता', खाली हाथ का 'हाथ खाली' रूप नहीं हो सकता।

कालापानी, कालावाजार, श्वेतपत्र—समासों से ये समास कुछ समानता रखते हैं, परन्तु श्वेतपत्र, काला-पानी, कालावाजार, जहाँ संज्ञापद हैं, रंगासियार चलतापुर्जा, खालीहाथ, विशेषणपद हैं।

'हँसमुख' में भी पहला पद 'हँसना' क्रियापद से बना, कृदंत विशेषण पद है, दूसरा 'मुख' शब्द संज्ञा है, और समस्त पद विशेषण है। इसकी रूपात्मक स्थिति भी 'रङ्गा-सियार, चलतापुर्जा, खाली हाथ' विशेषण पदों की भाँति है।

वास्तव में हिन्दी में समास-रचना की यह प्रवृत्ति कम ही मिलती है। हिन्दी में पहला पद विशेषण, दूसरा पद संज्ञा हो तो समस्त पद संज्ञापद ही बनता है, विशेषण पद नहीं। समस्त पद को विशेषण पद का रूप देने के लिये संज्ञा के पश्चात् विशेषण का योग होता है।

## ३—२ निष्कर्ष

१३—२ (१) रूप प्रक्रिया के क्षेत्र में हिन्दी समास-रचना संज्ञा, सर्वनाम विशेषण, अव्यय, क्रिया शब्दों के परस्पर मेल से बनती है, और वह संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, अव्यय, क्रिया शब्दों का रूप लेती है—

१—संज्ञा + संज्ञा = संज्ञा

हिन्दी-साहित्य, हथकड़ी, घुड़साल, डाक-घर, कांग्रेस-अध्यक्ष, तीर-कमान, दृष्टिकोण, हारजीत, नाच-गाना, सीमा-विवाद, रक्षा-संगठन, संध्या-काल, नमक-मिर्च, मकान-मालिक, बंस-लोचन, शोधपीठ, विद्यालय, राहखर्च, दियसलाई, हाथीदांत, गजदंत, हिन्दी-शिक्षा, प्रवेश-द्वार, दस्तखत, हस्ताक्षर, बिजली घर, पनचक्की, लठालठी, घी-बाजार, मयूर-सिंहासन, मोती-चूर, राजामंडी, शब्दालंकार, नारीजाति, जीवन-पथ, आर्य-लोग, रामकहानी।

२—संज्ञा + संज्ञा = विशेषण

कमलनयन, पुरुषरत्न, कौड़ीकरम, आरामपसंद, गोबरगणेश, पाषाणहृदय, राजीवलोचन, चरणकमल, चन्द्रमुख सुख-सागर, कामचोर, अश्रुमुख, बगुला-भगत, पत्थरदिल।

३—संज्ञा + संज्ञा = अव्यय

रातदिन, सुबह शाम, सांझसकारे, घरबाहर, जयराम, जयहिन्द जयजिनेन्द्र, हाथोंहाथ, कानोंकान, मन-ही-मन, दिनोंदिन, रातोंरात बात-ही-बात।

४—संज्ञा + विशेषण = विशेषण

कपोल-कल्पित, रोगग्रस्त, क्षमाप्रार्थी, नमकहलाल, जीविका-विहीन, रससिक्त, कलापरक, धूलधूसरित, मनलुभावना, जन्म-रोगी, शरणागत, प्राणप्रिय, भयाकुल, प्रायश्चित-दग्ध, मन-

मोहक, संदेह-जनक, संदेह-मूलक, वेतनभोगी, हृदयविदारक, मर्मभेदी, प्रेम-मग्न, बंधन-मुक्त, ईश्वरदत्त, पदच्युत, गगन-चुम्बी, जलपिपासु, आशातीत, प्राणदायिनी, भारवाहक, मर्मस्पर्शी, स्वप्नदर्शी, अकाल-पीड़ित, प्राणप्रिय, कष्ट-साध्य, जन्म-जात, दुख-संतप्त, प्रभाव-पूर्ण, मन-गढंत, मदमाता, वेदनायुक्त, वचनबद्ध, पथभ्रष्ट, जन्मांध, कला-कुशल, पुरुषोत्तम, नराधम, प्राणदायिनी।

५—संज्ञा + क्रिया = संज्ञा

पतझड़, कपड़छन, शिलाजीत, जेबकटी, जगहँसाई, चिड़ीमार, भड़भूंजा, हथलेवा, नावचढ़ाई, वस्त्रधुलाई, संकट-मोचन, मनमुटाव, दिलबहलाव, गंगानहान, कामरोकन, सैन्य-संचालन, दिलजलाना।

६—संज्ञा + क्रिया = विशेषण

दिलजला, दिलफेंक, मक्खीचूस, भिखमंगा, हितकारी, मुँह-तोड़, मुँहमाँगा, मनमाना, मनचाहा, आँखोंदेखा, घरसिला, घरघुसा, कानोंसुना, सिरफिरा, कनकटा, भुखमरा, कन-फटा, पेसाखाऊ।

७—संज्ञा + क्रिया = अव्यय

पेटभर।

८—संज्ञा + अव्यय = अव्यय

आज्ञानुसार, वचनानुसार, ध्यानपूर्वक, आग्रहपूर्वक, मृत्यु-पर्यन्त, भोजनोपरान्त, घरबाहर।

९—विशेषण + विशेषण = विशेषण

एकतिहाई, सतरंगा, सतखंडा, तिमंजिला, लाल-पीला, हरा-भरा, उल्टा-सीधा, सुन्दर-सलौना, अधकच्चा, गोलमटोल; चौमुखी।

१०—विशेषण + विशेषण = अव्यय

जैसा-तैसा, थोड़ाबहुत।

११—विशेषण + संज्ञा = संज्ञा

इकन्नी, चवन्नी, गोलमाल, अंधकूप, कालाबाजार, श्यामपट, श्वेतपत्र, चौराहा, चौपाया, तिपाई, दुधारा, चौबारा, दुसूती,

पंसेरी, मिष्ठान्न, समालोचना, लखपति, दोपहर, मंझधार।

१२—विशेषण + संज्ञा = विशेषण

खालीहाथ, रंगासियार, चलतापुर्जा।

१३—विशेषण + संज्ञा = अव्यय

सर्वकाल, एकसाथ, एकरस।

१४—क्रिया + क्रिया = क्रिया

डांटाफटकारा, खायापीया, खाओपीओ, देखासुना।

१५—क्रिया + क्रिया = संज्ञा

कियाकराया, कराधरा, कहना-सुनना, दौड़-धूप, रोना-पीटना, छीनाझपटी, भाग-दौड़, कहन सुनन, आना-जाना, खान-पान, सूझ-बूझ, हार-जीत, उखाड़-पछाड़, उधेड़-बुन, लूटमार, मार-पीट, कहासुनी, मारा-मारी, भागा-भूगी, उठा-बैठी, तनातनी।

१६—क्रिया + क्रिया = विशेषण

जीता-जागता, खाते-पीते, हँसते-बोलते।

१७—क्रिया + क्रिया = अव्यय

उठते-बैठते, सोते-जागते, गिरते-पड़ते, खा-पीकर, देखभालकर, हिलमिलकर, घुलमिलकर।

१८—क्रिया + संज्ञा = संज्ञा

उड़नखटोला, उड़नतश्तरी, उड़नदस्ता, चलनक्रिया, रटंतविद्या, छूआ-छूत, तुलाईकांटा।

१९—क्रिया + संज्ञा = विशेषण

हँसमुख।

२०—क्रिया + विशेषण = विशेषण

छुईमुई।

२१—क्रिया + संज्ञा = अव्यय

भरपेट।

२२—अव्यय + अव्यय = अव्यय

आगे-पीछे, इधर-उधर, नित-प्रति, आजकल, जब-तब, जैसा-तैसा, गटागट, हाथोंहाथ, बीचोबीच।

२३—अव्यय + संज्ञा = संज्ञा

पिछवाड़ा।

२४—अव्यय + क्रिया = विशेषण

विनबोया, विनदेखा, विनसुना, विनकहा, पिछलग्गू ।

२५—सर्वनाम + सर्वनाम = सर्वनाम

मैं-तुम, मेरा-तुम्हारा ।

२६—सर्वनाम + संज्ञा = संज्ञा

आपलोग, हमलोग, तुमलोग ।

२७—सर्वनाम + विशेषण = विशेषण

आपकाजी ।

२८—सर्वनाम + संज्ञा = सर्वनाम

अपनेराम ।

२९—सर्वनाम + क्रिया = संज्ञा

आपबीती ।

३०—सर्वनाम + विशेषण = संज्ञा

अपनापराया ।

३१—सर्वनाम + अव्यय = अव्यय

इसलिये, इसतरह, इस प्रकार ।

३२—सर्वनाम + सर्वनाम = अव्यय ।

आप-ही-आप ।

३—२ (२) हिन्दी समासों की, पदों के परस्पर योग से इस प्रकार की रचना प्रायः नहीं होती ।[1]—

१—संज्ञा + संज्ञा = क्रिया
२—संज्ञा + संज्ञा = सर्वनाम
३—संज्ञा + विशेषण = क्रिया
४—संज्ञा + विशेषण = सर्वनाम
५—संज्ञा + विशेषण = अव्यय
६—संज्ञा + क्रिया = सर्वनाम
७—संज्ञा + क्रिया = क्रिया
८—संज्ञा + अव्यय = क्रिया
९—संज्ञा + अव्यय = सर्वनाम

---

१. 'रचना प्रायः नहीं होती' से अभिप्राय यही है कि पदों के योग की ऐसी प्रवृत्ति हिन्दी भाषा में सामान्यतः नहीं मिलती । हो सकता है इस प्रकार के पदों के योग के दो-एक उदाहरण मिल जायें ।

१०—संज्ञा +सर्वनाम =सर्वनाम
११—संज्ञा +सर्वनाम =विशेषण
१२—संज्ञा +सर्वनाम =क्रिया
१३—संज्ञा +सर्वनाम =संज्ञा
१४—विशेषण+विशेषण=क्रिया
१५—विशेषण+विशेषण=सर्वनाम
१६—विशेषण+संज्ञा =क्रिया
१७—विशेषण+संज्ञा =सर्वनाम
१८—विशेषण+क्रिया =संज्ञा
१९—विशेषण+क्रिया =विशेषण
२०—विशेषण+क्रिया =क्रिया
२१—विशेषण+क्रिया =अव्यय
२२—विशेषण+क्रिया =सर्वनाम
२३—विशेषण+अव्यय =क्रिया
२४—विशेषण+अव्यय =सर्वनाम
२५—विशेषण+सर्वनाम =क्रिया
२६—विशेषण+सर्वनाम =संज्ञा
२७—विशेषण+सर्वनाम =अव्यय
२८—विशेषण+सर्वनाम =क्रिया
२९—विशेषण+सर्वनाम =सर्वनाम
३०—क्रिया +क्रिया =सर्वनाम
३१—क्रिया +संज्ञा =सर्वनाम
३२—क्रिया +संज्ञा =क्रिया
३३—क्रिया +विशेषण=अव्यय
३४—क्रिया +विशेषण=क्रिया
३५—क्रिया +विशेषण=सर्वनाम
३६—क्रिया +अव्यय =संज्ञा
३७—क्रिया +अव्यय =विशेषण
३८—क्रिया +अव्यय =सर्वनाम
३९—क्रिया +अव्यय =क्रिया
४०—क्रिया +सर्वनाम =संज्ञा
४१—क्रिया +सर्वनाम =विशेषण
४२—क्रिया +सर्वनाम =अव्यय

४३—क्रिया + सर्वनाम = सर्वनाम
४४—क्रिया + सर्वनाम = क्रिया
४५—अव्यय + अव्यय = क्रिया
४६—अव्यय + अव्यय = विशेषण
४७—अव्यय + संज्ञा = विशेषण
४८—अव्यय + संज्ञा = क्रिया
४९—अव्यय + संज्ञा = सर्वनाम
५०—अव्यय + विशेषण = क्रिया
५१—अव्यय + विशेषण = सर्वनाम
५२—अव्यय + क्रिया = संज्ञा
५३—अव्यय + क्रिया = विशेषण
५४—अव्यय + क्रिया = क्रिया
५५—अव्यय + क्रिया = अव्यय
५६—अव्यय + क्रिया = सर्वनाम
५७—अव्यय + सर्वनाम = संज्ञा
५८—अव्यय + सर्वनाम = विशेषण
५९—अव्यय + सर्वनाम = अव्यय
६०—अव्यय + सर्वनाम = क्रिया
६१—अव्यय + सर्वनाम = सर्वनाम
६२—सर्वनाम + सर्वनाम = विशेषण
६३—सर्वनाम + सर्वनाम = क्रिया
६४—सर्वनाम + संज्ञा = विशेषण
६५—सर्वनाम + संज्ञा = अव्यय
६६—सर्वनाम + संज्ञा = क्रिया
६७—सर्वनाम + विशेषण = अव्यय
६८—सर्वनाम + विशेषण = क्रिया
६९—सर्वनाम + विशेषण = सर्वनाम
७०—सर्वनाम + अव्यय = संज्ञा
७१—सर्वनाम + अव्यय = क्रिया
७२—सर्वनाम + अव्यय = सर्वनाम
७३—सर्वनाम + क्रिया = विशेषण
७४—सर्वनाम + क्रिया = अव्यय
७५—सर्वनाम + क्रिया = सर्वनाम

३—२ (३) समास का रूप देने के लिये शब्दों के परस्पर योग में सम्बन्ध-सूचक शब्दों का लोप हो जाता है। वाक्यांश रूप में यह सम्बन्ध-सूचक शब्द प्रत्यय, विभक्ति, पद, पदांश का रूप लिए हुए रहते हैं और दोनों शब्दों के पारस्परिक सम्बन्ध को स्पष्ट करते हैं। परन्तु समास रूप में इन सम्बन्ध-सूचक शब्दों का लोप हो जाता है। यह लोप मध्यवर्ती होता है, अर्थात् शब्दों के परस्पर योग में मध्य के सम्बन्ध-सूचक प्रत्ययों का लोप हो जाता है।

विभक्तियों के रूप में मध्यवर्ती सम्बन्ध-सूचक प्रत्ययों का लोप हमें निम्न दशाओं में देखने को मिलता है—

**कर्म—विभक्ति (को) का लोप**

| वाक्यांश | समास |
| --- | --- |
| हृदय को विदीर्ण करने वाला | हृदय-विदारक |
| मर्म को भेदने वाला | मर्मभेदी |
| वेतन को भोगने वाला | वेतनभोगी |
| भीख को माँगने वाला | भिखमंगा |
| मुँह को तोड़ने वाला | मुँहतोड़ |
| भाड़ को भूँजने वाला | भड़भूँजा |
| दिल को फेंकने वाला | दिलफेंक |
| मक्खी को चूसने वाला | मक्खीचूस |
| मन को मोहने वाला | मनमोहन |

**करण—विभक्ति (से, द्वारा) का लोप**

| वाक्यांश | समास |
| --- | --- |
| प्यादा से मात | प्यादामात |
| तुलसी द्वारा किया | तुलसीकृत |
| दृष्टि से गोचर | दृष्टिगोचर |
| अल्लाह द्वारा आवाद | इलाहावाद |

**संप्रदान-विभक्ति (के लिए) का लोप**

| वाक्यांश | समास |
| --- | --- |
| देश के लिये भक्ति | देशभक्ति |
| वलि के लिये पशु | वलिपशु |
| क्षमा के लिये प्रार्थी | क्षमाप्रार्थी |

### अपादान—विभक्ति (से) का लोप

| वाक्यांश | समास |
|---|---|
| देश से निकाला | देशनिकाला |
| रोग से मुक्त | रोगमुक्त |
| जन्म से रोगी | जन्मरोगी |
| प्राण से प्रिय | प्राणप्रिय |
| भय से भीत | भयभीत |

### अधिकरण—विभक्ति (में) का लोप

| वाक्यांश | समास |
|---|---|
| ग्राम में वास | ग्रामवास |
| धूल में धूसरित | धूलधूसरित |
| पुरुषों में रत्न | पुरुषरत्न |
| शरण में आगत | शरणागत |
| मद में अंधा | मदांध |

### सम्बन्ध—विभक्ति (का) का लोप

| वाक्यांश | समास |
|---|---|
| फल का दायक | फलदायक |
| घोड़ों की शाला | घुड़साल |
| राह का खर्च | राहखर्च |
| घर का जमाई | घरजमाई |
| क्रोध की अग्नि | क्रोधाग्नि |
| आम का चूरा | अमचूर |
| राजा के पुत्रों | राजपुत्रों |
| राष्ट्र के सेवकों | राष्ट्रसेवकों |
| आज्ञा के अनुसार | आज्ञानुसार |

३—२ (४) हिन्दी समासों की इस रचना में कर्त्ता और संबोधन कारकों की विभक्तियों का लोप नहीं होता। अन्य विभक्तियों में भी सम्बन्ध-सूचक विभक्ति का लोप अधिक देखने को मिलता है।

३—२ (५) कारक विभक्तियों की भाँति सम्बन्ध-सूचक प्रत्ययों का लोप भी हिन्दी समास-रचना में होता है।

| वाक्यांश | समास |
|---|---|
| चीनीमैत्री | चीनमैत्री ('ई' प्रत्यय का लोप) |
| राष्ट्रीय सेवक | राष्ट्र सेवक ('ईय' प्रत्यय का लोप) |

३—२ (६) 'और' समुच्चयवोधक सम्बन्ध तत्व, 'कर' पूर्वकालिक कृदंत, 'समान' तुलनावाची अव्यय, 'दार' शब्दांश का लोप भी हिन्दी समास-रचना में होता है—

| वाक्यांश | समास |
|---|---|
| हार और जीत | हारजीत ('और' का लोप) |
| देखकर भालकर | देखभालकर ('कर' का लोप) |
| कमल जैसे नयनवाला | कमल नयन ('जैसे' का लोप) |
| नातेदार-रिश्तेदार | नातेरिश्तेदार ('दार' का लोप) |

३—२ (७) समास रचना में शब्दांशों का लोप ही नहीं, उनका आगम भी होती है—

| वाक्यांश | समास |
|---|---|
| मन मन में | मन-ही-मन ('ही' शब्दांश का आगम) |
| कान कान | कानोंकान ('ओं' शब्दांश का आगम) |
| कुछ कुछ | कुछ-के-कुछ ('के' शब्दांश का आगम) |

३—२ (८) समास का रूप देने के लिये शब्दों के इस योग में यह आवश्यक नहीं कि प्रत्यय, विभक्ति, पद, पदांश का लोप अथवा आगम हो। अनेक समास न तो प्रत्यय, विभक्ति, पद, पदांश, वाक्यांश का लोप लिए रहते हैं, और न आगम ही। उदाहरण के लिये—

| वाक्यांश | समास |
|---|---|
| एक आना | इकन्नी |
| इस लिए | इसीलिए |
| भर पेट | भरपेट |
| काला बाजार | कालाबाजार |
| श्याम पट | श्यामपट |
| एक रस | एकरस |

३—२ (९) जो समास भेदक-भेद्य की स्थिति लिए रहते हैं, उनमें किसी न किसी सम्बन्ध-सूचक विभक्ति का लोप होता है।

३—२ (१०) विशेषण-विशेष्य वाले समासों में किसी प्रकार की सम्बन्ध-सूचक विभक्तियों का लोप नहीं होता।

३—२ (११) सम्बन्ध-सूचक विभक्तियों के पूर्व का शब्द 'भेदक' होता है, उत्तर-वर्ती शब्द 'भेद्य' होता है।

३—२ (१२) 'भेदक' शब्द सदैव तिर्यक रूप में रहता है।

३—२ (१३) भेद्य और विशेष्य शब्द की समस्त पद में प्रधानता रहती है। समस्त पद के लिंग, वचन का विकरण तथा अन्य प्रत्ययों का योग भेद्य और विशेष्य शब्दों में ही होता है। संज्ञापदीय, भेदक-भेद्य और विशेषण-विशेष्य समासों में क्रिया का कारक भेद्य ही होता है। 'भेदक' और 'विशेषण' शब्द की सत्ता गौण रहती है। लिंग, वचन और किसी प्रकार के सम्बन्ध-प्रत्यय के योग को लेकर उसमें विकार नहीं होता।

३—२ (१४) विशेषण-विशेष्य के 'विशेषण' शब्द उद्देश्य रूप में होते हैं।

३—२ (१५) जो समास भेदक-भेद्य की स्थिति लिए रहते हैं उनका रूप व्यधि-करण का होता है। जो समास विशेषण-विशेश्य की स्थिति लिए रहते हैं उनका रूप समानाधिकरण का होता है।

३—२ (१६) जो समास विशेषणवाची होते हैं वे अन्य पद विशेष्य के आश्रित होते हैं। अन्य पद विशेष्य के अनुसार ही उनके लिंग, वचन का निर्धारण होता है।

३—२ (१७) भेदक-भेद्य की स्थिति वाले समासों में अव्यय, विशेषण, क्रियापदों का योग संज्ञापदों के बाद में होता है।

३—२ (१८) संज्ञा के पूर्व पद के रूप में अव्यय या विशेषण पद का योग होगा तो समास विशेषण-विशेष्य की स्थिति लिये रहेंगे।

३—२ (१९) तद्धित प्रत्यय के योग से संज्ञापदों द्वारा बने विशेषण पदों का योग कभी संज्ञापद से पूर्व नहीं होगा। ऐसी स्थिति में वे समास नहीं, वाक्यांश माने जायेंगे। समास रूप में उनका प्रयोग संज्ञा-पदों के पश्चात् ही होगा।

३—२ (२०) तद्धित प्रत्यय के योग से बने संज्ञापदों का व्यवहार भी हिन्दी समास-रचना में नहीं के बराबर होता है। सर्वनाम पदों का योग अन्य पदों के साथ बहुत कम होता है। विशेषण पदों का

योग भी पूर्वपद के योग में संज्ञापदों के साथ कम होता है, इनमें भी अधिकता संख्यावाची विशेषणों की ही होती है।

३—२ (२१) संज्ञा, विशेषण या अव्यय पदों के साथ क्रियापदों का योग कृदंत संज्ञा, विशेषण या अव्यय के रूप में होता है। कृदंत संज्ञा या विशेषण का रूप लिए क्रियापद विशेषण-विशेष्य समासों की रचना नहीं करते। हिन्दी की प्रकृत समास-रचना में इन्हीं क्रियापदों से वने कृदंत संज्ञा या विशेषण पदों का योग अधिक होता है।

३—२ (२२) जो समास न तो भेदक-भेद्य की स्थिति लिये रहते हैं और न विशेषण विशेष्य की, तथा जिनकी रचना 'और' सम्बन्ध-तत्व के लोप से होती है, ऐसे समासों में रूपात्मक दृष्टि से दोनों ही पद प्रधान होते हैं। संज्ञापद के रूप में दोनों ही पद क्रिया के कर्त्ता, विशेषण पद के रूप दोनों ही पद विशेष्य के विशेषण, क्रियाविशेषण पद के रूप में दोनों ही पद क्रिया के विशेषण, क्रियापद के रूप में दोनों ही पद कर्त्ता के कार्य रूप में होते हैं। इन समासों का पहिला पद स्वर से प्रारम्भ होने वाला, कम वर्ण वाला, वर्णक्रम की दृष्टि से पहिले प्रारम्भ होने वाला तथा पुल्लिग रूप में प्रायः होता है। यह समास भी समानाधिकरण का रूप लिये रहते हैं।

३—२ (२३) जिन समासों में समस्त पद का व्याकरणिक रूप पहिले पद के अनुरूप होता है, वह प्रथम पद प्रधान, दूसरे पद के अनुरूप होता है, वह द्वितीय पद प्रधान, अन्य पद के अनुरूप होता है, वह अन्य पद प्रधान समास होता है।

## ३—३ वर्गीकरण

रूपात्मक दृष्टि से हिन्दी समासों का निम्न रूप से वर्गीकरण किया जा सकता है :—

३—३ (१) संज्ञावाची समास—जो समास संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, अव्यय, क्रिया आदि पदों के परस्पर योग से संज्ञापद वनते हैं वे संज्ञावाची समास हैं। संज्ञावाची समास निम्न रूपों में प्राप्त होते हैं :—

१—संज्ञा पुल्लिग + संज्ञा पुल्लिग = संज्ञा पुल्लिग

उदाहरण :—नाच-गाना, हाथीदाँत, मकान-मालिक, पालन-पोषण, देशनिष्कासन, नरेन्द्र, ताजमहल, कांग्रेस-पार्टी, हस्ताक्षर, प्रवेश-द्वार, राजमंत्री ।

२—संज्ञा स्त्रीलिंग + संज्ञा स्त्रीलिंग = संज्ञा स्त्रीलिंग

उदाहरण :—पढ़ाई-लिखाई, हिन्दी-शिक्षा, मातृ-वाणी, नारी-विद्या, गंगा-यमुना, चीज़-वस्तु, आँख-मिचौनी ।

३—संज्ञा पुल्लिंग + संज्ञा स्त्रीलिंग = संज्ञा स्त्रीलिंग

उदाहरण :—राजामंडी, हथकड़ी, क्रोधाग्नि, रामकहानी, दीयावत्ती, दूध-रोटी, आरामकुर्सी, दाल-रोटी ।

४—संज्ञा पुल्लिंग + संज्ञा स्त्रीलिंग = संज्ञा पुल्लिंग

उदाहरण :—नरनारी, भाईबहिन, सोनाचाँदी, नमकमिर्च, नरचील ।

५—संज्ञा स्त्रीलिंग + संज्ञा पुल्लिंग = संज्ञा पुल्लिंग

उदाहरण :—राहखर्च, गाय-बैल, माता-पिता, विद्यालय, हिन्दी-साहित्य, राधाकृष्ण, घटाटोप, चोलीदामन, संध्याकाल, अग्नि-गोला, खटराग, रसोईघर ।

६—संज्ञा स्त्रीलिंग + संज्ञा पुल्लिंग = संज्ञा पुल्लिंग

उदाहरण :—शिलाजीत ।

७—संज्ञा एकवचन + संज्ञा एकवचन = संज्ञा एकवचन,

उदाहरण :—हस्ताक्षर, कांग्रेस-अध्यक्ष, तपोबल, संध्या-काल, शान-शौकत, धनुषबाण, जीवन-निर्माण, प्रवेश-द्वार, पथ-प्रदर्शक, राजसभा, पुस्तक-भवन, राजकुमार, लूटमार ।

८—संज्ञा एकवचन + संज्ञा एकवचन = संज्ञा बहुवचन

उदाहरण :—सेवक-सेविका, प्रेमी-प्रेमिका, माँ-बाप, गाय-बैल, कंक्कड़-पत्थर, टेबिल-कुर्सी ।

९—संज्ञा एकवचन + संज्ञा बहुवचन = संज्ञा बहुवचन

उदाहरण :—बाल-बच्चे, गली-कूचे, कांग्रेस-नेताओं, राज-सभाओं, हिन्दी-पुस्तकों, आर्यलोग ।

१०—संज्ञा बहुवचन + संज्ञा बहुवचन = संज्ञा बहुवचन

उदाहरण :—कपड़े-लत्ते, कीड़े-मकोड़े ।

११—संज्ञा + संज्ञार्थक क्रिया = संज्ञा

उदाहरण :—पतझड़, कपड़छन, शिलाजीत, चिड़ीमार, भड़भूजा, जेबकट, मनबहलाव, मनबहलाना ।

१२—विशेषण + संज्ञा = संज्ञा

उदाहरण :—इकन्नी, गोलमाल, अंधकूप, कालाबाजार, श्वेतपत्र, श्यामपत्र, चौराहा, पंसेरी, मिष्ठान्न।

१३—क्रिया + क्रिया = संज्ञा

उदाहरण :—कियाकराया, कराधरा, कहना सुनना, दौड़-धूप, रोना-पीटना, छीना-झपटी, भागा-भूगी, मारामारी।

१४—अव्यय + अव्यय = संज्ञा

उदाहरण :—ऐसी-तैसी, हाँ-हू, ना-नू।

१५—सर्वनाम + संज्ञा = संज्ञा

उदाहरण :—आप-लोग, हम-लोग, वे-लोग।

१६—सर्वनाम + विशेषण = संज्ञा

उदाहरण :—अपना-पराया।

१७—सर्वनाम + क्रिया = संज्ञा

उदाहरण :—आपबीती।

१८—संज्ञा + विशेषण = संज्ञा

उदाहरण :—जन-साधारण।

१९—सर्वनाम + सर्वनाम = संज्ञा

उदाहरण :—तूतू-मैंमैं।

३—३ (२) **विशेषण वाची समास**—जो समास संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय के योग से विशेषण पद बनते हैं उन्हें विशेषण वाची समास कहेंगे। विशेषण वाची समास निम्न रूपों में प्राप्त होते हैं :—

१—संज्ञा + संज्ञा = विशेषण

उदाहरण :—कमलनयन, गोबरगणेश, बगुलाभगत, आराम-पसंद, पाषाणहृदय, पत्थरदिल, कामचोर, कोड़ीकरम।

२—संज्ञा + विशेषण = विशेषण पद

उदाहरण :—कपोल-कल्पित, रोगग्रस्त, क्षमा-प्रार्थी, नमक-हलाल, जीविका-विहीन, रससिक्त, धूल-धूसरित, काम-चोर, जन्म-रोगी, शरणागत, प्राणप्रिय, भयाकुल, ज्ञान-शून्य।

३—संज्ञा + विशेषणार्थक क्रिया = विशेषण

उदाहरण :—दिलजला, दिलफेंक, मक्खीचूस, भिखमंगा, हितकारी, मुँहतोड़, मुँहमाँगा, आँखोंदेखा, घरसिला, घरघुसा।

४—विशेषण + विशेषण = विशेषण पद

उदाहरण :—हरा-भरा, एकतिहाई, सतरंगा, इक्का-दुक्का, दूर-दर्शी, चिरपरिचित, चौमुखी, अधकच्चा, गोलमटोल, लाल-पीला, तिमंजिला।

५—विशेषण + संज्ञा = विशेषण पद

उदाहरण :—खालीहाथ, रंगासियार, चलतापुर्जा।

६—क्रिया + क्रिया = विशेषण पद

उदाहरण :—आनी-जानी, जीता-जागता, खाते-पीते।

७—अव्यय + क्रिया = विशेषण पद

उदाहरण :—पिछलग्गू, बिनबोया, बिनदेखा।

३—३ (३) **अव्ययवाची समास** :—जो समास सर्वनाम, विशेषण, अव्यय, और क्रिया के परस्पर योग से अव्यय पद बनते हैं, उन्हें अव्यय-वाची समास कहेंगे। अव्यय-वाची समासों के निम्न रूप प्राप्त होते हैं :—

१—संज्ञा + संज्ञा = अव्यय पद

उदाहरण :—रात-दिन, सुबह-शाम, परिणाम-स्वरूप, सांझ-सकारे, हाथोंहाथ, कानोंकान, दिनोंदिन, मन-ही-मन, जयजिनेन्द्र, जयहिन्द।

२—संज्ञा + अव्यय = अव्यय पद

उदाहरण :—आज्ञानुसार, ध्यानपूर्वक, नियमानुसार, घर-बाहर।

३—विशेषण + विशेषण = अव्यय पद

उदाहरण :—कुछ-के-कुछ, थोड़ा-बहुत।

४—विशेषण + संज्ञा = अव्यय पद

उदाहरण :—सर्वकाल, एकसाथ, एकरस।

५—अव्यय + अव्यय = अव्यय पद

उदाहरण :—आगा-पीछा, इधर-उधर, नित-प्रति, जब-तब, जैसा-तैसा, आजकल, थोड़ा-बहुत, गटागट, चटाचट।

६—सर्वनाम + अव्यय = अव्यय पद

उदाहरण :—इसलिये, इसी प्रकार, इस तरह।

७—क्रिया + संज्ञा = अव्यय पद

उदाहरण :—भरपेट।

८—क्रिया + क्रिया = अव्यय पद

उदाहरण :—हिलमिलकर, खा-पीकर, उठते-बैठते, गिरते-पड़ते, देखते-भालते।

३—३ (४) क्रियावाची समास—जो समास संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, अव्यय पदों के परस्पर योग से क्रियापदों का रूप लेते हैं उन्हें क्रियावाची समास कहते हैं—

१—क्रिया + क्रिया = क्रिया

उदाहरण—खाया-पीया, डाँटा-फटकारा।

३—३ (५) सर्वनामवाची समास—जो समास संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय पदों के परस्पर योग से सर्वनाम पदों का रूप लेते हैं, वे सर्वनामवाची समास हैं—

१—सर्वनाम + सर्वनाम = सर्वनाम

उदाहरण—मैं-तुम, अपना-उनका, मेरा-तुम्हारा।

२—सर्वनाम + संज्ञा = सर्वनाम।

उदाहरण—अपनेराम।

३—३ (६) प्रथम पद-प्रधान समास—जिस समास में समस्त पद का रूपात्मक-स्वरूप प्रथम पद के अनुरूप हो। उदाहरण के लिये यदि किसी समास का पहिला पद विशेषण हो, दूसरा पद संज्ञा, और समस्त पद विशेषण हो तब विशेषण और संज्ञा के योग से बना विशेषणवाची यह समास प्रथम पद-प्रधान समास कहलायेगा। इस प्रकार प्रथम पद-प्रधान समास का रूप होगा—

पद १ + पद २ = पद १

उदाहरण—

महिलायात्री (संज्ञा १ + संज्ञा २ = संज्ञा १)

हिन्दी-साहित्य-समिति, आगरा (संज्ञा १ + संज्ञा २ = संज्ञा १)

अपनेराम (सर्वनाम + संज्ञा = सर्वनाम)

खालीहाथ (विशेषण + संज्ञा = विशेषण)

३—३ (७) द्वितीय पद-प्रधान समास—जिस समास में समस्त पद का रूपात्मक स्वरूप द्वितीय पद के अनुरूप हो। उदाहरण के लिए यदि किसी

समास का पहिला पद विशेषण हो, दूसरा पद संज्ञा हो, तब विशेषण और संज्ञा के योग से बना संज्ञावाची पद द्वितीय पद-प्रधान समास कहलायगा। इस प्रकार द्वितीय पद-प्रधान समास का रूप होगा—

पद १+पद २=पद २

उदाहरण—

| | | | |
|---|---|---|---|
| रसोईघर | (संज्ञा १ | +संज्ञा २ | =संज्ञा २) |
| हथकड़ी | (संज्ञा १ | +संज्ञा २ | =संज्ञा २) |
| श्यामपट | (विशेषण | +संज्ञा | =संज्ञा) |
| आपलोग | (सर्वनाम | +संज्ञा | =संज्ञा) |
| कपोलकल्पित | (संज्ञा | +विशेषण | =विशेषण) |
| सतरंगा | (विशेषण १ | +विशेषण २ | =विशेषण २) |
| बिनब्याहा | (अव्यय | +विशेषण | =विशेषण) |
| आज्ञानुसार | (संज्ञा | +अव्यय | =अव्यय) |
| इसलिये | (सर्वनाम | +अव्यय | =अव्यय) |

३—३ (८) अन्य पद-प्रधान—जिस समास में समस्त पद का रूपात्मक स्वरूप अन्य पद के अनुरूप हो, वह अन्य पद-प्रधान समास कहलायेगा। उदाहरण के लिये किसी समास का पहिला पद संज्ञा हो और दूसरा पद विशेषण हो तथा सम्पूर्ण पद अव्यय हो तब यह समास अन्य पद-प्रधान होगा :—

पद १+पद २=पद ३

उदाहरण—

| | | | |
|---|---|---|---|
| कमलनयन | (संज्ञा | +संज्ञा | =विशेषण) |
| किया-कराया | (क्रिया | +क्रिया | =संज्ञा) |
| तीनपाँच | (विशेषण | +विशेषण | =संज्ञा) |
| तूतू-मैंमैं | (सर्वनाम | +सर्वनाम | =संज्ञा) |
| आपबीती | (सर्वनाम | +क्रिया | =संज्ञा) |
| ऐसी-तैसी | (विशेषण | +अव्यय | =संज्ञा) |
| बिनबोया | (अव्यय | +क्रिया | =विशेषण) |
| रात-दिन | (संज्ञा | +संज्ञा | =अव्यय) |
| एकसाथ | (विशेषण | +संज्ञा | =अव्यय) |
| मेरा-तेरा | (सर्वनाम | +सर्वनाम | =संज्ञा) |

हँसमुख (क्रिया +संज्ञा = विशेषण)
मन-ही-मन (संज्ञा +पदांश+संज्ञा = अव्यय)
हाथोंहाथ (संज्ञा +संज्ञा = अव्यय)

३—३ (९) सर्वपद प्रधान समास—जिस समास में समस्त पद का स्वरूप दोनों पदों के अनुरूप हो, उसे सर्वपद प्रधान समास कहेंगे। उदाहरण के लिए समास के दोनों पद संज्ञा हों, और सम्पूर्ण पद भी संज्ञा हो तो वह सर्वपद-प्रधान समास कहलायगा। सर्व-पद-प्रधान समास का रूप होगा :—

पद १+पद २=पद १–२

उदाहरण—

भाई-बहिन (संज्ञा १ +संज्ञा २ =संज्ञा १—२)
हरा-भरा (विशेषण १+विशेषण २ =विशेषण १—२)
आगे-पीछे (अव्यय १ +अव्यय २ =अव्यय १—२)
खाया-पीया (क्रिया १ +क्रिया २ =क्रिया १—२)
मेरा-तेरा (सर्वनाम १ +सर्वनाम २ =सर्वनाम १–२)

३—३ (१०) व्यधिकरण समास—जिन समासों की रचना में विभक्तियों के लोप की प्रतीति हो।

उदाहरण—बैलगाड़ी, डाकघर, रोगमुक्त, कलाप्रिय, गोवर-गणेश।

३—३ (११) समानाधिकरण समास—जिन समासों की रचना में विभक्तियों के लोप की प्रतीति न हो।

उदाहरण—रात-दिन, कालीमिर्च, खड़ीबोली, इकन्नी, महिलायात्री, बालअभिनेता।

३—३ (१२) सम्बन्ध-प्रत्यय-लोपी समास—जिन समासों की रचना में सम्बन्ध प्रत्ययों का लोप होता है—

| वाक्यांश | समास |
|---|---|
| दिल का जला | दिल-जला ('का' सम्बन्ध विभक्ति का लोप) |
| चीनी मैत्री | चीन-मैत्री ('ई' सम्बन्ध प्रत्यय का लोप) |
| हार और जीत | हारजीत ('और' समुच्चय-बोधक सम्बन्ध प्रत्यय का लोप) |

३—३ (१३) सम्बन्ध-प्रत्यय-प्रलोपी समास—जिन समासों की रचना में सम्बन्ध प्रत्ययों का लोप नहीं होता :—

उदाहरण—अपनेराम, इसलिये, अधकच्चा, इकन्नी, सतरंगा, मन-ही-मन, बारम्बार, महिलायात्री, कलमुँहा, भलमानुष, बड़पेटा।

३—३ (१४) शब्दांश आगम समास—जिन समासों की रचना में शब्दों का आगम होता है :—

| वाक्यांश | समास |
|---|---|
| मन और मन | मन-ही-मन ('ही' शब्दांश का आगम) |
| कुछ और कुछ | कुछ-के-कुछ ('के' शब्दांश का आगम) |
| बीच और बीच | बीचोंबीच ('ओं' शब्दांश का आगम) |
| आप और आप | आप-से-आप ('से' शब्दांश का आगम) |

३—३—(१५) वाक्यांश रूप समास—वाक्यांश में शब्दों का योग जैसा होता है, समास में भी शब्दों का योग वैसा ही रूप लिए हुए हो—

| वाक्यांश | समास |
|---|---|
| श्वेत पत्र | श्वेतपत्र |
| श्याम पट | श्यामपट |
| काला बाजार | कालाबाजार |
| अपने राम | अपनेराम |
| एक रस | एकरस |
| महिला यात्री | महिलायात्री |

३—३ (१६) वाक्यांश अरूप समास—वाक्यांश में शब्दों का योग जैसा होता है, समास में शब्दों का योग उससे भिन्नता लिए रहता है—

| वाक्यांश | समास |
|---|---|
| राजा का पुत्र | राजपुत्र |
| कपड़े का छानना | कपड़छन |
| आप और आप | आप-ही-आप |
| उड़ने का खटोला | उड़नखटोला |

३—३ (१७) भेदक-भेद्य समास—जिन समासों में पहिला पद भेदक और दूसरा पद भेद्य होता है।

उदाहरण—पथ-प्रदर्शन, जीवन-रक्षा, सिचाई-मंत्री, हथकड़ी, पन-बिजली, घुड़चढ़ी, रंटतविद्या।

३—३ (१८) भेद्य-भेदक समास—जिस समास में पहिला पद भेद्य और दूसरा पद भेदक हो।

उदाहरण—भरपेट, नागरी-प्रचारिणी-सभाकाशी मालिक-मकान।

३—३ (१९) **विशेषण-विशेष्य**—जिन समासों में पहला पद विशेषण, दूसरा पद विशेष्य हो।

**उदाहरण**—इकन्नी, दुधारा, चौपाया, महिलायात्री, आर्य-लोग, बिनब्याहा, सतरंगा, मिष्ठान्न।

३—३ (२०) **पराश्रित पदीय समास**—जिन समासों के पद परस्पर आश्रित होते है।

**उदाहरण**—जन्मरोगी, आज्ञानुसार, गोबरगणेश, मन-मोहन, मक्खीचूस, मुँहतोड़, भड़भूजा, दिलफेंक, राहखर्च, ग्राम-वास।

३—३ (२१) **अनन्याश्रित पदीय समास**—जिन समासों के पद परस्पर आश्रित नहीं होते।

**उदाहरण**—हार-जीत, खेल-कूद, कहासुनी, कपड़े-लत्ते, धन-दौलत, उठना-बैठना, किया-कराया, मेरा-तेरा।

३—३ (२२) **मुक्त समास**—जिन समासों का व्यवहार वाक्य में मुक्त रूप से होता है।

**उदाहरण**—

भाई-बहिन आरहे हैं।
राह-खर्च दे दो।
हिन्दी-सभा हो रही है।
महिलायात्री आरही है।
रसोई-घर कहाँ है।

३—३ (२३) **बद्ध समास**—जिन समासों का व्यवहार वाक्य में, अन्य किसी पद के साथ जुड़कर ही होता है।

**उदाहरण**—

| | | |
|---|---|---|
| कामरोको | (प्रस्ताव) | आरहा है। |
| वृक्ष उगाओ | (आंदोलन) | चल रहा है। |
| सतरंगा | (कपड़ा) | फट गया। |
| तिमंजिला | (मकान) | गिर पड़ा। |
| कपोल-कल्पित | (बात) | कही जारही है। |

अध्याय ४

# अर्थ-प्रक्रिया के क्षेत्र में हिन्दी समास-रचना की प्रवृत्तियों का अध्ययन

४—१ अर्थात्मक दृष्टि से हिन्दी समास-रचना के विविध प्रकार और उनका विश्लेषण।

४—२ निष्कर्ष।

४—३ वर्गीकरण।

## : ४ :

# ४—१ अर्थात्मक दृष्टि से हिन्दी समास-रचना के विविध प्रकार और उनका विश्लेषण

अर्थात्मक दृष्टि से हिन्दी समास-रचना के निम्न प्रकार पाये जाते हैं :—

## ४—१ (१) प्रकार

हिन्दी-साहित्य, कांग्रेस-अध्यक्ष, जिलाधीश, मकान-मालिक, कठपुतली, हाथीदांत, घी-बाजार, शेयर-बाजार, राजपुत्र, ग्राम-सेवक, संध्याकाल, तुलसी-रामायण, हिन्दी-पीठ, जीवन-रक्षा, पथ-प्रदर्शन, बैलगाड़ी, घुड़साल, सीमा-विवाद, बिजली-घर, अधकच्चा, मनमोहन, हृदय-विदारक, मंझधार, मर्मभेदी, वेतनभोगी, क्षमा-प्रार्थी, जन्मरोगी, देश-निकाला, शरणागत, अमूचर, धूल-धूसरित, हिन्दी-साहित्य-समिति आगरा, भक्तिवश, देशभक्ति, आराम-पसंद, घरसिला, आँखोंदेखा, कानोंसुना, हस्ताक्षर, धर्मभीरु, सतरंगा, तिमंजला, बड़भागी।

### विश्लेषण

इन समासों के दोनों पदों में जाति, गुण, धर्म के आधार पर कोई साम्य नहीं है। उदाहरणतः—कठपुतली के 'कठ' और 'पुतली' दोनों ही शब्द जाति, गुण और धर्म की दृष्टि से अलग हैं। कठपुतली में 'कठ' शब्द लकड़ी का द्योतक है, और 'पुतली' सूत आदि वस्त्रों से बनी गुड़ियानुमा खिलौना है।

गुण, व्यापार, धर्म और स्वभाव की दृष्टि से भिन्न, समास के शब्द समास रूप में एक विशिष्ट वस्तु या भाव का बोध कराते हैं, जिसका सम्बन्ध समास के दोनों शब्दों से होता है। 'हिन्दी-साहित्य' के रूप में हमें ऐसे साहित्य का बोध होता है, जो हिन्दी का हो। समागत शब्दों से भिन्न, किसी नए अर्थ की

कल्पना नहीं करनी पड़ती। इन समासों का विग्रह करने पर भी वही अर्थ है जो समास रूप में है। फलतः इन समासों का रूप अभिधामूलक है।

वैसे अर्थ की दृष्टि से इन समासों में दूसरा शब्द ही प्रधान है। वाक्य में इन समासों का प्रयोग करते हुए जब हम कहते हैं—'मकान मालिक आरहा है' तो हमारा आने से अभिप्राय 'मालिक' से है, 'मकान' कभी नहीं आ सकता। 'घरसिला वस्त्र' में 'वस्त्र' का विशेषण वस्तुतः 'सिला' है। जन्मरोगी मृत्यु को प्राप्त होगया में 'मृत्यु को प्राप्त होने' का भाव 'रोगी' से जुड़ा हुआ है, 'जन्म' से नहीं। इस प्रकार इन समासों में अर्थ की दृष्टि से दूसरा पद प्रधान है। इसका कारण यह है कि इन शब्दों के समासगत रूप में कहने से हमारे सामने दूसरे शब्द का रूप ही आता है। मकान-मालिक में 'मालिक', ग्रामसेवक में 'सेवक', कठपुतली में 'पुतली' ही हमारे सामने आती है।

इतना अवश्य है कि समास रूप में दूसरा शब्द पहिले शब्द से अर्थ की दृष्टि से बंध जाता है। हिन्दी-साहित्य में 'साहित्य' केवल वही हो सकता है जो 'हिन्दी' का हो। राजपुत्र में 'पुत्र' केवल वही हो सकता है जो 'राजा' का हो। अन्य किसी के पुत्र को राजपुत्र नहीं कहा जा सकता। दियसलाई की 'सलाई' वही हो सकती है जो 'दीपक' को जलाती है। आँखों में सुरमा लगाने वाली सलाई 'दियसलाई' नहीं कही जा सकती। इस प्रकार इन समासों में प्रथम शब्द भेदक होता है, और दूसरा शब्द भेद्य। भेदक होने के रूप में प्रथम शब्द दूसरे शब्द के अर्थ की व्यापकता को सीमित करता है। भेदक-भेद्य वाले इन समासों में दूसरे शब्द का अर्थ प्रथम शब्द पर निर्भर होता है।

अर्थ-परिवर्त्तन की दृष्टि से इन समासों को अर्थ-संकोची रूप दिया जा सकता है। क्योंकि हिन्दी-साहित्य में 'साहित्य' केवल हिन्दी का ही है, देशभक्ति में 'भक्ति' केवल देश की है। वेतनभोगी में 'भोगी' केवल वेतन का है।

### ४—१ (२) प्रकार

हथकड़ी, पनचक्की, बिजलीघर, मयूर-सिंहासन, खून-खराबी, कानाफूँसी, गीदड़-भभकी, ठकुर-सुहाती, आगा-पीछा, पिछलग्गू, भेड़ियाधसान, कामचोर, कलाप्रिय, घरघुसा, पान-पत्ता, हाथी-पांव, पंजाब, लाल-पीला, पलंग-तोड़, खटमल।

प्रकार सं० ४—१ (१) की भाँति इन समासों के दोनों शब्दों में भी जाति, गुण, धर्म के आधार पर कोई साम्य नहीं है। हथकड़ी में 'हाथ' और 'कड़िया' दोनों ही शब्द जाति, गुण और धर्म की दृष्टि से अलग हैं। 'हाथ' शरीर का अंग है, 'कड़िया' लोहे के द्वारा बनी हुई शृङ्खला है। गुण, व्यापार, धर्म और स्वभाव

की दृष्टि से भिन्न, समास के रूप में शब्द एक विशिष्ट वस्तु या भाव का बोध कराते हैं, जिसका सम्बन्ध समास के दोनों शब्दों से होता है; अर्थात् इन समासों में समासगत शब्दों के अर्थ के साथ-साथ एक भिन्न अर्थ की भी कल्पना करनी पड़ती है। हथकड़ी में 'हाथ की कड़ी' से हमारा तात्पर्य नहीं है, अपितु ऐसी वस्तु से हमारा अभिप्राय है जो अपराधियों के हाथों में पहिनाई जाती है। पनचक्की से तात्पर्य 'पानी की चक्की' से नहीं, अपितु उस चक्की से है जो पानी द्वारा चलाई जाती है। बिजलीघर में 'घर' बिजली का नहीं, अपितु वह स्थान जहाँ बिजली तैयार होती है। मयूरसिंहासन में 'सिंहासन' मयूर का नहीं, अपितु मयूर की भाँति बने हुए सिंहासन से है। खून खराबी से अभिप्राय 'खून' की खराबी से नहीं, अपितु ऐसे लड़ाई-झगड़े से है, जिसमें खून बहा हो। कानाफूँसी से अभिप्राय: किसी गुप्त बात को करने से है। गीदड़-भभकी का अभिप्राय गीदड़ नामक जानवर की भभकी से नहीं, अपितु डरपोक व्यक्ति द्वारा क्रोध प्रकट करने से है। ठाकुर-सुहाती का अभिप्राय भी खुशामद से है। आगा पीछा का अभिप्राय आगे और पीछे से नहीं, अपितु किसी बात को टालने से है। इसी प्रकार पलंग-तोड़ का अभिप्राय पलंग को तोड़ने वाले से नहीं, अपितु आलसी व्यक्ति से है। खटमल का अर्थ 'खाट का मेल' नहीं, बल्कि खटमल नामक कीड़े से है। पंजाब का अर्थ 'पाँच पानी' से नहीं, पंजाब प्रदेश से है। हाथीपाँव से तात्पर्य 'हाथी के पाँव' से नहीं, हाथीपाँव की बीमारी से है। लाल-पीला का अभिप्राय 'लाल और पीले' से नहीं, बल्कि क्रोध का भाव प्रकट करने से है। पान-पत्ता का अर्थ 'पान के पत्ते' से नहीं, बल्कि किसी को भेंट स्वरूप दिये जाने वाले उपहार से है।

अर्थ-परिवर्तन की दृष्टि से ये समास भी अर्थसंकोची हैं। 'हाथीपाँव' समास रूप में केवल एक रोग-विशेष तक ही सीमित है। हाथी के पाँव को 'हाथी पाँव' नहीं कहा जा सकता। पंजाब, एक प्रदेश विशेष के लिए ही रूढ़ है। प्रत्येक पाँच जलधारों को 'पंजाब' नहीं कह सकते। मयूर सिंहासन में प्रत्येक मयूर के के ढंग के बने सिंहासन को 'मयूर सिंहासन' नहीं कह सकते। शाहजहाँ के 'तख्त-ताऊस' को ही मयूर सिंहासन कहते हैं।

### ४—१ (३) प्रकार

आशादीप, जीवनदीप, आशालता, क्रोधाग्नि, जीवन-संग्राम, भक्तिसुधा, विजय-वैजयन्ती।

**विश्लेषण**

इन समासों के दोनों पदों में भी परस्पर जाति, स्वभाव, गुण की दृष्टि से कोई समानता नहीं होती। जीवन और संगीत, आशा और दीप, क्रोध और अग्नि, बिल्कुल भिन्न चीज है, परन्तु समास रूप में यहाँ दूसरा शब्द पहिले शब्द के जाति, स्वभाव, और गुण का ही प्रतीक बनकर आया है। वह पृथक् पद के गुण, स्वभाव को ही अधिक स्पष्टता के साथ हमारे सामने रखता है।

अर्थ की दृष्टि से इन समासों में प्रथम शब्द का रूप दूसरे शब्द के समान है। 'जीवनदीप बुझता है' में 'जीवन' दीपक के समान बुझता है। 'आशालता मुर्झाती है' में 'आशा' लता के समान मुर्झाती है। 'जीवन-संगीत सुनाई दे रहा है' में 'जीवन' संगीत के समान सुनाई देता है।

इन समासों में प्रथम शब्द दूसरे का भेदक है, और इस रूप में दूसरे शब्द के अर्थ की व्यापकता को सीमित करता है। दीप किसका—आशा का, दीप किसका—जीवन का, अग्नि किसकी—क्रोध की। वैसे ये समास रूपक अलंकार का रूप लिए हुए हैं।

आशादीप =आशा रूपी दीप
जीवनदीप =जीवन रूपी दीप
भक्तिसुधा =भक्ति रूपी सुधा
विजय वैजयंती=विजय रूपी वैजयन्ती

**४—१ (४) प्रकार**

कालाबाजार, श्वेतपत्र, श्यामपट, कालापानी, चौराहा, चौपाया, चारपाई।

**विश्लेषण**

इन समासों में पहिला शब्द दूसरे शब्द की विशेषता को, एक विशिष्ट अर्थ का बोध कराते हुए प्रकट करता है। 'कालाबाजार' में बाजार का रंग काला नहीं होता, परन्तु यहाँ 'काले बाजार' से अभिप्राय ऐसे बाजार से है, जहाँ वस्तुओं का क्रय-विक्रय अनुचित ढंग से किया जाता है। 'श्वेतपत्र' से अभिप्राय उस पत्र से है जिसका राजनैतिक क्षेत्र में आदान-प्रदान किया जाता। उसके लिए यह आवश्यक नहीं कि उसका रंग श्वेत ही हो। श्वेत रंग तो शांति के भाव का प्रतीक है। 'कालापानी' भी इसी प्रकार उस स्थान के लिए रूढ़ बन गया है जिसके द्वारा अपराधियों को आजन्म अंडमान द्वीप का निवासी बना दिया जाता है। इसी प्रकार 'श्यामपट' भी उस वस्तु का बोध कराता है जिसका प्रयोग विद्यार्थियों को शिक्षा देने के लिए कक्षा में किया जाता है। 'चौपाया' में भी यदि किसी पशु की तीन टाँग हैं, तब भी हम

उसे चौपाया कहेंगे, क्योंकि चौपाया का अर्थ 'चार पैरों वाला' नहीं, बल्कि जानवर से है। यही बात चारपाई के सम्बन्ध में है।

इन समासों का रूप वस्तुतः लक्षणामूलक है, और वे एक विशिष्ट अर्थ में रूढ़ हो गए हैं। समासगत दोनों पदों से भिन्न, हमें एक विशिष्ट अर्थ की कल्पना इन समासों में करनी पड़ती है।

अर्थ की दृष्टि से इन समासों में वस्तुतः दूसरे पद की ही प्रधानता है। पहिला पद अपना स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं रखता। वह स्वयं विशेषण रूप होकर भी दूसरे पद में मिलकर संज्ञा रूप बन जाता है। 'कालाबाजार हो रहा है' में 'होने का भाव' बाजार से जुड़ा हुआ है। 'श्वेतपत्र भेजा जा रहा है' में 'जाने का भाव' पत्र से सम्बन्ध रखता है।

इन समासों में भी ४—१ (३) प्रकार की भाँति अर्थ-संकोच हो गया है।

### ४—१ (५) प्रकार

मक्खीचूस, बगुलाभगत, गोबरगणेश, इन्द्रधनुष, मोतीचूर, गोरखधंधा, चलतापुर्जा, रंगासियार।

### विश्लेषण

इन समासों में हमें दोनों पदों से भिन्न, एक विशिष्ट अर्थ की कल्पना करनी पड़ती है। यह भिन्न अर्थ अलंकार या मुहावरा रूप में लक्षणामूलक होता है। 'मक्खीचूस' से अभिप्राय 'मक्खी चूसने वाले' से नहीं, अपितु उस व्यक्ति से है जो बहुत अधिक लोभी होता है। 'बगुलाभगत' कहने से हमारे सामने न तो 'बगुला' ही आता है और न 'भगत' ही, अपितु धोखेबाज और स्वार्थी व्यक्ति का बोध इस समास से होता है। 'गोबरगणेश' में भी 'गोबर' और 'गणेश' से हमारा अभिप्राय नहीं होता, अपितु मूर्ख व्यक्ति से हमारा मतलब होता है।

इस प्रकार ये समास जिस अर्थ का बोध कराते हैं, वह समासगत दोनों पदों के अर्थ से बिल्कुल भिन्न होता है। फलतः अर्थ की दृष्टि से इन समासों में दोनों पदों के अर्थ की प्रधानता के स्थान पर अन्य पद के अर्थ की प्रधानता होती है। 'गोबर गणेश आ रहा है' में न तो हमारे सामने 'गोबर' ही आता है, और न 'गणेश' ही, बल्कि वह व्यक्ति आता है, जो मूर्ख है। इतना अवश्य है कि समास के ये दोनों पद समस्त पद के गुण या भाव के प्रतीक होते हैं।

समास रूप में समासगत पदों का प्रायः अर्थोपकर्ष हो गया है। गोबर-गणेश, बगुलाभगत, मक्खीचूस, के गोबर, गणेश, बगुला, भगत, मक्खी, चूस आदि शब्द समासगत रूप से अलग अच्छे भाव के द्योतक है, परन्तु समास रूप में होकर बुरे भाव के द्योतक हैं।

## ४—१ (६) प्रकार

कमलनयन, पाषाणहृदय, चरण-कमल, चन्द्रमुख, कौड़ीकरम।

### विश्लेषण

प्रकार सं० ४—१ (५) के समासों में जहाँ समासगत दोनों पदों के अर्थ मे भिन्न, एक नए अर्थ की कल्पना करनी पड़ती है, और उनका रूप लक्षणामूलक होता है, इन समासों में भी नए अर्थ की कल्पना करनी पड़ती है, और उनका रूप उपमा अलंकारवाची होता है। परन्तु इन समासों का विशिष्ट अर्थ समासगत दूसरे पद से जुड़ा रहता है, तथा पहिला पद दूसरे के गुण या स्वभाव का प्रतीक रूप होकर उसकी विशेषता को प्रकट करता है। 'कमलनयन' में 'कमल' नैनों की सुन्दरता और कोमलता का प्रतीक है। 'पाषाण हृदय' में 'पाषाण' हृदय की कठोरता का प्रतीक है।

पहिला शब्द दूसरे शब्द की विशेषता प्रकट करते हुए भी दूसरे शब्द का विशेषण नहीं है। दोनों ही शब्द मिलकर अन्य पद के विशेषण हैं। 'पाषाण-हृदय' से तात्पर्य 'पत्थर का हृदय' नहीं, अपितु उस व्यक्ति से है, जिसका हृदय पत्थर के समान कठोर है। हृदय तो हाड़-माँस का बना होता है, पत्थर का नहीं होता। 'कमलनयन' कहने से हमारे सामने न तो 'कमल' का ही स्वरूप आता है, और न 'नैनों' का, बल्कि ऐसे व्यक्ति का चित्र सामने आता है, जिसके नैन कमल के समान हैं। अत: ४—१ (५) प्रकार की भाँति इन समासों का रूप भी अन्य पद प्रधान है। इन समासों का विग्रह करने पर दोनों पदों के बीच में समता-सूचक या उपमावाची शब्दों का प्रयोग होता है :—

| | | |
|---|---|---|
| कमलनयन | — | कमल जैसे नैन |
| कौड़ीकरम | — | कौड़ी जैसा करम |
| चरणकमल | — | कमल जैसे चरण |
| चन्द्रमुख | — | चन्द्र जैसा मुख |
| पाषाण हृदय | — | पत्थर जैसा हृदय |

## ४—१ (७) प्रकार

रूपगत, शैलीगत, भावगत, जीवनगत, समाजवाद, प्रयोगवाद, प्रगतिवाद, आर्यलोग, मजदूरलोग, किसानलोग।

### विश्लेषण

इन समासों में पहिले शब्द के साथ जो दूसरे शब्द का योग हुआ है, उसका अर्थ समास रूप में अपने शब्दकोशीय अर्थ से भिन्न हो गया है। 'गत' का

शब्दकोशीय अर्थ 'गया हुआ', 'बीता हुआ' है। परन्तु समास रूप में इसका अर्थ 'सम्बन्धित' हो गया है—(रूपगत = रूपसम्बन्धी, भावगत = भाव-सम्बन्धी)। इसी प्रकार 'वाद' शब्द का शब्दकोशीय अर्थ है 'विचार-विमर्श करना', परन्तु समास रूप में इसका अर्थ 'विचारधारा' से है। समाजवाद, अर्थात् समाज-सम्बन्धी विचारधारा। 'लोग' शब्द का भी शब्दकोशीय अर्थ 'मनुष्य' से है। लोग-लुगाई, अर्थात मर्द-औरत, पुरुष-नारी। परन्तु समासगत रूप में अन्य शब्दों के साथ जुड़कर इसका अर्थ 'समूहवाची' हो गया है। 'मजदूर लोग' से अभिप्राय मजदूरों के समुदाय से है। यहाँ 'लोग' शब्द 'वर्ग' का पर्यायवाची बन गया है। जैसे—किसान वर्ग = किसान लोग।

४—१ (८) प्रकार

गाय-बैल, भाई-बहिन, माता-पिता, घी-दूध, साग-पात, साग-भाजी, पाप-पुण्य, धर्म-अधर्म, भला-बुरा, चिट्ठी-पत्री, वैद्य-डाक्टर, पीर-पैगम्बर, राजाप्रजा, टेबिलकुर्सी, हाथपैर, नौनतेल, जाड़ाघाम, धूपछांह, बाप-बेटे, अन्न-जल, घर-गृहस्थी, पादरी-पुरोहित।

**विश्लेषण**

इन समासों के दोनों पद जाति, स्वभाव, गुण की दृष्टि से एक ही वर्ग के हैं। समस्त पद के अर्थ को और अधिक बल प्रदान करने के लिये जाति, स्वभाव, गुण की दृष्टि से समता रखने वाले इन शब्दों का परस्पर योग समास रूप में हुआ है। प्रकार सं० ४—१ (१) की भाँति इन समासों के पदों का अर्थ एक-दूसरे पर निर्भर नहीं है। हथकड़ी में 'कड़ी' का सम्बन्ध 'हाथ' से जुड़ा है। परन्तु भाई-बहिन में यह बंधन नहीं है। अर्थ की दृष्टि से दोनों पद स्वतन्त्र और आत्मनिर्भर हैं। 'हथकड़ी पहिनाई जा रही है' में जहाँ पहिनाने का कार्य केवल 'कड़ी' से है, वहाँ 'भाई-बहिन आ रहे हैं' में 'भाई' भी आ रहा है और 'बहिन' भी। अर्थात् दोनों पद स्वतन्त्र और आत्म-निर्भर हैं।

४—१ (१) समासों के पदों में जहाँ हेर-फेर नहीं किया जा सकता। हेर-फेर करने से उनका अर्थ बदल जाता है। जैसे—

| | | |
|---|---|---|
| लता-पुष्प | — | लता का पुष्प |
| पुष्प-लता | — | किसी लड़की का नाम |

परन्तु इन समासों के पदों के हेर-फेर से समस्त पद के अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता। भाई-बहिन, बहिन-भाई = डाक्टर-हकीम = हकीम-डाक्टर, अर्थ की दृष्टि से एक ही रूप लिए हुए हैं।

ये समास भेदक-भेद्य की स्थिति लिए हुए नहीं हैं। फलतः अर्थ की दृष्टि से इनमें न तो पहिला ही पद प्रधान है और न दूसरा ही, अपितु दोनों पदों के अर्थ प्रधान हैं। इसीलिए इन समासों को अर्थ की दृष्टि से **सर्वपद प्रधान समास** कह सकते हैं।

अर्थ की दृष्टि से स्वतंत्र और आत्म-निर्भर पदों से बने इन समासों में किसी विशिष्ट अर्थ की कल्पना हमें नहीं करनी पड़ती। समस्त पद का वही अर्थ है जो समासगत पदों का है। फलतः अर्थ की दृष्टि से ये समास भी **अभिधामूलक** हैं।

## ४—१ (९) प्रकार

रातदिन, निशदिन, सुबहशाम, सांझसकारे, घरबाहर, लूटमार, खानपान, हाथापाई, जूतमजूता, सेठ-साहूकार।

### विश्लेषण

प्रकार सं० ४—१ (८) की भाँति ये समास भी अर्थ की दृष्टि से स्वतंत्र और आत्म-निर्भर पदों के योग से बने हैं। परन्तु प्रकार सं० ४—१ (८) के समासों में जहाँ किसी विशिष्ट, अर्थ की कल्पना नहीं करनी पड़ती, इन समासों में समासगत पदों के अर्थ से भिन्न, विशिष्ट अर्थ की कल्पना करनी पड़ती है।

'रातदिन' से अभिप्राय केवल 'रात' और 'दिन' से ही नहीं, बल्कि अव्यय पद 'सदैव' से है। 'हाथपाई' का मतलब 'हाथ' और 'पैर' से नहीं, बल्कि लड़ाई-झगड़े से है जो हाथ-पैर से की जाती है। 'जूतम-जूता' से अभिप्राय 'जूतों' से नहीं, अपितु जूतों की लड़ाई से है।

वस्तुतः इन समासों के पदों का अर्थ अपने तक ही सीमित नहीं है, अपितु वे एक सामूहिक अर्थ के बोधक हैं। अर्थ-परिवर्तन की दृष्टि से इन समासों के पदों के अर्थ का विस्तार हो गया है।

अर्थ की दृष्टि से ये समास प्रकार सं० ४—१ (८) की भाँति सर्वपद प्रधान हैं।

## ४—१ (१०) प्रकार

पाप-पुण्य, धर्म-अधर्म, औरत-मर्द, पति-पत्नी, भला-बुरा, होनी-अनहोनी, जीना-मरना, रोना-हँसना, जात-कुजात, क्रय-विक्रय, हिन्दू-मुसलमान, लाभ-नुकसान, शत्रु-मित्र, सुख-दुख, जाड़ा-घाम, हार-जीत, जीवन-मरण, सुबह-शाम, खाना-पीना, उठना-बैठना।

### विश्लेषण

इन समासों में भी दोनों पद अर्थ की दृष्टि से भिन्न और स्वतन्त्र हैं। दूसरा पद पहले पद का विलोम रूप लिए हुए है। पाप-पुण्य में 'पुण्य' शब्द का अर्थ 'पाप से उलटा' है। इस प्रकार इन समासों में समासगत शब्द परस्पर विरोधी अर्थ रखते हैं। परन्तु समास रूप में वे एक ही अर्थ के द्योतक हैं। समास रूप में दोनों शब्दों का परस्पर विरोधी रूप समाप्त हो जाता है। प्रकार सं० ४—१ (९) की भाँति इन समासों का अर्थ भी व्यापक हो जाता है। वे सामूहिक अर्थ के बोधक बन जाते हैं और अर्थ-परिवर्तन की दृष्टि से इन समासों में भी अर्थ-विस्तार हो जाता है।

अर्थ-प्रधानता की दृष्टि से इन समासों में भी दोनों शब्द प्रधान हैं।

### ४—१ (११) प्रकार

काम-काज, चिट्ठी-पत्री, पीर-पैगम्बर, कीड़े-मकोड़े, हँसी-मजाक, शान-शौकत, डाँट-फटकार, सूझ-बूझ, गलीकूँचा, भूल-चूक, भूत-प्रेत, रोक-थाम विनय-प्रार्थना, सलाह-मशविरा, खेलना-कूदना, कहासुनी, छीनाझपटी, खींच-तान, जान-पहिचान।

### विश्लेषण

४—१ (१०) प्रकार में जहाँ समासगत दूसरा शब्द पहिले शब्द का विलोम रूप लिए हुए है, इन समासों में दूसरा शब्द पहिले ही शब्द का पर्याय-वाची है। दूसरे शब्द का वही अर्थ है जो पहिले शब्द का है। समस्त पद के अर्थ की अभिव्यक्ति को बल प्रदान करने के लिये प्रथम शब्द के साथ उसी के अर्थ वाले पद का योग किया गया है।

४—१ (९) प्रकार की भाँति समासगत पदों का अर्थ समस्त पद के रूप में व्यापक हो जाता है। दोनों शब्द मिलकर सामूहिक अर्थ का बोध कराते हैं। अर्थ-परिवर्तन की दृष्टि से समास में अर्थ-विस्तार होगया है।

अर्थ-प्रधानता की दृष्टि से ये समास भी सर्वपद प्रधान है।

### ४—१ (१२) प्रकार

धीरे-धीरे, पास-पास, रोम-रोम, कौड़ी-कौड़ी, दाना-दाना, हाय-हाय; घर-घर, देश-देश, भाई-भाई, हरा-हरा, बड़े-बड़े, नए-नए, फीका-फीका, फूल-फूल, लाल-लाल, अच्छे-अच्छे, खड़े-खड़े, कोई-कोई, रामराम, एकाएक, ठीकठाक।

गटागट, सटासट, चटाचट, बैठना-बूठना, भागना-भूगना, जानना-जूनना,

टालना-टूलना, टालमटूल, धूमधाम, टीप-टाप, गुत्थमगुत्था, खुल्लमखुल्ला, जूतम-जूता, घूसमघूसा, मुक्कामुक्की, गर्मागर्मी, दिनोंदिन, रातोंरात, बीचोंबीच, हाथोंहाथ, मन-ही-मन, दुख-ही-दुख, आप-ही-आप, रोना-ही-रोना, काम-ही-काम, पास-ही-पास, घर-के-घर, झुंड-के-झुंड, सब-के-सब, क्या-से-क्या, अच्छे-से-अच्छा, कोई-न-कोई, एक-न-एक, और-तो-और, कुछ-न-कुछ।

## विश्लेषण

इन समासों में पहिले पद की ही पुनरावृत्ति दूसरे पद के रूप में हुई है। समस्त पद के अर्थ को बल प्रदान करके के लिये ही यह पुनरुक्ति हुई है। इन समासों में भी समासगत पदों का अर्थ समस्त पद के रूप में व्यापक हो जाता है। दोनों शब्द मिलकर एक सामूहिक और विशिष्ट अर्थ का बोध कराते हैं। फलतः अर्थ-परिवर्तन की दृष्टि से इन समासों में भी अर्थ-विस्तार होगया है।

'धीरे-धीरे' समास में 'धीरे' की पुनरुक्ति से अर्थ की अतिशयता का बोध होता है। धीरे-धीरे यह कार्य हो रहा है, अर्थात् कार्य बहुत धीरे हो रहा है। केवल 'धीरे' कहने से अर्थ की यह अतिशयता ध्वनित नहीं होती। इसी प्रकार 'रोम-रोम' से अभिप्राय शरीर के सूक्ष्म से सूक्ष्म अंग-प्रत्यंग से है। 'देश-देश' से अभिप्राय एक देश से नहीं, बल्कि सभी देशों से है।

फूल-फूल, छोटे-छोटे, बड़े-बड़े, हरे-हरे में जो पुनरुक्ति हुई है वह भिन्नता के भाव का द्योतक है। 'फूल-फूल चुनलो' में केवल फूलों के चुनने की ही बात है। 'हरे-हरे पत्तों' से अभिप्राय केवल हरे पत्तों से है, अन्य प्रकार के पत्तों से नहीं। 'बड़े-बड़े लड़कों को बुलाओ' से अभिप्राय छोटे लड़कों से भिन्न बड़े लड़कों से है।

हाय-हाय में 'हाय' की पुनरुक्ति बहुत अधिक दुख को प्रगट करने के लिए हुई है। 'राम-राम' ग्लानि के भाव का द्योतक है। केवल 'राम' कहने से यह भाव सामने नहीं आता। 'भाई-भाई' से अभिप्राय अपने सहोदरों से नहीं, बल्कि भ्रातृभाव के सम्बन्ध को प्रकट करने से है। हम सब भाई-भाई हैं, अर्थात् भाई चारे की स्थिति लिए हुए हैं। इसी प्रकार दाने-दाने को तरस गया, अर्थात् केवल दाने को ही नहीं, प्रत्येक वस्तु को तरस गया। बैठे-बैठे या खड़े-खड़े से अभिप्राय बैठने या खड़े होने से नहीं, बल्कि किसी कार्य को बड़ी सरलता से करने का है। जैसे—'मैंने यह कार्य बैठे-बैठे कर लिया। यह कार्य तो खड़े-खड़े होगया।' इसी प्रकार 'बंधे-बंधे' से अभिप्राय किसी रस्सी द्वारा बंधे हुए से नहीं, अपितु किसी बंधन में बहुत देर तक रहने से है।

बैठना-बूठना, भागना-भूगना, जानना-जूनना, टालना-टूलना, फाड़ना-फूड़ना, इन समासों में भी दोनों पद मिलकर एक सामूहिक अर्थ का बोध कराते हैं। 'बैठना-बूठना' में केवल 'बैठने' से अभिप्राय नहीं, अपितु बैठने-उठने की सभी क्रियाएँ इसमें सम्मिलित हैं। यही बात 'भागना-भूगना, जानना-जूनना, टालना-टूलना' आदि समासों के सम्बन्ध में है।

घूसमघूसा, लट्ठमलट्ठा, जूतमजूता, गुत्थमगुत्था, इन समासों में भी शब्दों की पुनरुक्ति से अर्थ में एक विशिष्टता आगई है। 'घूसमघूसा' से अभिप्राय केवल घूसा से नहीं, अपितु घूसों से की जाने वाली लड़ाई से है। 'लट्ठमलट्ठा, जूतमजूता' के लिये भी यही बात है।

'गटागट, चटाचट, सटासट' में क्रिया की तीव्रता का भाव प्रकट होता है। "वह गटागट, पानी पी गया" अर्थात् बड़ी शीघ्रता से पानी पी गया।

मन-ही-मन, दुख-ही-दुख, आप-ही-आप, रोना-ही-रोना, काम-ही-काम, घर-के-घर, झुंड-के-झुंड, सब-के-सब, क्या-से-क्या, अच्छे-से-अच्छे, बड़े-से-बड़ा, छोटे-से-छोटा, बुरे-से-बुरा, कोई-न कोई, एक-न-एक, कुछ-न-कुछ, और-तो-और, आदि इन अव्यय पदीय समासों में 'ही, के, से तो, न' आदि अक्षरों के आगम से समस्त शब्दों के अर्थ में एक विशेषता आजाती है। मन-ही-मन, दुख-ही-दुख, रोना-ही-रोना, काम-ही-काम, पास-ही-पास, में जो अतिशयता का भाव है; वह रोनारोना, आपआप, मनमन, कामकाम, पासपास में नहीं है। दुख-ही-दुख, केवल दुख, और कुछ नहीं, वह भी बहुत अधिक मात्रा में। मन-ही-मन, केवल मन के भीतर ही। रोना-ही-रोना, अर्थात् दुख प्रकट करने के अतिरिक्त और कोई कार्य नहीं। इसी प्रकार 'पास-पास' का अर्थ बहुत अधिक निकटता से है।

इसी प्रकार 'के' शब्द का आगम अधिकता का द्योतक है। झुण्ड-के-झुण्ड= बहुत सारे झुण्ड, सब-के-सब=बहुत सारे लोग। 'से' का आगम इन समासों में तुलना के अधिकतम भाव को बतलाता है। अच्छे-से-अच्छा, अर्थात् सबसे अच्छा।

'न' शब्द का आगम अनिश्चितपन का द्योतक है। जैसे—कुछ-न-कुछ हो रहा है। कोई-न-कोई आ रहा है।

शब्दों की पुनरुक्ति समास रूप में विशेष प्रयोजन को लेकर होती है। वह प्रयोजन है वक्ता या लेखक द्वारा अपने विचारों को अधिक स्पष्टता के साथ प्रकट करने की चेष्टा। समास रूप में एक ही शब्द की पुनरुक्ति करके वह अपने

प्रयत्न में निश्चित रूप से सफल बनता है। बिना ऐसा किए उसका कार्य चल ही नहीं सकता। उदाहरण के लिये :—

(१) भाँति-भाँति के उपायों से यह संभव हो सका।
(२) भाँति के उपायों से यह सम्भव हो सका।
(३) भाँति-और-भाँति के उपायों से यह सम्भव हो सका।

ऊपर के वाक्यों से यह स्पष्ट है कि वाक्य के पूर्णार्थ के लिये 'भाँति' के साथ भाँति की पुनरुक्ति आवश्यक है। बिना ऐसा किए शुद्ध वाक्य-रचना सम्भव नहीं। केवल 'भाँति और भाँति', या 'भाँति' कहने से वाक्य का प्रयोजन सिद्ध नहीं होता।

समास रूप में एक शब्द की ही पुनरुक्ति किस प्रकार रूप और अर्थ की दृष्टि से बिल्कुल नई शब्द-रचना का रूप ग्रहण करती है, इस दृष्टि से 'एकाएक' शब्द अच्छा उदाहरण है। 'एकाएक' शब्द 'एक' और 'एक' शब्दों की द्विरुक्ति से बना है। दोनों ही संख्यावाची विशेषण हैं, पर समास रूप में वे अव्यय हैं, तथा 'एकाएक' का जो अर्थ है वह 'एक' और 'एक' के अर्थ से बिल्कुल भिन्न है। केवल 'एक' कहने से वाक्य में वह अर्थ ध्वनित नहीं होता जो 'एक' की द्विरुक्ति 'एकाएक' में करने से होता है।

अर्थ-प्रधानता की दृष्टि से ये समास भी सर्वपद प्रधान है।

### ४—१ (१३) प्रकार

अंट-शंट, अनाप-शनाप, लल्लो-चप्पो, लदर-पदर, लस्टम-पस्टम, अंजर-पंजर, खटर-पटर, हट्टा-कट्टा, टाँय-टाँय, हक्का-बक्का।

गलत-सलत, धौल-धप्पड़, गोरी-चिट्टी, तितर-बितर, डील-डौल, चेले-चपाटे, रातबिरात, टेढ़ा-मेढ़ा, सेंत-मेंत, मेजबेज, कुर्सीफुर्सी, बिस्कुट-फिस्कुट।

आस-पास, अड़ौस-पड़ौस, आर-पार, अदल-बदल, रगड़ा-झगड़ा।

### विश्लेषण

इन समासों में अंट-शंट, लल्लो-चप्पो, लदर-पदर, लस्टम-पस्टम, अंजर-पंजर, खटर-पटर, हट्टा-कट्टा, टाँय-टाँय, हक्का-बक्का—ऐसे समास हैं जिनके दोनों ही शब्द वाक्यांश रूप में निरर्थक हैं। परन्तु समासगत रूप में वे एक निश्चित अर्थ का बोध कराते हैं और संज्ञा, विशेषण, अव्यय पदों के रूप में हमारी भाषा के शब्द-समूह के अंग हैं।

अनाप-सनाप, गलत-सलत, धौल-धप्पड़, टेढ़ा-मेढ़ा, सेंत-मेंत ढील-ढाल, डोल-डोल, चेले-चपाटे, रातबिरात, गोरी-चिट्टी, तितर-बितर, मेजबेज, कुर्सी-

फुर्सी, विस्कुट-फिस्कुट—समासों में पहला शब्द सार्थक है और दूसरा शब्द निरर्थक है। दूसरा निरर्थक शब्द, पहिले शब्द की अनुप्रासमूलक आवृत्ति लिए हुए है, और पहिले शब्द के साथ जुड़कर उसने भी सार्थक रूप ग्रहण कर लिया है। पहिले शब्द की अर्थ-अभिव्यक्ति को वल प्रदान करने के लिये ही दूसरे शब्द का योग हुआ है।

इसी प्रकार आस-पास, अड़ोस-पड़ोस, आर-पार, अदल-वदल, रगड़ा-झगड़ा में पहिला शब्द निरर्थक है और दूसरा शब्द सार्थक है। यहाँ पहिला शब्द वस्तुतः दूसरे शब्द की अनुप्रासमूलक आवृत्ति के रूप में है। दूसरे शब्द के अर्थ की अभिव्यक्ति को वल प्रदान करने के लिये ही उसका व्यवहार समास रूप में हुआ है। ये शब्द भी समास रूप में शब्दों के साथ जुड़कर संज्ञा, विशेषण, अव्यय का रूप ग्रहण करते हैं।

वास्तव में सार्थक शब्दों के साथ अनुप्रासमूलक प्रवृत्ति लिये इन शब्दों को निरर्थक कहा भी नहीं जा सकता। यदि इनका प्रयोग निरर्थक होता तो भाषा की रचना इस निरर्थकता को कभी सहन नहीं करती। उस स्थिति में शब्दों की यह पुनरुक्ति नहीं होती। पर इन निरर्थक दिखलाई देने वाले समासों के योग से समास शब्दों के अर्थ में निश्चित रूप से विशेषता आ जाती है, इसमें संदेह नहीं। उदाहरणतः 'अंट-शंट' का का अर्थ समासगत रूप में व्यर्थ के कार्य से है। यह कार्य अंट-शंट हो रहा है। 'लल्लो-चप्पो' खुशामद रूप में व्यवहृत होता है। 'लदर-पदर' बेतरतीब कार्य के लिये प्रयोग में आता है। 'लस्टम-पस्टम' कोई कार्य लापरवाही के साथ किया जाए। 'खटर-पटर' आवाज होने की क्रिया का द्योतक है। 'अंजर-पंजर' शरीर के समस्त अंग-प्रत्यंग के लिये आता है। इसी प्रकार 'हट्टा-कट्टा, मजबूत व्यक्ति के लिये और 'हक्का-बक्का' आश्चर्य से किंकर्त्तव्यविमूढ़ मनुष्य के लिये प्रयोग में आता है।

इसी प्रकार 'गलत-सलत' में वक्ता की झुँझलाहट का भाव निहित है, जिसकी अभिव्यक्ति केवल गलत शब्द कहने से नहीं हो सकती। 'धौल-धप्पड़' में अर्थ-विस्तार है; अर्थात् केवल धौल ही नहीं चांटे, घूँसे सभी कुछ इसमें शामिल हैं। 'चेले-चपाटे' से अभिप्राय केवल शिष्य से नहीं, सभी अनुयायी लोग। 'रातविरात' में 'रात' की भयंकरता को लेकर भय और अनिष्ट का भाव जुड़ा हुआ है, जो केवल 'रात' कहने से व्यक्त नहीं होता। 'मेजवेज' कहने का अभिप्राय है मेज के ढंग की किसी भी प्रकार की बैठने की वस्तु। जब कि मेज कहने का अभिप्राय है केवल मेज। 'विस्कुट-फिस्कुट लाओ' अर्थात् खाने के लिये सामान लाओ, चाहे वह बिस्कुट न हो। पर 'विस्कुट लाओ' से अभिप्राय केवल

'विस्कुट' से है। 'अड़ौस-पड़ौस' में भी यही बात है। अड़ौस-पड़ौस अर्थात् आस-पास रहने वाले सभी लोग। 'आस-पास' में भी अर्थ-विस्तार है। 'पास' का अर्थ केवल 'निकट' से है, पर 'आस-पास' से अभिप्राय चारों ओर निकट के रहने वाले लोग।

वास्तव में भाषा को अधिक अर्थवान, व्यंजनात्मक और बलवान बनाने के लिए इस प्रकार के शब्दों का व्यवहार सहज स्वाभाविक है। इसीलिए ऐसे शब्दों का चलन लिखित और बोलचाल की भाषा में बहुतायत से होता है और यह चलन समास रूप में ही देखा जा सकता है।

## ४—२ निष्कर्ष

४—२ (१) हिन्दी में जिन समस्त पदों की रचना होती है, उनका अर्थ—

१—समासगत दोनों शब्दों से सम्बन्ध रखता है और किसी विशिष्ट अर्थ की कल्पना नहीं करनी पड़ती।

२—समासगत दोनों शब्दों के अर्थ से सम्बन्ध रखता है, परन्तु उसके साथ ही साथ एक विशिष्ट अर्थ की कल्पना करनी पड़ती है।

३—समासगत पदों के अर्थ से कोई सम्बन्ध नहीं रखता और बिल्कुल ही भिन्न अर्थ की कल्पना करनी पड़ती है।

४—समासगत प्रथम शब्द से ही सम्बन्ध रखता है और किसी नए अर्थ की कल्पना नहीं करनी पड़ती है।

५—समासगत द्वितीय शब्द से ही सम्बन्ध रखता है और किसी नए अर्थ की कल्पना नहीं करनी पड़ती है।

६—समासगत दूसरे शब्द से सम्बन्ध रखता है और प्रथम शब्द के स्थान पर नए अर्थ की कल्पना करनी पड़ती है।

७—समासगत प्रथम शब्द से सम्बन्ध रखता है और दूसरे शब्द के स्थान पर नए अर्थ की कल्पना करनी पड़ती है।

४—२ (२) हिन्दी समासों में जिन शब्दों का परस्पर योग होता है उनमें जाति, गुण, धर्म की दृष्टि से समता हो, यह आवश्यक नहीं। समासगत शब्दों में जाति, गुण, धर्म की दृष्टि से समता होती भी है और नहीं भी। परन्तु समास रूप में दोनों शब्द मिलकर एक विशिष्ट वस्तु या भाव का बोध कराते हैं।

४—२ (३) जो समास भेदक-भेद्य की स्थिति लिए हुए रहते हैं, उनमें अर्थ-प्रधानता की दृष्टि से प्रथम या द्वितीय शब्द प्रधान होता है।

यदि प्रथम शब्द भेदक, दूसरा शब्द भेद्य हो तो द्वितीय शब्द अर्थ की दृष्टि से प्रधान होगा। यदि पहिला शब्द भेद्य, दूसरा शब्द भेदक होगा तो प्रथम शब्द अर्थ की दृष्टि से प्रधान होगा।

४—२ (४) जिन समासों में समस्त पद का अर्थ समासगत पदों से भिन्न होता है; अर्थात् समासगत शब्दों के अर्थ से भिन्न, समस्त पद के लिये विशिष्ट अर्थ की कल्पना करनी पड़ती है वे समास अर्थ-प्रधानता की दृष्टि से अन्य पद प्रधान होते हैं।

४—२ (५) जिन समासों के दोनों शब्द जाति, गुण, स्वभाव की दृष्टि से समता लिए हुए रहते हैं, उन समासों के दोनों ही शब्द प्रधान होते हैं। ऐसे समासों में दूसरा शब्द पहिले शब्द की—

१—पुनरावृत्ति लिए रहता है।
२—विलोम रूप होता है।
३—पर्यायवाची होता है।
३—अनुप्रासमूलक होता है।

४—२ (६) हिन्दी के समासों में समस्त पद के अर्थ की अभिव्यक्ति को वल प्रदान करने के लिये समास रचना में—

१—प्रथम शब्द की पुनरुक्ति दूसरे शब्द के रूप में की जाती है।
२—दूसरे शब्द को विलोम रूप दिया जाता है।
३—दूसरा शब्द पहिले ही शब्द का पर्यायवाची होता है।
४—दूसरा या पहिला शब्द अनुप्रासमूलक होता है।
५—पहिला या दूसरा शब्द एक-दूसरे के गुण, जाति या स्वभाव का प्रतीक बनकर समतामूलक होता है।

४—२ (७) जो समास भेदक-भेद्य की स्थिति लिए रहते हैं उनमें अर्थ-संकोच हो जाता है। भेदक शब्द भेद्य शब्द के अर्थ की व्यापकता को सीमित कर देता है।

४—२ (८) जो समास विशेषण-विशेष्य की स्थिति लिए रहते हैं उनका रूप प्रायः लक्षणामूलक होता है। समस्त पद एक विशिष्ट भाव या वस्तु के द्योतक हो जाते हैं। समस्त पदों में अर्थ-विस्तार हो जाता है। परन्तु यह स्थिति प्रत्येक अवस्था में नहीं होती। अनेक विशेषण-विशेष्य समासों की स्थिति भेदक-भेद्य समासों की भाँति होती है। उनकी ही भाँति इन समासों में भी अर्थ-संकोच हो जाता है।

४—२ (९) सर्वपद प्रधान समासों के दोनों शब्द मिलकर अपने जाति, गुण, स्वभाव के आधार पर सामूहिक अर्थ का बोध कराते हैं। इस रूप में उनका अर्थ-विस्तार हो जाता है।

४—२ (१०) हिन्दी समासों की रचना ऐसे शब्दों के योग से भी होती है, जो स्वतंत्र रूप से निरर्थक होते हैं।

४—२ (११) हिन्दी समासों की रचना ऐसे शब्दों के योग से भी होती है जिनका शब्दकोशीय अर्थ और कुछ होता है, परन्तु समास गत रूप में वे नए अर्थ के बोधक होते हैं।

४—२ (१२) हिन्दी समास-रचना में समस्त पदों का अर्थ वाक्य में उनके प्रयोग पर ही निर्भर है। भड़भूंजा, दिलजला, भिखमंगा, जेबकटा—रचना की दृष्टि से एक समान हैं परन्तु अर्थ की दृष्टि से भिन्न हैं। भड़भूंजा का अर्थ है—भाड़ को भूंजनेवाला। दिलजला का अर्थ है—दिल है जिसका जला हुआ। भिखमंगा का अर्थ है—भीख को माँगने वाला। जेबकटा का अर्थ है—जेब है जिसकी कटी हुई।

४—२ (१३) हिन्दी समासों का परस्पर अर्थगत सम्बन्ध निम्न रूपों में देखा जा सकता है—

१—जनक-जनय—सूर्यकिरण, चन्द्रप्रकाश, दशरथपुत्र, ओसबिन्दु, लोह-स्तम्भ, रजतचौकी, स्वर्णकिवाड़, कठपुतली।

२—कर्त्ता-कृति—सूर्योदय, भूकम्प, तुलसी-रामायण, अध्यक्ष-भाषण।

३—आधार-आधेय—पुस्तक-पठन, सूर्योपासना, छात्र-अध्यापक पथ-प्रदर्शन, शरणागत, जल-पिपासु, रात्रिभोजन।

४—आधेय-आधार—बिजलीघर, पुस्तकालय, घुड़साल, पनचक्की, पनडुब्बी।

५—अधिकारी-अधिकृत—पशुभोजन, हवनसामग्री, बलिपशु, मालगोदाम, डाकमहसूल, यज्ञस्तम्भ, रोकड़बही, इन्द्रासन, अमृतरस।

६—अधिकृत-अधिकारी—सभामंत्री, कांग्रेस-अध्यक्ष।

७—उपमान-उपमेय—पत्थरदिल, कमलनयन, चन्द्रमुख।

८—उपमेय-उपमान—चरण-कमल, पाणिपल्लव।

९—रूपक-रूप्य—आशादीप, जीवन-लता, विजयपताका।

१०—सादृश्यमूलक—धन-दौलत, सेठ-साहूकार, चिट्ठी-पत्री, कागज-कलम, दूध-मलाई, साग-भाजी, नमक-मिर्च रोम-रोम, देश-देश।

११—अनुप्रासमूलक—रोना-धोना, गलत-सलत, अड़ोस-पड़ौस, लस्टम-पस्टम, लदर-पदर, लल्लो-चप्पो।

१२—विरोधमूलक—पाप-पुण्य, धर्म-अधर्म, मान-अपमान, जीवन-मरण, हार-जीत, रात-दिन, सुबह-शाम।

## ४—३ वर्गीकरण

अर्थात्मक दृष्टि से हिन्दी समासों का निम्न प्रकार से वर्गीकरण किया जा सकता है—

४—३ (१) **प्रथम पद प्रधान समास**—जिनमें अर्थ की दृष्टि से समास के पहले पद का अर्थ प्रधान होता है। उदाहरण के लिये—नरचील, मादाचील, आर्यलोग, महिलायात्री, आपलोग।

४—३ (२) **द्वितीय पद प्रधान समास**—जिनमें अर्थ की दृष्टि से समास के दूसरे पद का अर्थ प्रधान होता है। उदाहरण के लिये—कांग्रेस-मंत्री, सीमा-विवाद, रक्षा-संगठन, रसोईघर, डाकघर, जीवन-निर्वाह, हथकड़ी, पनचक्की, घुड़-दौड़, कठपुतली, हाथी दाँत, कठफोड़वा।

४—३ (३) **अन्य पद प्रधान समास**—जिन समासों में समासगत पदों के अर्थ से भिन्न अन्य पद के अर्थ की प्रधानता होती है, उन्हें अन्य पद प्रधान समास कहेंगे। उदाहरण के लिये—बगुला-भगत, गोबर-गणेश, पत्थर-दिल, कमल-नयन, चन्द्रमुख, रंगासियार, चलतापुर्जा, खाली हाथ, भ्रष्टपथ, हतप्रभ, पीताम्बर, मक्खीचूस।

४—३ (४) **सर्वपद प्रधान समास**—जिनमें अर्थ की दृष्टि से समास के दोनों ही पद प्रधान होते हैं। उदाहरण के लिये—रात-दिन, भाई-बहिन, माता-पिता, हारा-थका, भला-बुरा, जीवन-मरण, पाप-पुण्य, धर्म-अधर्म, चिट्ठी-पत्री, टेबिल-कुर्सी, रोना-धोना, मारामूरी, भागाभूगी, धक्कमधक्का, छीनाझपटी, खेलकूद, घर-आंगन, तोड़-फोड़।

४—३ (५) **अर्थ विस्तारी समास**—जिन समासों में समासगत पदों के योग से बने समस्त पद के अर्थ का विस्तार होगया है। उदाहरण के

लिये—हाथापाई, लूट-मार, रात-दिन, सुवह शाम, साँझ-सकारे, सेठ-साहूकार, मेज-वेज, विस्कुट-फिस्कुट, देश-देश, धीरे-धीरे।

४—३ (६) अर्थ-संकोची समास—जिन समासों में समासगत पदों के योग से वने समस्त पद के अर्थ का संकोच हो जाता है, उन्हें अर्थ-संकोची समास कहेंगे। उदाहरण के लिये—राज-पुत्र, हिन्दी-शिक्षा, हस्ताक्षर, नारी-शिक्षा, शेयर-वाजार, विजलीघर, मार्ग-दर्शक, पुस्तकालय, मकान-मालिक, मयूर-सिंहासन।

४—३ (७) अर्थोपकर्षीय समास—जिन समासों के समासगत पदों के अर्थ का अपकर्षण हो जाता है उन्हें अर्थोपकर्षीय समास कहते हैं। उदाहरण के लिये—वगुला-भगत, गोवर-गणेश, गोरख-धन्धा, वड़ाघर।

४—३ (८) अभिधामूलक समास—जिन समासों में समस्त पद का अर्थ यौगिक पदों के साधारण अर्थ के समान होता है, उन्हें अभिधामूलक समास कहेंगे। उदाहरण के लिये—विजलीघर, प्रकाश-स्तम्भ, घुड़साल, पथ-प्रदर्शन, जीवन-दायक, कलाप्रिय, देशनिकाला।

४—३ (९) लक्षणामूलक समास—जिन समासों के समस्त पद का अर्थ यौगिक पदों के साधारण अर्थ से भिन्न, विशिष्ट अर्थ को प्रकट करता है। उदाहरण के लिये—गोवर-गणेश, मक्खी-चूस, वगुला-भगत, काला-वाजार, काला-पानी, पाषाण-हृदय, अश्रुमुख, कमल-नयन, चन्द्रमुख, तीन-तेरह, तीन-पाँच, रात-दिन, कलमुँहा।

अध्याय ५

# शब्द-रचना प्रक्रिया के क्षेत्र में हिन्दी समास-रचना की प्रवृत्तियों का अध्ययन

५—१ शब्द-रचना के विविध प्रकार और उनका विश्लेषण ।

५—२ निष्कर्ष ।

५—३ वर्गीकरण ।

: ५ :

## ५—१ शब्द-रचना के विविध प्रकार और उनका विश्लेषण

शब्द-रचना की दृष्टि से हिन्दी समास-रचना में निम्न प्रकार पाए जाते हैं—

### ५—१ (१) प्रकार

देश-निष्कासन, हाथी-दाँत, मकान-मालिक, हस्ताक्षर, क्रोधाग्नि, दियाबत्ती, रामकहानी, राह-खर्च, भाई-बहिन, नर-चील, तपोबल, शान-शौकत, सेवक-सेविका, बाल-बच्चे, राधा-कृष्ण, पत्र-लेखन, शिलाजीत, आराम-कुर्सी, सर्व-साधारण, किया-कराया, दौड़-धूप, खेल-कूद, अपना-पराया, कमल-नयन, कम-जोर, गोबर-गणेश, घरघुसा, घर-सिला, दिल-जला, जेबकट, मक्खीचूस, मुँहतोड़, हितकारी, लाल-पीला, हरा-भरा, उल्टा-सुल्टा, गोल-मटोल, पिछलग्गू, बिनदेखा, बिनब्याहा, रात-दिन सुबह-शाम, इधर-उधर, परिणाम-स्वरूप, आज्ञानुसार, पेटभर, मन-ही-मन, हाथोंहाथ, सटासट, खायापीया, डाँटा-फटकारा, मेरा-तुम्हारा।

### विश्लेषण

ये सभी समास संज्ञा (देश-निष्कासन, हाथी-दाँत, मकान-मालिक, हस्ता-क्षर, क्रोधाग्नि, दिया-बत्ती, रामकहानी, राह-खर्च, भाई-बहिन, नर-चील, तपो-वन, शान-शौकत, सेवक-सेविका, बाल-बच्चे, राधा-कृष्ण, शिलाजीत, पत्र-लेखन, आराम-कुर्सी, दौड़-धूप), विशेषण (कमजोर, गोबर-गणेश, घर-सिला, घर-घुसा, दिल-जला, जेबकट, मक्खीचूस, मुँहतोड़, हितकारी, हरा-भरा, उल्टा-सुल्टा, गोल-मटोल, पिछलग्गू, बिनदेखा, बिनब्याहा), अव्यय (रात-दिन, इधर-उधर, घर-बाहर, आज्ञानुसार, परिणाम-स्वरूप, पेटभर, मन-ही-मन, हाथोंहाथ), क्रिया (खाया-पीया, डाँटा-फटकारा), सर्वनाम (मेरा-तुम्हारा) पदों का रूप लेते हैं।

यह रचना संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, अव्यय, तथा क्रिया आदि पदों के परस्पर योग से हुई है। रूप-प्रक्रिया के क्षेत्र में हिन्दी समास-रचना की प्रवृत्तियों का अध्ययन करते हुए इस सम्बन्ध में पहिले प्रकाश डाला जा चुका है।

## ५—१ (२) प्रकार

आत्मतेज, दृष्टिबोध, आत्मकल्याण, पाषाण-हृदय, कमलनयन, राजीव-लोचन, राजपुत्र, क्रोधाग्नि, पश्चाताप, जीवनशक्ति, आशालता, कृतकार्य, नरेन्द्र, विद्युतगृह, छविगृह, चल-चित्र, जल-कल, मिष्ठान्न, अर्थशास्त्र, सैन्य-नियोजन, योजना-आयोग, निर्माण-विभाग, प्रस्तर-युग, प्रबन्ध-समिति, प्रचार-कार्य, जीवन-मरण, धनादेश, कर-निर्धारण, कार्य-परिषद्, गृहसचिव, राष्ट्रपति, जन-सुरक्षा, प्रजावर्ग, श्वेतपत्र, श्यामपट, घनपटल, भोजनालय, अणुयुग, जल-पिपासु, रोग-सिक्त, शिक्षार्थी, निर्वाचन-सूची, पाप-पुण्य, वचन-बद्ध, भारवाहक, भयाकुल, निशिवासर, सूर्य-चन्द्र, गृहनक्षत्र, गजदंत, जय-पराजय, शोक-संतप्त, मार्ग-दर्शक, प्रकाश-स्तम्भ, कष्ट-साध्य।

### विश्लेषण

इन समासों की रचना हिन्दी के तत्सम और तत्सम शब्दों के योग से हुई है।

## ५—१ (३) प्रकार

मृतसमान, कूल-किनारा, निशिदिन, रसोईगृह, स्नानघर, रोग-ग्रस्त, मद-माता, लखपति।

### विश्लेषण

इन समासों की रचना हिन्दी के तत्सम और तद्भव शब्दों के योग से हुई है।

## ५—१ (४) प्रकार

गठबंधन, कठफोड़वा, हथकड़ी, दियसलाई, चिड़ीमार, अधपका, अधमरा, इकन्नी, चवन्नी, बिनब्याहा, बिनबोया, आँखोंदेखा, कानोंसुना, घरसिला, काम-चलाऊ, मनमाना, कपड़छन, पतझड़, छीनाझपटी, आँखमिचौनी, कहन-सुनन, देख-रेख, देश-निकाला, हाथी-दांत, ठकुर-सुहाती, रोकड़-बही, कामचोर, हुक्का-पानी, घुड़-दौड़, बैलगाड़ी, पनचक्की, मनमौजी, कानाफूसी, कनकटा, पनडुब्बी, काली-मिर्च, मंझधार, खड़ीबोली, भलमानुष, छुटभइया, खटमिट्ठा, मोटा-ताजा, दोपहर, सतनजा, चौराहा, दुपट्टा, गुरधानी, भेड़ियाधसान, गीदड़-भमकी, माँ-

बाप, चिट्ठी-पत्री, घी-गुड़, मिठबोला, हँसमुख, सिरफिरा, बड़भागी, मनचला, कनफटा, सतलड़ी, जूमतजूता, लठा-लठी।

## विश्लेषण

इन समासों की रचना हिन्दी के तद्‌भव और तद्‌भव शब्दों के योग से हुई है।

## ५—१ (५) प्रकार

खुशमिजाज, खुशदिल, बदनसीब, बदमिजाज, नामोनिशान, कमजोर, गैर-हाजिर, दरअसल, बदहजमी, हमउम्र, राहखर्च, शहरपनाह, गरीबनिवाज, साफ-दिल, शान-शौकत, चोली-दामन, पंजाब, दुआब, खरीद-फरोख्त, जर-जोरू-ज़मीन, सलाह-मशवरा, गरीब-अमीर, जोर-जुल्म, तीरकमान, तख्तताउस, दस्तखत, मालिकमकान, शाहजहाँ, इलाहाबाद, स्कूल-कालिज, कांग्रेस-पार्टी, होमगार्ड, चेयर-मैन, रेलवे-स्टेशन, आइसक्रीम, मनिआर्डर, रेलवेआफिस, फुटबोल, बोलीबाल, पिक्चर-हाउस, टीपार्टी, मनीबेग, क्लासरूम, न्यूजपेपर।

## विश्लेषण

इन समासों की रचना हिन्दीतर भाषाओं के शब्दों के योग से हुई है। हिन्दीतर भाषाओं के इन शब्दों में फारसी, अरबी, अंग्रेजी भाषाओं के शब्दों की प्रधानता है।

## ५—१ (६) प्रकार

रेलगाड़ी, चिड़ियाखाना, पावरोटी, दलबन्दी, अजायबघर, घीबाजार, हैड-पंडित, कांग्रेसअध्यक्ष, जिलाधीश, सिने-संसार, स्प्रिंगतुला, सल्फेटकरण, थर्माइट-विधि, थाइरोडस्राव, समझौता-पसंद, समझौता-प्रेमी, समझौता-वादी, अमनसभा।

## विश्लेषण

इन समासों की रचना हिन्दी और हिन्दीतर भाषाओं के शब्दों के योग से हुई है—

| | | | |
|---|---|---|---|
| रेल | (अंग्रेजी) | गाड़ी | (हिन्दी) |
| चिड़िया | (हिन्दी) | खाना | (फारसी) |
| पाव | (पुर्तगाली) | रोटी | (हिन्दी) |
| दल | (हिन्दी) | बन्दी | (फारसी) |
| अजायब | (अरबी) | घर | (हिन्दी) |
| घी | (हिन्दी) | बाजार | (फारसी) |
| हैड | (अंग्रेजी) | पंडित | (हिन्दी) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| कांग्रेस | (अंग्रेजी) | अध्यक्ष | (हिन्दी) |
| जिला | (फारसी) | अधीश | (हिन्दी) |
| सिने | (अंग्रेजी) | संसार | (हिन्दी) |
| स्प्रिंग | (अंग्रेजी) | तुला | (हिन्दी) |
| सल्फेट | (अंग्रेजी) | करण | (हिन्दी) |
| थर्माइट | (अंग्रेजी) | विधि | (हिन्दी) |
| थाइरोड | (अंग्रेजी) | | (हिन्दी) |
| अमन | (फारसी) | सभा | (हिन्दी) |

## ५—१ (७) प्रकार

काला-स्याह, शान-शौकत, धन-दौलत, रुपया-पैसा, सेठ-साहूकार, हकीम-डाक्टर, चिट्ठी-पत्री, खत-खितावत, खाना-पीना, खेलकूद, उठना-बैठना।

### विश्लेषण

इन समासों की रचना द्विरुक्ति-मूलक है। शब्द-समूह की दृष्टि से ये समास द्विरुक्तिमूलक कहे जा सकते हैं।

## ५—१ (८) प्रकार

धीरे-धीरे, हाथोंहाथ, कानोंकान, आप-ही-आप, मन-ही-मन, गटागट, धक्कम-धक्का, तनातनी, लठालठी।

### विश्लेषण

इन समासों की रचना पुनरुक्तिमूलक है। शब्द-समूह की दृष्टि से ये समास पुनरुक्तिमूलक कहे जा सकते हैं।

## ५—१ (९) प्रकार

घूमधड़ाका, मानमनोवल, गलत-सलत, उल्टा-सुल्टा, अड़ोस-पड़ोस, विस्कुट-फिस्कुट, मेजवेज, अदल-बदल, आमने-सामने, धौल-धप्पड़, अंधाधुंध।

### विश्लेषण

इन समासों की रचना अनुकरणमूलक है। शब्द-समूह की दृष्टि से ये समास अनुकरणमूलक कहे जा सकते हैं।

## ५—१ (१०) प्रकार

लल्लो-चप्पो, अंट-शंट, अनाप-शनाप, लदर-पदर, लस्टम-पस्टम, खटर-पटर, हट्टा-कट्टा, टाँय-टाँय, हक्का-बक्का, रगड़ा-झगड़ा, धौल-धप्पड़।

**विश्लेषण**

इन सामासों की रचना जिन शब्दों के द्वारा हुई है, वे स्वतन्त्र रूप से निरर्थक हैं। परन्तु समास रूप में सार्थक होकर वे हिन्दी शब्द-समूह के अंग बन गये हैं।

## ५—१ (११) प्रकार

कमलनयन, जीवनदीप, जीवनसंगीत, आशालता, भक्तिसुधा, पाषाण-हृदय, मृगनयनी, चन्द्रमुख, सुखसागर, कीर्तिलता, यशपताका।

**विश्लेषण**

हिन्दी के शब्द-समूह में इन समासों की रचना अलंकारों की दृष्टि से उल्लेखनीय है।

## ५—१ (१२) प्रकार

बगुला-भगत, गोबर-गणेश, भेड़िया-धसान, गोरख-धन्धा, तीन-तेरह, हाथा-पाई, तीन-पाँच, अनाप-शनाप, लल्लो-चप्पो, धूमधाम, टीमटाम, तूतू-मैंमैं, धूम-धड़ाका, साँठ-गाँठ, नुक्ता-चीनी, गिने-चुने, टालमटूल, कानाफूँसी, खून-खराबी, गीदड़-भभकी, ठकुरसुहाती, थुक्का-फजीहत, आगा-पीछा।

**विश्लेषण**

हिन्दी शब्द-समूह में इन समासों की रचना मुहावरों की दृष्टि से उल्लेख-नीय है।

## ५—१ (१३) प्रकार

तन-मन-धन, भारत-प्रकाशन मन्दिर, सूचना-सिंचाई-मंत्री, दलितवर्ग-उद्धार-समिति, कामरोको-प्रस्ताव, भारत-छोड़ो-आन्दोलन।

**विश्लेषण**

इन समासों की रचना दो से अधिक शब्दों के योग से हुई है।

## ५—१ (१४) प्रकार

रामकुमार, रामचन्द्र, जीवनराम, मोहनलाल, नरेशचन्द्र, हरनामसिंह, आर्यकुमार, यमुनाप्रसाद, प्रदीपकुमार, शान्तीदेवी, लक्ष्मीदेवी, चन्द्रकुमारी, भगवतीदेवी, कस्तूरीदेवी, भारतवर्ष, पंजाब, मध्यप्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रांत, इलाहाबाद, रामनगर, अहमदाबाद, रतनगढ़, किशनगढ़, विन्ध्याचल, हिमालय, हिन्दूकुश, राजामंडी, बेलनगंज, रानीकटरा, सुभाषपार्क, आजादगली, दयानन्द-

मार्ग, हजरतगंज, मणिकर्णिकघाट, चाँदनीचौक, दरियागंज, शान्ति निकेतन, सूर्यभवन, श्यामकुटीर, काव्यकुंज, हिन्दी-साहित्य-सदन, पूर्वोदय-प्रकाशन, भारती-भण्डार, विनोद-पुस्तक-मन्दिर, हिन्दी-विद्यापीठ, आगरा विश्वविद्यालय, हिन्दी-साहित्य-समिति, राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति, ग्रामविकास-मण्डल, खादीवस्त्र-उद्योगमण्डल, खादी-विकाससंघ, पद्मविभूषण, परमवीरचक्र, महावीरचक्र, विद्यारत्न, विद्यालंकार, साहित्य-रत्न, साहित्य-वाचस्पति, साहित्यमहोपाध्याय, रायबहादुर, रायसाहब, बंसलोचन, दादमार, शिलाजीत, नयनसुख, स्वर्णभस्म, सिद्धमकरध्वज, दन्तमंजन, पत्थरहजम-चूर्ण, अमृतांजन, सोमरस, रचनाप्रदीप, रसायन-प्रदीपिका, साहित्य-सरोवर, हिन्दी-पथप्रदर्शिका, विशाल-भारत, अमर-उजाला, राम-चरित्र मानस, जयद्रथवध, प्रजाहितैषी, अग्रवालबन्धु, कार्यस्थगन, विभागाध्यक्ष, महाधिवक्ता, भौतिक-विज्ञान, रसायन-शास्त्र, प्राणी-विज्ञान, भाषा-विज्ञान, तापनियंत्रक, मुद्रास्फीति, श्रव्य-दृश्य-प्रणाली, संततिनिग्रह, नगर-पालिका, युद्ध-स्थान, अधिकार-पत्र, राष्ट्र-मण्डल, राज-प्रतिनिधि, व्यवहार-निरीक्षक, स्वायत्त-शासन, विद्युत-चालकता-अनुमापन, चट्टान-खोजन, जल-प्रतिरोधक परीक्षण-यंत्र, शल्यकर्म, प्रतीक्षालय, विधान-सभा, संसद-भवन, गृह-सचिव।

**विश्लेषण**

हिन्दी के ये समास, व्यक्तियों (रामकुमार, रामचन्द्र, जीवनराम, मोहन-लाल, नरेशचन्द, हरनामसिंह, आर्यकुमार, यमुनाप्रसाद, प्रदीप कुमार, शान्तीदेवी, लक्ष्मीदेवी, चन्द्रकुमारी, भगवतीदेवी, कस्तूरीदेवी), देशों (भारतवर्ष), प्रान्तों (पंजाब, मध्यप्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रान्त), नगरों (अहमदाबाद, किशनगढ़, रतनगढ़, रामनगर), मुहल्ला (बेलनगज, रानीकटरा, सुभाषपार्क, हजरतगंज, दरियागंज, चाँदनी चौक), बाजारों, सड़कों (आजादगली, गांधीरोड़, दयानन्द मार्ग), मकानों (श्यामकुटीर, किरणभवन), उपाधियों (पद्मविभूषण, परमवीर-चक्र, महावीर चक्र, विद्यारत्न, विद्यालंकार, साहित्यरत्न, साहित्यवाचस्पति, साहित्यमहोपाध्याय, रायबहादुर, रायसाहब), संस्थाओं (पूर्वोदय-प्रकाशन, भारती-भण्डार, विनोद-पुस्तक-मन्दिर, हिन्दी-विद्यापीठ, आगरा विश्वविद्यालय, हिन्दी-साहित्य-समिति, राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति, ग्राम-विकास-मण्डल, खादी-वस्त्र-उद्योग-मण्डल, खादी-विकास-संघ), दवाइयों और वस्तुओं के नाम (बंसलोचन, दादमार, शिलाजीत, नयनसुख, स्वर्णभस्म, सिद्धमकर-ध्वज, दंत-मंजन, पत्थर हजम-चूर्ण, अमृताजन, सोमरस, मत-पेटिका), पुस्तकों (रचना-प्रदीप, रसायन-प्रदीपिका, साहित्य-सरोवर, जयद्रथ-वध, राम-चरित-मानस, जय-सोमनाथ), समाचार पत्रों (विशाल-भारत, प्रजा-हितैषी, अग्रवाल-बन्धु, अमर उजाला,

राष्ट्र-भाषा, धर्म-ज्योति), और पारिभाषिक शब्दावली (रसायन-शास्त्र, प्राणी-विज्ञान, भाषा-विज्ञान, श्रव्य-दृश्य-प्रणाली, ताप-नियंत्रक, मुद्रा-स्फीति, नगर-पालिका, युद्ध-स्थगन, अधिकार-पत्र, शिशु-कल्याण केन्द्र, शीतयुद्ध, राष्ट्र-मण्डल, विमान-ध्वसंक, स्वायत्त-शासन, विद्युत-चालकता-अनुमापन, चट्टान-छोजन, जल-प्रतिरोधक, शल्यकर्म, परीक्षण-यंत्र, प्रतीक्षालय, संसद-भवन, विधान-सभा) के रूप में हैं।

## ५—२ निष्कर्ष

५—२ (१) हिन्दी शब्द-समूह के संज्ञा, विशेषण, अव्यय, क्रिया तथा सर्वनाम आदि पदों की रचना समास-प्रक्रिया द्वारा भी होती है। इस पद-रचना में समास-प्रक्रिया के रूप में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय पदों का परस्पर योग होता है।

५—२ (२) हिन्दी समासों की रचना तत्सम और तत्सम, तत्सम और तद्भव, तदभव और तद्भव, हिन्दी और हिन्दीतर, हिन्दीतर और हिन्दी-तर, भाषाओं के शब्दों के योग से होती है। इनमें प्रधानता तत्सम और तत्सम तथा तद्भव और तद्भव शब्दों से बने समासों की है। हिन्दी में ऐसे समास बहुत कम पाये जाते हैं, जो तत्सम और तद्भव शब्दों के योग से बनते हैं। 'धर्मभीरु' समास हो सकता है परन्तु 'धर्म डरपोक' नहीं। 'गजदंत' समास में 'गज' तत्सम शब्द के साथ 'दंत' तत्सम शब्द का योग हुआ है। 'गजदांत' नहीं कहा जाता है। 'दांत' तद्भव शब्द का योग 'हाथी' तद्भव शब्द के साथ ही होता है। इसी प्रकार हिन्दी समासों में तत्सम शब्दों का योग तत्सम शब्दों से, और तदभव शब्दों का योग तद्भव शब्दों से ही अधिक होता है।

हिन्दीतर भाषाओं के साथ हिन्दी के तत्सम और तद्भव—दोनों ही शब्दों का योग होता है फिर भी ऐसे योग में दोनों भाषाओं के तत्सम शब्दों का योग ही अधिक देखने को मिलता है।

५—२ (३) हिन्दी शब्द-समूह के अनुकरणवाची, द्विरुक्तिवाची, और पुन-रुक्तिवाची शब्द समास-प्रक्रिया के द्वारा ही मुख्यतः बनते हैं।

५—२ (४) हिन्दी भाषा के बहुत से निरर्थक शब्द हिन्दी समासों के रूप में हिन्दी शब्द-समूह के अङ्ग बन जाते हैं।

५—२ (५) हिन्दी शब्द-समूह में अलङ्कार और मुहावरों का रूप लिए हुए भी हिन्दी के समास दिखलाई देते हैं।

५—२ (६) हिन्दी समासों की रचना दो से अधिक शब्दों के योग से भी होती है, पर यह वहुपदीय समासों की प्रवृत्ति हिन्दी में अधिक नहीं है। हिन्दी समासों की रचना प्रायः दो शब्दों के योग से ही अधिक होती है। संस्थाओं के नाम, या पारिभाषिक शब्दावली की रचना ही प्रायः दो से अधिक शब्दों के योग से होती है।

५—२ (७) व्यक्तियों, नगरों, देशों, प्रान्तों, मुहल्लों, वाजारों, सड़कों, उपाधियों, दवाइयों, दुकानों, संस्थाओं, पुस्तकों, समाचार पत्रों के शीर्षकों के नामकरण और पारभापिक शब्दावली की रचना में समास प्रक्रिया की ही प्रधानता रहती है। जिन वस्तुओं में दो भिन्न भावों, गुणों, वस्तुओं का योग रहता है उनका नामकरण प्रायः समास रूप में ही किया जाता है।

५—२ (८) समास-रचना की इस प्रक्रिया में, विशेपतः पारभाषिक शब्दावली की रचना में तत्सम शब्दों का योग ही अधिक रहता है। 'पद-तोड़ने' के स्थान पर 'पद उन्मूलन', 'काम रोकन' या 'कार्य रोकन' के स्थान पर 'कार्य स्थगन' समस्त पद प्रचलित हैं।

## ५—३ वर्गीकरण

५—३ (१) **संज्ञापद समास**—रूप-प्रक्रिया के क्षेत्र में हिन्दी समास-रचना की प्रवृत्तियों का अध्ययन करते हुए संज्ञावाची समासों के वर्गीकरण के रूप में इस सम्वन्ध में प्रकाश डाला जा चुका है।

५—३ (२) **विशेषणपद समास**—रूप-प्रक्रिया के क्षेत्र में हिन्दी समास-रचना की प्रवृत्तियों का अध्ययन करते हुए विशेपणवाची समासों के वर्गीकरण के रूप में इस सम्वन्ध में प्रकाश डाला जा चुका है।

५—३ (३) **अव्ययपद समास**— रूप-प्रक्रिया के क्षेत्र में हिन्दी समास-रचना की प्रवृत्तियों का अध्ययन करते हुए अव्ययवाची समासों के वर्गीकरण के रूप मे इस सम्वन्ध में प्रकाश डाला जा चुका है।

५—३ (४) **क्रियापद समास**—रूप-प्रक्रिया के क्षेत्र में हिन्दी समास-रचना की प्रवृत्तियों का अव्ययन करते हुए क्रियावाची समासों के वर्गीकरण के रूप में इस सम्वन्ध में प्रकाश डाला जा चुका है।

५—३ (५) **सर्वनामपद समास**—रूप-प्रक्रिया के क्षेत्र में हिन्दी समास-रचना की प्रवृत्तियों का अध्ययन करते हुए सर्वनामवाची समासों के वर्गीकरण के रूप में इस सम्वन्ध में प्रकाश डाला जा चुका है।

५—३ (६) **तत्सम समास**—हिन्दी के जिन समासों की रचना तत्सम शब्दों के योग से हुई है और समस्त पद भी तत्सम रूप लिए हुए हैं, वे हिन्दी के तत्सम समास कहे जा सकते हैं। उदाहरण के लिए ५—१ (२) प्रकार के समास हिन्दी के तत्सम समास हैं।

५—३ (७) **तद्भव समास**—जिन हिन्दी समासों की रचना तद्भव शब्दों के योग से हुई है और समस्त पद भी तद्भव रूप लिए हुए हैं, वे हिन्दी के तद्भव समास कहे जा सकते हैं। उदाहरण के लिये ५—१ (४) प्रकार के समास हिन्दी के तद्भव समास हैं।

५—३ (८) **विभाषी समास**—जिन हिन्दी समासों की रचना हिन्दीतर भाषाओं के योग से हुई है या जो विदेशी भाषाओं से ग्रहण किए गये हैं, उन्हें विभाषी समास कह सकते हैं। उदाहरण के लिए ५—१ (५) प्रकार के समास हिन्दी के विभाषी समास हैं।

५—३ (९) **संकर समास**—हिन्दी के जो समास हिन्दी और हिन्दीतर तथा हिन्दीतर भाषाओं में दो भिन्न भाषाओं के योग से बनते हैं उन्हें संकर समास कह सकते हैं। प्रकार संख्या ५—१ (६) के समास हिन्दी के संकर समास हैं।

५—३ (१०) **द्विरुक्तिवाची समास**—हिन्दी के जिन समासों में शब्दों की द्विरुक्ति होती है उन्हें हिन्दी के द्विरुक्तिवाची समास कह सकते हैं। प्रकार संख्या ५—१ (७) के समास हिन्दी के द्विरुक्तिवाची समास हैं।

५—३ (११) **अनुकरणवाची समास**—जिन समासों की रचना में शब्द अनुकरण की प्रवृत्ति लिए रहते हैं, वे हिन्दी के अनुकरणवाची समास कहे जा सकते हैं। प्रकार संख्या ५—१ (८) के समास हिन्दी के अनुकरणवाची समास हैं।

५—३ (१२) **पुनरुक्तिवाची समास**—जिन समासों में शब्दों की पुनरुक्ति होती है, वे हिन्दी के पुनरुक्तिवाची समास कहे जा सकते हैं। प्रकार संख्या ५—१ (९) के समास हिन्दी के पुनरुक्तिवाची समास हैं।

५—३ (१३) **मुहावरावाची समास**—हिन्दी शब्द-समूह में हिन्दी के जो समास मुहावरा रूप में प्रयुक्त हुए हैं उन्हें हिन्दी के मुहावरावाची समास कह सकते हैं। प्रकार संख्या ५—१ (१२) के समास हिन्दी के मुहावरावाची समास हैं।

५—३ (१४) **अलंकारवाची समास**—हिन्दी के शब्द-समूह में जो समास अलंकार रूप में प्रयुक्त हुए हैं उन्हें हिन्दी के अलंकारवाची समास

कह सकते हैं। प्रकार संख्या ५—१ (११) के समास हिन्दी के अलंकारवाची समास कहे जा सकते हैं।

५—३ (१५) **वहुपदीय समास**—हिन्दी के जिन समासों की रचना दो से अधिक पदों के योग से होती है उन्हें हिन्दी के वहुपदीय समास कह सकते हैं। प्रकार संख्या ५—१ (१३) के समास हिन्दी के वहु-पदीय समास हैं।

अध्याय ६

# हिंदी में आगत हिंदीतर भाषाओं के समासों का अध्ययन

६—१ हिन्दी में आगत संस्कृत भाषा के समासों का अध्ययन।

६—२ हिन्दी में उर्दू-शैली के माध्यम से आए अरबी-फारसी के समासों का अध्ययन।

६—३ हिन्दी में आगत अंग्रेजी भाषा के समासों का अध्ययन।

: ६ :

## ६—१ हिन्दी में आगत संस्कृत भाषा के समासों का अध्ययन

परिनिष्ठित हिन्दी में जिस प्रकार संस्कृत भाषा के शब्द-समूह की बहुलता है, उसी प्रकार संस्कृत समास रचना-शैली का आधार लिए समास शब्दों की परिनिष्ठित हिन्दी में प्रधानता है। हिन्दी भाषा को परिनिष्ठित, साहित्यिक और कलात्मक रूप प्रदान करने के लिये हिन्दी भाषा में संस्कृत समासों को ज्यों का त्यों ग्रहण किया गया है। हिन्दी में गृहीत संस्कृत भाषा के ये समास निम्न रूपों में देखे जा सकते हैं :—

१—संस्कृत के अव्ययीभाव समास—यथाविधि, यथाक्रम, यथा-संभव, यथाशक्ति, यथासाध्य, आजन्म, आमरण, यावत्जीवन, प्रतिदिन, प्रतिमान, व्यर्थ, परोक्ष, प्रत्यक्ष, समक्ष, प्रत्येक।

२—संस्कृत के तत्पुरुष समास—भाग्याधीन, पराधीन, स्वाधीन, देशान्तर, भाषान्तर, दुखान्वित, सौभाग्यान्वित, आशातीत, गुणातीत, समालोचनार्थ, कलागत, रूपगत, जीवनगत, भावगत, कलापरक, रोगाक्रांत, पदाक्रांत, प्रेमातुर, कामातुर, भयाकुल, चिन्ताकुल, पापाचार, शिष्टाचार, कुलाचार, आत्मस्तुति, आत्मश्लाघा, आत्मघात, आत्महत्या, स्थानापन्न, दोषापन्न, दुखार्त्त शोकार्त्त, क्षुधार्त्त, जलाशय, महाशय, दोषास्पद, हास्यास्पद, निंदास्पद, धनाढ्य, गुणाढ्य, लोकोत्तर, भोजनोत्तर, मरणोत्तर, प्रभाकर, दिनकर, हितकर, सुखकर, मरणशील, मृत्युशील, गतिशील, समकालीन, भूतकालीन, वर्तमानकालीन, बुद्धिगम्य, विचारगम्य, व्याधिग्रस्त, चिन्ताग्रस्त, भयग्रस्त, विश्वासघात, प्राणघात, निशाचर, जलचर, शुभचिन्तक, हितचिन्तक, क्रोधजन्य, अज्ञानजन्य, प्रेमजन्य, शब्दजाल, कर्मजाल, मायाजाल, श्रमजीवी, कर्मजीवी, दूरदर्शी,

त्रिकालदर्शी, सूक्ष्मदर्शी, सुखदायक, गुणदायक, मंगलदायक, भयदायक, सुखदायी, मंगलदायी, गिरिधर, महीधर, पयोधर, सूत्रधार, कर्णधार, राजधर्म, कुलधर्म, सेवाधर्म, कृमिनाशक, विघ्ननाशक, कर्मनिष्ठ, योगनिष्ठ, भक्तिपरायण, धर्म-परायण, स्वार्थपरायण, मित्रभाव, शत्रुभाव, प्रेमभाव, अर्थभेद, पाठभेद, भूदान, शिक्षादान, अर्थदान, ज्ञानदान, अग्निरूप, वायुरूप, मायारूप, ज्ञानरहित, धर्म-रहित, भाग्यशाली, बुद्धिशाली, समृद्धिशाली, ज्ञानशून्य, द्रव्यशून्य, अर्थशून्य, कर्मशूर, रणशूर, कष्टसाध्य, यत्नसाध्य, श्रमहारी, तापहारी, गुणहीन, धनहीन, मतहीन, जलपिपासु, देशभक्ति, गजदंत, विद्यागृह, चिकित्सालय, सभापति, नरेश, देवेन्द्र, पूर्वोदय, सूर्योदय, भूकम्प, पथ-प्रदर्शन, शोधसंस्थान, हिन्दीपीठ, विद्युतगृह, वीणावादन, भवननिर्माण, जीवननिर्माण, फलीभूत।

३—**संस्कृत के उपपद समास**—तटस्थ, उदरस्थ, सुखद, वारिद, उरग, तुरंग, विहंग, खग, जलज, पिंडज, स्वदेज, कृतघ्न, नृपति।

४—**संस्कृत के नञ् तत्पुरुष**—अधर्म, अन्याय, अयोग्य, अनाचार, अनिष्ट, नक्षत्र, नास्तिक, नपुसंक, अज्ञान, अकाल, अनीति।

५—**संस्कृत के प्रादि समास**—प्रतिध्वनि, अतिक्रम, प्रतिबिंब, प्रगति।

६—**संस्कृत के कर्मधारय समास**—महाजन, पूर्वकाल, शुभागमन, सद्-गुण, सत्जन, परमानन्द, पूर्णेन्दु, गतवैभव, गतायु, गतश्री, पुरुषोत्तम, नराधम, मुनिवर, भक्तप्रवर, शीतोष्ण, शुद्धाशुद्ध, पापबुद्धि, मन्दबुद्धि, राजीवलोचन, चरणकमल, पाषाणहृदय, अश्रुमुख, मृगनयनी, चन्द्रमुख, मुखकमल, वज्रदेह, घनश्याम, प्राणप्रिय, पाणिपल्लव।

७—**संस्कृत के द्विगु समास**—त्रिभुवन, त्रैलोक्य, अष्टाध्यायी, पंचरत्न, नवरत्न।

८—**संस्कृत के द्वंद्व समास**—मनसा-वाचा-कर्मणा, आहार-निद्रा-भय-मैथुनम्, पाणिपादम्।

९—**संस्कृत के बहुव्रीहि समास**—दत्तचित्त, दत्तधन, कृतकार्य, निर्जन, निर्विकार, विमल, दशानन, सहस्त्रबाहु, नीलकंठ, चतुर्भुज, तपोधन, यशोधन, असुरनिकंदन, प्रफुल्लकमल, दीर्घबाहु, लंबकर्ण, नाट्यप्रिय, शाकप्रिय, कलाप्रिय, राजीवलोचन, पाषाणहृदय, वज्रहृदय, कोकिलकंठा, गजानन, पीताम्बर, लम्बोदर।

हिन्दी भाषा में गृहीत संस्कृत भाषा के इन समासों के उदाहरणों से स्पष्ट है कि संस्कृत भाषा के लगभग सभी प्रकार के समास हिन्दी भाषा में पाये

जाते हैं। इन समासों में तत्पुरुष-शैली के समासों की प्रधानता है। संस्कृत समास-शैली के आधार पर ही समास के उत्तर पद रूप में—क, वाद, तंत्र, अर्थ, गत, अनुसार, अतीत, आतुर, प्रिय, जनक, परक, मूलक, आचार, आर्त, दग्ध, अन्वित, वंचित, आगम, शील, पूर्ण, आपन्न, आस्पद, कालीन, गम्य, ग्रस्त, चिंतक, जन्य, जाल, नाशक, जीवी, दर्शी, आधीन, दायक, परायण, भाव, शून्य, हृत, साध्य, रहित, हर, हीन, शाली, घर, चर, आदि कृदंत भाववाचक संज्ञाएं, विशेषण, अव्यय लगाकर हिन्दी में अनेक समस्त पदों की रचना देखने को मिलती है। साहित्यिक हिन्दी, विशेषकर पद्य की भाषा में इस प्रकार के समासों का खूब चलन है। स्वयं हिन्दी के तद्भव शब्दों से बने तत्पुरुष समास इसी परम्परा के अनुकरण पर बने हैं। गजदंत = हाथीदांत, विद्युतगृह = विजलीघर, काष्ठपुत्तलिका = कठपुतली, पितृवचन = पितावचन में शब्दों के तत्सम और तद्भव रूपों का भेद है, रचना-शैली एक ही है। यही नही, हिन्दी में जो घरघुसा, दिलजला, चिड़ीमार, मनमारा, भिखमंगा, जेवकट, जलप्यासा, जगहँसाई, पतझड़, मनवहलाव, दिलवहलाव, जैसे संज्ञा और कृदंतों के योग से बने समास देखने को मिलते हैं वे संस्कृत समासों की प्रकृति के अनुकूल ही हैं। संस्कृत समासों के संकटमोचन, कार्यस्थगन, पदउन्मूलन, की भाँति ही हिन्दी समासों में संकटहरण, कामरोकन, पदतोड़ण, जैसा रूप ग्रहण किया गया है। हिन्दी की 'हरना, रोकना, तोड़ना' आदि क्रियाओ ने समास रूप में संज्ञापदों के योग के साथ कृदंत पद होकर नकारान्त रूप ले लिया है।

पारभाषिक शब्दावली के रूप में अंग्रेजी भाषा के शब्दों का जो अनुवाद हिन्दी में मिलता है, वह भी संस्कृत समास-शैली के आधार पर ही होता है, उदाहरण के लिये :—

| | |
|---|---|
| फूड प्रोवलम | खाद्य-समस्या |
| लाइफ इंश्योरेस कारपोरेशन | जीवन-बीमा-निगम |
| मनीआर्डर | धनादेश |
| ट्यूबवेल्स | नलकूप |
| एयर-वे | वायुपथ |
| एडमीशन कार्ड | प्रवेशपत्र |
| एन्ट्रेन्स गेट | प्रवेशद्वार |

यद्यपि संस्कृत भाषा का रूप संश्लेषणात्मक और हिन्दी भाषा का रूप विश्लेषणात्मक है, परन्तु समास-रचना-शैली में हिन्दी ने संस्कृत समास-शैली की भाँति संश्लेषणात्मक रूप अपनाया है। इसीलिये 'सुन्दरतापूर्ण' के स्थान पर

सौन्दर्यपूर्ण, 'पंडिताईप्रिय' के स्थान पर पांडित्यप्रिय, 'दिलबहलाना' के स्थान पर दिलबहलाव, 'गगनचूमने वाला' के स्थान पर गगनचुम्बी, 'कामरोकना' के स्थान पर 'कामरोक' जैसे रूप हिन्दी समास-रचना ने अपनाए हैं।

हिन्दी भाषा में संस्कृत भाषा के तत्पुरुष समासों की बहुलता का कारण यही है कि संस्कृत और हिन्दी—दोनों ही विभक्ति-प्रधान भाषाएँ हैं। तत्पुरुष समासों की रचना विभक्तियों के लोप से ही होती है। संस्कृत में जिस प्रकार विभक्तियों के लोप से तत्पुरुष समासों की रचना हुई है, उसी प्रकार विभक्तियों के लोप से हिन्दी में समास-रचना होती है। संस्कृत के तत्पुरुष समास जिस प्रकार भेदक-भेद्य की स्थिति लिये रहते हैं और उनमें द्वितीय पद की प्रधानता होती है तथा वे संज्ञा और संज्ञा, संज्ञा और विशेषण या संज्ञा और कृदन्तों के योग से संज्ञावाची या विशेषणवाची रूप लेते हैं, उसी प्रकार हिन्दी में भी ये समास भेदक-भेद्य की स्थिति लिए रहते हैं। द्वितीय पद की प्रधानता रहती है तथा इनकी रचना संज्ञा और संज्ञा, संज्ञा और विशेषण या संज्ञा और कृदन्तों के योग से होती है तथा वे संज्ञावाची या विशेषणवाची रूप लेते हैं।

प्रकृति की इसी अनुकूलता के कारण संस्कृत भाषा के ये तत्पुरुष समास हिन्दी में घुल-मिलकर हिन्दी भाषा की महत्वपूर्ण सम्पत्ति बन गए हैं। इतना अवश्य है कि हिन्दी की साहित्यिक भाषा में ही इनका चलन है। हिन्दी की बोलचाल की भाषा में इनका व्यवहार बहुत कम होता है। तद्भव शब्दों से बने हिन्दी के समास ही हिन्दी की बोलचाल की भाषा में देखने में आते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि तत्पुरुष जैसे समासों की रचना-शैली में हिन्दी के सामने संस्कृत भाषा की समास रचना-पद्धति का आदर्श रहा है। राजमहल, राजदूत, मनोव्यथा, मनोदशा, जैसे संस्कृत के तद्रूप समासों को उसने निस्संकोच ग्रहण किया है। फिर भी हिन्दी ने संस्कृत परम्परा का अंधानुकरण नहीं किया है। उसने अपनी प्रकृति को नहीं छोड़ा है। अपनी प्रकृति के अनुकूल ही उसने अपने समासों की रचना की है। संस्कृत के जो समास हिन्दी की प्रकृति के अनुकूल थे उनको हिन्दी ने ज्यों का त्यों अपना लिया। परन्तु जो समास हिन्दी की प्रकृति के अनुकूल नहीं थे उनको हिन्दी ने या तो छोड़ दिया या अपनी प्रकृति के अनुकूल बनाकर उन्हें अपनाया। यही कारण है कि संस्कृत के नेतृगण, संसत्सदस्य, विद्यार्थिपरिषद, पितृवचन, नेतृनिर्वाचन, छन्दोऽर्णव, अन्तर्राष्ट्रिय, मात्रीश्वरी, जैसे रूप हिन्दी में नहीं मिलते। उसके विपरीत हिन्दी में क्रमशः नेतागण, संसद-सदस्य, विद्यार्थी-परिषद्, पितावचन, नेता-निर्वाचन, छंदार्णव, अन्तरराष्ट्रीय, मातेश्वरी—जैसे रूप देखने को मिलते हैं।

संस्कृत के समासों में संधि होना आवश्यक है, पर हिन्दी ने जिन संस्कृत समासों को ग्रहण किया है उनमें संधि की यह अनिवार्यता नहीं। सरस्वती-उपासना, सरस्वती-आश्रम, स्वास्थ्य-अधिकारी, प्रभु-आदेश, ध्वनि-अविकारी। जैसे हिन्दी के समासों से यह बात सर्वथा स्पष्ट है। संस्कृत में इन समासों का रूप होगा—सरस्वत्युपासना, सरस्वत्याश्रम, स्वास्थ्याधिकारी, प्रभ्वादेश, ध्वन्याविकारी।

भेदक-भेद्य वाले संस्कृत के तत्पुरुष समासों की जहाँ हिन्दी भाषा में बहुलता है वहाँ विशेषण-विशेष्य वाले संस्कृत के कर्मधारय समास हिन्दी में कम हैं। महाजन, सज्जन, शुभागमन, पूर्वकाल, मिष्ठान्न, श्वेतपत्र, श्यामपट, कृष्णमुख, नीलमणि, समालोचना, सर्वजन जैसे समास हिन्दी में मिलते हैं जो एक विशिष्ट अर्थ में रूढ़ होगये हैं। इसका कारण यही है कि संस्कृत के कर्मधारय समासों में जहाँ विशेष्य के साथ समास रूप में विशेषण की विभक्तियों का लोप होता है वहाँ हिन्दी में इस प्रकार की विभक्ति-लोप की स्थिति नहीं रहती। हिन्दी भाषा में जिन विशेषणों का योग विशेष्य के साथ होता है, वे वाक्यांश रूप में भी विभक्ति रहित होते हैं। संस्कृत भाषा की भाँति समास रूप में उनके विभक्ति-लोप का प्रश्न ही नहीं उठता। इसीलिए विशेषण-विशेष्य की स्थिति वाले समास हिन्दी में नहीं हैं। हिन्दी में जो विशेषण-विशेष्य के तत्सम रूप के समास मिलते हैं वे सब संस्कृत के ही हैं। उनका प्रयोग साहित्यिक हिन्दी में ही होता है। हिन्दी के विशेषण-विशेष्य समास प्रायः ध्वनिविकारी होते हैं।

चन्द्रमुख, घनश्याम, वज्रदेह, प्राणप्रिय, राजीवलोचन, कमलनयन, मृग-नयनी, चरणकमल, पुरुषोत्तम, भक्तिप्रवर, कविश्रेष्ठ, नरकेसरी, पुरुषव्याघ्र, पाणिपल्लव, आदि समास जो संस्कृत में प्रयोग के अनुसार कर्मधारय भी हैं और बहुव्रीहि भी, हिन्दी की साहित्यिक, विशेषकर पद्य की भाषा में दृष्टिगोचर होते हैं। हिन्दी में गृहीत इस प्रकार के सब समास संस्कृत के ही हैं। हिन्दी ने इसके अनुकरण पर 'पत्थरदिल' जैसे समास गढ़े हैं पर उनकी संख्या अधिक नहीं है। उपमा, रूपक के लिये हिन्दी भाषा को संस्कृत भाषा के इन समासों की शरण लेनी पड़ती है। ये समास भी बहुव्रीहि रूप में यदि भेदक-भेद्य की स्थिति लिए हुए हैं, तभी उस स्थिति में हिन्दी भाषा द्वारा अपनाये गये हैं। जैसे—चन्द्र-मुख ( चन्द्र के समान मुख ), वज्रदेह ( वज्र की देह ), मृगनयनी ( मृग के समान नेत्रवाली ), राजीवलोचन ( राजीव के समान लोचन ), चरणकमल ( कमल के समान चरण )। पुरुषोत्तम, कविश्रेष्ठ, नरकेसरी, घनश्याम, आदि संस्कृत समासों की रचना को भी हिन्दी ने ग्रहण नहीं किया। क्योंकि हिन्दी

में यदि समस्त पद संज्ञा हो तो विशेषण उसके पहिले आएगा, वाद में नही। फलतः हिन्दी ने संस्कृत के इन समासों को ज्यों का त्यों ग्रहण कर लिया है।

संस्कृत के वहुव्रीहि समासों की संख्या हिन्दी में अधिक नहीं है। आरूढ़ वानर ( आरूढ़ है वानर जिस पर वह आरूढ वानर वृक्ष ), प्राप्तोदक ( प्राप्त हुआ है जल जिसको वह प्राप्तोदक ग्राम ), उपहृत पशु ( भेंट में-दिया गया है पशु जिसको ), प्रफुल्लकमल ( खिले हैं कमल जिसमें वह तालाव ), इन्द्रादि (इन्द्र है आदि में जिनके ऐसे वे देवतागण), शूद्रा-भार्या (शूद्रा है जिसकी भार्या) जैसे संस्कृत के वहुव्रीहि समास हिन्दी में विल्कुल नहीं हैं।

दत्तचित्त, कृतकार्य, प्राप्तकाम, भ्रष्टपथ, मंदवुद्धि, यशोधन, तपोधन, लम्ब-करण, दीर्घवाहु, जैसे संस्कृत समासों को हिन्दी ने ग्रहण तो किया है पर हिन्दी की प्रकृति के ये समास अनुकूल नहीं हैं। हिन्दी में विशेषण और संज्ञा के योग से यदि विशेषणवाची समास वनते हैं तो विशेषण का योग संज्ञा के पश्चात् होना आवश्यक है, परन्तु संस्कृत के इन समासों में विशेषण का योग संज्ञा से पूर्व हुआ है। हिन्दी की साहित्यिक भाषा में जहाँ-तहाँ इनका प्रयोग होता है। हिन्दी में ये समास रूढ़ होकर ही चलते हैं। ये वस्तुतः हिन्दी के लिये संस्कृत के समास हैं, हिन्दी के नहीं।

पीताम्वर, नीलकंठ, दशानन, चतुर्भुज, गजानन, लम्वोदर, आदि संस्कृत के वहुव्रीहि समास भी हिन्दी के लिए व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में रूढ़ हैं। पौराणिक शव्दावली के रूप में ही इनको हिन्दी ने ग्रहण किया है। हिन्दू देवी-देवताओं के लिए ही इन समासों का व्यवहार हिन्दी भाषा-क्षेत्र मेंएक निश्चित सीमा में होता है।

मुष्टामुष्टि, दंडादंडि, जैसे संस्कृत के व्यतिहार, वहुव्रीहि का व्यवहार हिन्दी भाषा में नही के वरावर है। उनके स्थान पर हिन्दी भाषा ने 'मुक्का-मुक्की', 'लठालठी' जैसे अपने समासों की रचना की है।

असार, नाक, निर्जन, निर्विकार, जैसे नञ् वहुव्रीहि हिन्दी में मिलते अवश्य है। पर हिन्दी ने इन्हें समास रूप में ग्रहण नहीं किया, हिन्दी के लिए ये शव्दांशों के योग से वने यौगिक शव्द हैं, स्वतन्त्र शव्दों से वने समास नहीं। अतः हिन्दी के लिये ये एक शव्द रूप हैं, समास नहीं। इसी प्रकार 'अधर्म, अन्याय, अयोग्य, अनाचार, अनिष्ट, नास्तिक, नपुंसक, अज्ञान, अकाल, अनीति, प्रति-ध्वनि, अतिक्रम, प्रतिविम्व, प्रगति, दुर्गण' आदि संस्कृत के नञ् और प्रादि तत्पुरुष तटस्थ, जलद उरग, कृतज्ञ आदि उपपद तत्सपुरुष समास भी हिन्दी भाषा में शव्दांशो के योग से वने यौगिक शव्दों के रूप में ग्रहण किये गये हैं,

समास रूप में नहीं। संस्कृत के लिये ये समास हो सकते है, परन्तु हिन्दी के लिये नही। वैसे संस्कृत के इस प्रकार के समासो की हिन्दी भाषा में काफी बहुलता है।

संस्कृत के त्रिभुवन, त्रैलोक्य, नवरत्न, पंचरत्न, त्रिकाल, चातुर्मास, चतुर्दिक जैसे द्विगु समास भी हिन्दी में कम हैं। हिन्दी भाषा मे ये शब्द रूढ़ होगये हैं। संस्कृत के इन द्विगु समासों को छोड़कर हिन्दी ने अपने 'चौपाया, चौमासा, चौतरफा, चौराहा, पसेरी, इकन्नी, चवन्नी, दुपट्टा, तिकोना, तिमंजला' आदि द्विगु समासों की रचना की है। हिन्दी के इन संख्यावाची विशेषणों के योग से बने समासों में पहिला शब्द ध्वनिविकार का रूप लिए हुए है। वस्तुतः हिन्दी के द्विगु समासों में पूर्व पद यदि संस्कृत का तत्सम शब्द है तो वह हिन्दी समास न होकर संस्कृत समास है।

संस्कृत के यथाविधि, यथास्थान, यथाक्रम, यथासम्भव, यथाशक्ति, यथासाध्य, आजन्म, आमरण, यावत्जीवन, प्रतिदिन, प्रतिमान, व्यर्थ, प्रत्यक्ष, परोक्ष, समक्ष आदि अव्ययीभाव समास हिन्दी में क्रिया विशेषण के रूप में खूब चलते है। हिन्दी के अपने क्रिया विशेषणों के स्थान पर साहित्यिक हिन्दी में संस्कृत के इन्ही क्रिया विशेषणों का व्यवहार अधिक होता है। परन्तु संस्कृत के इन अव्ययीभाव समासों को हिन्दी ने अपने यहाँ समास रूप में ग्रहण नहीं किया है। संस्कृत के ये समास प्रायः संज्ञापदों के साथ यथा, आ, यावत्, प्रति, पर, सम, आदि अव्ययों के योग से बने हैं और समस्त पद ने अव्यय का रूप ले लिया है। हिन्दी के लिए प्रति, यथा, आ, पर, सम, अव्यय पद नही, उपसर्ग हैं। अतः असार, नाक, दुर्गंण, निर्जन आदि संस्कृत समासों की भाँति ये समास भी हिन्दी के लिए शब्दांशों के योग से बने यौगिक शब्द हैं। हिन्दी में जिन अव्यय पदों की रचना समास रूप में होती है उसमें अव्यय पदों का योग संज्ञा या विशेषण के पश्चात् होता है, पहिले नही। जैसे—ध्यानपूर्वक, नियमपूर्वक, आज्ञानुसार, जीवनभर, पेटभर। अतः हिन्दी में जो समास रूप में अव्यय पद हैं वे हिन्दी के अपने हैं। संस्कृत के अव्यय पद हिन्दी में समास रूप में ग्रहण नही किये गये।

संस्कृत के द्वंद्व समास तद्रूप में हिन्दी भाषा ने ग्रहण नहीं किए। केवल आहार-निद्रा-भय-मैथुनम्, मनसावाचा-कर्मणा, पाणिपादम्, जैसे इक्के-दुक्के संस्कृत के तद्रूप द्वन्द्व समासों का प्रयोग हिन्दी में देखने को मिलता है। इनका प्रयोग भी सूक्ति रूप मे होता है। संस्कृत तत्सम शब्दो से बने निशिवासर, पाप-पुण्य, अंग-प्रत्यंग, धनुष-वाण, सूर्यचन्द्र आदि समास केवल साहित्यिक हिन्दी में

ही देखे जा सकते हैं, परन्तु उनका प्रयोग भी अधिक नहीं है। हिन्दी भाषा में अपने द्वन्द्व समासों की बहुलता है, बोलचाल की भाषा में उनका व्यवहार बहुतायत से होता है। हिन्दी के द्वन्द्व समासों की रचना हिन्दी के तद्भव शब्दों से ही हुई है और उनके अनेक रूप दृष्टिगत होते हैं।

हिन्दी भाषा में संस्कृत के ये जो समास मिलते हैं उनकी रचना में संस्कृत के तत्सम शब्द और हिन्दी के तद्भव शब्दों का परस्पर योग बहुत कम देखने को मिलता है। संस्कृत समासों की रचना तत्सम शब्दों के ही योग से हुई है। जिलाधीश, कांग्रेस-अध्यक्ष, अमनप्रिय, समझौता-प्रिय आदि कुछ-एक शब्दों में अवश्य संस्कृत के तत्सम शब्दों का योग हिन्दीतर भाषाओं के शब्दों के साथ देखा जा सकता है, पर ऐसे समासों की संख्या अधिक नहीं है।

संस्कृत के जो समास हिन्दी ने ग्रहण किये हैं उनमें संधि स्वर, मात्रा, उत्कर्ष, आघात आदि ध्वनि प्रक्रिया की रागात्मक प्रक्रिया को छोड़कर अन्य किसी प्रकार का ध्वनि-विकार देखने को नहीं मिलता। क्योंकि यदि संस्कृत के तत्सम शब्दों में कोई ध्वनि-विकार होगा तो वे तत्सम न होकर, तद्भव बन जायेंगे।

अंत में निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि संस्कृत से जो समास हिन्दी ने ग्रहण किये हैं उनमें संज्ञा, विशेषण, अव्यय पदों की प्रधानता है। संस्कृत से गृहीत ये समास हिन्दी की साहित्यिक भाषा में अधिक दृष्टिगोचर होते हैं। बोलचाल की भाषा में उनका व्यवहार कम होता है।

हिन्दी की समास-रचना-शैली तथा संस्कृत समास-रचना-शैली में विशेष अन्तर नहीं है। इसीलिये हिन्दी ने जहाँ संस्कृत के समासों को ज्यों का त्यों ग्रहण किया है वहाँ उसके आधार पर अपने समास भी गढ़े हैं। संस्कृत के जिन समासों की रचना-प्रवृत्ति हिन्दी में नहीं मिलती उनको हिन्दी ने ज्यों का त्यों ग्रहण कर लिया है। उसके आधार पर पर्यायवाची शब्दों के रूप में अपने समास बनाने का प्रयत्न हिन्दी भाषा ने नहीं किया। पर ऐसे समासों की संख्या कम है। हिन्दी में संस्कृत के उन्हीं समासों को अधिक मात्रा में ग्रहण किया गया है जो उसकी प्रकृति के अनुकूल हैं और ऐसे समास हिन्दी में आकर संस्कृत के नहीं, हिन्दी के समास बन गए हैं।

संस्कृत के अनेक समास हिन्दी में रूढ़ शब्द होकर ही चलते हैं। उनको अपनाये बिना या उनके आधार पर अपने समासों की रचना करके हिन्दी का कार्य नहीं चल सकता। इसीलिए रूढ़ शब्दों के रूप में ज्यों के त्यों हिन्दी ने संस्कृत के इन समासों को अपना लिया है।

संस्कृत समासों के अनेक रूपों को हिन्दी भाषा ने बिल्कुल ही नहीं अपनाया और न उसके आधार पर अपने समास ही बनाये हैं।

## ६-२ हिन्दी में उर्दू-शैली के माध्यम से आये अरबी-फारसी समासों का अध्ययन

उर्दू, हिन्दी की ही एक शैली है। हिन्दी में जिस प्रकार संस्कृत शब्दों की बहुलता है, उर्दू में अरबी-फारसी के शब्दों की। हिन्दी ने जिस प्रकार संस्कृत समासों को ग्रहण किया है, उर्दू ने अरबी-फारसी के समासों का सहारा लिया है। हिन्दी भाषी क्षेत्र में उर्दू भाषी क्षेत्र भी सम्मिलित है। अतः उर्दू-शैली के माध्यम से हिन्दी भाषा अरबी-फारसी की समास-रचना-पद्धति से भी प्रभावित हुई है। हिन्दी भाषी क्षेत्र द्वारा अपने निजी समासों के साथ-साथ अरबी-फारसी के समासों का भी व्यवहार किया जाता है।

हिन्दी में गृहीत अरबी-फारसी के ये समास निम्न रूपों में देखे जा सकते हैं :—

१—मालिक-मकान, मेला-मवेशी, अर्क-गुलाब, नूरजहाँ, शाहजहाँ, तख्तताऊस, तीर-कमान।

२—दास्ताने-उर्दू, तवारीखे-हिन्दुस्तान, यादगारे-गालिब, दीवाने-हाली, तस्वीरे-अदब, सदरे-रियासत।

३—दस्तखत, जहाँपनाह, शकरपारा, कारवांसराय, गरीबनिवाज, रूह-अफजा, कलमतराश, जवांमर्द, राहखर्च, इलाहाबाद, मुरादाबाद, अहमदाबाद, कमरबंद, पायजामा, दिलजला, गरीबपरवर, दरिया-दिल, दिल-खुश।

४—पंजाब, दुआब।

५—दरबारखास, दरबारआम, दीवानेखास, मुफीदआम।

६—गैरमुनासिब, गैर-हाजिर, गैर-मुल्क, गैर-वाजिब।

७—खुदपरस्त, खुदकाश्त, खुदगरज।

८—नाखुश, नापसंद, नालायक, नासमझ, नाराज, नाउम्मेद।

९—नाखुशी, नापसंदी, नालायकी, नासमझी, नाराजी, नाउम्मेदी।

१०—खुशनसीब, खुशकिस्मत, खुशमिजाज, गुमराह, बदनाम, बदरंग। बदनीयत, बदमिजाज, खुशदिल, कमजोर, जबर्दस्त।

११—खुशनसीबी, खुशकिस्मती, गलतफहमी, बदनामी, कमजोरी, बद-ख्याली, जबर्दस्ती, खुदगरजी, खुदपरस्ती।

१२—नादिरशाही, नवावशाही ।

१३—शान-शौकत, चोली-दामन, सलाह-मशविरा, खरीद-फरोख्त, नेकवद, कमवेश, मेल-मुहब्बत ।

१४—नामोनिशान, दिलोजान, दर-व-दर, पुश्त-दर-पुश्त, पशोपेश, दिन-व-दिन ।

१५—पेशाव, तेजाव ।

उर्दू शैली के माध्यम से आये अरवी-फारसी समासों के इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि इनमें से कुछ रूप हिन्दी समास-रचना की प्रवृत्ति के अनुकूल हैं और कुछ समास हिन्दी समास-रचना की प्रवृत्ति से विल्कुल भिन्न हैं ।

दास्ताने-उर्दू, तवारीखे-हिन्दुस्तान, यादगारे-गालिव, दीवाने-हाली, तस्वीरे-अदव, सदरे-रियासत जैसे उर्दू के समास, हिन्दी समास-रचना शैली से विल्कुल भिन्न हैं। इन समासों में पहिला पद भेद्य है और दूसरा पद भेदक है। भेद्य में 'ए' सम्वन्ध-विभक्ति जुड़ी हुई है। दास्तान किसकी? उर्दू की। तवारीख किसकी? हिन्दुस्तान की। इसी प्रकार गालिव की यादगार, हाली का दीवान, अदव की तस्वीर—इन समासों का वाक्यांश रूप में विग्रह करने पर द्वितीय शब्द पहिले आ जायगा और प्रथम शब्द वाद में। जैसे—उर्दू की दास्तान, गालिव की यादगार, हिन्दुस्तान की तवारीख, हाली का दीवान ।

मालिकमकान, मेलामवेशी, अर्कगुलाव, नूरजहाँ, शाहजहाँ, तख्तताऊस, तीरकमान आदि समासों की रचना भी ऊपर के समासों की भाँति हुई है। अन्तर इतना है कि उनके प्रथम पद में जो सम्वन्ध-विभक्ति 'ए' जुड़ी हुई है वह इन समासों में नही है। इस रूप में 'ए' सम्वन्ध-विभक्ति को त्याग कर उर्दू समास-रचना-पद्धति हिन्दी के कुछ अधिक निकट आगई है। दास्ताने-उर्दू, तवारीखे-हिन्दुस्तान, यादगारगालिव, दीवानेहाली जैसे समास विशुद्ध उर्दू के क्षेत्र के हैं, परन्तु मालिकमकान, मेलामवेशी, अर्कगुलाव, नूरजहाँ, शाहजहाँ, तख्तताऊस, तीरकमान आदि समास उर्दू प्रभावान्वित हिन्दी भाषी क्षेत्र के है। इन समासों का प्रयोग भी ऐसे स्थानों पर वोलचाल की भाषा में अधिक होता है जहाँ उर्दू भाषा का जोर अधिक रहा है ।

जैसा कि इन समासों के सम्वन्ध में ऊपर स्पष्ट किया जा चुका है कि इनमें पहिला पद भेद्य और दूसरा पद भेदक है, यह हिन्दी समास-रचना शैली की ठीक विपरीत पद्धति को लिए हुए है। हिन्दी समास-रचना शैली में सदैव प्रथम पद भेदक और दूसरा पद भेद्य होगा। इसीलिए वहाँ मालिक मकान के स्थान पर मकान-मालिक, मेलामवेशी के स्थान पर मवेशीमेला, अर्कगुलाव के

स्थान पर गुलाब अर्क, तख्त-ताऊस के स्थान पर मूयर-सिंहासन, तीर-कमान के स्थान पर धनुषबाण, शाहजहाँ के स्थान पर जहाँशाह, नूरजहाँ के स्थान पर जहाँनूर होगा। पदों का क्रम बिल्कुल उलट जायगा।

मालिकमकान, नूरजहाँ, तख्तताऊस आदि उर्दू शैली के समास जहाँ हिन्दी समास-रचना शैली से पूर्णतया विपरीत पद्धति अपनाये हुए हैं वहाँ दस्तखत, जहाँपनाह, शकरपारा, कारवाँ सराय, गरीबनिवाज, कलमतराश, राहखर्च, इलाहाबाद, मुरादाबाद, पायजामा, दिलजला, दरियादिल, समझौता-पसंद, अमनपसन्द आदि समास सर्वथा हिन्दी समास-रचना की प्रकृति के अनुकूल है। हिन्दी समास-रचना की ही भाँति इनमें प्रथम पद भेदक और दूसरा पद भेद्य है। वाक्यांशों में पदों का क्रम उलटता नहीं, वस्तुतः इन समासों में शब्द ही अरबी-फारसी के हैं, रचना हिन्दी की है। दस्तखत और हस्ताक्षर, राहखर्च और मार्गव्यय, अमनपसन्द और शान्तिप्रिय, दरियादिल और सागर-हृदय में जो समानता है, उससे यह बात सर्वथा स्पष्ट है।

इसी प्रकार शानोशौकत, चोली-दामन, सलाह-मशविरा, खरीद-फरोख्त, नेकबद, कम-बेश, मेल- मुहब्बत, आदि उर्दू शब्दो के मेल से बने जो समास हैं वे भी हिन्दी के भाई-बहिन, सेठ-साहूकार, धन-दौलत, भला-बुरा, क्रय-विक्रय, दाल-रोटी जैसे समासों की रचना के अनुकूल है। उर्दू शैली में प्रायः ऐसे समासों का प्रथम अकारांत शब्द, ओकारात हो जाता है। जैसे—दिलोजान, शानोशौकत, पर हिन्दी में आकर ये प्रथम पद ओकारांत समास अकारांत ही बने रहते है। हिन्दी ने उन्हें अपनी प्रकृति के अनुकूल बना लिया है। जहाँ उर्दू भाषा का अधिक प्रभाव है, वहाँ—दिलोजान, शानोशौकत, नामोनिशान, जैसे समासों का व्यवहार होता है।

उर्दू के दर-ब-दर, पुश्त-दर-पुश्त, पेशोपेश, दिन-ब-दिन–समास भी हिन्दी में चलते हैं, पर इनका व्यवहार अधिक नहीं है। उर्दू शैली की रचना के आधार पर हिन्दी ने अपने—मन-ही-मन, सब-के-सब, हाथोंहाथ, रातोंरात, जैसे समास गढ़े हैं।

पंजाब, दुआब आदि उर्दू शैली के समास भी हिन्दी समास-रचना शैली की प्रकृति के अनुकूल है। दुसूती, चौबारा, दुबारा, आदि हिन्दी के समास तथा पंजाब और दुआब आदि उर्दू शैली के समास-रचना की दृष्टि से एक है।

पेशाब, तेजाब, आदि उर्दू शैली के समास हिन्दी के लिए रूढ़ होकर आये है। 'पेशाब' समास में 'पेश' अव्यय और 'आब' संज्ञा है। समस्त पद भी संज्ञा है। हिन्दी में अव्यय और संज्ञा के योग से संज्ञापद की रचना नहीं होती।

इसी प्रकार 'तेजाव' में 'तेज' विशेषण, और 'आव' संज्ञा है, समस्त पद संज्ञा है। समास विशेषण-विशेष्य की स्थिति लिए है। हिन्दी में विशेषण-विशेष्य के समास कम ही हैं। वस्तुतः हिन्दी में गृहीत संस्कृत के श्वेतपत्र, श्यामपट, जैसे विशेषण-विशेष्य समासों की भांति उर्दू के 'तेजाव' समास की स्थिति हिन्दी में है।

उर्दू के हररोज, हरसाल, वेशक, वेफायदा जैसे अव्यय पद हिन्दी ने अपनाये हैं, पर हिन्दी के लिये ये समास नहीं माने जा सकते। हरसाल, हररोज स्पष्टतः वाक्यांश हैं। 'प्रत्येक दिन' और 'हररोज' में रचना की दृष्टि से कोई अन्तर नहीं है। वेशक, वेफायदा 'वे' उपसर्ग के योग से वने यौगिक शब्द हैं। वस्तुतः हिन्दी में अव्यय पदों का योग संज्ञा के पश्चात् ही होता है। प्रतिदिन, यथाशक्ति, आजन्म, आदि संस्कृत समासों की भांति ही उर्दू शैली के इन समासों की स्थिति हिन्दी में है।

गुमराह, वदनसीव, खुशदिल, खुशमिजाज, हाजिरजवाव, कमजोर, वदरंग, खूवसूरत, खुशकिस्मत, वदनाम, जवरदस्त, जैसे उर्दू शैली के समास शब्दों का प्रयोग हिन्दी भाषी क्षेत्र में वहुतायत से मिलता है। परन्तु ये समास हिन्दी समास-रचना शैली से पूर्णतया भिन्न हैं। इन सभी समासों की रचना विशेषण और संज्ञापदों के योग से हुई है और समस्त पद भी विशेषण का रूप लिए हुए हैं। इन समासों में यद्यपि पहिला पद विशेषण और दूसरा पद संज्ञा है, तथापि पहिला पद दूसरे पद का विशेषण नहीं है। 'गुमराह' से अभिप्राय उस राह से नहीं है जो गुम होगई है, वल्कि उस व्यक्ति से है जो राह से गुम हो गया है। इसी प्रकार 'वदनसीव' से अभिप्राय वुरे नसीव से नहीं, वल्कि उस व्यक्ति से है जिसका नसीव वुरा है। वास्तव में 'वुरा नसीव' और 'वदनसीव' में स्पष्ट भेद है। 'वुरा नसीव' वाक्यांश है जिसमें 'वुरा' नसीव की विशेषता प्रकट करता है, ठीक उसी प्रकार जैसे 'भला आदमी' वाक्यांश में 'भला' (विशेषण) 'आदमी' (विशेष्य) की विशेषता प्रकट करता है। परन्तु 'वदनसीव' में 'वद' (विशेषण) नसीव (संज्ञा) की विशेषता नहीं प्रकट करता वल्कि, उस व्यक्ति की विशेषता प्रकट करता है जिसका नसीव वद है। इस प्रकार इन समासों में समस्त पद विशेषण का रूप लेकर अन्य पद का विशेष्य है। इन समासों के विशेषण पद और अन्य पद के विशेष्य होने के कारण इन समासों के लिंग, वचन का निर्धारण अन्य पद के अनुसार होता है, क्रिया का सम्बन्ध भी अन्य पद से होता है। जैसे—

१—मोहन गुमराह हो रहा। (पुल्लिंग)

२—कमला गुमराह हो रही है। (स्त्रीलिंग)

३—वे गुमराह हो रहे हैं। (वहुवचन)

वाक्यांश रूप में इन समासों का विग्रह करने पर पदों का क्रम उल्टा हो जाता है और इनकी स्थिति 'मनमोहक, जलपिपासु, कलाप्रिय' जैसे समासों के समान हो जाती है। जैसे—

| | | |
|---|---|---|
| बदनसीब | = | नसीब का बद |
| गुमराह | = | राह से गुम |
| खुशदिल | = | दिल का खुश |
| बदरंग | = | रंग का बद |
| कमजोर | = | जोर में कम |
| खुशकिस्मत | = | किस्मत का खुश |

इस प्रकार इन समासों में 'मालिकमकान, तीरकमान, मेलामवेशी' की भाँति पहिला पद भेद्य और दूसरा पद भेदक है। वास्तव में जो रूप 'मेलामवेशी, मालिकमकान' आदि प्रथम पद-प्रधान संज्ञापदों का है, उसी प्रकार का रूप विशेषण और संज्ञापदों से बने इन विशेषण पदों का है। हिन्दी में इसके विपरीत समस्त पद को विशेषण का रूप देने के लिये संज्ञा के पश्चात् विशेषण पद का योग होता है। जैसे—प्रायश्चित-दग्ध, सौभाग्यपूर्ण, भाग्यहीन। यदि संज्ञा से पूर्व विशेषण पद का योग हो तो समस्त पद संज्ञा का रूप ग्रहण करता है।

अर्थ की दृष्टि से 'गुमराह, बदनसीब, खूबसूरत' आदि समासों का रूप 'गोबर-गणेश, कमलनयन, पत्थरदिल' जैसे समासों की भाँति है। परन्तु जहाँ 'गोबरगणेश, कमलनयन, पत्थरदिल' में दोनों शब्द संज्ञापद हैं तथा समस्त पद विशेषण है, वहाँ 'गुमराह, बदनसीब, खूबसूरत' में पहिला शब्द विशेषण पद, दूसरा पद संज्ञा पद और समस्त पद विशेषण पद है।

हिन्दी में गृहीत संस्कृत भाषा के 'दत्तचित्त, नतमस्तक, कृतकार्य, हतप्रभ, जितेन्द्रिय' जैसे समास और उर्दू शैली के ये समास एक समान ही हैं, हिन्दी समास-रचना शैली में यह प्रवृत्ति नहीं मिलती।

उर्दू शैली के इन समासों को ईकारांत कर देने से इनका रूप संज्ञापदों में बदल जाता है। जैसे :—

| | | | |
|---|---|---|---|
| खुशकिस्मत | (विशेषण) | खुशकिस्मती | (संज्ञा) |
| बदनाम | (विशेषण) | बदनामी | (संज्ञा) |
| जबर्दस्त | (विशेषण) | जबर्दस्ती | (संज्ञा) |
| कमजोर | (विशेषण) | कमजोरी | (संज्ञा) |

उर्दू में वास्तव में विशेषण शब्दों को ईकारान्त कर देने पर वे संज्ञापद का रूप ले लेते हैं। जैसे—खुश (विशेषण) खुशी (संज्ञा), बद (विशेषण) बदी

(संज्ञा)। हिन्दी में इसके विपरीत संज्ञापदों को ईकारान्त कर देने पर विशेषण पद बनते हैं। जैसे:—

| | | | |
|---|---|---|---|
| जन्मरोग | (संज्ञा) | जन्मरोगी | (विशेषण) |
| विषयभोग | (संज्ञा) | विषयभोगी | (विशेषण) |
| काव्यविलास | (संज्ञा) | काव्यविलासी | (विशेषण) |
| लोकोपकार | (संज्ञा) | लोकोपकारी | (विशेषण) |

फलतः 'खुशकिस्मती, बदनामी, जबर्दस्ती, कमजोरी' आदि समास ही उर्दू शैली के अनुकूल हैं। हिन्दी समास-रचना में यह प्रवृत्ति नहीं मिलती।

ईकारांत रूप में उर्दू शैली के 'गलतफहमी, फिजूलखर्ची, खुशखबरी, बद-नीयती, खुशकिस्मती, बदमिजाजी' आदि संज्ञापद हैं। उनमें दूसरे पद का यह ईकारांत रूप केवल समास-रचना में ही मिलता है। वाक्यांश रूप में समास से भिन्न उनका यह रूप नहीं मिलता।

उर्दू के 'दरबार-खास, दरबार-आम, दीवाने-खास, मुफीद-आम' समास भी हिन्दी समास-रचना की प्रकृति के अनुकूल नहीं हैं। इनका रूप पूर्णतया उर्दू समास-रचना की प्रवृत्ति को धारण किए हुए है। इन समासों में पहिला पद संज्ञा और दूसरा पद विशेषण तथा समस्त पद संज्ञा हैं। जिस प्रकार 'मालिक-मकान' में प्रथम पद 'भेद्य' और दूसरा पद 'भेदक' है, इसी प्रकार इन समासों में पहिला पद विशेष्य और दूसरा पद विशेषण है। हिन्दी के संज्ञापदों में इसके विपरीत पहला पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है। अतः हिन्दी समास-रचना के अनुसार इन उर्दू समासों का रूप 'खास दरबार, आम दरबार, खास दीवान, आम मुफीद' होना चाहिए। इस स्थिति में हिन्दी के लिए ये वाक्यांश हो जाते हैं, समास नहीं। हिन्दी के लिए वस्तुतः ये समास रूढ़ बन गए हैं और केवल मुगलकालीन ऐतिहासिक शब्दावली के रूप में ही एक निश्चित सीमा के भीतर इनका व्यवहार होता है।

'गैर-मुनासिब, गैर-हाजिर, गैर-वाजिब' समासों में दोनों ही पद विशेषण रूप हैं, और समस्त पद भी विशेषण हैं। संस्कृत के नञ् तत्पुरुषों की भाँति 'गैर' विशेषण निषेधार्थक है। इसका प्रयोग वस्तुतः उपसर्ग की ही भाँति हुआ है, परन्तु 'गैर' शब्दांश न होकर स्वतन्त्र शब्द है। उर्दू शैली-प्रधान हिन्दी में इस प्रकार के समास खूब देखने को मिलते हैं। हिन्दी के अपने समास इस प्रकार के नहीं हैं। विशेषण के साथ निषेधार्थक विशेषण का योग तथा समस्त पद का विशेषण रूप, ऐसी प्रवृत्ति हिन्दी भाषा में नहीं है। उर्दू के इन समासों में भी उत्तर पद को ईकारांत रूप देकर संज्ञापद बनाया जाता है। 'गैर मुल्क'

अवश्य 'गुमराह, वदकिस्मत' आदि समासों की भाँति रूप लिए हुए है । इसमें पहला पद 'गैर' (विशेषण), दूसरा पद 'मुल्क' (संज्ञा) और समस्त पद विशेषण है । संस्कृत के वहुव्रीहि समासों की भाँति इसकी स्थिति है ।

नाखुश, नापसंद, नासमझ, नालायक, नाराज, नाउम्मेद आदि उर्दू के समास भी हिन्दी भाषा में देखने को मिलते हैं । इनमें से 'नाखुश' और 'नालायक' में 'ना' निषेधार्थक अव्यय पद का योग क्रमश 'खुश' और 'नालायक' विशेषण पदों के साथ हुआ है और समम्त पद विशेषण का रूप लिए हुए हैं । नापसन्द, नासमझ, नाउम्मेद, नाराज, में 'ना' निषेधार्थक अव्यय पद का योग संज्ञापद के साथ हुआ है और समस्त पद ने विशेषण का रूप ले लिया है । अत: पद-रचना की दृष्टि से इन समासों में पहले पद की प्रधानता है । हिन्दी भाषा में यह प्रवृत्ति नहीं मिलती कि संज्ञा के साथ पूर्वपद में विशेषण या अव्यय के योग से समस्त पद विशेषण पद का रूप ले । हिन्दी भाषा ने उर्दू के इन समासों को ज्यों का त्यों ग्रहण कर लिया है । इस 'ना' निषेधार्थक अव्यय का प्रयोग उर्दू शब्दों के साथ ही होता है । हिन्दी शब्दों के साथ इस प्रकार के पदों का योग नहीं मिलता । हिन्दी में निषेधार्थक 'अन' या 'अ' उपसर्ग का व्यवहार किया जाता है, और उसका योग भी संज्ञापदों के साथ होता है । अपने इस अभाव की पूर्ति हिन्दी ने उर्दू शैली के इन समासों को अपना कर की है ।

नाराजी, नाउम्मेदी, नाखुशी, नापसन्दी, नालायकी, आदि समासों के रूप में ऊपर के समासों को भी ईकारान्त रूप देकर संज्ञापद का रूप दे दिया जाता है ।

खुदगरज, खुदपरस्त, आदि उर्दू शैली के समासों में पहिला पद अव्यय है, दूसरा पद संज्ञा, परन्तु समस्त पद विशेषण है । इस प्रकार पद-रचना की दृष्टि से समस्त पद अन्य पद-प्रधान है ।

समस्त पद के अन्य पद-प्रधान होने से क्रिया के लिंग, वचन का निर्धारण अन्य पद विशेष्य के अनुसार होता है । इनमें पहिला पद 'गरज' के लिए भेदक रूप में है; अर्थात् गरज किसकी ? खुद की, परस्त कौन ? खुद । इन समासों का रूप भी वास्तव में 'आश्चर्यचकित, प्रायश्चितदग्ध' जैसे समासों की भाँति है । परन्तु 'आश्चर्यचकित' में जहाँ संज्ञा पहिले है वहाँ 'खुदगरज' में संज्ञा वाद में है । 'खुद' का रूप भी यहाँ विशेषण के समान है और 'गुमराह, वदनसीव' के समान ही इन ससासों का रूप है । इन समासों की रचना भी हिन्दीतर प्रवृत्ति को लेकर है । हिन्दी में अव्यय और संज्ञा योग से बने विशेषण पद नहीं बनते । उर्दू के इन समासों को भी ईकारान्त रूप देकर संज्ञापद वनाया जाता है ।

'खुदकाश्त' में पहिला पद अव्यय है, दूसरा पद संज्ञा, और समस्त पद संज्ञा है। अतः रूप-रचना की दृष्टि से यह द्वितीय पद-प्रधान है। क्रिया के लिंग, वचन का निर्धारण भी दूसरे पद के अनुसार होता है। पहिला पद दूसरे का भेदक है। विग्रह करने पर दोनों पदों के मध्य सम्बन्ध-सूचक शब्दों की अन्वति करनी होती है। जैसे—

खुदकाश्त (समास) खुद की काश्त (वाक्यांश)

यह समास वैसे अर्थ की दृष्टि से अन्य पद प्रधान हैं। 'खुदकाश्त' से अभिप्राय वस्तुतः खुद की काश्त से नहीं अपितु भूमि को जोतने की उस पद्धति से है जिसमें भूमि स्वयं उसके स्वामी द्वारा जोती जाती है। अतः अर्थ की दृष्टि से इसका रूप अन्य पद प्रधान है। यहाँ खुद, काश्त का भेदक नहीं है। वस्तुतः इस समास का रूप भी 'गुमराह' जैसे उर्दू शैली के समास की भाँति है जिसमें गुम, 'राह' का विशेषण नहीं होता। परन्तु 'गुमराह' में जहाँ समस्त पद विशेषण है, इस समास में समस्त पद संज्ञा है। इस समास की रचना भी हिन्दीतर प्रवृत्ति को लिए हुए है। हिन्दी में अव्यय और संज्ञा के योग से बने संज्ञापद नहीं मिलते।

नादिरशाही नवावशाही आदि उर्दू समासों की रचना उत्तर पद में 'शाही' शब्द के योग से हुई है। हिन्दी के 'गुणशील, जीवनगत, प्रायश्चितदग्ध' आदि समासों की भाँति ही इसकी रचना है। परन्तु हिन्दी के 'जीवनगत, प्रायश्चितदग्ध' में प्रायः कृदंत विशेषण पदों का योग होता है। 'नादिरशाही' में दूसरा पद संज्ञा है। जीवनगत, प्रायश्चितदग्ध, गुणशील जहाँ विशेषण हे, नादिरशाही समास संज्ञा है। हिन्दी के 'प्रयोगवाद, समाजवाद' भी उत्तर पद के संज्ञा रूप होने पर संज्ञापद ही हैं और उनकी रचना 'नादिरशाही' की भाँति है। 'नादिरशाही' में 'शाह' विशेषण को इकारान्त करके संज्ञापद का रूप दे दिया है। हिन्दी में यह स्थिति विशेषण पदों के लिए है।

उर्दू शैली के इन समासों के विविध रूपों को देखने से यह स्पष्ट है कि इन समासों की रचना में स्वर, मात्रा, आघात, उत्कर्ष आदि ध्वनि-प्रक्रिया की रागात्मक प्रक्रिया को छोड़कर अन्य किसी प्रकार का ध्वनिविकार देखने को नहीं मिलता। सभी समासों का योग संश्लिष्ट न होकर विश्लिष्ट है।

उर्दू शैली के ये सभी समास संज्ञा तथा विशेषण पद का रूप लेकर ही हिन्दी में आये हैं।

उर्दू शैली के इन समासों की रचना हिन्दी रचना-शैली से पूर्णतः विपरीत है। फलतः हिन्दी भाषा ने इन समासों को ज्यों का त्यों ग्रहण कर लिया है। इसके आधार पर पर्यायवाची रूप में अपने शब्दों को लेकर हिन्दी ने समास गढ़ने का

प्रयत्न नहीं किया। गुमराह को 'खोया मार्ग', बदनसीब को 'बुरा भाग्य' रूप नहीं प्रदान किया।

उर्दू के ये समास अपने ही शब्दों के मेल से बने हैं। अन्य भाषाओं के शब्दों का मेल इन समासों में कम हुआ है।

उर्दू शैली के कुछ समास ऐसे हैं जिनमें शब्द तो अरबी-फारसी के हैं और उनकी रचना हिन्दी समास-रचना शैली के अनुसार ही है।

## ६—३ हिन्दी में आगत अंग्रेजी भाषा के समासों का अध्ययन

हिन्दी भाषा क्षेत्र के शिक्षित समाज में अंग्रेजी भाषा के समासों का व्यवहार भी देखने को मिलता है। उदाहरण के लिए अङ्गरेजी भाषा के निम्न रूप हिन्दी भाषा में देखे जा सकते हैं :—

१—सोडावाटर, लैमनचूस, नैकलैस, अरारोट, इयररिंग, टिंचरआयडीन, आइसक्रीम, आइसवेग, आइसवाटर, आइसफैक्टरी, मनिआर्डर, लैटरराइटिंग, कापीराइट, टिकिटचेकर, स्टेशनमास्टर, रेलवेआफिस, इंगलिशडिपार्टमेंट, यूनीवर्सिटीएरिया, टीयरगैस, गैसप्लान्ट, ट्रूववेल्स, मोटरसाइकिल, मोटरकार, एरोप्लान, लैटरबक्स, फुटवाल, वौलीवाल, टेबिलटेनिस, टेनिसकोर्ट, टीपार्टी, काफीहाउस, क्रिकेटमैच, क्यूनिस्टपार्टी, होमगार्ड, क्लासरूम, आर्डरबुक, इंकपौट, पोस्टवाक्स, पोस्टआफिस, पोस्टमैन, चेयरमैन, एप्लीकेशनफार्म, एडमीशनकार्ड, फाउण्टेनपैन, रेडियोसैट, समरवैकेशन, पिक्चरहाउस, सोसाइटीगर्ल, ड्राइङ्गरूम, फिल्मएक्टर, मनीवेग, थर्मामीटर, टिम्बरमरचैंट, स्कूलवैल, टाइमपीस, न्यूजपेपर, हैण्डलूम, रामाग्रादर्स, मौनिङ्गवाक, वैडटी, ब्लडप्रैशर आइसलोशन, पावरहाउस, ड्रामाकम्पनी, गैस्टहाउस, फूडप्रोवलम, एम्पलायमेंटएक्सचेन्ज, किरासिनआइल, पुलिसइन्सपैक्टर, प्लेटफार्म।

२—ब्लैकवोर्ड, ह्वाइटपेपर, कोल्डवार, कोल्डड्रिंक, होटड्रिंक, हाईकोर्ट, मीटरगेज, ब्रोडगेज, लूजकरेक्टर, रिजर्ववैंक, पेटीकोट, हैडमास्टर, चीफमिनिस्टर, ।

३—आउटकम, ओवरराइटिंग, ओवरड्राफट, ओवरटाइम, ओवरवर्क, अण्डरग्राउण्ड, अण्डरवियर, आउटलाइन, औलरेडी, औलराइट।

४—डैमफूल, नानसैंस, हाफमेड।

५—गुडमार्निङ्ग, गुडईवनिंग, थैंक्यू।

६—फादर-इन-ला, मदर-इन-ला, अप-टू-डेट।

७—कोटपैंट, स्कूलकालिज।

अंग्रेजी के पहिले रूप वाले 'सोडावाटर, लैमनचूस, नैकलैस, इयररिंग, आइस-क्रीम' आदि जो समास हैं, वे सभी संज्ञावाची हैं। इन सभी समासों की रचना संज्ञा और संज्ञापदों के योग से हुई है जो कि हिन्दी समास-रचना की प्रवृत्ति के पूर्णतः अनुकूल है। संज्ञा और संज्ञापदों के योग से बने इन संज्ञावाची समासों में प्रथम पद भेदक और द्वितीय पद भेद्य है। क्रिया का सम्बन्ध दूसरे पद से है और उसके लिंग, वचन का निर्धारण भी दूसरे पद के अनुसार होता है।

दूसरे रूप वाले 'ब्लैकबोर्ड, ह्वाइटपेपर, कोल्डवार, कोल्डड्रिंक' आदि समास भी संज्ञावाची है। इन समासों की रचना विशेषण और संज्ञापदों के योग से हुई है। ये समास विशेषण-विशेष्य की स्थिति लिए हुए हैं। भेदक-भेद्य समासों की भाँति इनमें किसी विभक्ति का लोप नहीं होता। पहिला पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है। पद-रचना की दृष्टि से इन समासों में भी द्वितीय पद की प्रधानता होती है। क्रिया का सम्बन्ध दूसरे पद से होता है, तथा उसके लिंग, वचन का निर्धारण भी दूसरे पद के अनुसार होता है। अंग्रेजी के ये समास भी हिन्दी समास-रचना शैली के अनुकूल हैं। वैसे हिन्दी में विशेषण-विशेष्य की स्थिति वाली समास-रचना की प्रवृत्ति कम है। फिर भी एक विशिष्ट अर्थ के बोधक रूप में 'श्वेतपत्र, श्यामपट, शीतयुद्ध, शीतलपेय, बड़ीलाइन, छोटीलाइन', जैसे समास हिन्दी में भी चलते हैं, जिनमें प्रथम पद वस्तुतः दूसरे पद का विशेषण रूप नहीं होता, बल्कि समस्त पद को एक नया रूप प्रदान करता है। 'श्वेतपत्र' और 'ह्वाइट पेपर' में, 'श्यामपट' और 'ब्लैकबोर्ड' में, 'शीतयुद्ध' और 'कोल्डवार' में, 'शीतलपेय' और 'कोल्डड्रिंक' में, 'छोटी लाइन' और 'मीटरगज' में, 'बड़ीलाइन' और 'ब्रोडगेज' में समास-रचना की दृष्टि से पूर्णतः समानता है। अन्तर इतना है कि 'ब्लैकबोर्ड' और 'ह्वाइटपेपर' में शब्द अंग्रेजी के हैं तथा 'श्यामपट' और 'श्वेतपत्र' में शब्द हिन्दी के हैं।

अंग्रेजी के तीसरे रूप वाले 'आउटकम, ओवरड्राफट, ओवरटाइम, आउट-लाइन' आदि समास भी संज्ञावाची हैं। इन संज्ञावाची समासों में शब्दों का योग विविधता लिए हुए है। जैसे—

| | |
|---|---|
| आउटकम | (अव्यय+क्रिया) |
| ओवरराईटिंग | (अव्यय+क्रिया) |
| ओवरड्राफट | (अव्यय+संज्ञा) |
| ओवरटाइम | (अव्यय+संज्ञा) |
| ओवरवर्क | (अव्यय+संज्ञा) |
| अण्डरवियर | (अव्यय+क्रिया) |
| आउटलाइट | (अव्यय+संज्ञा) |

अंग्रेजी के ये संज्ञावाची समास भेदक-भेद्य वाली स्थिति न लेकर विशेषण-विशेष्य की स्थिति लिए हुए हैं। इन समासों के विग्रह में किसी प्रकार की सम्बन्ध-सूचक विभक्तियों का लोप नहीं होता। इन समासों का वस्तुतः विग्रह हो भी नहीं सकता। शब्दों का क्रम पलटने से या वाक्यांश का रूप देने पर इन समासों का अर्थ ही बिल्कुल बदल जायगा। जैसे 'आउटकम' का अर्थ 'परिणाम' है, पर 'कमआउट' (बाहर आओ) आज्ञार्थक क्रिया है। 'ओवरटाइम' (अतिरिक्त कार्य, संज्ञा), 'टाइम इज ओवर' (समय समाप्त है, वाक्यांश)।

हिन्दी के संज्ञावाची समासों में इस प्रकार की प्रवृत्ति नहीं मिलती। वहाँ पूर्वपद के रूप में अव्यय या क्रियापदों का योग नहीं मिलता। क्रिया या अव्यय उस स्थिति में संज्ञा रूप बनकर ही आते हैं। अतः हिन्दी ने तो इन समासों को ज्यों का त्यों अपना लिया है अथवा इनके समानान्तर अपने जिन शब्दों की रचना की है उनमें संज्ञा और संज्ञापदों का योग करते हुए अपनी रचना-शैली की प्रवृत्ति ही प्रदर्शित की है, जिसमें प्रथम पद भेदक और दूसरा पद भेद्य होता है; जैसे—'आउटलुक' का 'दृष्टिकोण' 'आउटलाइन' की 'रूपरेखा'।

अंग्रेजी के चौथे प्रकार के 'डेमफूल, नानसेंस, हाफमेड' आदि समास विशेषणवाची हैं। इन समासों की संख्या अधिक नहीं हैं। इन समासों की की रचना विशेषण और विशेषण पदों के योग से हुई है। विशेषणवाची होने से इन समासों में अन्य पद विशेष्य की प्रधानता है। क्रिया का सम्बन्ध अन्य पद से है और उसके लिंग, वचन का निर्धारण भी अन्य पद से होता है। ये समास भी भेदक-भेद्य की स्थिति लिए हुए नहीं हैं। अतः विग्रह करने पर इन समासों में भी विभक्ति का लोप नहीं होता।

अंग्रेजी के पाँचवें रूप वाले 'गुडमार्निग, गुडईवनिंग, थैंक्यू' आदि समास अभिवादन सूचक शब्द हैं। 'गुडमार्निङ्ग, गुडईवनिंग' समासों की रचना विशेषण और संज्ञापदों के योग से हुई है। 'थैंक्यू' समास की रचना क्रिया और सर्वनाम पदों के योग से हुई है। हिन्दी में अभिवादन सूचक शब्दों के लिये इस रूप में पदों का योग नहीं होता।

अंग्रेजी के छटवें प्रकार के 'फादर-इन-ला, मदर-इन-ला' समासों का व्यवहार हिन्दी के 'सुसर, सास, साले, बहनोई' के स्थान पर होता है। इसका कारण यही है कि अंग्रेजी पढ़ा-लिखा हिन्दी भाषी क्षेत्र जिस प्रकार 'पत्नी' के स्थान पर 'वाइफ' अंग्रेजी शब्द का व्यवहार करता है उसी प्रकार 'साससुसर' के स्थान पर 'मदर-इन-ला, फादर-इन-ला' का व्यवहार करता है।

ये समास संज्ञा+अव्यय+संज्ञापदों के योग से बने संज्ञावाची समास हैं। 'अप-टू-डेट' समास विशेषणवाची है, और इसकी रचना अव्यय+अव्यय+संज्ञा पदों के योग से हुई है। हिन्दी में इस प्रकार समास-रचना की प्रवृत्ति नहीं मिलती।

सातवें प्रकार के 'कोट-पैंट, स्कूल-कालिज' जैसे समास हिन्दी के 'भाई-बहिन, माता-पिता' जैसे हैं। पर अंग्रेजी के ऐसे समासों की संख्या हिन्दी में अधिक नहीं है।

अंग्रेजी भाषा से गृहीत, हिन्दी में 'लूज करेक्टर' जैसे समास भी मिलते हैं। इस समास का रूप 'भ्रष्टचरित्र' या 'गुमराह' जैसा है। इसमें पहिला पद विशेषण, दूसरा पद संज्ञा और समस्त पद विशेषण है। प्रथम पद भेद्य है और दूसरा पद भेदक है। विग्रह करने पर पदों का क्रम उल्टा हो जाता है और पहिला पद सम्बन्ध-सूचक शब्द के बाद आता है। (करेक्टर का लूज़) वस्तुतः 'भ्रष्ट-पथ' या 'गुमराह' की भांति 'लूज करेक्टर' में भी 'लूज़' करेक्टर का विशेषण नहीं, बल्कि समस्त पद उस व्यक्ति का विशेषण है जिसका करेक्टर लूज़ है; अर्थात् चरित्र-भ्रष्ट है। अतः यह समास अन्य पद-प्रधान है और संस्कृत के बहुव्रीहि समास की भांति इसकी स्थिति है। हिन्दी में इस प्रकार की प्रवृत्ति के समास नहीं मिलते। हिन्दी में इस समास का रूप होगा 'चरित्र भ्रष्ट'; अर्थात् विशेषण पद का योग संज्ञा के पश्चात् होगा, पहिले नहीं।

हिन्दी भाषा में गृहीत, अंग्रेजी भाषा के समासों के अध्ययन से स्पष्ट है कि इन समासों में संज्ञावाची समासों की ही प्रधानता है। इन संज्ञावाची समासों में भी संज्ञा और संज्ञापदों के योग से बने संज्ञापद समासों की ही प्रमुखता है। विशेषण और संज्ञापदों के योग से बने संज्ञावाची समास ही हिन्दी भाषा ने ग्रहण किए हैं, पर इनकी संख्या अधिक नहीं है। विशेषणवाची समास बहुत कम हैं और अव्ययवाची समास नहीं के बराबर हैं।

इन अंग्रेजी समासों के पर्यायवाची रूप में हिन्द शब्द मिलते हैं और अंग्रेजी शब्दों के समानान्तर ही उनका व्यवहार हिन्दी भाषा में होता है। उदाहरण के लिए :—

| | | | |
|---|---|---|---|
| आउटकम | (अंग्रेजी) | परिणाम | (हिन्दी) |
| पोस्टमैन | (अंग्रेजी) | डाकिया | (हिन्दी) |
| इंकपौट | (अंग्रेजी) | दवात | (हिन्दी) |
| मनीबेग | (अंग्रेजी) | बटुआ | (हिन्दी) |
| अंडरवियर | (अंग्रेजी) | जांघिया | (हिन्दी) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| थैंक्यू | (अंग्रेजी) | धन्यवाद | (हिन्दी) |
| डैमफूल | (अंग्रेजी) | मूर्ख | (हिन्दी) |
| नानसेंस | (अंग्रेजी) | बेवकूफ | (हिन्दी) |

जिन अंग्रेजी समासों के पर्यायवाची रूप में हिन्दी भाषा में शब्द नहीं मिलते उन समास शब्दों के समानान्तर हिन्दी ने भी अपने शब्दों के योग से पर्यायवाची शब्दों के रूप में समास-रचना की है। उदाहरण के लिए :—

| | | | |
|---|---|---|---|
| ऐरोप्लेन | (अंग्रेजी) | वायुयान | (हिन्दी) |
| आंसरबुक | (अंग्रेजी) | उत्तरपुस्तक | (हिन्दी) |
| न्यूजपेपर | (अंग्रेजी) | समाचारपत्र | (हिन्दी) |
| गेस्टहाउस | (अंग्रेजी) | अतिथिगृह | (हिन्दी) |
| फूडप्रोबलम | (अंग्रेजी) | खाद्यसमस्या | (हिन्दी) |
| ब्लॅडप्रेशर | (अंग्रेजी) | रक्तचाप | (हिन्दी) |
| पावरहाउस | (अंग्रेजी) | बिजलीघर | (हिन्दी) |
| समरवैकेशन | (अंग्रेजी) | ग्रीष्मावकाश | (हिन्दी) |
| कोल्डड्रिंक | (अंग्रेजी) | शीतलपेय | (हिन्दी) |
| मीटरगेज | (अंग्रेजी) | छोटीलाइन | (हिन्दी) |

अंग्रेजी के इन समासों का व्यवहार हिन्दी में वाक्यांश रूप में भी होता है। उदाहरण के लिए :—

| | | | |
|---|---|---|---|
| आइसवेग | (अंग्रेजी) | वर्फ की थैली | (हिन्दी) |
| आइसवाटर | (अंग्रेजी) | बरफ का पानी | (हिन्दी) |
| स्कूलवैल | (अंग्रेजी) | स्कूल की घंटी | (हिन्दी) |
| किरासिनआइल | (अंग्रेजी) | मिट्टी का तेल | (हिन्दी) |

जिन अंग्रजी समासों के पर्यायवाची शब्द हिन्दी भाषा में नहीं मिलते उनका व्यवहार हिन्दी भाषा में निश्चय ही सामान्य है। जैसे—फुटबाल, वॉलीबाल, फाउन्टेनपेन, नेकलैस, ईयररिंग, अरारोट, थर्मामीटर, स्टेशनमास्टर, क्रिकेट-मेच, रेडियोसैट आदि। इस प्रकार के अंग्रेजी समासों में उन्हीं समासों की प्रधानता है जो उन वस्तुओं या पदार्थों का बोध कराते हैं जिनसे हिन्दी भाषा-क्षेत्र का सम्पर्क अंग्रेजी सभ्यता और भाषा के साथ हुआ है। अतः इन अंग्रेजी वस्तुओं को ग्रहण करने के साथ-साथ उन वस्तुओं के बोधक शब्दों को भी ग्रहण किया गया है। कुछ शब्द तो हिन्दी ने स्वतः ही अपने शब्दों की सहायता और भाषा की आन्तरिक शक्ति से गढ़ लिए हैं। जो शब्द हिन्दी भाषा

द्वारा नहीं गढ़े जा सके उन्हें ज्यों का त्यों हिन्दी भाषा ने अंग्रेजी से ग्रहण कर लिया है। ऐसे समास शब्द हिन्दी शब्द-समूह के अंग बन गए हैं।

अंग्रेजी के 'मोटरकार, टिंचरआयडीन, टिकिटचेकर, फिलमएक्टर, फाउन्टेन-पेन, इंकपौट' आदि अनेक ऐसे समास हैं जिनका पहिला या दूसरा पद प्रयोग में नहीं आता। टिंचर आयडीन का 'टिंचर' ही बोला जाता है, फाउन्टेनपैन का 'पैन', इंकपोट का 'इंक', टिकिटचेकर का 'चेकर' फिलमएक्टर का 'एक्टर', मोटरकार का 'कार' या 'मोटर' ही बोला जाता है।

अंग्रेजी भाषा के शब्द तथा अन्य भाषाओं के शब्दों के मेल से भी समास बनते हैं। जैसे—अश्रुगैस, कांग्रेस-अध्यक्ष। हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली में में ऐसे समासों की अधिकता है। इतना अवश्य है कि समास रूप में अंग्रेजी भाषा के शब्दों के साथ हिन्दी के तत्सम शब्दों का ही योग हुआ है। अंग्रेजी समासों के अनुकरण पर जिन पर्यायवाची हिन्दी समासों की रचना हुई है उनमें भी हिन्दी के तत्सम शब्दों की प्रधानता है।

ध्वन्यात्मक दृष्टि से अंग्रेजी भाषा के इन समासों में भी हिन्दी समासों की भाँति पहले पद पर आघात प्रमुख, दूसरे पद पर गौण होता है।

अंग्रेजी के लैमनज्यूस, एअरप्लेन, नेक्लेस, एरोरूट, ईयररिंग' हिन्दी में क्रमशः लेमनचूस, एरोप्लेन, नेकलस, अरारोट, एरन' विशेषतः (ब्रजभाषा क्षेत्र मे) बन गए हैं। लैमनज्यूस का 'लैमनचूस' रूप मनोरंजक है। 'लैमनज्यूस' मीठी गोलियाँ होती हैं जो बच्चों द्वारा चूसी जाती है। फलत 'ज्यूस' के सादृश्य पर 'चूस' (चूसने की क्रिया का बोध कराने वाला) हिन्दी का शब्द 'लैमन अंग्रेज़ी शब्द के साथ जुड़ गया। वस्तुतः 'ज्यूस' का यह 'चूस' रूप में ध्वनि-विकार समास-प्रक्रिया के कारण नहीं है। इस विकार में दूसरे ही तत्वों का हाथ है। अन्य समास शब्दों में ध्वनिविकार समास-प्रक्रिया के ही कारण है। यह ध्वनि-विकार समास शब्द ही नहीं—अंग्रेजी से हिन्दी में गृहीत, अन्य शब्दों में भी देखने को मिलता है। इसका कारण यही है कि अंग्रेजी विदेशी भाषा है। उसके शब्दों का शुद्ध उच्चारण सम्भव नहीं। अशिक्षित लोगों द्वारा तो उनका उच्चारण और भी अधिक विकृत रूप लिए रहता है।

अध्याय ७

# उपसंहार

७-१ हिन्दी समास-रचना की कसौटी
७-२ हिन्दी समासों के भेद-उपभेद
७-३ हिन्दी समास और व्याकरण के चिन्ह

: ७ :

## ७—१ हिन्दी समास-रचना की कसौटी

७–१ (१) किसी भी भाषा में समासों की रचना दो स्वतंत्र शब्दों के योग से होती है। अतः हिन्दी भाषा में समास-रचना के लिए कौन-से शब्द स्वतंत्र हैं और कौन से शब्दांश, यह निर्णय करना आवश्यक है।

पिछले अध्यायों में हिन्दी समास-रचना के विविध प्रकारों के अध्ययन से स्पष्ट है कि संज्ञापदों के पश्चात् जिन पदों का योग हुआ है, वे सब सम्बन्ध-सूचक विभक्तियों का योग लिए हुए हैं। जैसे:—

जीवन-निर्माण = जीवन का निर्माण

(यहाँ 'निर्माण' संज्ञा शब्द 'जीवन' के साथ 'का' सम्बन्ध-सूचक विभक्ति का योग लिए हुए है।)

जन्म-रोगी = जन्म का रोगी

(यहाँ 'रोगी' विशेषण शब्द 'जन्म' संज्ञा शब्द के साथ 'का' सम्बन्ध-सूचक विभक्ति का योग लिए हुए है।)

आज्ञानुसार = आज्ञा के अनुसार

(यहाँ 'अनुसार' अव्यय, संज्ञा 'आज्ञा' के साथ 'के' सम्बन्ध-सूचक विभक्ति का योग लिए हुए है।)

इस तरह = इस की तरह

(यहाँ 'तरह' अव्यय 'इस' सर्वनाम के साथ 'की' सम्बन्ध-सूचक विभक्ति का योग लिए हुए है।)

भरपेट = पेट का भरा

(इस समास का विग्रह करने पर 'भर' कृदंत अव्यय संज्ञा 'पेट' के पश्चात् आने पर 'का' सम्बन्ध-सूचक विभक्ति का योग लिए हुए है।)

पेटभर = पेट को भरकर

(यहाँ 'भर' कृदंत अव्यय 'पेट' संज्ञा के साथ 'को' सम्बन्ध-सूचक विभक्ति का योग लिए हुए है।)

दिलबहलाना = दिल का बहलाना

(यहाँ 'बहलाना' कृदंत क्रियापद संज्ञा 'दिल' के पश्चात् 'का' सम्बन्ध-सूचक विभक्ति का योग लिए हुए है।)

हिन्दी समास-रचना की प्रवृत्ति से यह निष्कर्ष निकलता है कि संज्ञा के उत्तर-पद रूप में जिन शब्दों का योग किये जाने पर विभक्ति-सूचक सम्बन्ध-प्रत्ययों का लोप हो, वे ही शब्द स्वतंत्र माने जायेंगे, अन्य शब्दों को शब्दांश कहा जायगा।

इस निष्कर्ष के आधार पर हिन्दी में 'पेटभर, हितकर' समास हैं, परन्तु 'रात भर, रात तक, डट कर' समास नहीं है। पेटभर में 'भर', हितकर में 'कर' स्वतंत्र शब्द हैं। रातभर में 'भर', रात तक में 'तक', डटकर में 'कर' शब्दांश हैं। यद्यपि इन यौगिक शब्दों की रचना भी 'पेटभर, हितकर' समासों की भाँति है।

'पेटभर, हितकर' समासों का विग्रह करने पर इनके बीच में सम्बन्ध-सूचक विभक्तियों का योग होता है। जैसे :—

| समास | वाक्यांश |
|---|---|
| पेटभर | पेट को भरकर |
| हितकर | हित को करने वाला |

परन्तु 'रातभर, राततक, डटकर' आदि शब्दों का विग्रह करने पर किसी प्रकार की विभक्तियों का योग इनके मध्य में नहीं होता। यह नहीं कहा जा सकता—रात का भर, रात को भरकर, रात का तक, या रात की तक, या रात से तक, डट को कर, डट में कर, डट से कर। इसीलिए ये शब्द शब्दांश हैं। इनकी स्थिति भी 'दूधवाला, नातेदार, गाड़ीवान, सुन्दरता, चिकनाई, घबराहट' आदि यौगिक शब्दों के 'वाला, दार, वान, ता, आई, अट' आदि शब्दांशों की भाँति है, क्योंकि इन यौगिक शब्दों का विग्रह करने पर किसी प्रकार की सम्बन्ध-सूचक विभक्तियों का योग इन शब्दांशों के साथ नहीं होता। यह नहीं कहा जा सकता—दूध का 'वाला', नाते का 'दार', गाड़ी का 'वान', सुन्दरता का 'ता', चिकना का 'ई', घबराना का 'अट'।

'पाठक, जाँचक' आदि यौगिक शब्दों का विग्रह करने पर इनका वाक्यांश रूप होगा :—

| समास | | वाक्यांश |
|---|---|---|
| पाठक | = | पाठ को करने वाला |
| जाँचक | = | जाँच को करने वाला |

इससे स्पष्ट है कि 'पाठ' और 'क' के बीच में 'को' सम्बन्ध-सूचक विभक्ति का योग हुआ है। तब क्या 'पेटभर' के 'भर' और 'हितकर' के 'कर' की भाँति 'क' को भी स्वतंत्र शब्द माना जाय ?

'हितकर' के 'कर' शब्द की रचना 'करना' क्रिया से कृदंत प्रत्यय 'अ' के योग द्वारा हुई है। हिन्दी के क्रियापद कृदंत प्रत्ययों के योग से संज्ञा, विशेषण अव्यय का रूप लेते हैं। जैसे—लिखना से लिख, जलना से जल, माँगने से माँग। इस स्थिति में उनका नांत रूप ही विलीन होता है। परन्तु 'पाठक' के 'क' शब्द की रचना 'करना' क्रियापद से नहीं हुई है। यदि इसकी रचना 'करना' क्रियापद से होती तो इसका रूप भी 'कर' कृदंत की भाँति होता। यदि 'करना' का रूप 'क' की भाँति हो सकता तो 'लिखना' का रूप भी 'लि', भागना का रूप 'भ', चलना का रूप 'च' होना चाहिये, पर ऐसे प्रयोग हमें हिन्दी यौगिक शब्द-रचना में कृदंत क्रियाओं के रूप में नहीं मिलते। इसीलिए 'पाठक' शब्द को 'क' शब्दांश के योग से बना यौगिक शब्द मान सकते हैं, स्वतंत्र शब्द के योग से बना समास नहीं।

हिन्दी में 'निडर, अनबन, अधर्म' में 'नि, अन, अ' उपसर्ग विशेषण रूप में कार्य करते हैं। हिन्दी वाक्य-रचना में जब विशेषणों का योग संज्ञा से पूर्व होता है तब उनमें किसी प्रकार की सम्बन्ध-सूचक विभक्ति का लोप नहीं होता। निडर, अनबन, अधर्म आदि शब्दों में भी 'नि' और 'डर', 'अन' और 'बन', 'अ' और 'धर्म' के बीच किसी प्रकार की सम्बन्ध-सूचक विभक्तियों की आवश्यकता नहीं होती। तब क्या 'निडर, अनहोनी, अधर्म' के 'नि, अन, अ' उपसर्गों को विशेषण पद के रूप में स्वतंत्र शब्द माना जाय ?

हिन्दी वाक्य-रचना में विशेषण जब संज्ञा से पूर्व आते हैं तब संज्ञा के साथ इस योग में किसी प्रकार की विभक्ति का लोप उनमें नहीं होता। 'भला आदमी', 'सफेद घर' के बीच किसी प्रकार की सम्बन्ध-सूचक विभक्ति नहीं है। परन्तु जब इन विशेषणों का प्रयोग संज्ञा के बाद होता है तब उनके बीच सम्बन्ध-सूचक विभक्तियों का योग हो सकता है। जैसे—घर का भला, रंग का सफेद। नि, अन, अ, उपसर्गों का प्रयोग इस प्रकार से नहीं हो सकता। इसलिये नि, अन, अ, को स्वतंत्र शब्द नहीं माना जा सकता, शब्दांश ही माना जायगा।

७-१ (२) किसी भी भाषा में समासों की रचना सन्निकट रचनांगों के बीच ही सम्भव है। हिन्दी भाषा में जिन सन्निकट रचनांगों के बीच समास-रचना सम्भव है, उनकी स्थिति इस प्रकार है :—

१—हिन्दी वाक्य-रचना में जो शब्द परस्पर भेदक-भेद्य स्थिति लिए विभक्ति-सूचक सम्बन्ध प्रत्ययों से जुड़े रहते हैं। उदाहरण के लिये :—

'आज हमारे सामने अपनी सीमा की रक्षा का प्रश्न है।' इस वाक्य में 'सीमा' और 'रक्षा' शब्द परस्पर 'की' सम्बन्ध-सूचक विभक्ति से जुड़े हुए हैं। 'रक्षा' शब्द यहाँ भेद्य है और 'सीमा' शब्द भेदक है। 'सीमा' शब्द रक्षा का सन्निकट रचनांग है। इन दोनों शब्दों में समास-रचना सम्भव है। यह समास-रचना विभक्ति-सूचक सम्बन्ध प्रत्यय के लोप से होती है। जिन भेदक-भेद्य सन्निकट रचनांगों के बीच विभक्ति-सूचक सम्बन्ध प्रत्ययों का लोप नहीं होता उनके बीच समास-रचना नहीं हो सकती। उदाहरण के लिए :—'यह मेरी पुस्तक है', वाक्य-रचना में 'मेरी' शब्द भेदक रूप में 'पुस्तक' का सन्निकट रचनांग है। परन्तु 'मेरी' शब्द वाक्य-रचना में 'पुस्तक' के साथ प्रयुक्त होकर अपनी सम्बन्ध-विभक्ति 'ई' नहीं त्याग सकता। इसीलिए 'मेरी पुस्तक' में समास-रचना सम्भव नहीं।

'सीमा' शब्द 'रक्षा' का ही क्यों सन्निकट रचनांग है, वाक्य के अन्य शब्दों का सन्निकट रचनांग क्यों नहीं है ? इसका कारण यही है कि वाक्य में 'सीमा' शब्द का सम्बन्ध केवल 'रक्षा' से है, वाक्य के किसी अन्य शब्द से नहीं।

२— हिन्दी वाक्य-रचना में जो शब्द परस्पर विशेषण-विशेष्य की स्थिति लिए रहते हैं। उदाहरण के लिये :—

यह सफेद कपड़ा है।

इस वाक्य-रचना में 'सफेद' विशेषण है, 'कपड़ा' विशेष्य है। 'सफेद' शब्द 'कपड़ा' शब्द की विशेषता प्रगट करते हुए उससे अपना सम्बन्ध स्थापित करता है। वाक्य के अन्य किसी शब्द से उसका सम्बन्ध नहीं होता। इसलिये विशेषण-विशेष्य रूप में 'सफेद' कपड़ा का सन्निकट रचनांग है।

विशेषण-विशेष्य के इन सन्निकट रचनांगों में हिन्दी में समास-रचना तभी सम्भव है जब पहिला पद विशेषण विधेय रूप में विशेष्य की विशेषता का विधान नहीं करता। जैसे :—

| वाक्यांश | समास |
|---|---|
| काला पानी | कालापानी |

यहाँ वाक्यांश 'काला पानी' में 'काला' पानी के कालेपन की विशेषता का विधान करता है। पानी का रंग सफेद, हरा, लाल भी हो सकता है। पर यहाँ पानी का रंग काला ही है। समास 'कालापानी' में 'काला' पानी की विशेषता का विधान नहीं करता। 'कालापानी' से अभिप्राय स्थान-विशेष से है। वहाँ पानी

का रंग काले के स्थान पर हरा, लाल भी हो सकता है। वाक्यांश 'काला-पानी' की भाँति पानी का काला होना आवश्यक नहीं। फलतः हिन्दी समास-रचना के लिए यह आवश्यक है कि विशेषण का प्रयोग केवल उद्देश्य रूप में हो, विधेय रूप में नहीं; अर्थात् विशेष्य से पूर्व ही विशेषण का प्रयोग हो सके, बाद में नहीं। 'सफेद घर' वाक्यांश को 'घर सफेद है' रूप दिया जा सकता है, परन्तु 'कालापानी' शब्द को 'पानी काला' नहीं कहा जा सकता। 'काला' विशेषण का प्रयोग 'पानी' के पश्चात् विधेय रूप में नहीं हो सकता।

विशेषण-विशेष्य के इन सन्निकट रचनांगों में पहिला पद जब संख्यावाची विशेषण के रूप में व्यंजन तथा दीर्घ स्वर ध्वनियों का योग लिए रहते है तब उनमें समास-रचना सम्भव है। जैसे—

| वाक्यांश | समास |
|---|---|
| चार आना | चवन्नी |
| तीन मंजिला | तिमंजिला |
| चार राहें | चौराहा |

(समास रूप में विशेषण की दीर्घ ध्वनियों का ह्रस्वीकरण हो जाता है।)

३—हिन्दी वाक्य-रचना में जो शब्द एक-सी रूपात्मक स्थिति लिए 'और', 'तथा' आदि समुच्चय-बोधक सम्बन्ध प्रत्यय से जुड़े रहते है। जैसे :—

वहाँ लड़ाई और झगड़ा हो रहा है।
वह हरा और भरा खेत है।
वहाँ रात और दिन काम हो रहा है।

(यहाँ 'लड़ाई' और 'झगड़ा', 'हरा' और 'भरा', 'रात' और 'दिन' सन्निकट रचनांग हैं। समास-रचना में 'और' सम्बन्ध प्रत्यय का लोप हो जाता है।)

वहाँ लड़ाई-झगड़ा हो रहा है।
वह हरा-भरा खेत है।
वहाँ रात-दिन काम होरहा है।

इन सन्निकट रचनांगों की एक-सी रूपात्मक स्थिति से अभिप्राय है कि समास-रचना में यदि समस्त पद संज्ञा है तो उसके दोनों ही पद कर्त्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादन, अधिकरण आदि के रूप में क्रिया के कारक होंगे। यदि समस्त पद विशेषण है तो उसके दोनों ही पद विशेष्य के विशेषण होंगे। यदि समस्त पद अव्यय है तो उसके दोनों ही पद अव्यय पद का रूप ग्रहण कर क्रिया की विशेषता को प्रकट करेंगे। यदि समस्त पद सर्वनाम है तो उसके दोनों

ही पद सर्वनाम का कार्य करेंगे। यदि समस्त पद क्रियापद है तो उसके दोनों पद वाक्य-रचना के कर्त्ता के कार्य होंगे।

७—१ (३) किसी भी भाषा में वाक्यांश की भांति रचना का रूप लिए हुए भी समास कार्यात्मक दृष्टि से शब्द के समान कार्य करते हैं। दो भिन्न पद मिलकर एक पद बन जाता है; अर्थात् दो संज्ञापद हों तो एक संज्ञापद बन जाएगा, दो विशेषण पद हों तो एक विशेषण पद बन जाएगा।

हिन्दी समास-रचना में वाक्य के उद्देश्य विभाग के शब्दों का योग विधेय-विभाग के शब्दों के साथ नहीं हो सकता। समास-रचना केवल क्रिया के कारकों, कारकों की विशेषता बताने वाले विशेषणों और क्रिया की विशेषता बताने वाले क्रियाविशेषणों के बीच ही सम्भव है। अतः हिन्दी में समास-रचना संज्ञा, विशेषण और क्रियाविशेषण रूप अव्यय के परस्पर योग से ही मुख्यतः होती है तथा समस्त पद भी संज्ञा, विशेषण और क्रियाविशेषण का रूप धारण करता है। विधेय रूप क्रिया का, उद्देश्य के रूप में वाक्य के किसी शब्द के साथ समास-रचना सम्भव नहीं है। विधेय विभाग में केवल क्रियापद की द्विरुक्ति से जिसमें 'और' सम्बन्ध तत्व का लोप हो जाता है, समास-रचना सम्भव है। क्रिया कभी भेदक या भेद्य, विशेषण या विशेष्य का रूप हिन्दी वाक्य-रचना में नहीं ले सकती। इसीलिये समास रचना में भी संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, अव्यय के साथ क्रियापदों का योग नहीं हो सकता और समस्त पद भी कभी क्रिया पद का रूप नहीं ले सकते।

क्रियापदों का योग विधेय के शब्दों के साथ उसी स्थिति में होता है जब क्रिया विधेय विभाग में व्यवहृत होकर कृदंत संज्ञा, विशेषण या क्रियाविशेषण का रूप लेती है। उस स्थिति में भी समस्त पद संज्ञा, विशेषण या अव्यय पद बनते हैं, क्रियापद कभी नहीं बनते।

सर्वनाम पदों का योग भी विशेषण-विशेष्य या भेदक-भेद्य की स्थिति में वाक्य के किसी अन्य शब्द के साथ नहीं होता और समस्त पद सर्वनाम पद का रूप नहीं लेता। सर्वनाम पद कभी विशेष्य या भेद्य का रूप नहीं ले सकता। सम्बन्ध रूप में उसमें सदैव भेदक प्रत्यय जुड़ा रहता है। इसलिये वे कभी विशेषण का रूप ग्रहण नहीं कर सकते। अपने सम्बन्ध तत्व को सर्वनाम किसी भी स्थिति में त्याग नहीं सकता। सम्बन्ध तत्व का योग लिए रहने पर ही सर्वनाम की स्थिति है, अन्यथा वह विशेषण का रूप ले लेगा। अतः सर्वनाम के साथ किसी अन्य पद का योग लिए समास की रचना हिन्दी वाक्य-रचना मे सम्भव नही। जिन सर्वनामों के योग से बने समासों के उदाहरण, जैसे—अपनेराम,

आपकाजी' हिन्दी समास रचना में मिलते है उनकी गिनती नगण्य ही है। हिन्दी समास-रचना की दृष्टि से उनका कोई महत्व नहीं। इन समासों में व्यवहृत सर्व-नाम प्रयोग की दृष्टि से विशेषण या अव्यय पद का रूप ले लेते हैं। केवल 'और' सम्बन्ध तत्व से जुड़े रहने वाले वाक्यांशों के सर्वनामों की द्विरुक्ति रूप में ही समास रचना सम्भव है और समस्त पद उस स्थिति में सर्वनाम पद का रूप ग्रहण करता है। पर ऐसे सर्वनाम पदों की संख्या भी महत्वशाली नहीं है।

संज्ञा के साथ हिन्दी समास-रचना में संख्यावाची विशेषणों का योग ही पूर्वपद के रूप में अधिक होता है। अन्य विशेषणों के योग से बने संज्ञावाची समास हिन्दी में अधिक नही हैं, क्योंकि हिन्दी वाक्य-रचना में वाक्यांश और समास रचना के रूप में विशेषण या विशेष्य का रूप एक ही रहता है। संख्या-वाची विशेषणों का योग लिए समासों में संख्यावाची शब्द ध्वनि-विकार का रूप ले लेते हैं। अन्य विशेषणों की भी प्रायः यही स्थिति रहती है।

संज्ञा के बाद आने वाले विशेषण प्रायः तद्धित प्रत्यय के योग द्वारा संज्ञा से बने विशेषण पद या क्रियापदों से बने कृदंत विशेषण होते हैं। तद्धित प्रत्यय के योग से बने संज्ञा या विशेषण पदों का योग भी हिन्दी समास-रचना में पूर्वपद के रूप में प्रायः नहीं होता।

अव्यय पदों का योग भी संज्ञापद के पूर्व देखने में नहीं आता। हिन्दी में अव्यय संज्ञा के बाद आते हैं। इनकी संख्या भी हिन्दी में अधिक नहीं है। अव्यय के साथ क्रियापदों से बने कृदंत विशेषण या संज्ञाओं का योग भी कम ही है।

७—१ (४) हिन्दी वाक्य-रचना में उन्ही शब्दों के योग को वाक्यांश के स्थान पर समास माना जा सकता है—

१—जिनमें दोनों पदों में से एक पद पर आघात प्रमुख और दूसरे पर गौण होता है, अथवा दोनों पदों पर आघात एक समान होता है। वाक्यांश में दोनों पदों पर आघात प्रमुख होता है। जैसे—

| | |
|---|---|
| भाई बहिन आरहे हैं | (वाक्यांश) |
| भाई-बहिन आरहे हैं | (समास) |
| पिता वचन मानोगे | (वाक्यांश) |
| पिता-वचन मानोगे | (समास) |

| |
|---|
| काली मिर्च अच्छी है (वाक्यांश) |

काली मिर्च अच्छी है | (वाक्यांश)
---|---
काली-मिर्च अच्छी है | (समास)
नर ईश आरहा है | (वाक्यांश)
नरेश आरहा है | (समास)

२—जिनमें सम्बन्ध प्रत्यय का लोप हो जाता है। जैसे—

| | |
|---|---|
| तुलसी की रामायण | (वाक्यांश) |
| तुलसीरामायण | (समास) |
| चीनी मैत्री | (वाक्यांश) |
| चीनमैत्री | (समास) |
| भाई और बहिन | (वाक्यांश) |
| भाईबहिन | (समास) |

(यहाँ समास रूप में वाक्यांश के क्रमशः 'की, ई, और' सम्बन्ध प्रत्ययों का लोप होगया है।)

३—जिनमें ध्वनि-रूपान्तर हो जाता है। जैसे—

| वाक्यांश | समास |
|---|---|
| एक आना | इकन्नी |
| मीठा बोला | मिठबोला |
| भला मानुष | भलमानुष |
| काला मुँह | कलमुँहा |
| हाथ की कड़ी | हथकड़ी |
| जूता जूता | जूतमजूता |
| तनना तनना | तनातनी |
| नर ईश | नरेश |

४—जब पदों का योग विशिष्ट अर्थ में रूढ़ हो जाता है। जैसे—

| वाक्यांश | समास |
|---|---|
| काला पानी | कालापानी |
| रंगा सियार | रंगासियार |
| चलता पुर्जा | चलतापुर्जा |
| काली मिर्च | कालीमिर्च |
| काला बाजार | कालाबाजार |

यहाँ वाक्यांश 'काला पानी' से अभिप्राय उस पानी से है जो काला है परन्तु समास रूप में 'कालापानी' से अभिप्राय स्थान-विशेष से है। वाक्यांश 'रंगा सियार' से अभिप्राय उस सियार से है जो किसी रंग में रंग गया हो। समास 'रंगासियार' से अभिप्राय धूर्त व्यक्ति से है। वाक्यांश 'चलता पुर्जा' से अभिप्राय उस कागज के पुर्जे से है जो इधर-उधर खूब चलता हो। समास 'चलतापुर्जा' से अभिप्राय चालाक व्यक्ति से है। 'काली मिर्च' वाक्यांश से अभिप्राय उस मिर्च से है जिसका रंग काला होगया है। (यह मिर्च हरी भी हो सकती है।) परन्तु समास 'कालीमिर्च' से अभिप्राय एक वस्तु-विशेष से है। कालीमिर्च का रंग सफेद पड़ जाय तब भी उसे कालीमिर्च ही कहा जायगा। 'काला बाजार' वाक्यांश से अभिप्राय उस बाजार से है जिसका रंग काला हो। 'कालाबाजार' समास से अभिप्राय उस स्थान-विशेष से है, जहाँ अनैतिक क्रय-विक्रय होता है।

## ७—२ हिन्दी समासों के भेद-उपभेद

हिन्दी समास-रचना की कसौटी के अध्ययन से स्पष्ट है कि हिन्दी समास-रचना भेदक-भेद्य, विशेषण-विशेष्य, और द्वन्द्व रूप वाले सन्निकट रचनांगों के बीच ही सम्भव है। इन स्थितियों में वह संज्ञापद, विशेषण पद, अव्यय पद, सर्वनाम पद और क्रियापद का रूप ग्रहण करती है; अर्थात् रचनात्मक दृष्टि से हिन्दी समास-रचना का रूप भेदक-भेद्य, विशेषण-विशेष्य और द्वन्द्व की स्थिति लिए हुए है। कार्यात्मक दृष्टि से उसका रूप संज्ञावाची, विशेषणवाची, अव्यय-वाची, सर्वनामवाची और क्रियावाची है। इसी आधार पर हिन्दी समासों को निम्न भेद-उपभेदों में वर्गीकृत किया जा सकता है :—

### ७—२ (१) भेदक-भेद्य समास[1]

भेदक-भेद्य की स्थिति लिए वाक्य-रचना के दो स्वतन्त्र शब्द जब एक शब्द का रूप ग्रहण करते है। यह समास रचना विभक्ति-सूचक सम्बन्ध प्रत्ययों

---

१. ३—१ (१), ३—१ (३), ३—१ (४), ३—१ (५), ३—१ (६), ३—१ (७), ३—१ (१४), ३—१ (१५) प्रकार के समास।

के लोप से होती है। विभक्ति-सूचक सम्बन्ध प्रत्यय का पूर्व शब्द 'भेदक' तथा उत्तर शब्द 'भेद्य' होता है। 'भेद्य' शब्द की रूपात्मक तथा अर्थात्मक सत्ता प्रमुख होती है, और 'भेदक' शब्द की गौण। 'भेदक' शब्द सदैव तिर्यक रूप में रहता है।

स्वरूप

१—ध्वन्यात्मक दृष्टि से ये समास अविकारी[1], विकारी[2], संश्लिष्ट[3], विश्लिष्ट[4] स्वरूप लिए रहते हैं।

२—रूपात्मक दृष्टि से ये समास सम्बन्ध प्रत्यय लोपी[5], वाक्यांश अल्पी[6], व्यधिकरण[7], मुक्त[8], बद्ध[9], पराश्रितपदीय[10], प्रथम पद-प्रधान[11], द्वितीय पद-प्रधान[12], अन्य पद-प्रधान[13] का स्वरूप लिए रहते हैं।

३—अर्थात्मक दृष्टि से ये समास अभिधामूलक,[14], लक्षणामूलक[15],

१. हिन्दी-साहित्य, गोबर-गणेश, बगुलाभगत, मार्गव्यय, हाथीदांत, गजदंत।
२. हथकड़ी, मुँडचिरा, भिखमङ्गा, अमूचर, घुड़चढ़ी।
३. नरेश, विद्यालय, नरेन्द्र, सूर्योदय।
४. घरजमाई, दियसलाई, मार्गप्रदर्शन, जीवनपथ, जीवन-निर्माण।
५. रोगमुक्त, जन्मरोगी, चीनमैत्री, राष्ट्रसेवक।
६. मार्गदर्शक, आरामपसन्द, क्षमाप्रार्थी, फलदायक, मुक्तदाता, मनगढ़ंत, कार्यपट्।
७. शिक्षा-समिति, नारीनिकेतन, घरखर्च, गृहचालक, सैन्य-संचालन।
८. चरित्र-निर्माण, आशादीप, डाकघर, रेलगाड़ी, मकानमालिक, रसोईघर, संसदभवन।
९. कामरोको (प्रस्ताव), भारत छोड़ो (आन्दोलन), हिन्दी अपनाओ (नारा), गगनचुम्बी।
१०. पुस्तकालय, हस्ताक्षर, प्रकाशकिरण, पापाणहृदय. घीबाजार, रेलगाड़ी, अजायबघर, क्रोधाग्नि, उड़नतश्तरी, कठपुतली।
११. हिन्दी-साहित्य-समिति-आगरा।
१२. कांग्रेस-अध्यक्ष, गृह-शिक्षक, गृह-निर्माण, प्रवेशद्वार, अग्निबोट, प्रभु-आदेश, स्वप्न-दर्शन, देशसेवा, आत्मतेज, मकान-मालिक, सौन्दर्य-शास्त्र, मनबहलाव, घुड़चढ़ी, घुड़साल।
१३. गोबर-गणेश, बगुलाभगत, मक्खीचूस।
१४. घीबाजार, ग्रामसेवक, तुलसीरामायण, संध्याकाल, देशभक्ति, जन्मरोगी, धर्मभीरु।
१५. गीदड़-भभकी, ठकुरसुहाती, हाथीपांव, मक्खीचूस, गोरखधन्धा, भेड़िया-धसान।

अर्थसंकोची[1], प्रथम पद-प्रधान[2], द्वितीय पद-प्रधान[3], अन्य पद-प्रधान[4] का स्वरूप लिए रहते हैं।

४—शब्द-रचना की दृष्टि से ये समास तत्सम[5], तद्भव[6], विभाषी[7], संकर[8] का स्वरूप लिए रहते हैं।

## भेदक-भेद्य समासों के उपभेद

भेदक-भेद्य समासों के तीन उपभेद हैं—(१) संज्ञावाची समास, (२) विशेषण-वाची समास, (३) अव्ययवाची समास।

### १—संज्ञावाची समास[9]

जो भेदक-भेद्य समास शब्दों के परस्पर योग से संज्ञापद का रूप ग्रहण करते हैं, वे भेदक-भेद्य संज्ञावाची समास हैं।

### स्वरूप

१—इन समासों के दोनों शब्द संज्ञापद होते हैं।

२—पहिला शब्द भेदक और दूसरा शब्द भेद्य होता है।[10]

---

१. हिन्दी-शिक्षा, बिजलीघर, राजपुत्र, ग्रामसेवक, देशसेवा, समाचार-समिति, बैलगाड़ी, भूदान, उड़नदस्ता, बलिपशु, भड़भूजा, हाथीदांत।

२. नागरी-प्रचारिणी-सभा-काशी।

३. कांग्रेस-मंत्री, डाकघर, घुड़दौड़, रक्षासंगठन, रसोईघर, जीवन-निर्वाह, सीमाविवाद।

४. क्षमाप्रार्थी, पत्थरदिल, चन्द्रमुख, मक्खीचूस, गोबर-गणेश, जन्मरोगी, कलाप्रिय।

५. आत्मज्ञान, प्रकाश-किरण, सूर्योदय, नरेन्द्र, गजदंत, हस्ताक्षर, राजीव-लोचन, आशालता, छविगृह, योजनाआयोग, जलपिपासु, प्रजावर्ग।

६. गठबंधन, दियसलाई, घुड़दौड़, पनडुब्बी, गुड़धानी, कठफोड़वा, चिड़ीमार।

७. राहखर्च, शहरपनाह, गरीबनिवाज, दस्तखत, इलाहाबाद, मकानमालिक।

८. रेलगाड़ी, मोटरगाड़ी, कांग्रेस-अध्यक्ष, सिनेमा-जगत, समझौता-पसन्द।

९. ३-१ (१), ३-१ (६), ३-१ (७), ३-१ (१४, ३-१ (१५) प्रकार के संज्ञावाची समास।

१०. उर्दू शैली के माध्यम से गृहीत, हिन्दी में अरबी-फारसी के समासों में पहिला शब्द भेद्य और दूसरा शब्द भेदक होता है, जैसे—मालिक-मकान, मेला-मवेशी। इसमें रूपात्मक और अर्थात्मक—दोनों ही रूपों में प्रथम पद प्रधान होता है।

३—पद-रचना की दृष्टि से इसमें द्वितीय शब्द की प्रधानता होती है।
४—समस्त पद के लिंग, वचन का निर्धारण द्वितीय पद के अनुसार होता है।
५—लिंग, वचन तथा वाक्य के अन्य शब्दों के साथ सम्बन्ध-स्थिति को लेकर प्रत्येक प्रकार का रूपात्मक विकार द्वितीय पद में ही होता है।
६—प्रथम पद सम्बन्ध प्रत्यय और लिंग, वचन के विकरण प्रत्ययों से रहित होता है।
७—प्रथम संज्ञापद सदैव एकवचन रूप में होता है।
८—प्रथम तद्भव संज्ञापद यदि 'ह् अ ह्' अथवा 'ह् अ ह् अ ह्' का ध्वन्यात्मक रूप लिए हुए हो तो प्रायः उसका रूप क्रमशः 'ह् ह्' और 'ह् अ ह्' हो जाता है।
९—अर्थ की दृष्टि से द्वितीय शब्द की प्रधानता होती है।

**२—विशेषणवाची समास[1]**

जो भेदक-भेद्य समास शब्दों के परस्पर योग से विशेषण पद का रूप ग्रहण करते हैं, वे भेदक-भेद्य विशेषणवाची समास हैं।

**स्वरूप**

१—इन समासों में दोनों ही पद संज्ञा और समस्त पद विशेषण होता है, अथवा पहिला पद संज्ञा और दूसरा पद विशेषण और समस्त पद विशेषण होता है।[2]
२—जिन समासों में दोनों पद संज्ञा और समस्त पद विशेषण होता है वे रचना की दृष्टि से अन्य शब्द-प्रधान होते हैं।[3]

---

१. ३-१ (३), ३-१ (४), ३-१ (६), ३-१ (७) प्रकार के विशेषणवाची समास।

२. उर्दू के माध्यम से आये अरबी-फारसी के समासों में इसके विपरीत पहिला शब्द विशेषण, दूसरा शब्द संज्ञा और समस्त पद विशेषण होता है। जैसे—गुमराह, खुशकिस्मत, बदकिस्मत। संस्कृत के हतप्रभ, दत्तचित्त समास भी ऐसे हैं। वाक्यांश रूप में विग्रह करने पर इनकी स्थिति हिन्दी भेदक-भेद्य विशेषणवाची समासों की भाँति हो जाती है, जैसे—गुमराह = राह से गुम, हतप्रभ = प्रभा से हत। पद-रचना की दृष्टि से ये समास प्रथम पद प्रधान हैं।

३. ३—१ (३) प्रकार के समास।

३—जिन समासों में प्रथम शब्द संज्ञा, दूसरा शब्द विशेषण और समस्त पद विशेषण होता है, वे रचना की दृष्टि से द्वितीय शब्द प्रधान होते हैं।[1]

४—इस प्रकार पद-रचना की दृष्टि से भेदक-भेद्य विशेषणवाची समासों के दो रूप हैं : १—द्वितीय पद प्रधान, २—अन्य पद प्रधान।

५—भेदक-भेद्य विशेषणवाची समासों का प्रथम पद निर्विभक्तिक होता है तथा उसमें लिंग, वचन को लेकर किसी प्रकार का विकरण नहीं होता। वह सदैव एकवचन का रूप लिए रहता है। लिंग, वचन का विकरण द्वितीय शब्द में ही होता है।

६—विशेषणवाची समास अन्य पद विशेष्य के आश्रित होते हैं। इन समासों के लिंग, वचन का निर्धारण अन्य पद विशेष्य के अनुसार होता है। क्रिया का आधार अन्य पद विशेष्य होता है। वाक्य के अन्य शब्दों के सम्बन्ध तत्व अन्य पद विशेष्य के अनुसार होते हैं।

७—अर्थ की दृष्टि से ये समास अन्य पद प्रधान होते हैं।

### ३—अव्ययवाची समास[2]

जो भेदक-भेद्य समास शब्दों के परस्पर योग से अव्यय पद का रूप ग्रहण करते हैं वे भेदक-भेद्य अव्ययवाची समास हैं।

**स्वरूप**

१—ये समास संज्ञा और अव्यय पदों के योग से बनते हैं।

२—इन समासों में सामान्यतः पहिला पद संज्ञा, दूसरा पद अव्यय और समस्तपद अव्यय होता है।[3–4] पद-रचना की दृष्टि से इनमें द्वितीय पद की प्रधानता होती है।

---

१. ३—१ (४), ३—१ (६), ३—१ (७) प्रकार के विशेषणवाची समास।

२. ३—१ (५)।

३. 'भर-पेट' में पहला पद अव्यय, दूसरा पद संज्ञा व समस्त पद अव्यय होता है। विग्रह करने पर संज्ञापद पहिले आ जाता है और अव्यय पद बाद में, पर ऐसे समास हिन्दी में नहीं के बराबर हैं। इस समास का रूप पद-रचना की दृष्टि से प्रथम पद प्रधान है।

४. 'जयराम, जयहिन्द' में दोनों पद संज्ञा और समस्त पद अव्यय होता है। पद-रचना की दृष्टि से ये अन्य पद प्रधान हैं।

३—द्वितीय पद प्रधान अव्ययवाची समासों में पहिला पद भेदक, दूसरा पद भेद्य होता है। लिंग, वचन को लेकर उसमें किसी प्रकार का रूपात्मक विकार नहीं होता।

४—भेदक शब्द के संज्ञापद होने से समस्त पद में उसी की प्रधानता होती है। उसी के लिंग, वचन के अनुसार वाक्य में अन्य शब्दों की सम्बन्ध-सूचक विभक्तियां जुड़ती हैं।

## ७-२ (२) विशेषण-विशेष्य समास[1]

विशेषण-विशेष्य की स्थिति लिए वाक्य-रचना के शब्द जब एक पद का रूप ग्रहण करते हैं। इन समासों में पहिला पद विशेषण और दूसरा उसका विशेष्य होता है।

### स्वरूप

१—ध्वन्यात्मक दृष्टि से ये समास अविकारी,[2] विकारी,[3] संश्लिष्ट,[4] विश्लिष्ट[5] स्वरूप लिए रहते हैं। यदि विशेषण शब्द की रचचा तद्भव रूप में हुई है, वह संस्कृत का तत्सम शब्द या हिन्दीतर भाषा का शब्द नहीं है, वह द्वयाक्षरीय है और उसकी प्रथम, द्वितीय या दोनों ही ध्वनियाँ दीर्घ हैं तो ऐसे प्रथम शब्द विशेषण पद मे ध्वनिविकार होना आवश्यक है। दीर्घ स्वर ध्वनियाँ ह्रस्व रूप ले लेंगी।

२—रूपात्मक दृष्टि से ये समास सम्बन्ध प्रत्यय अलोपी[6], वाक्यांश रूपी[7], समानाधिकरण,[8] मुक्त,[9] बद्ध,[10] पराश्रितपदीय,[11] प्रथम पदप्रधान,[12]

---

१. ३—१ (२), ३—१ (८), ३—१ (९), ३—१ (१०), ३—१ (११) २—१ (१२)।
२. चारपाई, कालाबाजार, श्यामपट, श्वेतपत्र, खालीहाथ।
३. इकन्नी, चवन्नी, दुगना, सतरंगा, तिमंजिला।
४. मिष्ठान्न, इकन्नी, चवन्नी।
५. कालापानी, रंगासियार, श्वेतपत्र, लखपति।
६. महिलायात्री, एकसाथ, एकरस।
७. श्यामपट, श्वेतपत्र, दोपहर।
८. कलमुँहा, अंधकूप, दुअन्नी, चौमासा, दुधारा।
९. मिष्ठान्न, श्यामपट, चौपाया, चौराहा, चौबारा।
१०. सतरंगा, तिमंजिला, सतलड़ी।
११. अठन्नी, गोलमाल, तिरंगा, नरचील, मादाचील।
१२. महिलायात्री, आर्यलोग, नरचील।

द्वितीय पद प्रधान,[1] अन्य पद प्रधान[2] का स्वरूप लिये रहते हैं।

३—अर्थात्मक दृष्टि से ये समास अभिधामूलक,[3] लक्षणामूलक,[4] अर्थ-संकोची,[5] प्रथम पद प्रधान,[6] द्वितीय पद प्रधान,[7] अन्य पद प्रधान[8] का स्वरूप लिए रहते हैं।

४—शब्द-रचना की दृष्टि से ये समास तत्सम,[9] तद्भव,[10] विभाषी,[11] संकर[12] का स्वरूप लिए रहते हैं।

## विशेषण-विशेष्य समासों के 'उपभेद'

विशेषण-विशेष्य समासों के तीन उपभेद हैं :—(१) संज्ञावाची समास, (२) विशेषणवाची समास, (३) अव्ययवाची समास।

### १—संज्ञावाची समास[13]

जो विशेषण-विशेष्य समास शब्दों के परस्पर योग से संज्ञापदों का रूप ग्रहण करते हैं, वे विशेषण-विशेष्य संज्ञावाची समास हैं।

### स्वरूप

१—इनमें पहिला पद विशेषण, दूसरा पद संज्ञा और समस्त पद संज्ञा होता है। यदि पहिला पद सर्वनाम, संज्ञा, अव्यय, क्रिया हो तो वह कार्यात्मक दृष्टि से विशेषण रूप होता है। पहिला पद दूसरे पद की विशेषता प्रकट करता है।

२—पद-रचना और अर्थ की दृष्टि से इसमें द्वितीय पद विशेष्य की प्रधानता रहती है। समस्त पद के लिंग, वचन का निर्धारण द्वितीय पद विशेष्य

---

१. सतरंगा, चौराहा, चौपाया, कलमुँहा, तिरंगा।
२. एकसाथ, एकरस, सर्वकाल।
३. इकन्नी, चवन्नी, सतरंगा, तिमंजिला, अधसेरा, पंसेरी।
४. कालाबाजार, कलमुँहा, चौपाया, कालापानी।
५. मिष्ठान्न, चौपाया, इकन्नी, कालापानी, श्वेतपत्र।
६. महिलायात्री, आर्य लोग, मादाचील, जैनबन्धु।
७. चौराहा, कालीमिर्च, खड़ीबोली, पंसेरी, अधसेरा, लखपति, दोपहर।
८. रंगासियार, खालीहाथ, चलता-पुर्जा, तिमंजिला, सतरंगा।
९. मिष्ठान्न, श्यामपट, श्वेतपत्र, त्रिदेव, नवरत्न, त्रिशूल।
१०. लखपति, चौलड़ी, दुगनी, चौमुखी, बड़भागी।
११. ब्लैकबोर्ड, ब्रौडगेज, हाफरेट, कमजोर, कोल्डवार।
१२. हैड-पंडित।
१३. ३—१ (२), ३—१ (८), ३—१ (११) प्रकार के समास।

के अनुसार होता है। क्रिया का आधार दूसरा पद विशेष्य होता है। वाक्य के अन्य शब्दों के सम्बन्ध प्रत्यय द्वितीय पद विशेष्य के अनुसार होते हैं। पहिला पद विशेषण पद के रूप में सम्बन्ध प्रत्यय और लिंग, वचन के विकरण से रहित होता है। उसमें कोई रूपात्मक विकार[1] नहीं होता।

२—विशेषणवाची समास[2]

जो विशेषण-विशेष्य समास शब्दों के परस्पर योग से विशेषण पदों का रूप ग्रहण करते हैं, उन्हें विशेषण-विशेष्य विशेषणवाची समास कहते हैं।

स्वरूप

१—इसमें पहिला पद विशेषण, अव्यय, सर्वनाम, दूसरा पद विशेषण[3] और समस्त पद विशेषण होता है। पहिला पद कार्यात्मक दृष्टि से विशेषण पद के रूप में होता है। पद-रचना की दृष्टि से इसमें द्वितीय पद की प्रधानता होती है। लिंग, वचन का विकरण द्वितीय पद में होता है। प्रथम शब्द विशेषण पद के रूप में सम्बन्ध-प्रत्यय और लिंग, वचन के विकरण से रहित होता है।

२—विशेषणवाची होने से ये समास अन्य पद विशेष्य के आश्रित होते हैं। अन्य पद विशेष्य के अनुसार ही समस्त पद के लिंग, वचन का निर्धारण होता है। वाक्य के अन्य शब्दों के सम्बन्धतत्व अन्य पद विशेष्य के अनुसार होते हैं। क्रिया का आधार अन्य पद विशेष्य ही होता है।

३—अर्थ की दृष्टि से इन समासों में अन्य पद की प्रधानता रहती है।

३—अव्ययवाची समास[4]

जो विशेषण-विशेष्य समास शब्दों के परस्पर योग से अव्यय पद बनते हैं उन्हें विशेषण-विशेष्य अव्ययवाची समास कहेंगे।

---

१. इन समासों की रचना में पहिला पद यदि संज्ञा हो तो रूपात्मक दृष्टि से वह विशेष्य की स्थिति में रहता है। क्रिया तथा समस्त पद के लिंग, वचन का निर्धारण उसी के अनुसार होता है। वाक्य के अन्य शब्दों के सम्बन्ध प्रत्यय उसी के अनुसार होते हैं। रूप और अर्थ की दृष्टि से इन समासों में प्रथम पद की प्रधानता होती है। (३—१ (२) प्रकार के समासों का विश्लेपण)।

२. ३—१ (६) प्रकार।

३. रंगासियार, खालीहाथ, चलतापुर्जा, हँसमुख, में दूसरा पद विशेषण के स्थान पर संज्ञा है, और समस्त पद विशेषणवाची है। इस दृष्टि से इन समासों में पद-रचना की दृष्टि से प्रथम पद की प्रधानता है।

४. ३—१ (१२) प्रकार।

स्वरूप

१—अव्ययवाची समासों में पहिला पद विशेषण और दूसरा पद संज्ञा या अव्यय होता है। जिन समासों का दूसरा पद अव्यय होता है, वे पद-रचना की दृष्टि से द्वितीय पद-प्रधान होते हैं। जिन समासों में द्वितीय शब्द अव्यय के स्थान पर अन्य कोई पद होता है तो पद-रचना की दृष्टि से ऐसे अव्ययवाची समास अन्य पद-प्रधान होते है।

२—अव्ययवाची समासों में लिंग, वचन को लेकर किसी प्रकार का विकार नहीं होता। दोनों ही शब्द क्रिया-विशेषण का रूप लेकर क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं।

## ७—२ (३) द्वन्द्व समास[1]

वाक्य-रचना के शब्द समुच्चयबोधक सम्बन्ध तत्व 'और', 'तथा' आदि के लोप से द्वन्द्व की स्थिति में एक पद का रूप ग्रहण करते हैं।

स्वरूप

१—द्वंद्व समासों की रचना 'और', 'तथा' आदि समुच्चयबोधक सम्बन्ध-तत्व के लोप से होती है।

२—समासगत शब्दों की रूपात्मक स्थिति एक समान होती है।

३—समस्त पद के लिंग, वचन का विकार द्वितीय पद में ही होता है, परन्तु प्रथम शब्द का प्रयोग भी द्वितीय शब्द के अनुरूप ही होता है।

४—समासगत आकारांत शब्द चाहे वे पूर्ववर्ती हों अथवा अन्तिमवर्ती बहुवचन रूप में एकारांत, स्त्रीलिंग रूप में ईकारांत, और पुल्लिग रूप में आकारांत रहते हैं।

५—इन समासों में प्रायः स्वर से प्रारम्भ होने वाले वर्ण क्रम से पहिले आने वाले कम संख्या के वर्ण वाले, आकारांत शब्द तथा स्त्रीलिंग शब्द प्रायः पहिले आते हैं। ईकारात शब्द बाद में आते हैं।

६—ध्वन्यात्मक दृष्टि से ये समास अविकारी[2], विकारी[3], विश्लिष्ट[4], संश्लिष्ट[5] रूप लिए रहते हैं।

---

१. ३—१ (१३).

२. मातापिता, भाईबहिन, धनदौलत, गायाबजाया, नाचगाना, रातदिन।

३. खटमिट्ठा, इकत्तीस, अधपाव, कहनसुनन, ।

४. उठतेबैठते, दूधरोटी, खेलकूद, गायबजाया, पास-पास, लाल-लाल, अच्छा-खासा।

५. गटागट, जूतमजूता, मुक्कामुक्की, ठीकठाक, एकाएक, गर्मागर्मी।

७—रूपात्मक दृष्टि से ये समास सम्बन्ध प्रत्यय लोपी[1], वाक्यांश अरूपी,[2] समानाधिकरण[3] मुक्त[4], बद्ध[5], अनन्याश्रित पदीय[6], सर्वपद प्रधान[7], अन्य पद प्रधान[8], का स्वरूप लिए रहते हैं।

८—अर्थात्मक दृष्टि से ये समास अभिधामूलक[9], लक्षणामूलक[10], अर्थ-विस्तारी[11], सर्वपद प्रधान[12], अन्य पद-प्रधान[13] का रूप लिए रहते हैं।

९—शब्द-रचना की दृष्टि से ये समास तत्सम[14], तद्भव[15], संकर[16],

---

१. हाथोंहाथ, रातोंरात, मैं-तुम, अन्न-जल, भले-बुरे।
२. ठीकठाक, नातेरिश्तेदार, लाल-पीला, थोड़ा-बहुत, सुन्दर-सलोना, फटा-पुराना।
३. खानपान, हारजीत, भलाबुरा, भाई-बहिन, घासफूँस, सोनाचाँदी, कहा-सुनी, मारामारी।
४. रातदिन, हाथापाई, हँसीमजाक, रीतिरिवाज, तन-मन-धन, अड़ौस-पड़ौस।
५. खा-पीकर, भुलबुरे, सुन्दरसलोना।
६. सोनाचांदी, मेहनत-मजदूरी, चोलीदामन, स्कूल-कालिज, हक्का-बक्का, वाद-विवाद, इक्का-दुक्का, हाथपाँव।
७. सेठ-साहूकार, देश-देश, लूटमार, घीशक्कर, गाय-बैल, चिट्ठी-पत्री, कूड़ा-कचरा।
८. रातदिन, गर्मागर्मी, नर्मानर्मी, ऐसीतैसी, हाँ-हूँ, ना-नू।
९. माता-पिता, सागभाजी, गईगुजरी, चिट्ठीपत्री।
१०. जूतमजूता, तीन-पाँच, लूटमार, ऐसीतैसी, हाथोंहाथ, कहासुनी।
११. हाथापाई, देश-देश, सेठ-साहूकार, मेजवेज, खूनखराबी, लूटमार।
१२. पाप-पुण्य, धर्म-अधर्म, नमकमिर्च, खेलकूद, दवादारू।
१३. तूतू-मैंमैं, गर्मा-गर्मी, रात-दिन, ऐसी-तैसी, हाथापाई।
१४. निशिवासर, मणिकांचन, पाप-पुण्य।
१५. कौड़ी-कौड़ी, हारजीत, खेलकूद, खान-पान, खटर-पटर, अंट-शंट, अड़ौस-पड़ौस, माता-पिता, नाक-कान, हाथपांव, नमकमिर्च, सोनाचाँदी।
१६. रीतिरस्म, निशिदिन, गलीकूचा, धनदौलत, दवादारु, पादरी-पुरोहित, हकीम-डाक्टर, आफिस-दफ्तर, हँसी मजाक।

विभाषी[1], विलोमवाची[2], एकवर्गीय[3], एकपर्यायी[4], पुनरुक्तिवाची[5], अनुकरणवाची[6] का स्वरूप लिए रहते हैं।

## द्वन्द्व समासों के उपभेद

द्वन्द्व समासों के पांच उपभेद हैं :— १—संज्ञावाची समास, २—विशेषणवाची समास, ३—अव्ययवाची समास, ४—सर्वनामवाची समास, ५—क्रियावाची समास।

### १—संज्ञावाची समास[7]

समुच्चयबोधक सम्बन्ध तत्व के लोप से वाक्य रचना के शब्द जब संज्ञापद का रूप ग्रहण करते हैं तब वे द्वन्द्व संज्ञावाची समास कहे जायेंगे।

**स्वरूप**

१—संज्ञावाची समास, संज्ञा और संज्ञा, विशेषण और विशेषण, क्रिया और क्रिया, अव्यय और अव्यय, सर्वनाम और सर्वनाम के योग से बनते हैं। समस्त पद संज्ञापद का रूप ग्रहण करते हैं। समस्त पद के संज्ञापद होने पर समासगत शब्द कार्यात्मक दृष्टि से संज्ञापद का रूप ग्रहण करते हैं।

२—जो समास संज्ञापदों के योग से बनते हैं वे पद-रचना की दृष्टि से सर्वपद प्रधान होते हैं। जो समास संज्ञा के स्थान पर अन्य पदों के योग से बनते हैं वे पद-रचना की दृष्टि से अन्य पद-प्रधान हैं। इस प्रकार पद-रचना की दृष्टि से संज्ञापदों के दो रूप हैं :—१—सर्वपद-प्रधान, २—अन्य पद-प्रधान।

---

१. मेहनत, मजदूरी, खरीदफरोख्त, नेकीबदी, जोरजुल्म, गरीब-अमीर, सलाह-मशविरा, स्कूल-कालिज, टेबिल-कुर्सी, शान-शौकत।

२. पाप-पुण्य, धर्म-अधर्म, सुख-दुख, शत्रुमित्र, धूप-छाँय।

३. गाय-बैल, घी-दूध, कुर्ता-धोती, कंकड़-पत्थर, भूत-प्रेत, सांप-बिच्छू, घर-गृहस्थी, रुपया-पैसा,।

४. कामकाज, गलीकूँचा, कालास्याह, विनय-प्रार्थना, खेलकूद, सलाह-मशविरा, मेहनत-मजदूरी, सूझ-बूझ, डांटफटकार।

५. धीरे-धीरे, देश-देश, रोम-रोम, हाथोंहाथ, बात-ही-बात, गटागट।

६. धूमधड़ाका, मानमनौवल, गलत-सलत, उल्टा-सुल्टा, बिरकुट-फिस्कुट।

७. ३—१ (१३) प्रकार के—भाई-बहिनों से लेकर टीमटाम तथा गर्मागर्मी से लेकर ऐसी-तैसी, खायापीया से लेकर काटना-कूटना तक के समास।

३— इन समासों के दोनों ही पद क्रिया के कारक रूप में एक-सी रूपात्मक स्थिति लिए रहते हैं।

४—अर्थ की दृष्टि से इन समासों में दोनों ही पद प्रधान होते हैं।

## २—विशेषणवाची समास[1]

समुच्चयबोधक, सम्बन्धतत्व के लोप से वाक्य रचना के शब्द जब विशेषण-पद का रूप ग्रहण करते हैं तब वे विशेषणवाची द्वंद्व समास कहलाते हैं।

स्वरूप

१—विशेषणवाची समास विशेषण और विशेषण तथा क्रिया और क्रिया-पदों के योग से बनते है। समस्त पद के विशेषण पद होने पर समास-गत पद कार्यात्मक दृष्टि से विशेषण पद का रूप ग्रहण कर लेते हैं। जो समास विशेषण पदों के योग से बनते हैं वे पद-रचना की दृष्टि से सर्वपद प्रधान होते हैं। जो समास विशेषणपद के स्थान पर अन्य पदों के योग से बनते हैं वे पद-रचना की दृष्टि से अन्य पद प्रधान हैं। इस प्रकार पद-रचना की दृष्टि से विशेषण पदों के दो रूप है :

१—सर्वपद प्रधान, २—अन्य पद प्रधान।

२— विशेषणवाची द्वंद्व समासों के सभी पद विशेषण रूप में अन्य पद विशेष्य की विशेषता प्रकट करते हैं। विशेषणवाची द्वंद्व समासों के लिंग, वचन का निर्धारण अन्य पद विशेष्य के अनुसार होता है। लिंग, वचन का विकार सभी पदो में होता है।

३—विशेष्य के विशेषण रूप मे दोनों ही पदों की रूपात्मक स्थिति एक-सी होती है।

४—अर्थ की दृष्टि से दोनों ही पद प्रधान होते हैं।

## ३—अव्ययवाची समास[2]

समुच्चयबोधक सम्बन्ध तत्व के लोप से वाक्य-रचना के शब्द अव्यय पद का रूप ग्रहण करते हैं तब वे अव्ययवाची द्वंद्व समास होते हैं।

---

१. ३—१ (१३) प्रकार के 'इक्का-दुक्का से लेकर सब-के-सब तथा जीता-जागता से लेकर सोता-जागता' समासों तक।

२. ३—१ (१३) प्रकार के 'जैसे-तैसे से लेकर बीचों-बीच तथा रात-दिन से लेकर आप-ही-आप, गिरते-पड़ते से लेकर देखते देखते, खापीकर से लेकर जाजूकर' तक के समास।

**स्वरूप**

१—अव्ययवाची समास अव्यय और अव्यय, संज्ञा और संज्ञा, विशेषण और विशेषण, क्रिया और क्रियापदों के योग से बनते हैं। समस्त पद के अव्यय पद होने पर समासगत शब्द कार्यात्मक दृष्टि से अव्यय पद का रूप ग्रहण कर लेते हैं। जो समास अव्यय पदों के योग से बनते हैं वे पद-रचना की दृष्टि से सर्वपद प्रधान होते हैं। जो समास अव्यय पद के स्थान पर अन्य पदों के योग से बनते हैं वे पद-रचना की दृष्टि से अन्य पद प्रधान होते हैं। इस प्रकार पद-रचना की दृष्टि से अव्यय पदों के दो रूप हैं : १—सर्व पद प्रधान, २—अन्य पद प्रधान।

२—अव्यय पद होने से इन समासों में लिंग, वचन को लेकर किसी प्रकार का विकार नहीं होता।

३—समासगत सभी शब्द क्रियाविशेषण रूप में क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं।

### ४—सर्वनामवाची समास[1]

समुच्चयबोधक सम्बन्ध तत्व के लोप से वाक्य-रचना के शब्द जब सर्वनाम पद का रूप ग्रहण करते हैं तब वे सर्वनामवाची द्वंद्व समास कहलाते हैं।

**स्वरूप**

१—सर्वनामवाची द्वंद्व समासों की रचना सर्वनाम और सर्वनाम पदों के योग से होती है।

२—रूप-रचना की दृष्टि से ये समास सर्वपद प्रधान होते हैं।

३—समासों के सभी पद सर्वनाम रूप में क्रिया के कारक का रूप लेकर एक-सी रूपात्मक स्थिति लिए हुए रहते हैं।

४—अर्थ की दृष्टि से इन समासों से सभी पद प्रधान होते हैं।

### ५—क्रियावाची समास[2]

समुच्चयबोधक सम्बन्धतत्व के लोप से वाक्य-रचना के शब्दों का क्रिया पद का रूप ग्रहण करने पर क्रियावाची द्वंद्व समास होंगे।

---

१. ३—१ (१३) प्रकार के 'मैं-तुम' से लेकर 'अपना-उनका' समास तक।

२. ३—१ (१३) प्रकार के 'डाँटना-फटकारना' से लेकर 'देखा-सुना' तक।

स्वरूप

१—क्रियावाची द्वंद्व समासों की रचना क्रिया और क्रियापदों के योग से होती है।

२—रूप-रचना की दृष्टि से ये समास सर्वपद प्रधान होते हैं।

३—इन समासों के सभी पद क्रियापदों के रूप में वाक्य के कारक के कार्य होते हैं।

४—अर्थ की दृष्टि से इन समासों में सभी पद प्रधान होते है।

## ७—३ (१) हिन्दी समास और व्याकरण के चिन्ह

१—'समास' शब्द या तो अन्य शब्दों की भाँति एक ही शिरोरेखा से लिखे जाते हैं अथवा समासगत शब्दों के मध्य में योजक चिन्ह (-) का व्यवहार किया जाता है। जैसे :—मतभेद, भयभीत, सीमा-विवाद, रक्षा-संगठन।

२—किन समासों को एक ही शिरोरेखा बाँधकर लिखा जाय और किन समासों में योजक चिन्हों का व्यवहार किया जाए, इसका कोई निश्चित आधार नहीं है। एक ही समास शब्द कभी योजक-चिन्ह का योग लिए रहता है, कभी एक शिरोरेखा से लिखा जाता है और कभी उसके शब्द बिना योजक चिन्ह का योग लिए अलग-अलग लिखे जाते हैं। उदाहरण के लिए :—'सीमा-विवाद' समास शब्द एक ही पत्र के एक अङ्क में योजक चिन्ह युक्त भी है और अयुक्त भी[1]। 'सिचाई मंत्री' एक शिरोरेखा बाँधकर भी लिखा गया है और अलग-अलग भी[2]।

३—यह भी आवश्यक नहीं, जिन पदों के मध्य में योजक चिन्ह हो अथव जो एक शिरोरेखा बाँधकर लिखे गये है उन सबको समास ही माना जाय। वाक्यांशों में भी योजक चिन्हों का व्यवहार देखने को मिलता है तथा वे एक ही शिरोरेखा से लिखे हुए भी दृष्टिगत होते हैं। जैसे—मासिकपत्र[3], प्रधानमंत्री[4], घरेलू-उपचार[5], उच्चस्तरीय[6] आदि वाक्यांश।

---

१. दैनिक हिन्दुस्तान १४ जुलाई, सन् १९६०।

२. अमर उजाला आगरा १५ जून, ६०।

३. धमज्योति वृन्दावन अक्टूबर १९५८, पृ० २४ वर्ष १, अङ्क २।

४. अमर उजाला आगरा, १० सितम्बर, १९५९।

५. आरोग्य गोरखपुर, दिसम्बर १९५९, पृ० ४२।

६. सैनिक आगरा, २६ जौलाई, १९६०।

४—मोटे तौर पर यही कहा जा सकता है कि या तो समास शब्दों के बीच योजक चिन्ह का प्रयोग किया जाय अन्यथा उन्हें एक शिरोरेखा से बांधकर लिखना चाहिए। संश्लिष्ट समास अवश्य एक शिरोरेखा बांधकर लिखे जाने चाहिए।

५—समासों के योग में कोमा (,), अर्द्ध कोमा (;) का प्रयोग नहीं किया जा सकता। कोमा, अर्द्धकोमा का योग लिए वाक्य-रचना के शब्द समास नहीं, वाक्यांश होंगे।

| वाक्यांश | समास |
|---|---|
| सुख, दुख | सुख-दुख |
| हाथी, दांत | हाथी-दांत |
| जीवनरक्षक | जीवन-रक्षक |
| सीता, राम | सीता-राम |

# परिशिष्ट

१—समास-सूची

२—सहायक ग्रन्थ-सूची

३—संकेत-चिन्ह एवं संक्षेप

# समास-सूची

जिन समास शब्दों का प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में उदाहरण स्वरूप व्यवहार किया गया है, उनकी सूची पृष्ठ संख्या सहित नीचे दी जा रही है। इसमें उर्दू शैली अँग्रेजी, संस्कृत के समास भी सम्मिलित है।

(अ)

(आ)

## (ए, ऐ)



## (ओ, औ)



## (क)

( . )

(ग)

## (घ)

(च)

(छ)



(ज)

(झ)



(ट)

(ठ)



(ड)



(ढ)



(त)

(थ)



(द)

(ध)



(न)

(ब)

(भ)

(म)

(य)

(र)

( श )

( स )

(ह)

# सहायक ग्रन्थ-सूची

शोध-कार्य में जिन पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, रचनाओं से सहायता ली गई है उनकी सूची नीचे दी जा रही है :—

## व्याकरण, शब्दकोष तथा भाषा-विज्ञान


१—अर्थ-विज्ञान और व्याकरण दर्शन—डा० कपिलदेव द्विवेदी (हिन्दुस्तान ऐकेडेमी, इलाहाबाद १९५१)

२—अष्टाध्यायीप्र काशिका—डा० देवप्रकाश (मोतीलाल बनारसीदास, बनारस)

३—आउट लाइन आफ लिंग्विस्टिक एनालिसिस-ब्लॉक एण्ड ट्रैगर (लिंग्विस्टिक सोसाइटी आफ अमेरिका १९५२)

४—आउट लाइन्स आफ इंडियन फिलोलोजी एण्ड अदर फिलोलोजीकल पेपर्स जॉन बीम्स (इंडियन स्टडीज, १९६०)

५—आस्पैक्टस आफ लैंग्वेज—विलियम जे० ऐटविस्टिल (फेवर एण्ड फेवर लंदन)

६—इंटेनिसिव एण्ड इनक्लूसिव कम्पाउन्डस् इन तैलुगु—के० माधव शास्त्री (इंडियन लिंग्विस्टिक वौल्यूम १४, १९५४)

७—उर्दू-हिन्दी-कोष—मुस्तफा खाँ (प्रकाशन ब्यूरो, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश)

८—ए कोर्स इन मोडर्न लिंग्विस्टिक—चार्लस् एफ हाकिट (मैकमिलन कम्पनी न्यूयार्क १९५६)

९—ए ग्रामर आफ संस्कृत लैंग्वेज—एफ० वेलहोर्न (तुकाराम जावजी, बम्बई १९१२)

१०—ए ग्रामर आफ स्पोकन इंगलिश—एफ० एल० सेक (डब्ल्यू० एच० हेफर एण्ड संस लि०, केम्ब्रिज)

११—ए ग्रामर आफ हिन्दी लेंग्वेज—(एस० एच० कैलाग)

१२—ए वेसिक ग्रामर श्राफ माडर्न हिन्दी—(गवर्नमेंट आफ इंडिया मिनिस्ट्री आफ एजूकेशन एण्ड साइन्टीफिक रिसर्च, १६५८)

१३—एनोट श्रोन सिनोनियम कम्पाउन्ड इन तिब्वतियन—सुनीतकुमार पाठक (इण्डियन लिंग्विस्टिक टर्नर जुवली वोल्यूम, १६५८)

१४—एन इन्ट्रोडक्शन टू लिंग्विस्टिक साइंस—एडगर एच० स्ट्रेटवेंट (येल यूनिवर्सिटी प्रेस, १६४७)

१५—एन श्राउट लाइन श्राफ इंगलिश फोनेटिक्स—डेनियल जोंस (डब्लू हैफर एन्ड सं० लि०, १६५६)

१६—एन इन्ट्रोडक्शन टू डेसक्रिटिव लिंग्विस्टिक्स—एच० ए० ग्लीसन (हैनरी होल्ट एन्ड कम्पनी, न्यूयार्क)

१७—ओक्सफोर्ड इंगलिश डिक्सनरी (ओक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस)

१८—कोम्प्रेहैंसिव इंगलिश हिन्दी डिक्सनरी—डा० रघुवीर

१६—डिक्सनरी श्राफ लिंग्विस्टिक—मोरियो पई एन्ड फॅकोमेयर

२०—दी फिलोसोफी श्राफ ग्रामर—ओटो जैस्पर्सन (जार्ज एनल एन्ड अनविन लि०, लंदन)

२१—दी स्टोरी श्राफ लेंग्वेज—मैरियो पई (एनल एन्ड अनविन लि०, लंदन)

२२—दी स्ट्रकचर श्राफ इंगलिश—एफ० एल० सेक (डब्लू० हैफर एन्ड संस लि०, कैम्ब्रिज)

२३—नोट्स श्रान नोमीनल कम्पाउन्ड इन प्रेजेन्ट डे इंगलिश—हंसमरचन्ड (वर्ड, जर्नरल आफ दी लिंग्वस्टिक सर्किल आफ न्यूयार्क)

२४—नोमीनल कम्पोजीशन श्राफ मिडिल इन्डो-श्रार्यन—गुलाव वाई धावने (डकन कालेज, रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना, १६५६)

२५—नवादर्श हिन्दी व्याकरण—जनार्दन मिश्र 'पंकज'

२६—नवीन हिन्दी व्याकरण रचना—राम प्रताप त्रिपाठी शास्त्री (इण्डियन प्रेस प्रयाग, १६४८)

२७—प्रोवीजनल लिस्ट श्राफ टेकनीकल टर्मस् इन हिन्दी—(मिनिस्ट्री आफ एजूकेशन एन्ड साइन्टीफिक रिसर्च गवर्नमेंट आफ इण्डिया, १६५७)

२८—फोनेमिक्स—के० एल० पाइक (मिशिगन प्रेस, १६५६)

२६—भाषा-भास्कर—एथरिंगटन साहब (नवल किशोर प्रेस, लखनऊ १६०५)

३०—भाषा-विज्ञान का पारिभाषिक शब्द-कोष—डा० विश्वनाथ प्रसाद सुधाकर झा (पटना विश्वविद्यालय)

३१—मोर्फोलौजी—ई० ए० नाइडा (मिशिगन प्रेस, १६५७)

३२—माडर्न इंगलिश ग्रामर पार्ट ६—ओटो जैस्पर्सन (जार्ज एलन एन्ड अनविन लि०, लन्दन)
३३—मेथड्स इन स्ट्रक्चार्स लिग्विस्टिक्स—जेड एस० हैरिस (शिकागो १९५१)
३४—रचना कौमुदी—फूलचन्द जैन सारंग (वर्द्धमान पुस्तक भण्डार, आगरा)
३५—रचना तथा व्याकरण—चन्द्रमौलि शुकुल, एम० ए० (साहित्य सम्मेलन प्रयाग)
३६—रीडिंग्स इन लिंग्विस्टिक्स—मार्टिनजूस।
३७—लेंग्वेज—ब्लूम फील्ड (जार्ज एलन एन्ड अनविन लि०, लन्दन १९५५)
३८—वैदिक ग्रामर—मेकाडानल (स्ट्रेसवर्ग १९१०)
३९—वृहत हिन्दी शब्द-कोष—(ज्ञानमण्डल लिमिटेड, काशी)
४०—व्याकरण चन्द्रोदय—आचार्य रामलोचन शरण (पुस्तक भण्डार पटना)
४१—व्याकरण दर्पण—शिवपूजन सहाय
४२—संक्षिप्त हिन्दी शब्द-सागर—(नागरी प्रचारिणी सभा, काशी)
४३—संस्कृत का भाषा-शास्त्रीय अध्ययन—डा० भोलाशंकर व्यास (भारतीय ज्ञानपीठ, काशी)
४४—संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका—डा० बाबूराम सक्सेना, (राम नारायन लाल, इलाहाबाद)
४५—संस्कृत ग्रामर-ह्विटनी—(हारवर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस)
४६—सम-सामयिक साहित्यिक हिन्दी में शब्द-रचना—अलंकसिइ वर खुदारोव (प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान विज्ञान एकाडमी मास्को, 'हिन्दी अनुशीलन': धीरेन्द्र वर्मा विशेषांक)
४७—सरल शब्दानुशासन—किशोरीदास वाजपेई (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी)
४८—सर्टेन वर्बस कम्पाउन्डस आफ संस्कृत एण्ड सम पेरेलल, फोरमेशन इन अवधी—डा० बाबूराम सक्सेना ( इण्डियन लिंग्विस्टिक्स वोल्यूम १६, नवम्वर १९५५ )
४९—सिद्धान्त कौमुदी टीका—शारदारंजनराय
५०—हिन्दी मिडिल व्याकरण—( अग्रवाल प्रेस, प्रयाग )
५१—हिन्दी व्याकरण—दुलीचन्द, ( होशियारपुर )
५२—हिन्दी रचना—राजेन्द्रसिंह गौड़-एम० ए० ( श्रीराम मेहरा एण्ड कं०, आगरा )
५३—हिन्दी कौमुदी—अम्बिकाप्रसाद वाजपेई (इण्डियन नेशनल पब्लिकेसन् लि० मछुआ बाजार स्ट्रीट कलकत्ता)

५४—हिन्दी व्याकरण—कामताप्रसाद गुरु (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी )
५५—हिन्दी व्याकरण—शिवप्रसाद सितारे हिन्द।
५६—हिन्दी शब्दानुशासन—किशोरीदास वाजपेई ( नागरी प्रचारिणी सभा, काशी )
५७—हिन्दी विश्वकोष—नगेन्द्रनाथ वसु
५८—हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास—डा० उदयनारायण तिवारी। (भारतीय भण्डार, प्रयाग।)
५९—हिन्दी में अंग्रेजी के आगत शब्दों का भाषा तात्विक अध्ययन—डा० कैलाशचन्द्र भाटिया।
६०—हिन्दी सेमेनिटिक्स—डा० हरदेव बाहरी (भारत प्रेस पब्लिकेशन, इलाहाबाद)
६१—हिन्दुस्तानी ग्रामर—दीनानाथ देव (भारत मित्र प्रेस, कलकत्ता १८८६)

## उपन्यास, नाटक, कहानी (विविध)

६२—अपनी करनी—आरिगूपड़ि ( राजपाल एण्ड संस, दिल्ली )
६३—अमरबेल—वृन्दावनलाल वर्मा ( मयूर प्रकाशन, झाँसी )
६४—आत्मकथा—महात्मा गाधी—( सस्ता साहित्य मण्डल, दिल्ली )
६५—आजादकथा—अनुवादक : प्रेमचन्द ( सरस्वती प्रेस, बनारस )
६६—इतिहास और कल्पना—सम्पादक : प्रियदर्शन, एम० ए० (शिवलाल अग्रवाल एण्ड कं० लि०, आगरा )
६७—कहानी कैसे बनी—करतारसिंह दुग्गल (भारतीय विद्यापीठ, काशी)
६८—काठ की घण्टियाँ—सर्वेश्वर दयाल सक्सेना (भारतीय ज्ञानपीठ काशी)
६९—कचनार—वृन्दावनलाल वर्मा (मयूर प्रकाशन, झाँसी)
७०—गबन—प्रेमचन्द (सरस्वती प्रेस, बनारस)
७१—गदर के फूल—अमृतलाल नागर (प्रकाशन ब्यूरो उत्तर प्रदेश सरकार)
७२—गिरती दीवारें—उपेन्द्रनाथ अश्क (नीलाभ प्रकाशन इलाहाबाद),
७३—गृहदाह—शरतचन्द (हिन्दीग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई)
७४—गणेश शंकर विद्यार्थी—बनारसीदास चतुर्वेदी (आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली)
७५—झूठा सच (१-२)—यशपाल (विप्लव प्रकाशन, लखनऊ)
७६—झाँसी की रानी—वृन्दावनलाल वर्मा (मयूर प्रकाशन, झाँसी)
७७—छः एकांकी—(सरस्वती प्रेस, बनारस)
७८—जीवन-निर्माण—फूलचन्द जैन सारंग (विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा)
७९—जीवन और संघर्ष—उदयशंकर भट्ट (राजपाल एण्ड संस, दिल्ली)

८०—जीने के लिए—राहुल सांकृत्यायन (किताबमहल, इलाहाबाद)
८१—जोड़ी वनफूल—(राजपाल एण्ड संस, दिल्ली)
८२—दुर्गादास—द्विजेन्द्रलाल राय (हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई)
८३—देहाती दुनिया—शिवपूजन सहाय (ग्रन्थमाला कार्यालय पटना),
८४—दुबेजी की डायरी—विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' (विनोद पुस्तक, मन्दिर आगरा)
८५—त्याग-पत्र—जैनेन्द्र (हिन्दी रत्नाकर, बम्बई)
८६—नीलोफर—शौकत थानवी (एन० डी० सैगल एण्ड संस, दिल्ली)
८७—प्रतिशोध—हरिकृष्ण प्रेमी (हिन्दी भवन, लाहौर)
८८—प्रेमाश्रम—प्रेमचन्द (सरस्वती प्रेस, बनारस)
८९—प्रतिनिधि कहानियाँ—रामप्रसाद घड़ियाल (रामनरायनलाल, इलाहाबाद)
९०—फूलों का कुर्ता—यशपाल (विप्लव प्रकाशन, लखनऊ)
९१—बलचनमा—नागार्जुन—(किताबमहल, इलाहाबाद)
९२—बूँद और समुद्र—अमृतलाल नागर (किताबमहल, इलाहाबाद)
९३—भारत की एकता का निर्माण—सरदार पटेल के भाषण (पब्लिकेशन डिवीजन गवर्नमेंट आफ इंडिया)
९३—भारतीय संस्कृति के उपादान—डी० एन० मूजमदार (एशिया पब्लिशिंग हाउस, बम्बई)
९५—मानसरोवर (१-८)—प्रेमचन्द (सरस्वती प्रेस, बनारस)
९६—मेरे निबन्ध—गुलाबराय एम० ए० (गयाप्रसाद एण्ड संस, आगरा)
९७—रंगभूमि—प्रेमचन्द (सरस्वती प्रेस, बनारस)
९८—राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद के भाषण—(पब्लिकेशन डिवीजन; भारत सरकार)
९९—रिमझिम—डा० रामकुमार वर्मा (किताबघर, इलाहाबाद)
१००—राम-रहीम—राधिकारमणसिंह (राजेश्वरी साहित्य मन्दिर)
१०१—लालबुझक्कड़—जी० पी० श्रीवास्तव (भार्गव पुस्तकालय, काशी)
१०२—वह फिर नहीं आई—भगवतीचरण वर्मा—(राजकमल प्रकाशन, दिल्ली)
१०३—विराटा की पद्मिनी—वृन्दावनलाल वर्मा (मयूर प्रकाशन, झाँसी)
१०४—विनोबा के विचार—(सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली)
१०५—विचार विमर्श—महावीरप्रसाद द्विवेदी (भारतीय भण्डार, काशी)
१०६—स्वाधीनता और उसके बाद—(पं० नेहरू के भाषण : (पब्लिकेशन डिवीजन गवर्नमेंट आफ इण्डिया)
१०७—सिन्दूर की होली—लक्ष्मीनरायन मिश्र (भारतीय भण्डार, प्रयाग)

१०८—हमारे रीति-रिवाज—जगदीशसिंह (नेशनल पब्लिशिंग हाउस)
१०९—हिन्दू समाज निर्णय के द्वार पर—के० एम० पाणिकर (एशिया पब्लिशिंग हाउस, बम्बई)

## पत्र-पत्रिकायें

११०—अमर उजाला—आगरा
१११—आजकल—पब्लिकेशन डिपार्टमेंट भारत सरकार
११२—आरोग्य—आरोग्य मन्दिर, गोरखपुर
११३—कल्पना—हैदराबाद
११४—कहानी—सरस्वती प्रेस, बनारस
११५—ज्ञानोदय—टाइम्स आफ इंडिया पब्लिकेशन
११६—धर्मयुग—टाइम्स आफ इंडिया पब्लिकेशन
११७—धर्मज्योति—वृन्दावन
११८—नई कहानियां—राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
११९—नवभारत टाइम्स—दिल्ली
१२०—भारती—विद्या भवन, बम्बई
१२१—राष्ट्र दूत—जयपुर
१२२—भारतीय साहित्य—कन्हैयालाल मुंशी हिन्दी विद्यापीठ आगरा
१२३—साप्ताहिक हिन्दुस्तान—दिल्ली
१२४—सैनिक—आगरा
१२५—हिन्दुस्तान—दिल्ली
१२६—हिन्दुस्तानी—हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद
१२७—हिन्दी अनुशीलन—हिन्दी परिषद् प्रयाग विश्वविद्यालय
१२८—सम्मेलन पत्रिका—इलाहाबाद

# संकेत-चिन्ह एवं संक्षेप

| | |
|---|---|
| अं० | अंग्रेजी |
| अ० | अव्यय |
| अ | अच् (स्वर) |
| उ० | उर्दू |
| ए० व० | एकवचन |
| क्रि० | क्रिया |
| वि० | विशेषण |
| प० | पद |
| ब० व० | बहुवचन |
| श० | शब्द |
| सं० | संस्कृत |
| स० | सर्वनाम |
| ह | हल (व्यंजन) |
| हि० | हिन्दी |
| ˈ | प्रमुख आघात |
| ˌ | गौण आघात |

---